श्रीगणेशाय नमः।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत-

रामायणे-

लङ्काकाण्डप्रारम्भः।

वही

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

इन्होंने

निज

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर"

नामक

मुद्रायन्त्रालयमें छापकर

प्रसिद्ध किया।

कल्याण-(मुम्बई.)

संवत् १९४९ शके १८१४

लक्ष्मीवेङ्कटेशाय नमः ।

अथ लङ्काकाण्डम् ।

दोहा-प्रणत पाल रघुवंशमणि, त्राहि त्राहि अबमोहिं ॥
सुनतहि आरत वचन प्रभु, अभय करहिंगे तोहिं ॥

दोहा-शंकर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास ॥
ते नर करहिं कल्पभरि, घोर नरक महँवास ॥

दोहा-मेघनाद सम कोटिशत, योधा रहे उठाय ॥
जगदाधार अनन्त सो, उठहिं न चलहिं खिसाय ॥

चौ-जब तेहिं कीन्ह रामकी निन्दा ॥ क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा ॥
हरि,-हर निन्दा सुनै जो काना ॥ होय पाप गोघात समाना ॥

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास-
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना कल्याण (मुंबई)

श्रीः ।

अथ रामायणे लङ्काकाण्डम् ।
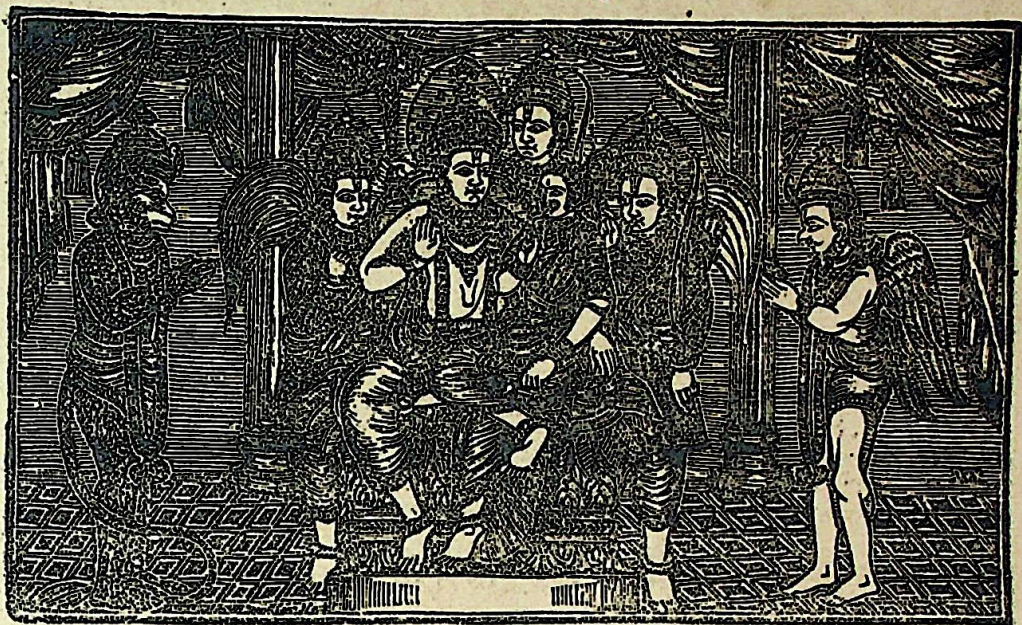
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्लोक-रामंकामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभ सिंहं योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणंनिर्विकारम् ॥ मायातीतंसुरेशंखलवधनिरतं ब्रह्मवृंदैकदेवं वंदेकुंदावदातंसरसिजनयनंदेवमुर्वीशरूपम् ॥ १ ॥ शंखेंद्वाभमतीवसुन्दरतनुंशार्दूलचर्माम्बरंकालव्याल करालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम् ॥ काशीशंकलिक

श्लोकार्थ-शिवजीसे सेवित संसारभयको हरनेवाले कालरूपी मतवाले हाथीको सिंह योगियोंमें इंद्र और ज्ञानसे जानने योग्य गुणोंके समुद्र अजित गुणोंसे परे विकाररहित मायासे पृथक् देवताओंके गुरु दुष्टोंके मारनेमें प्रीति करनेवाले ब्राह्मणगणोंके एकही देवता जल और जलसे पूरित मेघ कीसी आभा जिनके शरीरकी कमल केसे नेत्र ऐसे पृथ्वीपति रामकी मैं वंदना करताहूं ॥ १ ॥

शंख और चंद्रमाके समान गौर और अतिसुंदर जिनका शरीर सिंहका चर्म जिनका वस्त्र और जो कालके समान सर्प और कपालभूषणको धारण करनेवाले और गंगा चंद्रमा जिनको अति प्रियहैं काशीके ईश पापके नाशक कल्याणके

ल्मषौघशमनंकल्याणकल्पद्रुमं नौमीड्यंगिरिजाप
तिंगुणनिधिंश्रीशंकरंकामहम् ॥२॥ योददातिसतांश
म्भुः कैवल्यमपिदुर्ल्लभम् ॥ खलानांदण्डकृत्योसौशं
करःशंतनोतुमे ॥ ३ ॥

कल्पवृक्ष गिरिजाके पति चराचरके पूजनीय गुणोंके समूह कामदेवके शत्रु शि-
वजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २ ॥

जो शिवजी सज्जनोंको दुर्लभ मुक्ति देतेहैं और खलोंको दंड करते हैं सो
शंकर मेरे कल्याणका विस्तार करैं ॥ ३ ॥

दोहा—षष्ठम लङ्काकाण्ड यह, वारिधितट रघुवीर ॥
शोभित सभा ससैन घन, वन्दत रहत न पीर ॥ १ ॥
सुदृढ सुभग शुठि सेतु रचि, सहित भालु कपि सैन ॥
कृष्णबिहारी पार भे, राम लषण बल ऐन ॥ २ ॥
मंदोदरि सुनि शीशधुनि, बहुविधि कंत मनाय ॥
अखिल अजन्म अनन्त अज़, रूप विराट दिखाय ॥ ३ ॥
ताहि प्रबोधत आप शठ, गुणी समूह बुलाय ॥
निर्भय देखत नाटच सुख, विविध यंत्र बजवाय ॥ ४ ॥
परम सुभट अरि शीशपर, तद्यपि भय नहिं लेश ॥
यहाँ सुबैल सुसभायुत, राजत प्रभु अवधेश ॥ ५ ॥
नीति निपुण अंगद गये, प्रभुआज्ञा धरि शीश ॥
लंकापति सों बतकही, कही न मानदशीश ॥ ६ ॥
बहुरि चढाई लंककी, समर अकम्पनकाय ॥
मेघनाद योधा अपर, लडे मरे गति पाय ॥ ७ ॥
सती सुलोचनि कुंभश्रुति, संगर कथा निकाय ॥
अहिरावण जूझन बहुरि, नारांतक सुनि आय ॥ ८ ॥
तासु वधन सति बिंदुमति, समर भयो लंकेश ॥
व्याकुलसुर मुनि विप्रलखि, हत्यो ताहि अवधेश ॥ ९ ॥
बहुरि जानकी कर मिलन, विनती सुरन जो कीन ॥

भालु कपिन करपुनिजियन, राज्य विभीषण दीन॥१०॥
सहित जानकी लषण प्रभु, सचिव भक्त हनुमंत ॥
पुष्पकयान अरूढह्वै, चले अवध भगवंत ॥ ११ ॥
जहाँ तहाँ क्षेपक कथा, अरु बहु प्रसँग मिलाय ॥
गाथा रघुवर नाम की, पढत सुनत रुज जाय ॥ १२ ॥

दोहा–लव[1] निमेष[2] परिमाणु युग, वर्ष[3] कल्प[4] शर चण्ड ॥
भजसि न मन तेहि राम कहँ, काल जासु कोदण्ड॥ १॥
सो०–सिंधु वचन सुनि राम, सचिव बोलिप्रभुअसकह्यउ॥
अब विलम्ब केहि काम, रचहु सेतु उतरै कटक ॥ १॥
सुनहु भानुकुल केतु, जाम्बवन्त कर जोरि कह ॥
नाथ नाम तव सेतु, नर चढि भवसागर तरहिं ॥ २॥

यह लघु जलधितरतकत बारा ❋ अससुनि पुनि कह पवनकुमारा ॥
प्रभु प्रताप वडवानल भारी ❋ शोषे प्रथम पयोनिधि बारी ॥
तव रिपुनारि रुदन जलधारा ❋ भऱ्यो बहोरि भयो तेहि खारा ॥
सुनि असि उक्ति पवन सुतकेरी ❋ बिहँसे रघुपति कपितनहेरी ॥
जाम्बवन्त बोले दोउ भाई ❋ नल नीलहिं सब कथा सुनाई ॥
रामप्रताप सुमिरि उर माहीं ❋ करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
बोलि लिये कपिनिकरबहोरी ❋ सकल सुनहु विनती इक मोरी ॥
राम चरण पंकज उर धरहू ❋ कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
धावहु मर्कट विकट वरूथा ❋ आनहु विटप गिरिन के यूथा ॥
सुनि कपि भालु चले करिहूहा ❋ जय रघुवीर प्रताप समूहा ॥

दोहा–अति उतंग तरु शैल गण, लीलहिं लेहिं उठाइ ॥
आनि देहिं नल नील कहँ, बिरचहिं सेतु बनाइ॥२॥

शैल विशाल आनिकपि देहीं ❋ कन्दुक इव नल नील सो लेहीं ॥
देखि सेतु अति सुन्दर रचना ❋ बिहँसि कृपानिधि बोले वचना ॥

---

१ पलककालगनाबंदहोना। २ साठिनिमिषकाएकपरिमाणु। ३ बारहमासकाएकवर्ष। ४ कल्पकही हजार सतयुग हजार त्रेता हजार द्वापर हजार कलियुग ऐसेचारिउयुग हजार हजार मिलके हजार चौकडीजववीतैं तब ब्रह्माका एकदिन होताहै।

परमरम्य सुंदर यह धरणी ❋ महिमा अमितजाइ नहिं बरणी ॥
करिहौं यहां शम्भु थापना ❋ मोरे हृदय परम कलपना ॥
सुनि कपीश बहु दूत पठाये ❋ मुनिवर निकर बोलि लै आये ॥
लिंग थापि विधिवतकरि पूजा ❋ शिव समान प्रियमोहिं न दूजा ॥
शिवद्रोही ममदास कहावै ❋ सो नर स्वप्नेहु मोहिं न भावै ॥
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी ❋ सो नर मूढ मंदमति थोरी ॥

दोहा–शंकर प्रिय ममद्रोही, शिव द्रोही मम दास ॥
ते नर करहिं कल्प भरि, घोर नरक महँ वास ॥ ३ ॥

जो रामेश्वर दर्शन करिहैं ❋ सो तनु तजिममधाम सिधरिहैं ॥
जो गंगाजल आनि चढाइहि ❋ सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होइ अकामजो छल तजिसेइहि ❋ भक्ति मोरि तिहिं शंकर देइहि ॥
ममकृत सेतु जु दर्शन करिहैं ❋ सो बिनु श्रम भवसागरतरिहैं ॥
रामवचन सबके मन भाये ❋ मुनिवर निजनिज आश्रम आये ॥
गिरिजा रघुपति की यहरीती ❋ सन्तत करहिं प्रणतपर प्रीती ॥
बांधेउ सेतु नील नल नागर ❋ रामकृपा यश भयउ उजागर ॥
बूडहिं आनहिं बोरहिं जेई ❋ भये प्रबल बोहित सम तेई ॥
महिमा यह न जलधिकै बरणी ❋ पाहन गुणन कपिनकी करणी ॥

दोहा–श्रीरघुवीर प्रताप ते, सिन्धु तरे पाषान ॥
ते मतिमन्द जे रामतजि, भजहिं जाय प्रभुआन ॥ ४ ॥

बांधि सेतु अति सुदृढ बनावा ❋ देखि कृपानिधिके मनभावा ॥
चली सेन कछु बरणि न जाई ❋ गरजहिं मर्कट भट समुदाई ॥
सेतु बंध ढिग चढि रघुराई ❋ चितै कृपालु सिन्धु अधिकाई ॥
देखन कहँ प्रभु करुणाकन्दा ❋ प्रगट भये सब जलचर वृन्दा ॥
नाना मकर नक्र झष व्याला ❋ शत योजन तनु परम विशाला ॥
ऐसे एक तिनहिं धरि खाहीं ❋ एकनके डर एक पराहीं ॥
प्रभुहि विलोकहिं टरहिंन टारे ❋ मन हर्षित सब भये सुखारे ॥

---

१ अत्रिमुनि, अगस्त्य, च्यवन, मार्कण्डेय, गर्ग, मुद्गल, नारद, शुकदेवादि अनन्तमुनि अपने२ स्थानको गये। २ निरन्तर। ३ शरणागत। ४ श्रेष्ठ। ५ जहाज। ६ समुद्र। ७ पत्थर। ८ मीन।

तिनकी ओट न देखिय वारी ❀ मगन भये हरिरूप निहारी ॥
चला कटक कछु बरणिन जाई ❀ को कहि सक कपि दल विपुलाई ॥

दोहा–सेतुबन्ध भइ भीर अति, कपि नभ पन्थ उडाहिं ॥
अपर जलचरनि उपर चढि, विनुश्रमपारहि जाहिं ॥ ५ ॥

यह कौतुक विलोकि दोउ भाई ❀ विहँसि चले कृपालु रघुराई ॥
सेन सहित उतरे रघुवीरा ❀ कहि न जात कछु यूथप भीरा ॥
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा ❀ सकल कपिन कहँ आयसुदीन्हा ॥
खाहु जाइ फल मूल सुहाये ❀ सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये ॥
सब तरु फले राम हित लागी ❀ ऋतु अनऋतुहि काल गति त्यागी ॥
खाहिं मधुर फल विटपं हिलावहिं ❀ लंका सन्मुख शिखर चलावहिं ॥
जहँ कहुँ फिरत निशाचरपावहिं ❀ घेरि सकल मिलिनाच नचावहिं ॥
दशनन काटि नासिका काना ❀ कहि प्रभु सुयश देहिं तब जाना ॥
जिनकर नासाकान निपाता ❀ तेइ रावणहिं कही सब बाता ॥
सुनत श्रवण बारिधि बंधाना ❀ दशमुख बोलि उठा अकुलाना ॥

दोहा–बांधेउ जलनिधि नीरनिधि, जलधि सिन्धु बारीश ॥
सत्य तोयनिधि पंकनिधि, उदधिपयोधि नदीश ॥ ६ ॥

व्याकुलता निज समुझि बहोरी ❀ विहँसि चला गृह करिमतिभोरी ॥
मन्दोदरी सुना प्रभु आये ❀ कौतुक ही पाथोधि बँधाये ॥
करगहिपतिहिभवन निज आनी ❀ बोली परम मनोहरबानी ॥
चरण नाइ शिर अंचल रोपा ❀ सुनहु वचनपियपरिहरिकोपा ॥
नाथ बैर कीजे ताही सो ❀ बुधिबलजीतिसकियजाहीसो ॥
तुमहिं रघुपतिहि अंतर कैसा ❀ खलु खद्योत दिवाकर जैसा ॥
अतिबल मधुकैटभ जिनमारे ❀ महावीर दिति सुत संहारे ॥
जेहि बलिबांधि सहसभुजमारा ❀ सोइ अवतरेउहरणमहिभारा ॥
तासु बिरोध न कीजिय नाथा ❀ काल कर्म गुण जिनके हाथा ॥

दोहा–रामहिं सौंपहु जानकी, नाइ कमलपद माथ ॥
सुत कहँ राज्य देइ बन, जाइ भजहु रघुनाथ ॥ ७ ॥

---

१ पानी । वृक्ष । ३ दांतनसे । ४ बिसराइकै । ५ हाथपकरकै ।

नाथ दीनदयालु रघुराई ❋ बाघौ सन्मुख गये न खाई ॥
चहिय करण सो सब करि बीते ❋ तुम सुर असुर चराचर जीते ॥
वेद कहहिं अस नीति दशानन ❋ चौथेपनहिं जाइ नृप कानन ॥
तासु भजन कीजिय तहँ भर्त्ता ❋ जोकर्त्ता पालक संहर्त्ता ॥
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी ❋ भजहुनाथममता मद त्यागी ॥
मुनिवर यत्न कराहिं जेहि लागी ❋ भूप राज्य तजि होहिं विरागी ॥
सोइ कोशलाधीश रघुराया ❋ आये करन तोहिंपर दाया ॥
जो पिय मानहु मोर सिखावन ❋ होइहि सुयश तिहूं पुर पावन ॥

दोहा–अस कहि लोचन बारि भरि, गहि पद कंपित गात॥
नाथ भजहु रघुनाथ पद, मम अहि वात न जात ॥ ८॥

तब रावण मयसुता उठाई ❋ कहै लागु खल निज प्रभुताई ॥
सुनु तैं प्रिया मृषा भय माना ❋ जग योधा को मोहिं समाना ॥
वरुण कुबेर पवन यमकाला ❋ भुजबलजित्यहुँसकलदिगपाला ॥
देव दनुज नर सब बश मोरे ❋ कौन हेतु भय उपजा तोरे ॥
नानाविधिकहि तेहिसमुझाई ❋ सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥
मन्दोदरी हृदय अस जाना ❋ काल विवश उपजा अभिमाना ॥
सभा जाइ मंत्रिन सों बूझा ❋ करियकवनविधि रिपु सन जूझा ॥
कहहिंसचिवसुनिनिशिचरनाहा ❋ बार बार प्रभु पूंछहु काहा ॥
कहहुकवनभय करियविचारा ❋ नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दोहा–वचन सबन के श्रवण सुनि, कह प्रहस्त करजोरि ॥
नीति विरोध न करिय प्रभु, मंत्रिन मति अति थोरि ॥ ९॥

कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती ❋ नाथ न भल होइहि यहिभांती ॥
बारिधि लांघि एक कपि आवा ❋ तासु चरित मन महँ सबगावा ॥
क्षुधा न रही तुमहिं सब काहू ❋ जारत नगर न सकि धरि खाहू ॥
सुनत नीक आगे दुखपावा ❋ सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा ॥
जो बारीश बँधायउ हेला ❋ उतरे कपिदल सहित सुवेला ॥

१ बन । २ जल । ३ मिथ्या ।

सो जनु मनुज खावहमभाई ❀ वचन कहहु सब गाल फुलाई॥
सुनि मम वचन तात अति आदर ❀ निज मन गुणहु मोहिंकहिकादर॥
प्रियवाणी जे सुनहिं जे कहहीं ❀ ऐसे जग निकायनर अहहीं॥
"वचन परम हित सुनत कठोरे ❀ कहहिं सुनहिं ते नर प्रभुथोरे॥
प्रथम वसीठ पठव सुन नीती ❀ सीतहि देइ करिय पुनिप्रीती॥

दोहा–नारि पाइ फिरि जाहिं जो, तौ न बढाइय रार॥
नाहिं तो सन्मुख समर महँ, नाथ करिय हठ मार॥१०॥"

यहमत जो मानहु प्रभु मोरा ❀ उभय प्रकार सुयश जग तोरा॥
सुतसन कह दशकंधरिसाई ❀ असमत तोहिं शठ कौंन सिखाई
अबहीं ते उर संशय होई ❀ वेणुवंश सुत भयसि घमोई॥
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा ❀ चला भवन कहि वचन कठोरा॥
हित मत तोहिं न लागत कैसे ❀ कालविवश कहँ भेषज जैसे॥
संध्या समय जानि दशशीशा ❀ भवन चला निरखत भुज बीसा॥
लंका शिखर रुचिर आगारा ❀ अति विचित्र तहँ होय अखारा॥
बैठ जाइ तेहि मन्दिर रावन ❀ लागे किन्नर गँधरव गावन॥
बाजे ताल पखावज वीणा ❀ नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा॥

दोहा–सुनासीर शत सरिस सो, सन्तत करै विलास॥
परम प्रबल रिपुशीश पर, तदपि न कछु मन त्रास॥११॥

यहां सुवेल शैल रघुवीरा ❀ उतरे सेन सहित अति भीरा॥
शैल शृंग इक सुंदर देखी ❀ अति उतंग सम सुभग विशेषी॥
तहँ तरु किशलय सुमन सुहाये ❀ लक्ष्मण रचि निजहाथडसाये॥
तापर रुचिर मृदुल मृगछाला ❀ तेहि आसन आसीन कृपाला॥
प्रभुकृत शीश कपीश उछंगा ❀ वाम दहिन दिशि चाप निषंगा॥
दुहुँ कर कमल सुधारत वाना ❀ कह लंकेश मंत्र लगि काना॥
बडभागी अंगद हनुमाना ❀ चरणकमल चापत विधि नाना॥
प्रभु पाछे लक्ष्मण वीरासन ❀ कटि निषंग कर बाण शरासन॥

१ बहुतहैं। २ ओषधी। ३ इन्द्र। ४ भय। ५ अत्यन्त ऊंचा। ६ बराबर। ७कोमलपत्ता। ८ विराजमान भयेहैं। ९ सुग्रीव। १० गोद।

दोहा–इहि विधि करुणा शील गुण, धामराम आसीन ॥
ते नर धन्य जो ध्यानयहि, रहहिं सदा लवलीन ॥१२॥
पूरब दिशा विलोकि प्रभु, देखा उदित मयंक ॥
कह्यो सबहिं देखहु शशिहि, मृगपति सरिस अशंक १३

पूरब दिशिगिरिगुहानिवासी ❋ परम प्रताप तेज बलरासी ॥
मत्त नाग तम कुम्भ विदारी ❋ शशि केहरी गगन बनचारी ॥
विथुरे नभ मुकुताहल तारा ❋ निशि सुन्दरी केर शृंगारा ॥
कह प्रभु शशिमहँमेचकताई ❋ कहहु कहा निजनिज मति भाई॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराया ❋ शशि महँ प्रगट भूमिकी छाया ॥
मारेहु राहु शशिहि कहकोई ❋ उर महँ परी श्यामता सोई ॥
कोउ कह जब विधि रति मुख कीन्हा ❋ सारभाग शशि करहरि लीन्हा॥
छिद्रसो प्रकट इन्दु उरमाहीं ❋ तेहि मग देखियतनभ परिछाहीं॥
कोउ कह गरल बंधु शशिकेरा ❋ अति प्रिय निज उरदीन्हबसेरा॥
विष संयुक्त करनिकर पसारी ❋ जारत विरहवन्त नर नारी ॥

दोहा–कह मारुतसुत सुनहु प्रभु, शशि तुम्हार प्रियदास॥
तव मूरति तेहि उर बसत, सोइ श्यामता भास ॥ १४॥
पवनतनय के वचन सुनि, बिहँसे राम सुजान ॥
दक्षिण दिशा विलोकि पुनि, बोले कृपानिधान ॥ १५ ॥

देखु विभीषण दक्षिण आसा ❋ घन घमण्ड दामिनी विलासा ॥
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा ❋ होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा ॥
कहत विभीषण सुनहु कृपाला ❋ होइ न तडित न वारिद माला ॥
लंकाशिखर रुचिर आगारा ❋ तहँ दशकन्धर केर अखारा ॥
छत्र मेघ डम्बर शिर धारी ❋ सोजनुजलद घटा अति कारी॥
मन्दोदरी श्रवण ताटंका ❋ सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका॥
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा ❋ सोइ रव सरस सुनहु सुरभूपा॥
प्रभुमुसुकानदेखि अभिमाना ❋ चापँ चढाइ बाण सन्धाना ॥

१ निर्मल । २ चन्द्र । ३ सिंह । ४ श्यामता । ५ विधाता । ६ विष । ७ हनुमान । ८ स्थान । ९ सभा । १० गर्जब । ११ धनुष ।

दोहा-छत्र मुकुट ताटंक सब, हते एक ही बान ॥
सबके देखत महि गिरे, मर्म न काहू जान ॥ १६ ॥
यह कौतुक करि रामशर, प्रविश्यो आइ निषंग ॥
रावण सभा सशंक सब, देखि महा रसभंग ॥ १७ ॥

कम्प न भूमि न मरुत विशेषा ❋ अस्त्र शस्त्र कोउ नयन न देषा ॥
शोचहिं सब निज हृदय विचारी ❋ अशकुन भयउ भयंकर भारी ॥
रावणदीख सभा भय पाई ❋ बिहँसि वचन कह युक्तिबनाई ॥
शिरौ गिरे सन्तत शुभ जाही ❋ मुकुट गिरे कस अशकुन ताही ॥
शयन करहु निजनिज गृहजाई ❋ गवने भवन सकल शिरनाई ॥
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ ❋ जब ते श्रवणफूल महि खसेऊ ॥
सजल नयन कह युगकरजोरी ❋ सुनहु प्राणपति विनती मोरी ॥
राम विरोध कन्त परिहरहू ❋ जानि मनुज जनि हठ उरधरहू ॥

दोहा-विश्वरूप रघुवंश मणि, करहु वचन विश्वास ॥
लोक कल्पना वेद कह, अंग अंग प्रति जास ॥ १८ ॥

पदपाताल शीश अज धामा ❋ अपरलोक अंगन्ह विश्रामा ॥
भृकुटि विलास भयंकर काला ❋ नयन दिवाकर कच घन माला ॥
जासु घ्राण अश्विनी कुमारा ❋ निशिअरु दिवस निमेष अपारा ॥
श्रवण दिशा दश वेदवखानी ❋ मारुत श्वास निगम निजवानी ॥
अधर लोभ यमदशन कराला ❋ मायाहास बाहु दिगपाला ॥
आनन अनल अम्बुपति जीहा ❋ उतपति पालन प्रलय समीहा ॥
रोमावली अष्टदश भारा ❋ अस्थि शैल सरिता न सजारा ॥
उदर उदधि अघगोयातना ❋ जगमय प्रभु की बहुत कल्पना ॥

दोहा-अहंकार शिव बुद्धि अज, मन शशि चित्त महान ॥
मनुज बासचर अचर मय, रूपराशि भगवान ॥ १९ ॥
अस विचारि सुनु प्राणपति, प्रभु सन वैर विहाइ ॥
प्रीति करहु रघुवीरपद, मम अहिवात न जाइ ॥ २० ॥

बिहँसानारि वचन सुनिकाना ❋ अहो मोह महिमा बलवाना ॥

नारि स्वभाव सत्य कविकहईं ❋ अवगुण आठ सदा उर रहईं ॥
साहस[1] अनृत[2] चपलता[3] माया ❋ भय अविवेक अशौच अदाया ॥
रिपुकर रूप सकल तैं गावा ❋ अति विशालभय मोहिं सुनावा ॥
सो सब प्रिया सहजवश मोरे ❋ समुझि परा प्रभाव अब तोरे ॥
जानेउँ प्रिया तोरी चतुराई ❋ यहि मिसि कहेउ मोरि प्रभुताई ॥
तव बतकही गूढमृगलोचनि ❋ समुझत सुखद सुनत भय मोचनि ॥
मन्दोदरि मनमहँ अस ठयऊ ❋ पियहि कालवशमतिभ्रमभयऊ ॥

दो०-बहुविधि जल्पेसि[4] सकल निशि, प्रात भये दशकन्ध ॥
सहज अशंक सो लंकपति, सभा गयो मदअन्ध ॥ २१ ॥

सोरठा-फूलै फलै न बेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद ॥
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचिसम ॥ ३ ॥

अथ क्षेपक ॥

दोहा-मंत्रिन सहित दशानन, चढेउ धवरहर जाय ॥
सारन कह तब राज सन, देखहु कपि समुदाय ॥ २२ ॥

ये जो सिंहनाद किल करहीं ❋ सप्त ताल उन्नत संचरहीं ॥
सहस कोटि अतुलितबलवाना ❋ इनके सँग वानर परिमाना ॥
रण अजीत ये सहज अशंका ❋ नाद सुनैं कांपै गढलंका ॥
नभ निरखहु इनके लंगूरे ❋ जनु ऋतुपावस युग धनु पूरे ॥
विश्वकर्माके सुत गुण खानी ❋ इन्ह परसे पय शिल उतरानी ॥
बसहिं ताम्र गिरि कन्दर माहीं ❋ गोदावरी विमल जलपाहीं ॥
अतिबल आगे धावहिं बीरा ❋ इन पर कृपा करहिं रघुबीरा ॥
करहिं यमहु कर संगर ढीला ❋ कज्जल बरण नाम नल नीला ॥

दोहा-पद्म अठारह कपि कटक, चल इनकी भुजछाहँ ॥
निज कर सुरभी सुमन लै, रघुपति पूजी बाहँ ॥ २३ ॥

यह जो आवत अचलसमाना ❋ चौदह ताड ऊंच परिमाना ॥

---

१ विनाविचारे शीघ्र कामकरना। २ मिथ्या कहना। ३ चंचलस्वभाव।
४ अभिमान भरी बातें मन्दोदरीसे करतारहा।

बास पुलिन्दा के तट करई ❋ अम्बुद निकरनिरखि कर धरई ॥
रक्तकमल दल सम सब देहा ❋ जनुबिकसेउ संध्या कर मेहा ॥
हतै मेदिनी पूंछ भवांई ❋ लंका सौंह चितव जनु खाई ॥
तारा सुवन बालि को जायो ❋ अति जुझार रघुपति मन भायो ॥
हृदय गगन इहि के प्रभु भानू ❋ पंच पदुमइन कर परिमानू ॥
करै वज्र वासव कर भंगा ❋ उदयाचल कहँ लेइ उछंगा ॥
परम चतुर सेनप इहि लागी ❋ रघुपति कृपा परम बडभागी ॥

दोहा-पाउँ धराधरि चापै, पन्नग होइ अकाज ॥
सेन अग्रसर देखहु, यह अंगद युवराज ॥ २४ ॥

यह जो श्वेत बरण तनु रेखा ❋ मनहुँ रजत गिरि शृङ्ग विशेषा ॥
दीर्घकेश दारुण भुजदण्डा ❋ चपल चलत बलबुद्धि प्रचण्डा ॥
बास करै जलनिधि के तीरा ❋ पान करै गोमती सुनीरा ॥
नृप सुग्रीव केर अधिकारी ❋ सबल व्यूह यह रचै सँवारी ॥
जन्मत चन्द्रहिग्रसन उडाना ❋ इहिकर पुरुषारथ जगजाना ॥
निरखि गगन राकाशशिसोहा ❋ शिशु अजानतेहिलगिमनमोहा ॥
धरणी धसकिधरनजबउडेऊ ❋ सत्तरि योजन ते पुनि फिरेऊ ॥

दोहा-कोटि पंचशत मर्कट, रहइँ सर्वदा साथ ॥
कालहुते रण लरि सकै, कुमुद नाम कपिनाथ ॥२५॥

ये देखहु जे चहुँदिशि घुमडे ❋ मनहुं लंक सावन घन उमडे ॥
आगू पीछू दशदिशि धावहिं ❋ शिला शृङ्ग तरु तोरत आवहिं ॥
सहस नागबल सबहिसमाना ❋ सप्त पदुम इनकर परिमाना ॥
कासीपुरी बास इन्हकेरी ❋ समर कतहुँ जिन पीठ न फेरी ॥
तीक्ष्णदन्त नखायुध धारी ❋ द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी ॥
धूमकेतु यूथप इन्ह केरा ❋ लंकानिकट कीन्ह जेहिडेरा ॥
इहिकर जेठ बन्धु जमवन्ता ❋ तेहि के बल कर पावको अन्ता ॥
देव दनुज को जूझै ताही ❋ धरा होहि कर कंबुक जाही ॥
बसै अशंक नर्मदा तीरा ❋ अशनि समान अभेद शरीरा ॥

१ पृथ्वी । २ इन्द्र । ३ शेषनाग । ४ वज्र ।

दोहा-सचिव सुकण्ठ राजकर, रघुवर कर प्रियदास ॥
सो जडमन्द जो याहि रण, चह जीतन की आश॥२६॥

अब देखहु यह यूथ अपारा ❀ पीतबरण होइ गयउ पहारा ॥
बाल अरुणमरीचि जसफूटी ❀ निशिचर निकर तमी चहछूटी ॥
चौविस अर्बुद इनकर यूहा ❀ सहस बुन्द सम कोटि समूहा ॥
शिलाशैल जे आगे परहीं ❀ पाँयन मर्दि गर्द सम करहीं ॥
कंचन गिरि कन्दर के बासी ❀ इनकर यूथ नाथ अविनाशी ॥
अतिबल बासव करहितकारी ❀ सखा सुकण्ठ केर सुख कारी ॥
पान करे गंगाक्षर नीरा ❀ पर्वत शृंग समान शरीरा ॥
छिन छिन सिंहनाद जो होई ❀ गर्जत आवत है कपि सोई ॥

दोहा-यश तिहुँ मण्डल गलित गज,बल कर नाहिं न अंत
यह कपिराजा केशरी, सुवन जासु हनुमंत॥ २७॥

उत्तर दिशि देखहु रजधानी ❀ जनु दुकाल लगिशैलभउडानो ॥
मर्कट निकर विकल बल टूटे ❀ आवत उदधि कूल जनु छूटे ॥
इहिदल यूथ नाथ जो अहई ❀ अतिबलवंत राजसँग रहई ॥
कपिके रूप अनल अविनाशी ❀ एदोउ पारिपात्र के बासी ॥
अति सुन्दर अरु समर विपक्षा ❀ महाबली दोउ गवयगवाक्षा ॥
ये दोउ गर्जत अति रणधीरा ❀ पीवहिं तुंग भद्र कर नीरा ॥
सत्तरिसहस नागबल जाही ❀ इनमहँ एक कहौं मैं ताही ॥
अपर बली गंधमादन नामा ❀ रण अजेय पुनि सब गुणधामा ॥

दोहा-वासन विबुध वृन्द महँ, तेजनमहँ जस भानु ॥
पनस नाम यह वानर, अति बल नीति निधानु॥ २८॥

यह जो कुमुदपत्र सम देहा ❀ जस कैलास शरद कर मेहा ॥
लोचन मधु पिंगल अतिलोने ❀ कामरूप चितवत चहुँ कोने ॥
लंका सौंह लँगूर फिराई ❀ गर्जत प्रलय मेघ की नाई ॥
सुरपति साथ युद्ध कहँ गयऊ ❀ तब ते कामरूप यह भयऊ ॥

---

१ सुग्रीव । २ पुत्र । ३ टीडी ।

मघवा इहिसन कीन्ह मिताई ❋ करै सदा यह दैव सहाई ॥
सहस कोटि कपिइहिकेसंगा ❋ राते पीत श्वेत बहुरंगा ॥
वचन मृषा मम प्रभुयहनाहीं ❋ अपरखालि जानहु मन माहीं ॥
दरदुर शैल सदन इहि केरा ❋ मन वच कर्म्म राम करचेरा ॥

दोहा-गिरिवर लाँघत आवत, चलत उडावत रेणु ॥
तरणि तेज इन रूंधेउ, तारातनय सुषेणु ॥ २९ ॥

यह कपि लसत मनहुँ गिरिगेरू ❋ दिनमुखछबि जस लहत सुमेरू ॥
सोइकपि प्रथमलंक जेहिजारी ❋ प्रभुकेहि लगि आवत इहिबारी ॥
अंजनि गर्भ जन्म जब भयऊ ❋ क्षुधित जननिसन अरतसठयऊ ॥
तेहँकहसुपक अरुण फलखाहू ❋ सुनत चितवइतउत चितचाहू ॥
बाल अरुण लखि गगन उडाना ❋ ग्रसेसि तरणि वासव तब जाना ॥
मारेउ वज्र चिबुक भइ टेढी ❋ कोपि पवन समीर सम वेढी ॥
देव विकल होइ अस्तुतिकीन्हा ❋ कुलिशहोउ तनु असबरदीन्हा ॥
तब रवि छाँडि पवनसुत दीन्हा ❋ जय जयकार देवतन कीन्हा ॥
विद्या पढत भानु के पाहीं ❋ उलटी गति रवि आगे जाहीं ॥
बारिधि लाँघेउ गोपद जैसे ❋ यहि कपीश सन जूझब कैसे ॥

दोहा-अंबक पीत बालरवि, बदन तेज अति राज ॥
पवनते वेग अधिक जनु, अनल नितंब सुभ्राज ॥ ३० ॥

अतसी कुसुम बरण तनु रेखा ❋ पुरुष पुराण धरे नर वेषा ॥
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुजदण्डा ❋ धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा ॥
उरविशाल अति उन्नत कंधर ❋ कम्बु कण्ठ रेखा प्रसन्नवर ॥
मुख छबि की उपमा कविजो है ❋ शशि सरोज सम कहैं नसोहै ॥
दशनं पांति की कांति कहै को ❋ ललकत मन पटतरिय लहैको ॥
देखत अधरन की अरुणाई ❋ बिम्बाफल बन्धूक लजाई ॥
शुक तुण्डहि नासिका लजावै ❋ थके सुकवि नहिं पटतर आवै ॥
शीश जटा के मुकुट बनाये ❋ भाल विशाल तिलक अति भाये ॥

१ शंख । २ ओष्ठनकी । ३ कुँदरू । ४ उपमा ।

दक्षिण दिशि लक्ष्मण बलवीरा ❋ रामबाहु सम अति रणधीरा ॥

दोहा-वाम भाग बिभीषण, शिर अभिषेका राज ॥
बीज मंत्र सब जानहिं, अकसरकरहिं सुकाज ॥ ३१ ॥

अब देखहु यह सेन सुहाई ❋ भादों मेघ घटा जनु छाई ॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई ❋ नयन भूरि अरु रूप लुनाई ॥
बाल भाव दिनकर बल दीन्हा ❋ ऋतु जानी वासव रति कीन्हा ॥
जातक जमल वीर दोउ जाये ❋ देव अंश बानर तनु पाये ॥
किष्किन्धापर इनकर थाना ❋ देव सरिस मधुवन उद्याना ॥
ऋष्यमूक इनकर विश्रामा ❋ चातुर्मास बसे जहँ रामा ॥
बाली ज्येष्ठ राम रणमारा ❋ यहि कहँ राज तिलक प्रभुसारा ॥
तारा तासु भई पटरानी ❋ जेहि कर सुत अंगद अतिज्ञानी ॥
सहस शंकु कर अरबुद एका ❋ अरबुद सहस कि बिन्दु विवेका ॥
सहस बिन्दु गणकन गणि माना ❋ महा पद्म तेहि कर परिमाना ॥
ऐसे पद्म अठारह साजा ❋ विग्रह बढेउ राम के काजा ॥
वीर वेष अरु नयन विशाला ❋ कम्बु कण्ठ मोतिन की माला ॥

दोहा-हस्ती साठि सहस्र बल, सदा धर्म्म की सींव ॥
श्वेत छत्र शिर शोभित, यह राजा सुग्रीव ॥ ३२ ॥
इहि विधि सकल दिखाये, सारन कपिदलयूह ॥
गनै न रावण कालवश, अतिशय गर्व्व समूह ॥ ३३ ॥

इति क्षेपक ॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई ❋ पूंछा मत सब सचिव बुलाई ॥
कहहु वेगि का करिय उपाई ❋ जाम्बवन्त कह पद शिरनाई ॥
सुनु सर्व्वज्ञ सकल उरवासी ❋ सर्व्व रूप सब रहित उदासी ॥
मंत्र कहब निज मति अनुसारा ❋ दूत पठाइय वालि कुमारा ॥
नीकमंत्र सब के मनमाना ❋ अंगद सन कह कृपानिधाना ॥
वालितनय बुधि बल गुणधामा ❋ लंका जाहु तात ममकामा ॥
बहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊं ❋ परम चतुर मैं जानत अहऊं ॥

काज हमार तासु हित होई ❋ रिपुसन करेहु बतकही सोई ॥

सो०–प्रभु आज्ञा धरिशीश, चरण वन्दि अंगद कह्यउ ॥
सोइ गुण सागर ईश, राम कृपा जापर करहु ॥ ४ ॥
स्वयंसिद्धि सब काज, नाथ मोहिं आदर दयउ ॥
अस विचारि युवराज, तनु पुलकित हर्षित भयउ ॥५॥

वन्दि चरण उरधरि प्रभुताई ❋ अंगद चलेउ सबहि शिरनाई ॥
प्रभु प्रताप उर सहज अशंका ❋ रणबाँकुरा बालिसुत बंका ॥
पुर बैठत रावणकर बेटा ❋ खेलत रहा सो होइ गइ भेटा ॥
बातहिं बात कर्ष बढ़ि आई ❋ युगल अतुल बल पुनि तरुणाई ॥
तेहि अंगद कहँ लात उठाई ❋ गहिपद पटकेउ भूमि भ्रमाई ॥
निशिचर निकर देखि भटभारी ❋ जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥
एक एक सन मर्म न कहहीं ❋ समुझितासु बल चुप होइ रहहीं ॥
भयउ कोलाहल नगर मझारी ❋ आवा कपि लंका जेइँजारी ॥
अबधौं कहा करिहि करतारा ❋ अति सभीत सबकरहिं विचारा ॥
बिन पूंछे मगु देहिं बताई ❋ जेहि बिलोकि सोइ जाइ सुखाई ॥

दोहा–गयो सभा दरबार रिपु, सुमिरि रामपदकंज ॥
सिंहठवनि इत उत चितै, धीर बीर बलपुंज ॥ ३४ ॥

तुरत निशाचर एक पठावा ❋ समाचार रावणहिं सुनावा ॥
सुनत वचन बोलेउ दशशीशा ❋ आनहु बोलि कहाँकर कीशा ॥
आयसु पाइ दूत बहु धाये ❋ कपि कुंजरहि बोलि लै आये ॥
अंगद दीख दशानन बैसा ❋ सहित प्राण कज्जलगिरि जैसा ॥
भुजा विटप शिर शृंगसमाना ❋ रोमावली लता तरु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरु काना ❋ गिरिकन्दरा खोह अनुमाहिं ॥
गयउ सभा मन नेकु न मुरा ❋ बालितनय अतिबल बां[illegible] ॥
उठी सभा सब कपि कहँ देखी ❋ रावण उरभा क्रोध वि[illegible] ॥

दोहा–यथा मत्त गजयूथ महँ, पंचानन चलि जाय ॥

---

१ युद्धक्रियामें प्रवीण। २ प्रहस्त। ३ क्रोध। ४ भेद। ५ हल्ला। ६ रास्ता ७ [illegible] ८ पर्वतकाकँगूरा। ९ सिंह।

रामप्रताप सँभारि उर, बैठ सभहि शिरनाय ॥ ३५ ॥

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर ❁ मैं रघुवीर दूत दशकन्धर ॥
मम जनकहि तोहिं रहीमिताई ❁ तवहित कारण आयउँ भाई ॥
उत्तम कुल पुलस्त्यकर नाती ❁ शिव विरंचि पूजेहु बहु भांती ॥
वर पायउ कीन्हेंउ सब काजा ❁ जीतेहु लोकपाल सुरराजा ॥
नृप अभिमान मोहवश किम्बा ❁ हरि आनेहु सीता जगदम्बा ॥
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा ❁ सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा ॥
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी ❁ पुरजन संग सहित निज नारी ॥
सादर जनकसुता करि आगे ❁ इहि विधि चलहु सकल भय त्यागे

दोहा-प्रणतपाल रघुवंशमणि, त्राहि त्राहि अब मोहिं ॥
सुनतहि आरतवचन प्रभु, अभय करहिंगे तोहिं ॥ ३६ ॥

रेकपि पोच बोलु सँभारी ❁ मूढ न जानसि मोहिं सुरारी ॥
कहु निजनाम जनक करभाई ❁ केहि नाते मानिये मिताई ॥
अंगद नाम बालि कर बेटा ❁ तोसों कबहु भई होइ भेटा ॥
अंगद वचन सुनत सकुचाना ❁ रहा बालि वानर मैं जाना ॥
अंगद तुहीं बालि कर बालक ❁ उपजेउ वंश अनल कुलघालक ॥
गर्भ न खसेउ वृथा तुम जाये ❁ निजमुख तापसदूत कहाये ॥
अब कहु कुशल बालि कहँ अहई ❁ बिहँसि वचन अंगद असकहई ॥
दिन दश गये बालि पहँ जाई ❁ पूंछेहु कुशल सखा उर लाई ॥
राम विरोध कुशल जस होई ❁ सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई ॥
इः सुन शठ भेद होइ मन ताके ❁ श्रीरघुवीर हृदय नहिं जाके ॥

कहहु [illegible]हा-हम कुलघालक सत्य तुम, कुलपालक दशशीश ॥
सुनु स[illegible]उ बधिर न कहहिं अस, श्रवण नयन तव बीश ॥ ३७ ॥
मंत्र कहह

नीकमंत्र बेरंचि सुर मुनि समुदाई ❁ चाहत जासु चरण सेवकाई ॥
बालितनय[illegible]त होइ हम कुलबोरा ❁ ऐसी मति उर बिहरु न तोरा ॥
बहुत बुझाइ[illegible]ठोरवाणी कपि केरी ❁ कहत दशानन नयन तरेरी ॥

१ पिता । २ विकल । ३ बहिरा ।

खल तव वचन कठिन मैं सहऊं ❀ नीति धर्म सब जानत अहऊं ॥
कह कपि धर्मशीलता तोरी ❀ हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी ॥
देखेउ नयन दूत रखवारी ❀ बूडि न मरेहु धर्म्मव्रत धारी ॥
नाक कान बिन भगिनि निहारी ❀ क्षमा कीन्ह तुम धर्म विचारी ॥
धर्म शीलता तव जग जागी ❀ पावा दरश हमहुँ बडभागी ॥

दोहा—जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि, शठविलोकु ममबाहु
लोकपाल बल विपुल शशि, ग्रसन हेतुजिमिराहु ॥ ३८ ॥
पुनि नभ सर ममकर निकर, कर कमलन पर वास ॥
शोभित भयो मरालइव, शम्भु सहित कैलास ॥ ३९ ॥

तुम्हरे कटक माहिं सुनु अंगद ❀ मोसन भिरहि कौन योधा वद ॥
तव प्रभु नारि विरह बलहीना ❀ अनुजतासु दुख दुखितमलीना ॥
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ ❀ बन्धु हमार भीरु[1] अति सोऊ ॥
जाम्बवन्त मंत्री अतिबूढा ❀ सो किमि होइ समर आरूढा ॥
शिल्पकर्म जानत नलनीला ❀ है कपि एक महाबल शीला ॥
आवा प्रथम नगर जेहिजारा ❀ सुनि हँसि बोलेउ वालिकुमारा ॥
सत्यवचन कहनिशिचर नाहा ❀ साँचहु कीश कीन्ह पुरदाहा ॥
रावण नगर अल्प कपि दहई ❀ को अस झूंठ कहै को सुनई ॥
जो अति सुभट सराहेहु रावन ❀ सो सुग्रीव केर लघुधावन ॥
चलै बहुत सो वीर न होई ❀ पठवा खबरि लेन हम सोई ॥

दोहा—अब जाना पुरदहेउ कपि, बिनु प्रभु आयसु[2] पाई ॥
गयउ न फिर निजनाथ पहुँ, तेहि भय रहेउ लुकाइ ॥ ४० ॥
सत्य कहसि दशकण्ठतैं, मोहिं न सुनि कछु कोह[3] ॥
कोउ न हमरे कटक अस, तुमसन लरत जो सोह ॥ ४१ ॥
प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि ॥
जो मृगपति[4] वध मेडुकहि, भलो कहै को ताहि ॥ ४२ ॥
यद्यपि लघुता रामकहँ, तोहिं बधे बड दोष ॥

१ डरपोक । २ आज्ञा । ३ क्रोध । ४ सिंह ।

तदपि कपिन दशकण्ठसुन, क्षत्रि जाति कर रोष॥४३॥
वक्र उक्ति धनुवचनशर, हृदय दह्यउ रिपुकीश ॥
प्रतिउत्तर सडसी मनहुँ, काढत भट दशशीश॥४४॥
हँसि बोलेउ दशमौलि तव, कपिकर बड गुण एक॥
जो प्रतिपालै तासु हित, करै उपाय अनेक॥४५॥

धन्यकीश जो निजप्रभुकाजा ❀ जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा॥
नाचि कूदि करि लोग रिझाई ❀ पतिहित करत कर्म निपुणाई॥
अंगद स्वामि भक्त तव जाती ❀ प्रभुगुण कसन कहसि इहिभांती॥
मैं गुणगाहक परम सुजाना ❀ तव कटुवचन करौं नहिं काना॥
कह कपि तव गुण गाहकताई ❀ सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई॥
वन विध्वंसि सुत वधि पुरजारा ❀ तदपिनतेइँकृत कछु अपकारा॥
सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई ❀ दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई॥
देखेउँ आइजो कछु कपि भाषा ❀ तुम्हरे लाज न रोष न माषा॥
जो असिमति पितुखायहु कीशा ❀ कहि अस बचन हँसा दशशीशा॥
पितहि खाइखातेउँ अबतोहीं ❀ अबहीं समुझि परा कछु मोहीं॥
वालि विमलयश भाजन जानी ❀ हतौं न तोहिं अधम अभिमानी॥
सुनुरावण रावण जग केते ❀ मैं निज श्रवण सुने सुन तेते॥
बलिजीतन यक गयउ पताला ❀ राखा बांधि शिशुन हयशाला॥
खेलहिं बालक मारहिं जाई ❀ दयालागि बलि दीन छुडाई॥
एक वहोरि सहसभुज देखा ❀ धाइ धराजनु जन्तु विशेखा॥
कौतुक लागि भवनै लैआवा ❀ सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुडावा॥

दोहा—एक कहत मोहिं सकुच अति, रहा वालिकी कांख॥
तिनमहँ रावण कवन तैं, सत्य कहहु तजि माख॥४६॥

सुनुशठ सोइ रावणबल शीला ❀ हर गिरि जानु जासु भुजलीला॥
जान उमापति जासु शुराई ❀ पूजे जेहि शिर सुमन चढाई॥
शिर सरोज निजकरन उतारी ❀ पूजे अमित बार त्रिपुरारी॥

१ रावण। २ बालकन। ३ गृह।

भुजविक्रम जानहिं दिगपाला ❀ शठ अजहूं जिनके उरशाला ॥
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई ❀ जब जब जाइभिरेउँ बरिआई ॥
जिनके दशन कराल न फूटे ❀ उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासुचलत डोलत इमिधरणी ❀ चढतमत्त गज जिमि लघु तरणी॥
सोइ रावण जगविदितप्रतापी ❀ सुनेन श्रवण अलीक अलापी ॥

दोहा—तेहि रावण कहँ लघु कहसि, नर करकरासिबखान॥
रे कपि बर्बर खर्ब्ब खल, अब जाना तव ज्ञान॥ ४७ ॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी ❀ बोल सँभारी अधम अभिमानी ॥
सहसबाहु भुज गहन अपारा ❀ दहन अनल सम जासु कुठारा ॥
जासु परशु सागर खरधारा ❀ बूडे नृप अगणित बहु बारा ॥
तासु गर्ब जेहि देखत भागा ❀ सो नर किमि दशकंठ अभागा ॥
राम मनुज कसरे शठबंगा ❀ धन्वी काम नदी पुनि गंगा ॥
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा ❀ अन्नदान पुनि रस पीयूषा[१] ॥
वैनतेय[२] खग अहि सहसानन ❀ चिन्तामणि की उपलै[३] दशानन ॥
सुन मतिमन्द लोक वैकुण्ठा ❀ लाभ कि रघुपति भक्ति अकुण्ठा ॥

दोहा—सेन सहित तव मान मथि, वन उजारि पुरजारि ॥
कस रे शठ हनुमान कपि, गयउजोतवसुतमारि ॥४८॥

सुनु रावण परिहरि चतुराई ❀ भजसि न कृपासिन्धु रघुराई ॥
जो खल भयसि रामकरद्रोही ❀ ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥
मूढ मृषा जनि मारसि गाला ❀ रामवैर होइहि अस हाला ॥
तवशिरनिकर कपिनकेआगे ❀ परिहैं धरणि राम शर लागे ॥
ते तव शिर कन्दुकइव[४] नाना ❀ खेलहिं भालु कीश चौगाना ॥
जबहिं समर कोपहिंरघुनायक ❀ छूटहिं अति कराल बहुशायक ॥
तब किचलहि असगाल तुम्हारा ❀ असबिचारि भजुराम उदारा ॥
सुनत बचन रावण पर जरा ❀ बरत अनल महँ जनु घृत परा ॥

दोहा—कुम्भकर्ण समबन्धु मम, सुत प्रसिद्ध शक्रारी ॥

---

१ अमृत । २ गरुड । ३ पत्थर । ४ गेंदकेतुल्य ।

मोर पराक्रम सुनेसि नहिं, जितेउँ चराचर झारि॥४९॥

शठ शाखामृग जोरि सहाई ❋ बांध्यो सिन्धु इहै प्रभुताई ॥
नांघहिं खग अनेक बारीशा ❋ शूर न होहिं सुनहु जड कीशा ॥
ममभुज सागर बल जल पूरा ❋ जहँ बूडे सुरनर बर शूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा ❋ को असबीर जो पावहि पारा ॥
दिगपालन मैं नीर भरावा ❋ भूप सुयश खल मोहिं सुनावा ॥
जोपै समर सुभटतवनाथा ❋ पुनिपुनि कहसि जासुगुण गाथा ॥
तौ वसीठ पठवत केहि काजा ❋ रिपुसन प्रीति करतनहिं लाजा ॥
हर गिरिमथन निरखि ममबाहू ❋ पुनिशठ कपिनिजस्वामिसराहू ॥

दोहा—शूर कवन रावण सरिस, निजकर काटे शीश ॥
हुनेउँ अनल महँ बारबहु, हर्षित साखि गिरीश ॥५०॥

जरत विलोकेउँ जबहिंकपाला ❋ विधिकेलिखे अंक निजभाला ॥
नर के कर आपन बध बांची ❋ हँसेउँ जानि विधि गिराअसांची ॥
सो मन समुझित्रासनहिं मोरे ❋ लिखा विरंचि जरठ मतिभोरे ॥
आन बीर को शठ मम आगे ❋ पुनि पुनि कहसिलाज परित्यागे ॥
कह अंगद सलज्ज जगमाहीं ❋ रावण तोहिं समान कोउ नाहीं ॥
लाजवन्त तव सहजस्वभाऊ ❋ निजगुण निजमुख कहसिनकाऊ ॥
शिर अरु शैल कथा चित रही ❋ ताते बार बीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेउ उर घाली ❋ जितेउ न सहसबाहु बलि बाली ॥
सुन मतिमन्द देह अबपूरा ❋ काटे शीश न होइय शूरा ॥
बाजीगर कहँ कहियनबीरा ❋ काटै निजकर सकल शरीरा ॥

दोहा—जरहिं पतंग विमोहवश, भार बहहिं खरवृन्द ॥
ते नहिं शूरकहावहीं, समुझ देखु मतिमन्द ॥ ५१ ॥

अबजनि बतबढाव खलकरई ❋ सुनि ममवचन मान परिहरई ॥
दशमुख मैं न बसीठी आयउ ❋ असबिचारि रघुबीर पठायउ ॥
बार बार इमि कहहिं कृपाला ❋ नहिं गजारि यश बधे शृगाला ॥

१ अग्नि । २ बूढापा । ३ गदहा । ४ सिंह ।

मनमहँ समुझि वचन प्रभु केरे ❀ सहेउँ कठोर वचन शठ तेरे ॥
नाहिं तोकरि मुखभंजन तोरा ❀ लै जतिउँ सीतहि बरजोरा ॥
जानेउँ तव बल अधमसुरारी ❀ सूने हरि आनी परनारी ॥
तैं निशिचर पति गर्व बहूता ❀ मैं रघुपति सेवककर दूता ॥
जो न राम अपमानहिं डरऊं ❀ तोहिं देखत अस कौतुक करऊं ॥

दोहा—तोहिं पटकि महि सेन हति, चौपट करि तव गाँउँ ॥
मन्दोदरी समेत शठ, जनकसुतहि लै जाउँ ॥ ५२ ॥

जो अस करउँ न तदपिबडाई ❀ मुयेहि बधे कछु नहिं मनुसाई ॥
कौल कामवश कृपणविमूढा ❀ अति दरिद्र अयशी अति बूढा ॥
सदा रोगवश सन्तत क्रोधी ❀ राम विमुख श्रुति सन्त विरोधी ॥
निज तनु पोषक निर्दय खानी ❀ जीवत शव सम चौदह प्रानी ॥
अस विचारि खलबधौंन तोहीं ❀ अब जनि रिस उपजावसि मोहीं ॥
सुनिसकोप कहनिशिचर नाथा ❀ अधरदशन गहि मींजत हाथा ॥
रे कपि पोचमरणअबचहसी ❀ छोटे बदन बात बडि कहसी ॥
कटुजल्पसि जडकपिबल जाके ❀ बुधि बल तेज प्रताप न ताके ॥

दोहा—अगुण अमान विचारि त्यहि, दीन पिता वनवास ॥
सोदुख अरु युवती विरह, पुनि निशिदिन ममत्रास ॥ ५३ ॥
जिनके बल कर गर्व तोहिं, ऐसे मनुज अनेक ॥
खाहिं निशाचर दिवस निशि, मूढ समुझु तजि टेक ॥ ५४ ॥

जब तेहिं कीन्ह रामकी निन्दा ❀ क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा ॥
हरि हर निंदा सुनै जो काना ❀ होय पाप गोघात समाना ॥
कटकटाइ कपिकुंजर भारी ❀ दोउ भुजदण्ड तमकि महिमारी ॥
डोलत धरणि सभासद खसे ❀ चले भागि भय मारुत ग्रसे ॥
गिरत दशानन उठ्योसँभारी ❀ भूतल परेउ मुकुट षटचारी ॥
कछु निजकरलै शिरनसँभारे ❀ कछु अंगद प्रभु पास पँवारे ॥
आवत मुकुट देखि कपि भागे ❀ दिनहीं लूक परन अब लागे ॥

२ मुर्दा । २ दलिद्री । ६ अंगद ।

की रावण करि कोप चलाये * कुलिश चारि आवत अतिधाये ॥
कह प्रभुहँसि जनिहृदय डराहू * लूक न अशनि केतु नहिं राहू ॥
ये किरीट दशकन्धर केरे * आवत वालितनय के प्रेरे ॥

दोहा–कूदि गहे कर पवनसुत, आनि धरे प्रभु पास ॥
कौतुक देखहिं भालु कपि, दिनकर सरिसप्रकास ॥ ९५ ॥

वहां कहत दशकन्ध रिसाई * धरि मारहु कपि भागि न जाई ॥
इहि विधिवेगि सुभट सब धावहु * खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु ॥
महि अकीश करि फेरि दोहाई * जियत धरहु तापस दोउ भाई ॥
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा * गाल बजावत तोहिं न लाजा ॥
मरुगलकाटि निलजकुलघाती * बल विलोकि विदरत नहिं छाती ॥
रेतिय चोर कुमारग गामी * खलमलराशि मन्दमति कामी ॥
सन्निपात जलपसि दुर्वादा * भयसि काल वश शठमनु जादा ॥
याको फल पावहुगे आगे * बानर भालु चपेटन लागे ॥
राम मनुज बोलत अस बानी * गिरहि न तव रसना अभिमानी ॥
गिरिहै रसना संशय नाहीं * शिरन समेत समर महि माहीं ॥

सो०–सो नर क्यों दशकन्ध, बालि बधेउजेहि एकशर ॥
बीसहु लोचनअन्ध, धृक तव जन्म कुजाति जड ॥ ६ ॥
तव शोणितकी प्यास, तृषित रामशायक निकर ॥
तजेउँ तोहिं तेहि आश, कटु जल्पसि निशिचरअधम ॥ ७ ॥

म तवदशन तोरिबे लायक * आयसु पै न दीन रघुनायक ॥
असरिस होत दशौ मुख तोरौं * लंका गहि समुद्र महँ बोरौं ॥
गूलरफल समान तव लंका * वसहिंमध्य जनु जन्तु अशंका ॥
मैं बानर फल खात नबारा * आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई * मूढ सिखेसि कहँ बहुत झुठाई ॥
बालि कबहुँ असगालनमारा * मिलि तपसिनतैं भयसिलबारा ॥
सांचउ मैं लवार दशशीशा * जो न उपारों तव भुज बीशा ॥

१ वज्र । २ मुकुट । ३ फेंके । ४ सूर्य्य । ५ जिव्हा । ६ झूंठ ।

राम प्रताप सुमिरिकपिकोपा ❋ सभा मांझ प्रणकरि पदरोपा ॥
जो ममचरण सकसि शठटारी ❋ फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा ❋ पदगहि धरणि पछारहु कीशा॥
इन्द्रजीत आदिक बलवाना ❋ हर्षि उठे जहँ तहँ भटनाना ॥
झपटहिं करि बलविपुल उपाई ❋ पद नटरै बैठहिं शिरनाई ॥
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती ❋ टरै न कीश चरण इहि भांती॥
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी ❋ मोह विटप नहिं सकहिं उपारी ॥

दोहा–भूमि न छाँडे कपि चरण, देखत रिपु मद भाग ॥
कोटि विघ्न जिमि सन्त कहँ, तदपि नीति नहिं त्याग ॥ ५६

कपिबल देखि सकल हियहारे ❋ उठा आप कपिके परचारे ॥
गहत चरण कह वालिकुमारा ❋ ममपद गहे न तोर उबारा ॥
गहसि न राम चरण शठ जाई ❋ सुनत फिरा मन अति सकुचाई॥
भयो तेजहत श्री सबगई ❋ मध्य दिवस जिमिशशिसोहई ॥
सिंहासन बैठा शिरनाई ❋ मानहु सम्पति सकल गँवाई ॥
जगदाधार प्राणपति रामा ❋ तासु विमुख किमिलह विश्रामा॥
उमा रामकर भृकुटि विलासा ❋ होइ विश्व पुनि पावै नाशा ॥
तृणते कुलिशकुलिश तृणकरहीं ❋ तासुदूत पद कहु किमि टरहीं ॥
पुनि कपिकही नीति विधिनाना ❋ मानतनाहिं काल नियराना ॥
रिपु मदमथि प्रभु सुयश सुनाये ❋ असकहि चले वालि नृपजाये ॥
अबहीं मुख का करौं बडाई ❋ हतिहौं तोहिं खेलाइ खेलाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा ❋ सो सुनि रावण भयो दुखारा ॥
यातुधान अंगद बल देखी ❋ भयाकुल अति हृदय विशेषी॥

दोहा–रिपुबल धर्षि हर्षि हिय, वालितनय बलपुंज ॥
सजल नयन तनुपुलकअति, गहे राम पदकंज ॥ ५७ ॥
सांझ जानि दशकण्ठ तब, भवन गयो बिलखाइ ॥
मन्दोदरी अनेक विधि, बहुरि कहा समुझाइ ॥ ५८ ॥

१ देवतोंकेवैरी । २ पाखण्ड

१ पर्वत ।

कन्तसमुझि मनतजहुकुमतिही ❋ सोहन समर तुमहिं रघुपतिही ॥
राम अनुज धनु रेख खँचाई ❋ सो नहिं लाँघेहु अस मनुसाई ॥
पिय तेहिते जीतब संग्रामा ❋ जाके दूतनके असकामा ॥
कौतुक सिंधु लाँघि तवलंका ❋ आयउ कपि केहरी अशंका ॥
रखवारे हति विपिन हजारा ❋ देखत तुमहिं अक्षजिन मारा ॥
जारि नगर जेइँ कीन्हेसि छारा ❋ कहाँरहा बल गर्व तुम्हारा ॥
अबपति मृषागालजनि मारहु ❋ मोर कहाकछु हृदय विचारहु ॥
पतिरघुपतिहि मनुज जनि जानहु ❋ अगजगनाथ अतुल बलमानहु ॥
बाणप्रताप जान मारीचा ❋ तासु कहा नहिं मानेहु नीचा ॥
जनकसभा अगणित महिपाला ❋ रहेउ तहाँ तुम गर्व विशाला ॥
भंजि धनुष जानकी विवाही ❋ तब संग्राम न जीत्यउ ताही ॥
सुरपति सुत जानै बल थोरा ❋ राखा जियत आँखियकफोरा ॥
शूर्पणखाकी गति तुम देखी ❋ तदपि हृदय नहिं लाज विशेखी॥

दोहा—बधि विराध खर दूषणहि, लीला हतेउ कबन्ध ॥
बालि एक शर मारेउ, तेहि नर कह दशकन्ध ॥ ५९ ॥

जेहि जल नाथ बँधायो हेला ❋ उतरेउ कपि दल सहित सुवेला ॥
कारुणीक दिनकर कुलकेतू ❋ दूत पठायउ तव हित हेतू ॥
सभा मांझ जेइँ तब बलमथा ❋ करि वरूथ महँ मृगपति यथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके ❋ रण बांकुरे बीर अति बांके ॥
तेहि कहँ पियपुनि पुनि नर कहहू ❋ मृषा मान ममता मदगहहू ॥
अहह कन्त कृत राम विरोधा ❋ कालविवश मन होइ न बोधा ॥
कालदण्ड गहि काहु न मारा ❋ हरै धर्म्म बल बुद्धि विचारा ॥
निकट काल जेहि आवत साईं ❋ तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं ॥

दोहा—दुइ सुत मारेउ पुर दहेउ, अजहुँ पीय सिय देहु ॥
कृपासिंधु रघुबीर भजि, नाथ विमलयशलेहु ॥ ६० ॥

नारिवचन सुनि विशिखसमाना ❋ सभागयो उठि होत विहाना ॥

१ वज्र। २ मुकुट। ३ फेंके। ४ सूर्य्य। ५ जिहै मोर।

बैठा जाइ सिंहासन फूली ❋ अति अभिमान त्रास सब भूली ॥
वहां राम अंगदहि बुलावा ❋ आइ चरण पंकज शिरनावा ॥
अति आदर समीप बैठारी ❋ बोले बिहँसि कृपालु खरारी ॥
बालितनय अति कौतुक मोहीं ❋ तात सत्य कहु पूंछौं तोहीं ॥
रावण यातुधान कुल टीका ❋ भुजबल अतुल जासु जगलीका ॥
तासु मुकुट तुम चारि चलाये ❋ कहहु तात कवनी विधि पाये ॥
कहा बालिसुत सुनहु खरारी ❋ मुकुट नहोइँ भूपगुण चारी ॥
साम दाम अरु दण्ड विभेदा ❋ नृप उर बसहिं नाथ कह वेदा ॥
नीति धर्म्मके चरण सुहाये ❋ अस जिय जानि नाथ पहँ आये ॥

दोहा—धर्महीन प्रभुपद विमुख, काल विवश दशशीश ॥
आये गुण तजि रावणहिं, सुनहु कोशलाधीश ॥ ६१ ॥
परम चतुरता श्रवण सुनि, बिहँसे राम उदार ॥
समाचार तब सब कहेउ, गढके बालिकुमार ॥ ६२ ॥

रिपुके समाचार जब पाये ❋ राम सचिव तब निकट बुलाये ॥
लंका बंका चारि दुआरा ❋ केहि विधि लागिय करहु विचारा ॥
तब कपीश ऋक्षेश बिभीषण ❋ सुमिरि हृदय दिनकर कुलभूषण ॥
करि विचार तिन मंत्र दृढावा ❋ चारि अनी कपि कटकबनावा ॥
यथायोग्य सेनापति कीन्हे ❋ यूथप सकल बोलि तिन लीन्हे ॥
प्रभुप्रताप सबकहि समुझाये ❋ सिंहनाद करि सब कपिधाये ॥
हर्षित रामचरण शिर नावैं ❋ गहि गिरि शिखर भालु कपि धावैं ॥
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा ❋ जयरघुवीर कोशलाधीशा ॥
जानत परमदुर्ग गढलंका ❋ प्रभु प्रताप कपि चले अशंका ॥
घटाटोप करि चहुँ दिशि घेरी ❋ मुखहि निशान बजावहिं भेरी ॥

दोहा—जयति राम भ्राता सहित, जय कपीश सुग्रीव ॥
गर्जे केहरिनाद कपि, भालु महाबल सींव ॥ ६३ ॥

लंका भयउ कोलाहल भारी ❋ सुनेउ दशानन अतिहि हँकारी ॥

१ पर्वत ।

देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई ❋ बिहँसि निशाचर सेन बुलाई ॥
आये कीश कालके प्रेरे ❋ क्षुधावन्त रजनीचर मेरे ॥
असकहि अट्टहास शठकीन्हा ❋ गृह बैठे अहारविधि दीन्हा ॥
सुभट सकल चारिहु दिशिजाहू ❋ धरि धरि भालु कीशसबखाहू ॥
उमा रावणहिं अस अभिमाना ❋ जिमि टिट्टिभपगसूत उताना ॥
चले निशाचर आयसु मांगी ❋ गहि कर भिंडिपाल बरसांगी ॥
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा ❋ शूल कृपाण परशु गिरि खण्डा ॥
जिमिअरुणोपल निकर निहारी ❋ धाये खग शठ मांस अहारी ॥
चोंच भंग दुख तिनहिं न सूझा ❋ तिमि धाये मनुजाद अबूझा ॥

दोहा—नानायुध शर चाप धरि, यातुधान बलवीर ॥
कोट कँगूरन चढि गये, कोटि कोटि रणधीर ॥ ६४ ॥

कोटकँगूरन सोहहिं कैसे ❋ मेरु शृङ्ग पर जनु घन जैसे ॥
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ ❋ सुनि सुनि सुभटनके मन चाऊ ॥
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा ❋ सुनि कादर उर होइँ दरारा ॥
देखि नजाइँ कपिनके ठट्टा ❋ अति विशाल तनु भालु सुभट्टा ॥
धावहिंगनहिं न औघट घाटा ❋ पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा ॥
कटकटाइ कोटिन भट गर्जहिं ❋ दशनन ओठ काटि अतितर्जहिं ॥
उत रावण इत राम दोहाई ❋ जयति जयति कहि परीलराई ॥
निशिचर शिखर समूह ढहावहिं ❋ कूदिधरहिं कपिफेरि चलावहिं ॥

हरिगीतिका छंद ॥

धरि कुधर खण्ड प्रचण्ड मर्कट भालु गढ पर डारहीं ॥
झपटैं चरण गहिपटकि महि भजि चलत बहुरिप्रचारहीं
अति तरल तरुण प्रताप तर्जहिं तमकि गढपर चढिगये
कपि भालु चढि मन्दिरन जहँ तहँ राम यश गावतभये

दोहा—एक एक गहि रजनिचर, पुनि कपि चलेपराइ ॥
ऊपर आपुहि हेरि भट, गिरहिं धरणिपर आइ ॥ ६५ ॥

राम प्रताप प्रबल कपि यूथा ❋ मर्दहिं निशिचर निकर वरूथा ॥

चढे दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर ❀ जय रघुवीर प्रताप दिवाकर ॥
चले तमीचर निकर पराई ❀ प्रबल पवन जिमिघनसमुदाई ॥
हाहाकार भयो पुर भारी ❀ रोवहिं आरत बालक नारी ॥
सबमिलि देहिं रावणहिं गारी ❀ राज्य करत जेहि मृत्युहँकारी ॥
निजदल विचलसुना जबकाना ❀ फिरे सुभट लंकेश रिसाना ॥
जो रणविमुख फिरा मैं जाना ❀ तेहि मारिहौं कराल कृपाना ॥
सर्व्वसखाइ भोग करि नाना ❀ समर भूमिभा दुर्लभ प्राना ॥
उग्र बचन सुनि सकल डराने ❀ फिरे क्रोध करि सुभट लजाने ॥
सन्मुख मरण वीरकी शोभा ❀ तब तिन तजा प्राणकर लोभा ॥

दोहा–बहु आयुध धरि सुभट सब, भिरहिं प्रचारि प्रचारि॥
कीन्हे व्याकुल भालु कपि, परिघ प्रचण्डनि मारि ॥ ६६ ॥

भय आतुर कपि भागन लागे ❀ यद्यपि उमा जीतिहैं आगे ॥
कोउ कह कहँ अंगद हनुमन्ता ❀ कहँ नल नील द्विविद बलवन्ता ॥
निज दल विचल सुना हनुमाना ❀ पश्चिम द्वार रहा बलवाना ॥
मेघनाद तहँ करै लराई ❀ टूटनद्वार परम कठिनाई ॥
पवनतनय मनभा अति क्रोधा ❀ गर्जेउ प्रलय काल सम योधा ॥
कूदि लंक गढ ऊपर आवा ❀ गहि गिरि मेघनाद पर धावा ॥
भंजेउ रथ सारथी निपाता ❀ तासु हृदय महँ मारेउ लाता ॥
दूसर सूत विकलतेहि जाना ❀ स्यंदनं घालि तुरत घर आना ॥

दोहा–अंगद सुनेउ कि पवनसुत, गढपर गयउ अकेल ॥
समर बांकुरा वालिसुत, तर्कि चलेउ करि खेल ॥ ६७ ॥

युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर ❀ राम प्रताप सुमिरि उर अन्तर ॥
रावण भवन चढे दोउ धाई ❀ करहिं कोशलाधीश दुहाई ॥
कलशसहित सब भवन ढहावहिं ❀ देखिनिशाचर अति भय पावहिं ॥
नारिवृन्द करि पीटहिं छाती ❀ अब दोउ कपि आये उतपाती ॥
कपि लीलाकरि सबहि डरावहिं ❀ रामचन्द्रकर सुयश सुनावहिं ॥

१ राक्षस। २ बादल। ३ अस्त्र शस्त्र। ४ मारा। ५ रथमेंडाल।

पुनि कर गहि कंचनकेखम्भा ❋ करन लगे उतपात अरम्भा ॥
कूदिपरे रिपु कटक मँझारी ❋ लागे मर्दन भुजबल भारी ॥
काहुहि लात चपेटन केहू ❋ भजेहु न रामहिं सो फल लेहू ॥

दोहा—एक एक सन मर्दि करि, तोरि चलावहिं मुंड ॥
रावण आगे परहिंते, जनु फूटहिं दधिकुंड ॥ ६८ ॥

महा महा मुखिया जे पावहिं ❋ ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ॥
कहहिं विभीषण तिनकेनामा ❋ देहिं राम तिनकहँ निजधामा ॥
खल मनुजादजो आमिषभोगी ❋ पावहिं गति जो याचतयोगी ॥
उमारामम्रृदु चित करुणाकर ❋ वैर भाव मोहिं सुमिरतनिशिचर ॥
देहिं परमगति असजियजानी ❋ को कृपालु अस अहै भवानी ॥
जे अस प्रभु न भजहिं भ्रमत्यागी ❋ तेमतिमन्द ते परमअभागी ॥
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा ❋ कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेशा ॥
लंका महँ कपि सोहहिं कैसे ❋ मथहिं सिन्धु दुइ मन्दर जैसे ॥

दोहा—भुजबल रिपुदल दलिमलेउ, देखि दिवसकर अन्त ॥
कूदे युगलप्रयास बिनु, आये जहँ भगवन्त ॥ ६९ ॥

प्रभु पद कमलशीश तिन नाये ❋ देखि सुभट रघुपति मन भाये ॥
राम कृपा करि युगल निहारे ❋ भये विगत श्रम परम सुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना ❋ फिरे भालु मर्कटभट नाना ॥
यातुधान प्रदोष बल पाई ❋ धाये करि दशशीश दुहाई ॥
निशिचर अनी देखि कपिफिरे ❋ कटकटाइ जहँ तहँ भटफिरे ॥
दोउ दल भिरहिं प्रचारि प्रचारि ❋ लरहिं सुभट नहिं मानहिंहारी ॥
बीर तमीचर सब अतिकारे ❋ नानावरण बली मुख भारे ॥
सबलयुगलदलसम अतियोधा ❋ विविध प्रकारलरहिं करि क्रोधा ॥
प्राविट शरद पैयोद घनेरे ❋ लरत मनहुँ मारुतके प्रेरे ॥
अवनिअकम्पनअरुअतिकाया ❋ विचलतसेनकरी तिनमाया ॥
भयउ निमिषमहँ अति अँधियारा ❋ काहुनसूझे अपन परारा ॥

मह खाहु सब करहिं पुकारा ❀ वृष्टि होइरुधिरोपलै क्षारौ ॥
आवत-देखिनिबिडतम दशहुदिशि, कपिदलभयउखभार॥
वा एकहि एक न देखहीं, जहँ तहँ करहिं पुकार ॥७०॥
रा ल मर्म्म रघुनायक जाना ❀ लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये ❀ सुनत कोपि कपि कुंजर धाये ॥
पुनिकृपालु हँसिचापचढावा ❀ पावक शायक सपदि चलावा ॥
भयउ प्रकाश कतहुँ तमँ नाहीं ❀ ज्ञान उदय जिमि संशय जाहीं ॥
भालु बली सुख पाइ प्रकाशा ❀ धाये कोपि विगत श्रम त्राशा ॥
हनूमान अंगद रणगाजे ❀ हांक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागतभटपटकहिं गहिधरणी ❀ करहिं भालु कपि अद्भुत करणी॥
गहिपदडारहिं सागर माहीं ❀ मकरउरगझख धरि धरि खाहीं ॥

दोहा-कछु घायल कछु रण परे, कछु गढ चले पराइ ॥
गर्जेउ मर्कट भालु भट, रिपु दल बल बिचलाइ ॥ ७१ ॥

निशाजानि कपि चारिउ अनी ❀ आये सब जहँ कोशलधनी ॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं ❀ भये विगत श्रम वानर तबहीं ॥
वहां दशानन सचिव हँकारे ❀ सब सन कहेसि सुभटजे मारे ॥
आधा कटक कपिन संहारा ❀ कहहु वेगि का करिय विचारा ॥
मालवन्त यक जरठ निशाचर ❀ रावण मातु पिता मंत्रीवँर ॥
बोला वचननीति अतिपावन ❀ तात सुनहु कछु मोरसिखावन ॥
जबते तुम सीता हरि आनी ❀ अशकुन होहिं न जातबखानी ॥
वेद पुराण जासु यश गावा ❀ तासु विमुख सुख काहुनपावा ॥

दोहा-हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ॥
जेइ मारेउ सोइ अवतरेउ, कृपासिन्धु भगवान ॥७२॥
काल रूप खल बन दहन, गुणागार घन बोध ॥
जेहि सेवहिं शिव कमल भव, तिहिसनकौनविरोध ॥७३॥

परिहरि वैर देहु वैदेही ❀ भजहु कृपानिधि परम सनेही॥

१ लोहू। २ पत्थर। ३ धूरि। ४ अंधकार। ५ राक्षस। ६ रात्रि। ७ श्रमरहित। ८ मंत्रीयोंमें श्रेष्ठ।

ताके वचन बाण सम लागे ❋ करिया मुख करि जाहु अभागे ॥
बूढभयसि न त मरतेउँ तोहीं ❋ अब जनि वदन देखावसि मोही ॥
तेइँ अपने मन अस अनुमाना ❋ वध्यो चहत यहि कृपानिधाना ॥
सो उठि गयउ कहत दुर्वादा ❋ तब सकोपबोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा ❋ करिहौं बहुत कहतहौं थोरा ॥
सुनि सुतबचन भरोसा आवा ❋ प्रीति समेत निकट बैठावा ॥
करत विचारभयउ भिनुसारा ❋ लगे भालु कपि चारिउद्वारा ॥
कोपि कपिन दुर्गम गढ घेरा ❋ नगर कोलाहलु भयउ घनेरा ॥
विविध अस्त्र गहि निशिचर धाये ❋ गढते पर्व्वत शिखर ढहाये ॥

छं०–ढाहे महीधरशिखर कोटिनविविध विधि गोलाचले ॥
घहरात जिमि पवि पात गर्जत प्रलयके जनु बादले ॥
मर्कट बिकट भट जुटत कटत न लरत तनु जर्जरभये ॥
गहि शैल ते गढपर चलावहिं जहँ सो तहँ निशिचर हये २ ॥

दोहा–मेघनाद सुनि श्रवण अस, गढ पुनि छेंका आइ ॥
उतरि दुर्गते बीरबर, सन्मुख चला बजाइ ॥ ७४ ॥

कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता ❋ धन्वी सकल लोक विख्याता ॥
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवा ❋ कहँ हनुमत अंगद बलसींवा ॥
कहां विभीषण भ्राता द्रोही ❋ आजु शठहिं हठि मारउँ ओही ॥
असकहि कठिन बाणसंधाने ❋ अतिशय कोपि श्रवणलगिताने ॥
शर समूह सो छाँडे लागा ❋ जनु सपक्ष धावैं बहु नागा ॥
जहँ तहँ परत देखिये वानर ❋ सन्मुख होइन सकततेहि अवसर ॥
भागेभय व्याकुल कपिऋच्छा ❋ बिसरी सबहि युद्धकीइच्छा ॥
सोकपि भालु न रणमें देखा ❋ कीन्हेसि जेहिन प्राण अवशेषा ॥

दोहा–मारेसि दश दश विशिख उर, परे भूमि सब बीर ॥
सिंहनाद करि गर्ज तब, मेघनाद रणधीर ॥ ७५ ॥

देखि पवनसुत कटक विहाला ❋ क्रोधवन्त धावा जनुकाला ॥

१ मुख । २ मेघनाद । ३ प्राणसंकटमें । ४ काल ।

महा महीधर तमकि उपारा ❋ अति रिस मेघनाद परडारा ॥
आवत देखि गयउ नभसोई ❋ रथ सारथी तुरँग सब खोई ॥
बार बार प्रचार हनुमाना ❋ निकट न आव मर्म्म सो जाना ॥
राम समीप गयो घननादा ❋ नानाभांति कहत दुर्वादा ॥
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे ❋ कौतुकही प्रभु काटि निवारे ॥
देखि प्रभाव मूढ खिसियाना ❋ करै लाग माया विधिनाना ॥
जिमिकोउकरै गरुडसनखेला ❋ डरपावहिं गहि स्वल्पसपेला ॥

दोहा–जासु प्रबल माया विवश, शिव विरंचि बड छोट ॥
ताहि देखावत रजनिचर, निज माया मति खोट ॥ ७६ ॥

नभचढि वरषै विपुल अँगारा ❋ महिते प्रगट होइ जलधारा ॥
नानाभांति पिशाच पिशाची ❋ मारु काटु ध्वनि बोलहिं नाची ॥
कीन्हेसि वृष्टि रुधिर कचहाडा ❋ वर्षै कवहुँ उपल बहु छाँडा ॥
वर्षि धूरि कीन्हेसि अँधियारा ❋ सूझन आपन हाथ पसारा ॥
अकुलाने कपि माया देखे ❋ सब कर मरण बना इहि लेखे ॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने ❋ भये सभीत सकल कपि जाने ॥
एकहि बाण काटि सब माया ❋ जिमि दिनकरहर तिमिर निकाया ॥
कृपादृष्टि कपि भालु विलोके ❋ भये प्रबल रण रहहिं नरोके ॥

दोहा–आयसु मांग्यउराम पहँ, अंगदादि कपिसाथ ॥
लक्ष्मण चले सकोप तब, बाण शरासन हाथ ॥ ७७ ॥

जलज नयन उर बाहु विशाला ❋ हिमागिरि वरण कछुकइकलाला ॥
वहां दशानन सुभट पठाये ❋ नाना अस्त्र शस्त्र गहिधाये ॥
भूधरं बिटपायुध धरि भारी ❋ धाये कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरिसन जोरी ❋ इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥
मुठिकन लातन दातन काटहिं ❋ कपि गिरि शिला मारि पुनि डाटहिं ॥
मारु मारु धरु धरु धरि मारू ❋ शीश तोरि गहि भुजा उपारू ॥
अस ध्वनि पूरिरही नवखण्डा ❋ धावहिं जहँ तहँ रुण्ड प्रचण्डा ॥

१ आकाश। २ वर्षा। ३ कमलनयन। ४ पर्वत।

देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा ❋ कबहुँक विस्मय कबहुँ अनन्दा ॥

दोहा–जमेउ गाड भरि भारि रुधिर, ऊपर धूरि उडाइ ॥
जिमि अंगारन राशिपर, मृतक छार रहिछाइ ॥ ७८ ॥

घायल बीर बिराजहिं कैसे ❋ कुसुमित किंशुकके तरु जैसे ॥
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा ❋ भिरहिं परस्परकरि अतिक्रोधा ॥
एकहि एक सकै नहिं जीती ❋ निशिचर छल बल करै अनीती ॥
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता ❋ भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता ॥
नानाविधि प्रहार करि शेषा ❋ राक्षस भयउ प्राण अवशेषा ॥
रावणसुत निजमन अनुमाना ❋ संकटभये हरिहि मम प्राणा ॥
बीर घातिनी छाँडेसि सांगी ❋ तेज पुंज लक्ष्मण उर लागी ॥
मूर्च्छा भई शक्तिके लागे ❋ तब चलि गयउ निकट भय त्यागे ॥

दोहा–मेघनाद सम कोटि शत, योधा रहे उठाय ॥
जगदाधार अनन्त सो, उठहिं न जला खिसाय ॥ ७९ ॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू ❋ जारै भुवन चारि दश आसू ॥
सक संग्राम जीतिको ताही ❋ सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥
यह कौतुक जानहिं जन सोई ❋ जेहिपर कृपा रामकी होई ॥
सन्ध्या भई फिरी दोउ ऐनी ❋ लगे सँभारन निज निज सैनी ॥
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर ❋ लक्ष्मण कहँ पूछा करुणाकर ॥
तब लगि लै आयो हनुमाना ❋ अनुज देखि प्रभु अति दुखमाना ॥
जाम्बवन्त कह वैद्य सुषेना ❋ लंका रहै पठइय कोउ लैना ॥
धरि लघु रूप गयो हनुमन्ता ❋ आनेउ भवन समेत तुरन्ता ॥

दोहा–रघुपति चरण सरोज शिर, नायउ आइसुषेन ॥
कहा नामगिरि औषधी, जाहु पवनसुत लेन ॥ ८० ॥

"कहै हनुमंत जोरियुगहाथा ❋ लषण शोच जनि कीजै नाथा ॥
कहो चंद्रमें पटइव गारी ❋ अबहीं देउँ अमी मुख डारी ॥
कहो विबुध वैदेहि गहिआनो ❋ मौत मारि सबके दुखभानो ॥

१ आपसमें । २ लक्ष्मणजो । ३ मेघनाद । ४ तुरन्तभस्मकर डारै । ५ सर्वविपेव्याप्त ।

कहो फोरिनभरविहि निकारों * रिपुतेहि द्वार राहु बैठारों ॥
कहो ब्रह्म हरि हर कहँ आनी * अमर अमर बुलवावों वानी ॥
कहो पताल जाय हति नागा * आनो अमी कुंड यहि जागा ॥
कहो देहुँ निज देहै त्यागी * अबहिं उठों लषण घट जागी ॥
दोहा—जो कछु तव मनमेंरुचै, सो मोहिं आयसु होय ॥
नाथ शपथ क्षणमें करौं, प्रभु प्रताप बल सोय ॥"
रामचरण सरसिज उरराखी * चलेउ प्रभंजन सुत बलभाषी ॥
उहाँदूत यक मरम जनावा * रावण कालनेमि गृह आवा ॥
दशमुख कहामरम तेहिसुना * पुनि पुनि कालनेमि शिरधुना ॥
देखत तुमहिं नगर जेहि जारा * तासु पन्थको रोकनहारा ॥
भजि रघुपतिहि करहु हित अपना * तजौ नाथ अब मृषा जलपना ॥
नीलकंज तनु सुन्दरश्यामा * हृदय राखु लोचन अभिरामा ॥
अहंकार ममता मद त्यागहु * महामोह निशि सोवतजागहु ॥
कालव्याल कर भक्षक जोई * स्वप्नेहु समर कि जीतै कोई ॥
दोहा—सुनि दशकंध रिसान तब, तेइँ मन कीन्ह विचार ॥
रामदूत कर मरणभल, यह खल नतु मोहिं मार ॥८१॥
असकहि चला रचेसि मग माया * सरमंदिरवर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा शुभ आश्रम * मुनिहिं बूझि जल पियौं जाइ श्रम॥
राक्षस कपट भेष तहँ सोहा * मायापति दूतहि चह मोहा ॥
जाय पवनसुत नायउ माथा * लागा कहन रामगुणगाथा ॥
होत महारण रावणरामहिं * जीतहिं राम न संशय यामहिं ॥
इहां भये मैं देखौं भाई * ज्ञानदृष्टि बल मोहिं अधिकाई ॥
मांगा जल तेइँ दीन्ह कमण्डल * कह कपि नहिं अघाउँ थोरे जल ॥
सरमज्जन करि आतुर आवहु * दीक्षा देउँ ज्ञानजेहि पावहु ॥
दोहा—सर पैठत कपि पद गहेउ, मँकरी अति अकुलान ॥

* यह कालनेमि पूर्व जन्मका गन्धर्व मकरी अप्सराथी एकसमय इंद्रको स-

१ मार्ग । २ तालावमें स्नानकर ।

मारि ताहि धरि दिव्य तनु, चली गगन चढि यान ॥ ८२ ॥

कपि तव दरश भइहुँ निहपापा ❋ मिटा तात मुनिवर करशापा ॥
मुनि न होइ यह निशिचर घोरा ❋ मानहु सत्यवचन कपिमोरा ॥
असकहि गई अप्सरा जबहीं ❋ निशिचर निकट गयउ कपि तबहीं ॥
कह कपि मुनि गुरुदक्षिणा लेहू ❋ पाछे हमहिं मंत्र तुमदेहू ॥
शिर लँगूर लपेटि पछारा ❋ निजतनु प्रकटेसि मरती बारा ॥
राम राम कहि छाँडेसि प्राना ❋ सुनि मन हर्षि चले हनुमाना ॥
देखा शैल न ओषधि चीन्हा ❋ सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥
गहि गिरि निशिनभ धावत भयऊ ❋ अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥

दोहा—देखा भरत विशाल अति, निशिचरमनअनुमानि ॥
विनु फर शायक मारेऊ, चाप श्रवण लगि तानि ॥ ८३ ॥

परेउ मूर्च्छिमहि लागत शायक ❋ सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
सुनि प्रियवचन भरत उठि धाये ❋ कपिसमीप अति आतुर आये ॥
विकल विलोकि कीश उरलावा ❋ जागा नहिं बहु भांति जगावा ॥
मुख मलीन मन भयउ दुखारी ❋ कहत वचन भरि लोचन बारी ॥
जेहि विधि रामविमुख मोहिं कीन्हा ❋ तेहिं पुनि यह दारुण दुख दीन्हा ॥
जो मोरे मन वच अरु काया ❋ प्रीतिराम पद कमल अमाया ॥
तौ कपि होउ विगत श्रम शूला ❋ जो मोपर रघुपति अनुकूला ॥
वचन सुनत उठि बैठि कपीशा ❋ कहि जयजयति कोशलाधीशा ॥

सो०—लीन्ह कपिहि उर लाय, पुलक गात लोचन सजल ॥
प्रीति न हृदय समाय, सुमिरि राम रघुकुल तिलक ॥ ८४ ॥

तात कुशल कहु सुख निधानकी ❋ सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥

भामें नृत्य करतेहुए दुर्वासाऋषिको देखकर हँसे तब उन्होंने शाप दिया कि राक्षस होजाओ तब इन्होंने स्तुति करी शापानुग्रह करहु तब मुनिने कहा कि, जब त्रेताके अन्तमें रामावतारहो रामजी लंकामें आवैंगे तब उनके दूतद्वारा तुमदोनों का छुटकारा होजायगा सो शापसे छूटकर इंद्रलोकको गई ॥

१ आपस   १ पूंछ । २ निष्काम । ३ रहित ।

कपि सब चरितसंक्षेप बखाने ❀ भये दुखित मन महँ पछिताने ॥
अहहदैव मैं कतजग जायउँ ❀ प्रभुके एकोकाजन आयउँ ॥
जानि कुअवसरमन धरि धीरा ❀ पुनि कपिसन बोलेउ बलवीरा ॥
[भले भरतकह बोले ताता ❀ पाछे सुनि दुख पैहैं माता ॥
तेहिते चल दीजे समुझाई ❀ आय भवन सब कथा सुनाई ॥
सुत घायल सुनि साधु सुमित्राहिं ❀ भयउ हर्ष और शोच विचित्राहिं ॥
बोली धन्य सुवन मम आजू ❀ जूझेउ समर स्वामिके काजू ॥
पर यक दुःख होत अति ताता ❀ कुसमय भये राम विन भ्राता ॥
पुनि स्वभाय रिपुहनते कहेऊ ❀ जाहु तात तुम प्रभु पहँरहेऊ ॥
सुनत उठे मुद सहित प्रकाशा ❀ विधिवश सुढर ढरे जनुपासा ॥

दोहा—अम्ब अनुजगति देखमन, मानी सबनि गलानि ॥
बोली रघुपति मातु तव, कपिते धीरज आनि ॥
जेहि सौंपेउमैं लषण कहँ, तिनकी यहगति होय ॥
अब कब देखौं नयनभरि, पुत्र कमल मुख सोय ॥
बोले मारुतसुवन तब, सकल धरहु मनधीर ॥
कुशल जानकी लषण युत, ऐहैं श्रीरघुवीर ॥]

तात गहरु[1] होइहै तुहि जाता ❀ काज नशाइहि होतप्रभाता ॥
चढ मम शायक शैल समेता ❀ पठवौं तोहिजहँ कृपा निकेता ॥
सुनिकपि मन उपजा अभिमाना ❀ मोरे भार[3] चलहि किमिबाना ॥
रामप्रताप विचारि बहोरी ❀ वन्दिचरण बोलेउ करजोरी ॥
तव प्रताप उर राखि गुसांई ❀ जैहौं नाथ बाणकी नाईं[2] ॥
हर्षि भरत तब आयसुदीन्हा ❀ पद शिरनाय गमन कपि कीन्हा ॥

"दोहा—तवप्रताप उरराखि प्रभु, जैहौं नाथ तुरन्त ॥
असकहि आयसु पायपद, वंदि चले हनुमन्त ॥८४॥
भरत बाहुबल शीलगुण, प्रभुपद प्रीति अपार ॥
जात सराहत मनहिंमन, पुनि पुनि पवनकुमार॥८५॥"

---

१ विलम्ब । २ मेरेबाणमें । ३ बोझ ।

वहां राम लक्ष्मणहिं निहारी ❋ बोले वचन मनुज अनुहारी ॥
अर्द्धरात्रि गइ कपि नहिं आवा ❋ राम उठाइ अनुज उर लावा ॥
सकहुन दुखित देखि मोहिंकाऊ ❋ बन्धु सदा तव मृदुलस्वभाऊ ॥
ममहित लागितजेउ पितु माता ❋ सहेउ विपिन हिम आतप बाता ॥
सो अनुराग कहाँ अब भाई ❋ उठउ न सुनि मम वच विकलाई ॥
जो जनत्यों वन बंधुबिछोहू ❋ पिता वचन नहिं मनतेउँ वोहू ॥
सुत वित नारि भवन परिवारा ❋ होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥
अस विचारि जिय जागहु ताता ❋ मिलहि न बहुरि सहोदर भ्राता ॥
यथा पंख बिनुखगपति दीना ❋ मणि बिनुफणि करिवर करहीना ॥
अस मम जीवन बंधु बिनुतोहीं ❋ जो जड दैव जियावै मोहीं ॥
जैहौं अवध कवन मुँहलाई ❋ नारिहेतु प्रियबन्धु गँवाई ॥
वरु अपयश सहतेउँ जगमाहीं ❋ नारि हानि विशेष क्षति नाहीं ॥
अब अवलोकिशोकयह तोरा ❋ सहै कठोर निठुर उर मोरा ॥
निज जननीके एक कुमारा ❋ तात तासु तुम प्राण अधारा ॥
सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहिपानी ❋ सब विधि सुखद परमहितजानी ॥
उतर ताहि देहौं का जाई ❋ उठि किन मोहिंसिखावहु भाई ॥
बहुविधि शोचत शोचविमोचन ❋ श्रवतसलिलराजिवदललोचन ॥
उमा अखण्ड राम रघुराई ❋ नरगति भाव कृपालु दिखाई ॥

सो०–प्रभु विलाप सुनि कान, बिकलभये बानरनिकर ॥
आइ गये हनुमान, जिमि करुणामहँ बीररस ॥ ९ ॥

हर्षि राम भेंटेउ हनुमाना ❋ अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना ॥
तुरत वैद्य तब कीन उपाई ❋ उठि बैठे लक्ष्मण हरशाई ॥
हृदय लाइ भेंटेउ प्रभु भ्राता ❋ हर्षे सकल भालु कपि व्राता ॥
पुनि कपि वैद्य तहां पहुँचावा ❋ जेहि विधि तबहिं ताहिले आवा ॥
यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ ❋ अति विषाद पुनि पुनि शिर धुनेऊ
व्याकुल कुम्भकर्ण पहँ गयऊ ❋ करि बहु यत्न जगावत भयऊ ॥

१ मनुष्यकेतुल्य । २ वन । ३ गरुड़ । ४ सर्प । ५ हाथी । ६ पंक्तिकीपंक्ति ।

जागानिशिचर देखिय कैसा ❋ मानहुँ काल देह धरि वैसा ॥
कुम्भकर्ण पूछा सुनुभाई ❋ काहे[1] तव मुख रहा सुखाई ॥
कथा कही सब तेइँ अभिमानी ❋ जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥
तात कपिन निशिचर संहारे ❋ महा महा योधा सब मारे ॥
दुर्मुख सुर रिपु मनुज अहारी ❋ भट अतिकाय अकंपन भारी ॥
अपर महोदर आधिक वीरा ❋ परे समरमहँ सब रणधीरा ॥

दोहा–दशकन्धरके बचनसुनि, कुम्भकर्ण बिलखान ॥
जगदम्बा हरि आनिकै, शठ चाहसि कल्यान ॥ ८६ ॥

भलनकीन्हतैं निशिचरनाहा ❋ अबमोहिं आनि जगायहु काहा ॥
अजहुँ तात त्यागहु अभिमाना ❋ भजहु राम होइहि कल्याना ॥
हैं दशशीश मनुज रघुनायक ❋ जाके हनूमानसे पायक ॥
अहह बन्धु तैं कीन खुटाई ❋ प्रथमहिं मोहिंन जगायहु आई ॥
कीन्हेहु प्रभु विरोधतेहि देवक ❋ शिव विरंचि सुरजाकेसेवक ॥
नारद मुनि मोहिज्ञानजो कहेऊ ❋ कहतेउँ तोहिं समय नहिंरहेऊ ॥
अब भरि अंक भेटुमोहिं भाई ❋ लोचन सफल करौं मैं जाई ॥
श्यामगात सरसीरुह लोचन ❋ देखौं जाइ ताप त्रय मोचन ॥

दोहा–रामरूप गुण सुमिरि मन, मग्न भयो क्षणएक ॥
रावण मांगेउ कोटि घट, मद अरु महिष[3] अनेक ॥ ८७ ॥

महिष खाइ करि मदिरा पाना ❋ गर्जेउ वज्रघात अनुमाना ॥
कुम्भकर्ण दुर्मद[4] रणरंगा ❋ चला दुर्गतजि सेन न संगा ॥
देखि विभीषण आगे आयउ ❋ पुनि पदगहि निजनामसुनायउ ॥
अनुज उठाय हृदयतेहिलावा ❋ रघुपति भक्त जानि मनभावा ॥
तातलात मोहिं रावण मारा ❋ कहत परम हित मंत्र विचारा ॥
तेहि गलानि रघुपति पहँ आयउँ ❋ दीन जानि प्रभुकेमनभायउँ ॥
सुनंसुत भयउ कालवशरावन ❋ सोकिमिमानै परमसिखावन ॥
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण ❋ भयउ तात निशिचरकुल भूषण ॥

---

१ सेवक । २ शत्रुता । ३ भैंसा । ४ वीररस मदमेंमत्त निर्भय ।

बन्धु वंशतैं कीन्ह उजागर ❁ भजहु राम शोभा सुखसागर ॥

दोहा–मन क्रम वचन कपट तजि, भजहु तात रघुबीर ॥
जाहु न निज पर सूझ मोहिं, भयउँ काल बशबीर ॥ ८८ ॥

बन्धु वचन सुनि फिरा बिभीषण ❁ आयउ जहँ त्रैलोक्यविभूषण ॥
नाथ भू धराकार शरीरा ❁ कुम्भकरण आवत रणधीरा ॥
इतना कपिन सुना जब काना ❁ किलकिलाइ धाये बलवाना ॥
लिये उपारिविटपं अरु भूधरं ❁ कटकटाइ डारे तिहि ऊपर ॥
कोटिकोटि गिरिशिखर प्रहारा ❁ करहिं भालु कपि एकहिबारा ॥
गिरै न मुरै टरै नाहिं टारे ❁ जिमि गजं अर्क फलनके मारे ॥
तब मारुत सुत मुष्टिकहनेऊ ❁ परेउ धरणि व्याकुल शिरधुनेऊ ॥
पुनि उठि तेइँ मारेउ हनुमन्ता ❁ घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता ॥
पुनि नलनीलहिं अवनि पछारेसि ❁ जहँ तहँ पटकि २ भटडारेसि ॥
चली बलीमुख सेन पराई ❁ अतिभय त्रसितनकोउसमुहाई ॥

दोहा–अंगदादि कपि मूर्च्छित, करि समेत सुग्रीव ॥
कांखदाबि कपिराजकहँ, चला अमित बलसींव ॥ ८९ ॥

उमा करत रघुपति नरलीला ❁ खेल गरुड जिमि अहि गणमीला ॥
भ्रुकुटि भृङ्ग जिहिकालहि खाई ❁ ताहि कि ऐसी सोह लराई ॥
जगपावनी कीरति विस्तरहीं ❁ गाइ गाइ नर भवनिधि तरहीं ॥
मूर्च्छागइ मारुतसुत जागा ❁ सुग्रीवहिं तब खोजन लागा ॥
कपिराज्यहुकर मूर्च्छा बीती ❁ निबुकि गयउतेहि मृतक प्रतीती॥
काटेसि दशन नाशिका काना ❁ गर्जि अकाश चला तेहि जाना ॥
गहेसि चरणधरि धरणि पछारा ❁ अतिलाघव पुनि उठि तेहि मारा ॥
पुनि आयउ प्रभुपहँ बलवाना ❁ जयति जयति जय कृपानिधाना॥
नाक कान काटे तेहि जानी ❁ फिरा क्रोध करि मानिगलानी ॥
सहजभीमं पुनिबिनु श्रुतिनासा ❁ देखत कपिदल उपजी त्रासा ॥

दोहा–जय जय जय रघुवंश मणि, धाये कपि करिहूह ॥

१ उखारि २ वृक्ष । ३ पर्वत । ४ हाथी । ५ मन्दारफल बूंदी । ६ सुग्रीव । ७ भौंह । ८ टेढो । ९ अतिशीघ्रते । १० भयानक ।

एकहि बार जो तासुपर, डारे गिरि तरु जूह ॥ ९० ॥

कुम्भकर्ण रणरंग विरुद्धा ❋ सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥
कोटिकोटि कपिधरि धरि खाई ❋ जिमि टीडी गिरिगुहा समाई ॥
कोटिन गहि शरीरसन मर्दा ❋ कोटिन मींजि मिलायसि गर्दा ॥
मुख नाशिंका श्रवणकी वाटा ❋ निकसि पराहिं भालु कपि ठाटा ॥
रण मदमत्त निशाचर दर्पा ❋ मानहुँ विश्व ग्रसन कहँ अर्प्पा ॥
मुरे सुभट रण फिरहिं नफेरे ❋ सूझन नयन सुनहिं नहिं टेरे ॥
कुम्भकर्ण कपि सेन बिडारी ❋ सुनि धाये रजनीचर झारी ॥
देखी राम विकल कटकाई ❋ रिपु अनीक नाना विधि आई ॥

दोहा–सुनहु बिभीषण लषण सह, सकल सँभारहु सैन ॥
मैं देखौं खलबल दलहिं, बोले राजिवनैन ॥ ९१ ॥

कर सारंग विशिषै कटि भाथा ❋ अरिदल दलन चले रघुनाथा ॥
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुषटँकोरा ❋ रिपुदल बधिर भयउ सुनि शोरा ॥
धनु संधानि छांड शरलक्षा ❋ कालसर्प्प जनु चले सपक्षा ॥
अति बल चले निकरनाराचा ❋ लगे कटन भट विकट पिशाचा ॥
कटहिं चरण शिरउर भुजदण्डा ❋ बहुतक वीर होहिं शत खण्डा ॥
घुर्मि घुर्मि घायल भट परहीं ❋ उठहिं सँभारिसुभट फिरि लरहीं ॥
लागतबाण जलधि जिमिगाजैं ❋ बहुतकदेखि कठिन शरभाजैं ॥
रुण्ड प्रचण्ड मुण्ड बिनु धावहिं ❋ धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं ॥

दोहा–क्षण महँ प्रभुके सायकन, काटे बिकट पिशाच ॥
पुनि रघुपतिके त्रोणमहँ, प्रविशे सब नाराच ॥ ९२ ॥

कुम्भकर्ण मन दीख विचारी ❋ क्षण महँ हते निशाचर झारी ॥
भयउ क्रोध दारुण बलवीरा ❋ करि मृगनायक नाद गँभीरा ॥
कोपि महीधर लियो उपारी ❋ डारेसि जहँ मर्कट भट भारी ॥
आवत देखि शैल प्रभु भारे ❋ शरन काटि रज सम करिडारे ॥
पुनिधनुतानि कोपि रघुनायक ❋ छाँडे अति कराल बहुसायक ॥

१ धनुष । २ बाण । ३ तूणीर । ४ बहरे । ५ पर्व्वत ।

तनुमहँ प्रविशिनिसारिशर जाहीं ❋ जिमिदामिनि घनमाहँ समाहीं ॥
शोणित श्रवत सोह तनुकारे ❋ जिमि कज्जल गिरि गेरु पनारे ॥
विकल विलोकि भालुकपि धाये ❋ बिहँसाजबहिं निकटचलि आये ॥
दोहा–गर्जत धायउ बेगि अति, कोटि कोटि गहि कीश ॥
महि पटकै गजराज इव, शपथ करै दशशीश ॥ ९३ ॥
भागे भालु कपिनके यूथा ❋ वृकं विलोकि जिमि मेषवरूथा ॥
चले भालु कपि भागिभवानी ❋ विकल पुकारत आरत बानी ॥
यह निशिचर दुकालसम अहई ❋ कपिकुल देशपरन अबचहई ॥
कृपाबारिधर राम खरारी ❋ पाहि पाहि प्रणतारतहारी ॥
करुणावचन सुनत भगवाना ❋ चले सुधारि शरासन बाना ॥
रामसेन निज पाछे घाली ❋ चले सकोप महाबलशाली ॥
खैंचि धनुष शतशर संधाने ❋ छूटे तीर शरीर समाने ॥
लागत शर धावा रिसभरा ❋ कुधर डगमगेउ डोली धरा ॥
लीन्ह एक तेहँ शैल उपाटी ❋ रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी॥
धावा वाम बाहु गिरिधारी ❋ प्रभु सोउ भुजा काटिमहिडारी ॥
काटे भुज सोहै खल कैसा ❋ पक्षहीन मन्दर गिरि जैसा ॥
उग्र विलोकनि प्रभुहि विलोका ❋ मानहुँ ग्रसन चहत त्रैलोका ॥
दोहा–करिचिकार मुख घोर अति, धावा वदन पसार ॥
गगन सकल सुर त्रास अति, हाहाकार पुकार ॥ ९४ ॥
सभय देव करुणानिधि जाने ❋ श्रवण प्रयंत शरासन ताने ॥
विशिखनिकर निशिचरमुख भरेऊ ❋ तदपि महाबल भूमिन परेऊ ॥
शरन भरा मुख सन्मुख धावा ❋ कालत्रोंण जनु तनु धरि आवा॥
तव प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा ❋ धडते भिन्न ताशु शिर कीन्हा ॥
सो शिरपरादशानन आगे ❋ विकल भयउ जिमि फणि मणि त्यागे ॥
धरणि धसे धरधाव प्रचण्डा ❋ तब प्रभु काटिकीन्ह युगखण्डा ॥
"परेउ भूमि जिमि नभते भूधर ❋ तरे दाबि कपि भालु निशाचर॥"
तासु तेज प्रभुवदन समाना ❋ सुरमुनि सबहिं अचम्भा माना ॥

१ उ बिजुली । २ रुधिर । ३ भेहडा । ४ भेडियोंके झुंड । ५ अनेकवाण । ६ तरकस । ७ अलग ।

नभदुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं ❀ जयजयकहि प्रसून सुरवर्षहिं ॥
करि बिनती सुरसकल सिधाये ❀ तब तेहि समय देवऋषिआये ॥
गगनोपरि हरि गुणगण गाये ❀ रुचिर बीररस प्रभु मनभाये ॥
वेगि हतहु खल मुनिकहिगये ❀ रामसमर महँ शोभितभये ॥

हरिगीतिका छंद ॥

संग्राम भूमि विराज रघुपति अतुलबल शोभाघनी ॥
श्रम बिन्दु मुख राजीवलोचन रुचिर तनु शोणित कनी ॥
भुज युगल फेरत कर शरासन भालुकपि चहुँ दिशि बने ॥
कहदासतुलसी कहिन सक छबि शेष जेहि आननघने३॥

दोहा–निशिचर अधम मलायतनु, ताहिदीन निजधाम॥
गिरिजा ते नर मन्दमति, जेन भजहिं श्रीराम ॥ ९५॥

दिनके अन्त फिरी दोउ अनी ❀ समर भयी सुभटन सन घनी ॥
रामकृपा बल कपि दल बाढा ❀ जिमितृणचढै लगे अति डाढा ॥
छीजहिं निशिचर दिनअरुराती ❀ निजमुखकहे सुकृत जेहिभांती ॥
बहु विलाप दशकन्धर करही ❀ पुनि पुनि बन्धु शीश उरधरही ॥
रोवहिं नारि हृदय हति पानी ❀ तासु तेज बल बिपुल बखानी ॥
मेघनाद तेहि अवसर आवा ❀ कहि बहुकथा पितहि समुझावा॥
देखहु कालिह मोरि मनुसाईं ❀ अवहिं बहुत का करौं बडाईं ॥
इष्टदेव सन जो बर पायउँ ❀ सो बर तात न तुमहिं सुनायउँ ॥
इहिविधिजलपतभयो बिहाना ❀ लगे भालुकपि चहुँदिशिनाना ॥
इतकपि भालु काल समवीरा ❀ उत रजनीचर अति रणधीरा ॥
लरहिंसुभट निज निज जयहेतू ❀ वरणि न जाइ समर खगकेतू ॥

दोहा–मेघनाद माया विरचि, रथ चढि गयउ अकास ॥
गर्जेउ प्रलय पयोद जिमि, भा कपिदल अतित्रास॥ ९६॥

शक्ति शूल शर परिघ कृपानां ❀ अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना ॥
डारे परशु प्रचण्ड पषाना ❀ लागा वृष्टि करै बहु बाना ॥

१ आकाशके ऊपर । २ मन वचन कर्म्मते दुष्टकामोंमें तत्पर । ३ बर्छी । ४ तरवारि ।

रहे दशहु दिशि शायक छाई ❋ मानहुँमघा मेघ झरिलाई ॥
घरु घरु मारुसुनहिं कपिकाना ❋ जो मारै तेहि कोउन जाना ॥
गहि गिरि तरु अकाशकपिधावैं ❋ देखहिं तेहि न दुखित फिरिआवैं ॥
अवघट घाट बाट गिरिकन्दर ❋ माया बल कीन्हेसि शरपंजर ॥
जाहिं कहां भय व्याकुल बंदर ❋ सुरपति बंदि परे जिमि मंदर ॥
मारुतसुत अंगद नल नीला ❋ कीन्हेसि विकल सकल बलशीला॥
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव बिभीषण ❋ शरन मारि कीन्हेसिजर्जरतन ॥
पुनि रघुपतिसन जूझन लागा ❋ छांडत शर होइ लागहिं नागा ॥
व्यालफांस वश भये खरारी ❋ स्ववश अनन्त एक अविकारी ॥
नटइव चरित करत बिधि नाना ❋ सदा स्वतंत्र राम भगवाना ॥
रण शोभा हित आपु बँधावा ❋ देखि दशा देवन भय पावा ॥

दोहा–खगपतिजाकर नाम जपि, नर काटहिं भवफांस ॥
सो प्रभु आवकि बन्ध तर, व्यापकविश्वनिवास ॥ ९७॥

चरित रामके सगुण भवानी ❋ तरकि न जाइँ बुद्धि बलवानी ॥
अस विचारिजो परम विरागी ❋ रामहिं भजहिं तर्क सबत्यागी ॥
व्याकुल कटककीन्ह घननादा ❋ पुनिभा प्रकट कहत दुर्वादा ॥
जाम्बवन्त कह खलरहु ठाढा ❋ सुनिकै ताहि क्रोध अति बाढा ॥
बूढ जानि शठ छांडेउँ तोहीं ❋ लागेसि अधम प्रचारन मोहीं ॥
असकहिताहि त्रिशूल चलावा ❋ जाम्बवन्त सो करगहि धावा ॥
मारेउ मेघनादकी छाती ❋ परा धरणि घुर्मित सुरघाती ॥
पुनिरिसाइगहि चरण फिरावा ❋ महि पछारि निजबलहि देखावा ॥
वरप्रसाद सो मरहि नमारा ❋ तब पद गहि लंकापर डारा ॥
इहां देवऋषि गरुड पठाये ❋ राम समीप सपदि चलि आये ॥

दोहा–पन्नगारि खाये सकल, क्षणमहँ व्याल बरूथ ॥
भई विगत माया तुरत, हर्षे वानर यूथ ॥ ९८॥
गहि गिरि पादप उपल बहु, धाये कीश रिसाइ॥
चले तमीचर बिकलअति, गढपर चढे पराइ ॥ ९९॥

मेघनादकी मूर्च्छा जागी ❋ पितहिं विलोकि लाजअति लागी
तुरत गयो सो गिरिवर कन्दर ❋ करन अजयमख असमन हठधर॥
सो सुधिपाइ विभीषण कहई ❋ सुनु प्रभु समाचार अस अहई॥
मेघनाद मख करै अपावन ❋ खल मायावी देव सतावन ॥
सो प्रभु सिद्धि होइजो पाइहिं ❋ नाथ वेगि रिपु जीतिन जाइहि॥
सुनि रघुपतिअतिशय सुखमाना ❋ बोले अंगदादिकपिनाना ॥
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई ❋ यज्ञ विध्वंस करहु तुम जाई॥
तुम लक्ष्मण रणमारेहु ओही ❋ देखि सभय सुर बड दुख मोही॥
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई ❋ जेहि छीजै निशिचर सुनु भाई॥
जाम्बवन्त कपिराज विभीषन ❋ सेन समेत रहहु तीनों जन॥
जब रघुवीर दीन अनुशासन ❋ कटि निषंगकर बाणशरासन॥
प्रभु प्रताप उर धरि रणधीरा ❋ बोलेउघन इव गिरा गँभीरा ॥
जोतेहि आजबधे विनु आवौं ❋ तौ रघुपति सेवक न कहावौं॥
जो शत शंकर करहिं सहाई ❋ तदपि हतौं रघुवीर दुहाई ॥

दोहा—वन्दि राम पद कमल युग, चले तुरन्त अनन्त ॥
अंगद नील मयन्द नल, संग सुभट हनुमन्त ॥ १०० ॥

जाइ कपिन देखा सो वैसा ❋ आहुति देत रुधिर अरु भैंसा॥
तब कीशन कृत यज्ञ विध्वंसा ❋ जब न उठै तब करहिं प्रशंसा॥
तदपि न उठै धरहिं कच जाई ❋ लातन हति हति चलहिं पराई॥
लै त्रिशूल धावा कपि भागे ❋ आवा रामअनुजके आगे ॥
आवत परम क्रोध करिमारा ❋ गर्जि घोर रव बारहिं बारा॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाये ❋ हति त्रिशूल उर धरणि गिराये॥
प्रभु परछांडेसि शूल प्रचण्डा ❋ शरहतिकृत अनन्तयुग खण्डा॥
उठि बहोरि मारुत युवराजा ❋ हतेउ कोपि तेहि धावनबाजा॥
फिरे वीर रिपु मरै न मारा ❋ पुनि धावा करि घोर चिकारा॥
धावतदेखि क्रोध जनुकाला ❋ लक्ष्मण छाँडे बिशिख कराला॥
आवत देखि वज्र सम बाना ❋ तुरत भयो खल अन्तर्द्धाना॥
विविध वेषधरि करै लराई ❋ कबहुँक प्रकट कबहुँदुरिजाई॥

"तब त्रिशूल छांडेसिलक्ष्मणपर ❋ काटिकीन्ह शतखंड धरणिधर ॥
शिखर एक लै पुनि सोधावा ❋ राम अनुज सो काटि खसावा ॥

दोहा–आयुध विविध प्रहार किय,रज सम कीन फणीश ॥
हर्ष बिबश कपि रीछ सब, विबुध सहित सुरईश ॥ १०१ ॥

बहुरि विविध शर छांडनलागा ❋ रणकारण छूटहिं जिमिनागा ॥
राम अनुज शर गरुड समाना ❋ उमा ग्रसत छूटहिं अभिमाना"
देखि अजयरिपु डरपेउकीशा ❋ परम क्रोध तब भये अहीशा ॥
"देखिय जिमिरवितेजसमाना ❋ फुकरत मनहुँ व्याल अनुमाना"
लक्ष्मण मन असमंत्र दृढावा ❋ इहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा ❋ शर संधान कीन्ह अतिदापा ॥
छांडा बाण तासु उर लागा ❋ शीश भुजा काटे नृप नागा ॥
घन समान सो गर्जि अभागा ❋ मरती बार कपट सब त्यागा ॥

दोहा–राम अनुज कहि राम कहि,असकहि छांडेसिप्रान
धन्य शक्रजित मातु तव, कहि अंगद हनुमान ॥ १०२ ॥

अथ क्षेपक ॥

जो जगकह दंडक यमदंडा ❋ हरिद्रोही सुत समर प्रचंडा ॥
महिमा अमित महाबलसींवा ❋ जासु प्रताप अभय दशग्रीवा ॥
भुजबलसुरनायक वशकीन्हा ❋ चौदह भुवन जीत यश लीन्हा ॥
रिपुतरुलषण मूलखनिगंजेउ ❋ जिमि गजकमलनालगहिभंजेउ ॥
जिमि वासवगहिकुलिशकराला ❋ कीन विकल गिरि पक्षनिहाला ॥
रणसागर महँ पचौ शरीरा ❋ तरै दारु जिमि रुधिर सुनीरा ॥
दंत बिकट मुख परम भयावन ❋ चिकुरसघनचल अशुभ अपावन
रसना लालरंग जनु जावक ❋ दवकी शिखासोह जनुपावक ॥
पाय सुआयसु ऋषभकपीशा ❋ करगहि लीन दुष्ट कर शीशा ॥

दोहा–करि श्रम मार्यो महारिपु, रामअनुज रणधीर ॥

१ वृक्ष । २ लक्ष्मजो । ३ क्रोध । ४ इन्द्र ।

निडर सुमन वर्षहिं विबुध, कहिजय गिरागँभीर ॥ १०३ ॥
विनप्रयास हनुमान उठाये ❀ लंकाद्वार राखि पुनि आये ॥

इति क्षेपक ॥

तासु मरण सुनि सुर गन्धर्वा ❀ चढि विमान आये नभ सर्वा ॥
बरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं ❀ श्रीरघुवीर विमल यश गावहिं ॥
जय अनन्त जय जगदाधारा ❀ तुम प्रभु सर्व देव निस्तारा ॥
अस्तुति करि सुरसकल सिधाये ❀ लक्ष्मणकृपासिन्धु पहँ आये ॥
सुत वध सुना दशानन जबहीं ❀ मूर्च्छित भयउ पऱ्योमहि तबहीं ॥
मंदोदरी रुदन करि भारी ❀ उरताडत बहुभांति पुकारी ॥
नगरलोक सब व्याकुलशोचा ❀ सकल कहहिं दशकंधरपोचा ॥
दोहा—तब दशकंठ विविध विधि, समुझाई सब नारि ॥
नश्वर[1] रूप प्रपंच[2] सब, देखहु हृदय विचारि ॥ १०४ ॥
तिनहिं ज्ञान उपदेशत रावन ❀ आपन मंद कथा अतिपावन ॥
पर उपदेश कुशल बहुतेरे ❀ जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥

अथक्षेपक (सुलोचनाकीकथा)

प्रभुहि विलोकि शीशपद नाये ❀ उठि प्रभु अनुज हर्षि उरलाये ॥
कृपादृष्टि करि अनुजहि हेरा ❀ विगतभयो श्रम जब कर फेरा ॥
बाणवेधि तनु देखियत कैसे ❀ कनकत्रोण शर पूरित जैसे ॥
मुखप्रसन्नता देखि छके सब ❀ रिपुवध कहा विभीषणहू तब ॥
धारेउ शीश आन प्रभु आगे ❀ वानर भालु विलोकन लागे ॥
प्रभुकौतुकी निरखिसोइ शीशा ❀ राखन कहेउ कोशलाधीशा ॥
दोहा—प्रभु आयसु सुनि कीशपति, राखेउ यतन कराय ॥
कटक सहित रघुवंशमणि, शोभित अति दोउभाय १०५ ॥
कृपादृष्टि सब कटक निहारे ❀ भये श्रम रहित राम बैठारे ॥
सुनहु उमा इहिविधि रिपुमारे ❀ सुर गन्धर्व मुनि भये सुखारे ॥
अब सो सुनहु भुजा तेहिं केरी ❀ खग जिमि गई लंक शर प्रेरी ॥

१. नाशवान । २ पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश, तीनों गुण । इत्य.दिक

मेघनाद आँगनमें परी ❋ बाण वेधि शोणितसन भरी ॥
राजति तहाँ सुलोचनि कैसी ❋ रतिते रुचिर रूप गुण जैसी ॥
नागसुता दशकन्ध पतोहू ❋ वासवरिपु तिय छविमय जोहू ॥
हेमसिंहासन सोहति बाला ❋ सेवत विद्याधर त्रियमाला ॥
पूजहिं विविध विनय करताही ❋ मुख प्रमोदको सकृत सराही ॥
तहँ पति भुजा परी इहि भाँती ❋ मनहुँ सकल सुखतरुकीकांती ॥

दोहा–तब निज दासिनि देखि तहँ, शोणि श्रवतभुजदण्ड॥
भयउ समर आश्चर्यमय, मनहु अखंडनखण्ड ॥ १०६ ॥

सुनकर सकल सखी मुखबैना ❋ तजि सिंहासन उठी सुनैना ॥
नारि स्वभाव धुकधुकी धरकी ❋ शूचक अशुभदहिन भुजफरकी ॥
होत महारण रावण रामहिं ❋ वीर धुरीण मोर पिय तामहिं ॥
सकल सुरासुरसकहिंनजूझी ❋ विधि वामता परत नहिं बूझी ॥
इतना कहत गई चलिआपू ❋ पतिभुजलखि करिकोटि कलापू ॥
कंकन मणिगण भूषण सोई ❋ महा विटप सम आन नहोई ॥
देखत मनहिं न आवत तेही ❋ तासु प्रभाव सुना पहिलेही ॥
नींद नारि भोजन परिहरही ❋ बारह वर्ष तासु कर मरही ॥

दोहा–करि विचार मन टेकदै, मैं पति देवत नारि ॥
भुजलिखि मेटहु दुचितही, सुन कर दीन पसारि ॥ १०७ ॥

लखिरुखतासु सखी उठि धाई ❋ तुरतहि खोज खरी लै आई ॥
दीनहाथ मणिमय अँगनाई ❋ लिखन लषण कीरति रुचिराई ॥
नींद नारि भोजन शत कोटी ❋ तजत तासु महिमा अतिछोटी ॥
अक्षय अखंड अलख अविनाशी ❋ अतुल अमित घटघटके बासी ॥
प्रगटहिं पालहिं पुनि संहरई ❋ त्रिगुण रूप त्रय मूरति धरई ॥
जो कालहु कर काल भयंकर ❋ वर्णत शेष शारदा शंकर ॥
लीला तनु सुर सेवक हेतू ❋ जासु नाम भवसागर सेतू ॥
मुनिमनपुण्डरीक जाके घर ❋ वचन विवेक विचार बुद्धिवर ॥

१ स्वर्णसिंहासन । २ प्रसन्नता । ३ सुलोचना ।

दोहा-कोटि कल्प वर्णत निगम, अगम जासुगुणगाथ ॥
तिमि शरीर जड जीव बिनु, किमिवर्णतालिखिहाथ १०८॥

ममाशिर गयो दरश रघुराई ❋ तव प्रतीत लगि भुजा पठाई ॥
इहि विधि लिखेउसकलभुजवाता ❋ परी भूमितब अतिविकलाता ॥
बाँचि सकल भुजलिखितयथारथ ❋ लक्ष्मण रामनाम परमारथ ॥
त्रियास्वभाव तदपि बहुभांती ❋ विलखत सकल सखिनकरपांती ॥
गुणगण साहस शील नाहको ❋ कहि रोवत बल विपुल बाँहको ॥
जेहि भुज बल सुरनाथ बिगोवा ❋ सो प्रभु आजु समरमहि सोवा ॥
मणिगण भूषण वसन बिसारत ❋ महिलोटत करतल शिरमारत ॥
मगन बिपतिनिजतनुसुधिनाहीं ❋ दारुण बिपति कहिनकेहिपाहीं ॥
छिनक प्रबोधसखीकोउ करही ❋ बहुरि शोक दावानल जरही ॥
क्षणक्षण उठत परत धरणीतल ❋ पुनिपुनिसब सराहपतिको बल॥

दोहा-तिनमें सखी सयान इक, कहि समुझावतबैन ॥
शोक छाँडि पति देवता,सुमति करौ जिय चैन॥१०९॥

सुनकर सहसानन तन जाता ❋ सत्य कहत तुमसखी सुमाता ॥
विधि निर्मित दुख मोकहँलाहू ❋ सुख परिपूर भुवन सब काहू ॥
विजय राम लक्ष्मणकहँ आवा ❋ सुयश सकल मर्कट कुल पावा॥
कुल कलंकबडलहेउ विभीषन ❋ कुलकुठार अस सुनेउ न दीखन ॥
छूटि बन्दि अब सुरगण केरी ❋ निज निज पुरन दुहाई फेरी ॥
मुनिपुलस्त्यकर भाकुलनाशा ❋ अबरविशशिसुख करहिंप्रकाशा॥
तेजवन्त पावक परिहरि दुख ❋ बहब समीर आजु अपने सुख ॥
सलिल गंग निर्मल जल आजू ❋ सुबश बसहिं सुरनायक राजू ॥

दोहा-यम कुबेर दिगपाल सब, प्रमुदित सुर नर नाग ॥
खाय अघाय विहाय दुख, पाय सु यज्ञ विभाग॥११०॥

इतना कह मन्दिर महँ आई ❋ देखत मणिगण धन बहुताई ॥
सुरपति भुवन सुपटंतर नाहीं ❋ जहँरिधि सिधि तनु धरेकमाहीं ॥

१ सावधान। २ बन्दर। ३ कुल्हाडी। ४ समान।

देखत बिभव न मन अनुरागा ❋ पतिपदप्रेम निपुण मनलागा ॥
देत दान मणि भूषण चीरा ❋ धेनु बसन मन हाटक हीरा ॥
मणिमय शिविकारुचिरसुहाई ❋ भुज चढाइ पहिराइ बनाई ॥
आपन चढत भई पुनि आई ❋ सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई ॥
वीतराग जिमितजत विषयगन ❋ तेहितसभांतिदियो पतिपदमन ॥
शुकसारिकासुलोचनिज्याये ❋ कनक पिंजरन राखि पढाये ॥
व्याकुल कहकहँ जात सुनयना ❋ सुन धीरज परिहरत सुबयना ॥
भयेबिकल खग मृग इहिभांती ❋ अपर दशा कैसे कहिजाती ॥
प्रजा लोग गृह तजि सँगलागे ❋ प्रेम उमँगि लोचन जल पागे ॥

दोहा-बाजन लगे निशान बहु, ढोल दुंदुभी भेरि ॥
पुरजन परिजन संग सब, चले पालकीघेरि ॥ १११ ॥

देखि भीर दशकन्धर द्वारे ❋ सजग भये सब वीरप्रचारे ॥
जानेउ कटक रिपुन कर आवा ❋ अस्त्र शस्त्र कर गहि कर धावा ॥
धनु चढाइ कटि तरकस बांधे ❋ कोउ अंशिचर्म शरासन साधे ॥
तोमर परशु प्रचण्ड गदा गहि ❋ रोखनचोखे शूल शक्ति लहि ॥
मारु मारु धरु धरु कहि धाये ❋ प्रगट दशानन विजय सुनाये ॥
गर्जत तर्ज गिरा गँभीरा ❋ समर भयंकर निशिचर बीरा ॥
निपटहिं निकट पालकी आई ❋ चीन्ह सकल भट रहे लजाई ॥
देखि जुहारि नागपति कन्या ❋ सतीशिरोमणि त्रिभुवन धन्या ॥

दोहा-द्वारपाल दशकन्ध बहु, खबर जनाई जाय ॥
भयउ रजायसुबेगि तब, वचन कहति बिलखाय ॥ ११२ ॥

तुमहिं अछत असिदशाहमारी ❋ सुखतजिभई शोक अधिकारी ॥
नभ पथहै भुज मम गृह परी ❋ बाण बेधि शोणित तनुभरी ॥
देखि भुजा मनमें अति डरी ❋ संशय जानि दीन्हकरखरी ॥
लिखीराम लक्ष्मण महिमाइन ❋ क्रम क्रम सों सबकथा कहीतिन ॥
ठगिसी रही बांचि गुणगाथा ❋ जरहुं संग जो पाऊं माथा ॥
[illegible]कबन्ध भुज ममगृह आई ❋ शिरतहँ गयउ जहां रघुराई ॥

करहु सो यतन मिलहि मोहिं शीशा ❋ तुम सामर्थ निशाचर ईशा ॥
सुनत कुलिशसम गिरावधू की ❋ जीवन आश दशानन मूकी ॥
तदपि धीरधरि करसि प्रबोधा ❋ कहुको मोहिंसमान जगयोधा ॥

दोहा-राम लषण सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमन्त ॥
माथ बिभीषण ऋषभ कर, आनब मारि तुरन्त ॥ ११३ ॥

अबलगि रहेउ भरोसा भारी ❋ कुम्भकर्ण घननाद सुरारी ॥
हमहुँ आज लगि कीन्हन जूझा ❋ इन सब कर पुरुषारथ बूझा ॥
मरेउ सो नर वानरके मारे ❋ बात सुनत अति लाज हमारे ॥
गिनती कवन बीरमें तिनकी ❋ अति दुरदशा कीन कपि जिनकी
तजहु शोक कुलवधू पतोहू ❋ उन समान जनि मानसि मोहू ॥
पुत्रि विलम्ब करौं घटि चारी ❋ देखहु मोर भयंकर भारी ॥
आनि शीश तब शत्रुन केरा ❋ बिन प्रयास नहिं लावौं बेरा ॥
भोगत जन्तु पराक्रम भोगा ❋ नतु किमि निशिचर वनचरयोगा॥

दोहा-मेरु उखारन हारजे, धरा धरत कर बीच ॥
तेभटखाये मशक शिशु, कालकुटिलता नीच ॥ ११४ ॥

क्रोधावेश प्रगट बल बोली ❋ हृदय शोक तनु अचल न डोली॥
समाधान नहिं मानत सोई ❋ सुनि प्रलाप परितोष नहोई ॥
नरवानर पुरुषारथ देखत ❋ बडो प्रभाव छोटकरि लेखत ॥
कूदि सिंधु कपि लंकाजारी ❋ लघुकर मानत ताहिसुरारी ॥
कुंभकरण अतिकाय महोदर ❋ ममपति गिरेउ समेत सहोदर ॥
ते रिपु चहत दशानन जीती ❋ देखहु महा मोहकर रीती ॥
उतरदेउँ तौ पातक होई ❋ कह विवाद कर सर्बस खोई ॥
फिरहि राज्य कछुमोहिं नकाजू ❋ बिनपिय सकल नरककर साजू ॥

दोहा-तुरतहि उठी सुलोचना, गइ मयतनया पास ॥
पदगहि रोवत सकल कह, प्रकट शोक इतिहास ॥ ११५॥

आदिहिते सब कथा बखानी ❋ सुनि सुनि रोवत रावण रानी ॥

---

१ वज्रसमान । २ छोटी । ३ पृथ्वी । ४ बोध । ५ मन्दोदरी ।

कह निजपति भुज लिखत बहोरी ❋ राम लषण महिमा नहिं थोरी ॥
कह्यो बहुरि दशकन्धर क्रोधा ❋ मुये विडंबनकीन्हेसि बोधा ॥
सुनि निज पुत्रवधूकी बानी ❋ बोली दुखित मन्दोदरि रानी ॥
कहत सो मानहु सत्यसयानी ❋ सुनी जो नारदमुनिकी बानी ॥
पाछिल बात भई सब साँची ❋ अनुभव कीन्ह न एकहुं बाँची ॥
देवि न होय मृषा ऋषि भाषत ❋ अपने महा मोह मनराखत ॥
अगली कथा समास समेता ❋ सुनु पुत्री ऋषि वरणेउ जेता ॥
वैरभाव दशकन्धर जूझब ❋ प्राणहु गये नीति नहिं बूझब ॥
सिया शोक संकटसे छूटहिं ❋ वानर भालु राज्य घर लूटहिं ॥
सुरमणि भूषण वसन विमाना ❋ भोग करहिं वनचर कुलनाना ॥

दोहा-राज्य बिभीषण पाइहैं, अमर कल्प निरबाह ॥
भावी बश दुख सुख जगत, उपदेशिय कहु काह ॥ ११६ ॥

मुनिवर वचन मोहिं परतीती ❋ अनुभव दोउ हार अरु जीती ॥
अब पुत्री परिहरि सब शोका ❋ पतिसँग बेगि साध परलोका ॥
जाहु राम पहँ पतिशिरलागी ❋ तज संकोच आनकिनमांगी ॥
आज नहोइ लाजकर भूषण ❋ समयहीन गुण गणिय न दूषण ॥
है पुनि श्वशुर बिभीषण तोरा ❋ वालितनय बालकसम मोरा ॥
एकनारि व्रत रघुवर केरा ❋ लषण सुयश तुम सुनेउ घनेरा ॥
जाम्बवन्त मन्त्री सुग्रीवा ❋ द्विविद मयंद महाबल सीवा ॥
जानहु ब्रह्मचर्य्य हनुमन्ता ❋ शिवस्वरूप भव हरभगवन्ता ॥
सदानीति रत राम नरेशा ❋ तहां जात कहु कवन कलेशा ॥

दोहा-विदित तोरपति भुजलिखत, लक्ष्मण राम प्रभाव ॥
हमहूं ऋषि भाषित कहेउ, अब विलम्ब जनिलाव ॥ ११७ ॥

सुनत सासुमुख करहित बानी ❋ जाहुँ रामपहँ असजिय जानी ॥
बार बार चरणन शिर नाई ❋ चली जहां लक्ष्मण रघुराई ॥
देखत कटक भालु कपि केरा ❋ सिंधु सुवेल महीधर घेरा ॥

---

१ सुलोचना । २ वानर-कुल । ३ न्यायकर । ४ अंगद । ५ प्रकट ।

उमगेउ मनो महोदधि दूसर ❋ हरित पीत कपि धूमर धूसर ॥
व्योम लाल भाषत अनुहेरी ❋ मनहु लेत वडवानल घेरी ॥
गिरितरुधर भुजसहस भयंकर ❋ जहँ तहँ प्रकटहोइँ जनुजलधर ॥
लक्ष्मण शेष सुअंक शीशधर ❋ कटक जलधि सोवत राघववर ॥
अक्षवट जहँ तहँ बैठि बिभीषण ❋ असप्रकृती कहुँ सुनेनदीखन ॥

दोहा-देखत डरत सुलोचना, धीरज धरत बहोरि ॥
महाराज रघुवीर कहँ, विनय सुनावो मोरि॥११८॥

वानर सकल उठे अस बोली ❋ अरिपुरते आवत इक डोली ॥
जानि परत रावण अब बूझा ❋ भइमति मेघनाद जब जूझा ॥
हठतजिसीतहि दीन पठाई ❋ तजहु शोच अब मिटी लराई ॥
जिहिलगिप्रकटकीन्ह पुरआगी ❋ बांधेउ सेतु हेतु जेहिं लागी ॥
सोइ सीता अब बिन श्रमपाई ❋ जानहु विधि अनुकूल सहाई ॥
विजयराम सुग्रीवहि आवा ❋ सुयश बीर वानर कुल पावा ॥
विरह राम लक्ष्मण कर छूटा ❋ विनकलेश लंका गढ टूटा ॥
युग युग कीरति चलवहमारी ❋ कहँ राक्षस कहँ लघुवनचारी ॥

दोहा-इहिविधि चारु विचार करि, निश्चयकारि मनमाहिं॥
भयउ काज रघुराज कर, बात दूसरी नाहिं॥११९॥

पैठत कटक अतिहि सकुचाई ❋ अनविनारि जनु परघर जाई ॥
आगेहि जाइ देखि रघुवीरा ❋ छवि श्यामल मय गौरशरीरा ॥
मरकत कनकछबिहि जनुनिंदत ❋ धन्य सुजन महिमाते विंदत ॥
मत्तगयन्द शुण्ड भुजदण्डा ❋ धनुष बाण असिधरेप्रचण्डा ॥
उरविशाल अति उन्नत कन्धर ❋ कंबुकण्ठ रेखा त्रयसुन्दर ॥
दशनपांतिको कांति कहैको ❋ लावत मन पटतरहि लहैको ॥
देखत अधरनकी अरुणाई ❋ बिम्बाफल बन्धूक लजाई ॥
शुक तुण्डक नाशिका लजाई ❋ थाकेउ कवि पटतरहि नपाई ॥

दोहा-छविमय गुणमय तेजमय, राम उदधि अवगाह ॥

---

१ महासागर । २ लंका । ३ ऊँचा ।

जहांन पावत पारसुर, किमि बरणे कबिथाह ॥ १२० ॥

भ्रुकुटी ललित कपोल सुहाये ❋ शीश जटा कर मुकुटबनाये ॥
भाल विशाल तिलक युत सोहै ❋ ध्यान समय मुनि मानस मोहै ॥
वलकल वसन तूण कटिबांधे ❋ करशर शुभग शरासन कांधे ॥
वीरासन आसीन कृपाला ❋ नवपल्लव प्रसून कर माला ॥
चरण सरोज वरणि नहिं जाई ❋ जहँमुनि मधुकर रहेलुभाई ॥
प्रगट भई जिहि थलसे गंगा ❋ श्रुति पुराण कह कथा प्रसंगा ॥
नवत महेश विरंचि जाहिको ❋ लोचन गोचर होत काहिको ॥
जन आरत भंजन जो कोई ❋ भवसागर तारण केसोई ॥

दोहा-प्रणतपाल बिरदावली, जिन चरणनकी बान ॥
शोक हरण संशय दलन, करण सुमंगल खान ॥ १२१ ॥

कर जोरे अंगद हनुमाना ❋ द्विविदमयन्द कुमुदबलवाना ॥
जाम्बवन्त कपिपति बलशीला ❋ ऋषभसुषेण सहित नलनीला ॥
महावीर वानर सब राजत ❋ लषण विभीषणदोउ दिशिभ्राजत ॥
मितिभाषित प्रभुचरण सु सेवक ❋ चितवत रुखरघुनन्दनदेवक ॥
सभामध्य सोहत अघ मोचन ❋ कीन्हेउसफल निरखिनिजलोचन ॥
करतदण्डवत शिरधरि धरणी ❋ तिहिका चरित विभीषण बरणी ॥
पुत्रवधू दशकन्धर केरी ❋ बडि पतिव्रता जानि प्रभुहेरी ॥
मेघनादको नारि सुशीला ❋ अस गति तव विरोध करलीला ॥
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे ❋ करुणा वचन कहत कर जोरे ॥

दोहा-मुये जान पति भुजहिं तव, लिख समुझाई मोहिं ॥
महाराज रघुवंशमणि, याचन आई तोहिं ॥ १२२ ॥

छंद-परसे चरण कर प्रेम पूरण प्रणतपाल खरारिके ॥
जिहि नमत शंकर शेष सुर मुनि धरणि भंजन भारके ॥
प्रभु जान सो विनती सुलोचनि करत कहि विनती घनी ॥
जय शोक हरण कृपालु जयजयजयतिजयरघुकुलमनी ॥

प्रभु ब्रह्म रूप स्वभाव शीतल अतुल बल त्रिभुवन धनी ॥
जयहरण धरणी भार बाहु विशाल खंडन खलअनी ॥
तव दीनबन्धु दयालु अपरम्पार सब गुण आगरे ॥
करुणा निधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे ॥ ५ ॥
षट अष्टलोक जो रचत पालत प्रलय सो माया सुरी ॥
केहि भांति बरणौं नाथ गुण गण नारि जडमति बावरी ॥
जेइ चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तर ध्यावहीं ॥
हूंभूरिभाग्यसरोज पद सोइ हर्ष शिरसि लगावहीं ॥ ६ ॥

छंद मात्रात्रिभंगी ॥

गहकरवाणी शारंगपाणी सबगुणखानी रामबली ॥
सुरसुरभीरक्षक राक्षस भक्षक भक्तहिरक्षक भांतिभली ॥
मैंरिपुसुतनारी जानअघारी अधिकारी नाहिंदुखभारी ॥
हरिबिरहदवारी अति भयकारी सहबहुबारी दुखकारी ॥
तवशरणैआई जनसुखदाई रघुराई करुणासागर ॥
पति मस्तकपाऊं जरिसँगजाऊं शिरपाऊं शोभाआगर ॥
पतिममतनुत्यागीअतिबडभागीअनुरागी जिनमुक्तिलई
ममताकिमितासूबरणूंआसू जासु अचलजगपंक्तिरही ॥
यहिविधिपदपंकजसेऽयरमाअजाशिरनमिदोउकरजोरिरही
सुनिपंकजलोचन वचनसुलोचननिलोचनमें जलधारबही
यहिभांतिसुनैना अस्तुतिवैना बारबार हरिचरणपरी ॥
प्रभुहोहुदयालाअतिहिकृपालापावौंभक्तिअनूपहरी॥९॥

दोहा—अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारण रहित दयाल ॥
तुलसिदास शठ ताहि भज, छाँड कपटजंजाल॥१२३॥
तुम त्रिभुवन त्रैलोकके, दूसर औरनकोय ॥

१ निधान । २ चौदहलोक । ३ गौ ।

काहि पुकारौं छोंड़ि तोहिं, सत्य नाम प्रभु होय ॥ १२४ ॥
तुम अन्तर्यामी भगवाना ❀ नहिं तव आदि मध्य अवसाना ॥
करुणावचन सुनत रघुबीरा ❀ पुलक रोम भयो शिथिल शरीरा ॥
देहुँ जियाय तोरपति आजू ❀ करहू लंक कल्पशत राजू ॥
छांडि शोच अब मन हरषाहू ❀ तुरत भवन अपने फिरि जाहू ॥
सुनिअससत्य सिंधु करवानी ❀ मनमें वनचर अति भय मानी ॥
कहिन सकतकछुप्रभु रुखदेखी ❀ कहा करब करतार विशेखी ॥
सीय शोच कर फल नाहिं होई ❀ जोकरि कृपा रामयहि जोई ॥
अस विचार धारी मनआसा ❀ जेहिते पाओ प्रभुक विलासा ॥
सब देवनकर शोच नजाई ❀ जोकर कृपा राम इहि ज्याई ॥
दोहा-राज्य बिभीषण लंककर, किहि बिधि करिहहिं जाइ ॥
समुझि वैर घननाद जब, गहिहि शरासन धाइ ॥ १२५ ॥
मुखरुखदेखि कपिनभयमाना ❀ प्रणतपाल भगवन्त सुजाना ॥
देखि बहुत रघुवर कर छोहू ❀ विनय करति दशकन्ध पतोहू ॥
तुम उदार सब देवे लायक ❀ करुणामय देखे रघुनायक ॥
हमहुँ विचारि दीखमनमाहीं ❀ जीवनते अस मरण सराहीं ॥
भुजबल जीतिलोक वशकीन्हे ❀ चौदहभुवन भोग करि लीन्हे ॥
रणतीरथ याचकबड चीन्हा ❀ प्राण सुधन लक्ष्मणकर दीन्हा ॥
अवन उचितपतिदे उपहारा ❀ तेहि पर अधिकसो दरशतुम्हारा ॥
हमहूं जाइ मरब सतसाधी ❀ मिलबतुमहिं जस मिलत समाधी ॥
दोहा-निर्मलगति अवसर भयउ, सुनहु सत्य रघुवीर ॥
तुमहिं मिलत नहिं होय भव, यथा सिंधु गति नीर ॥ १२६ ॥
मनकी जानन हार सुदेवा ❀ भवसागर तारहु यह खेवा ॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई ❀ मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई ॥
पाय कृतारथ मानेउ आपू ❀ पिया विरह संभव परितापू ॥
अंचल पोंछत मुखकी धूरी ❀ कहि मम प्राण सजीवन मूरी ॥
देख सँदेह कहत सुग्रीवा ❀ भुजगहि लिखतजीह विनग्रीवा ॥

१ दीनवचन। २ कपि-ऋच्छ। ३ लोक। ४ पाती।

हँसिहहिवदनतीय तौसाँची ❀ नातर निशिचर माया याँची ॥
कितअसज्ञान मृतक भुज गावा ❀ जो मुनिवर साधन नहिंपावा ॥
प्रभु अस कहेउहँसब यहशीशा ❀ करत कुतर्क न उचित कपीशा ॥

दोहा-सिरसों कहति सुलोचना, हँसहु वेगि ममनाथ ॥
नातर सत्यनमानिहैं, लिखा जो तुम्हरे हाथ ॥ १२७ ॥

क्षणक बिलम्बकीन्ह नहिंबोला ❀ मृतक वदन मूंदत नहिं खोला ॥
पुनि पुनि कहत सोनागकुमारी ❀ श्रमित भयउ रणमें करिमारी ॥
लगे लषण शर क्षोभ बढावा ❀ प्रभुसमीपकस मोहिं लजावा ॥
जो मम बचन करम यह देही ❀ पतिदेवता न आन सनेही ॥
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै ❀ रहहि छाय यश सुयश अमोलै ॥
जो जानत तव यहगति साईं ❀ बोलि पठावत पितहि सहाई ॥
सुनितिय बचनहँसेउ तवशीशा ❀ चौंके चकित भालुभटकीशा ॥
हँसेउ ठठाय वदन सवदेखा ❀ विस्मय भयउ सकलजिहिपेखा ॥
कुलिश समान सुना नहिंजाई ❀ रहेउ सो बदन बहुरि अरगाई ॥
सकुच कपीशहि तोषेउ नारी ❀ बड आश्चर्य भयो बनचारी ॥
पूँछत कपिपति पद शिरनाई ❀ कारण कवन हँसा शिर सांई ॥
प्रभुकह सुन सुग्रीव कपीशा ❀ शीश हँसेकर सुनहु अदीशा ॥
मन क्रमवचनपतिहिसेवकाई ❀ तियहित इहिसम आन उपाई ॥
असजियजानि करहिं पतिसेवा ❀ तिहिपर सानुकूलमुनि देवा ॥
यह सतवति अहिराजकुमारी ❀ तेहिसतते हँसि शीश सुरारी ॥
सुनिप्रभुबचन कपिनसुखमाना ❀ पुनि पुनि चरण गहेहनुमाना ॥
सुनु गिरिजा असप्रभु प्रभुताई ❀ केवल भक्तहिं देत बडाई ॥
जासु दृष्टि जग उपजत नाशा ❀ असकौतुककर केतिक आशा ॥

दोहा-शीशपाइ प्रभु चरणगहि, बहुविधि विनय सुनाय ॥
आजको दिनरणपरिहरहु, ममहित कोशलराय ॥ १२८ ॥

बहुरि विभीषण पगन परीसो ❀ रघुपति चरणदिये मनपुनिसो ॥

१ आश्चर्य । २ वज्र । ३ चुप । ४ पार्वती । ५ संसार । ६ त्यागहु ।

तुम पितु सम दशकन्धर भाई ❋ इहिकुलकी तोहिं लाजबडाई ॥
मुनि पुलस्त्य करि बारक दीपा ❋ पायउ फल रघुबीरसमीपा ॥
महामोह वश अनभल माना ❋ ज्ञान भयो तब गुण पहिंचाना ॥
युगयुगकरहु अकण्टक राजू ❋ सहित सुकीरति सुकृत समाजू ॥
सुमिरत तुमहिं सुजन गतिपावा ❋ रघुपति चरित संगकरगावा ॥
सुनत बिभीषण मनकरुणाभर ❋ प्रकट नकहत समय बिरहाकर ॥
कालकर्म गति कह समुझाई ❋ चली तुरत गुरु आयसु पाई ॥

दोहा-बाहर करि कपि कटकते, फिरेउ बिभीषण आप ॥
बिसरेउ दशमुख बैरही, हृदय अधिक सन्ताप॥ १२९॥

शिर चढाइ पालकी चढीसो ❋ रघुपतिकृपा प्रभाव बढीसो ॥
हृदय राखि मूरति घनश्यामा ❋ रसनां रटत निरन्तर नामा ॥
सरित सिन्धु संगमजहँ पावन ❋ अस सुधिपाय गयो तहँ रावन ॥
संग मंदोदरि सब रनिवासू ❋ मनोशोक रवि कीन्ह प्रकासू ॥
पाय रजाय सुसेवक धाये ❋ चन्दन अगर सुगंध बहुलाये ॥
रचि दृढ दारुण चितावनाई ❋ जनु सुरलोक निसेनीलाई ॥
करि प्रणाम सब जनपरितोषी ❋ धीरज धरसि तासु मति पोषी ॥
शिर भुजधरि बैठीकरि आसन ❋ भई जनुयोग सिद्धिकर बासन ॥

दोहा-देत अनल ज्वालाबढी, लपट गगन लगिजाय ॥
लखी न काहू जात तेहि, सुरपुर पहुँची धाय॥ १३० ॥

देखि चरित पुनीत सुरगावहिं ❋ बर्षि सुमनदुंदुभी बजावहिं ॥
तासुक्रियाकरि निशिचरनाहा ❋ भयउ शोचवश अतिउरदाहा ॥
सचिव आइ सब लगे बुझावन ❋ बांदि विषादकरियजनि रावन ॥
सुतवित नारित्रिविधसुखकैसे ❋ उपजहिं घटा जाहिंनभ जैसे ॥
तडित विदित देखिय घनमाहीं ❋ रहै न थिर तहँ तुरत छिपाहीं ॥
यह जिय जानि सुनहु दशभाला ❋ बचहि नकोउ जग आये काला॥
अब प्रभु यतन विचारहु सोई ❋ रिपुकर नाश जवन विधिहोई ॥

१ एकछत्र । २ दुःख । ३ जिव्हा । ४ मंत्री । ५ मिथ्या ।

वचन सुनततेहि कछु सुखमाना ❀ काल विवससुनि तोरथज्ञाना ॥

अहिरावणकी कथा ॥

दोहा-लागेउ करन विचार पुनि, बहु प्रकार दशशीश ॥
समुझि हृदय अहिरावणहिं, आयउ जहाँ गिरीश ॥१२१॥

दण्डचारि तब तहँ निशि वीती ❀ सन्ध्या वन्दन कीन्ह सप्रीती ॥
लागेउ करन ध्यान दशशीशा ❀ करि हर्षित संपुट भुज वीशा ॥
शंकर सेवक अति अनुरागी ❀ सुन खगेश तेहिते बडभागी ॥
मंत्राकर्षण जपि दशभाला ❀ अहिरावण चित डोलपताला ॥
लगेउ करनसो मन अनुमाना ❀ केहिकारण दशमुख अकुलाना ॥
निशिचर नाह भुवन वशजाकें ❀ जीतन कहँ न वीर कोउताके ॥
मन क्रम वचन आननहिं सेवी ❀ धरेउ ध्यान उरकामददेवी ॥
चलेउ बहुरि आयउ सो तहँवां ❀ शिवमण्डप रावण रह जहँवां ॥
निशिचरपतिकहितेहिशिरनायउ ❀ करगहिनिजआसनबैठायउ ॥

दोहा-अहिरावणतबरावणहिं, बूझी कुशल सप्रीति ॥
प्रथम कही तेहिं सब कथा, जैसेभगिनि अनीति ॥१२२॥

वध खर दूषण जिमिसुधिपाई ❀ मृग मारीच कपट कृतजाई ॥
कहेसि बहुरि सीता कर हरणा ❀ लंकदहन हनुमत करवरणा ॥
सेतुबांधिजिमि प्रभु चलि आयउ ❀ वालिकुमार बिवाद सुनायउ ॥
अनी अकम्पन अरु अतिकाया ❀ परे समर महि सुनु अहिराया ॥
तात कुशल अव सवइ सिरानी ❀ कटक निशाचर सकल नशानी ॥
कुम्भकरण घननादहु मारे ❀ राम लषण दुइमनुज विचारे ॥
आनेहु बोलि तोहिं निज पासा ❀ कहहु सुयतन होइ रिपुनासा ॥
सुनत शोचभा अहिरावणमन ❀ बोला वचन सुहावन पावन ॥
सुन रावण जगनीति पियारी ❀ करे अनीति होय भय भारी ॥
विना विचारि रारि तुम ठानी ❀ कीन्ह सेन कुल सर्वस हानी ॥
मनुज प्रताप प्रभाव न जानेउ ❀ सबते बड तोहि लघुकरिमानेउ ॥

---

१ घडी । २ अंगद ।

यदपि न जोग मोहिं असबाता ❋ तदपि हरहुँ तवलगिदोउ भ्राता ॥
लै पताल देविहि बलि देहौं ❋ यशपूरण निशिचरकुल लेहौं ॥
लै जैहौं तुम जानेउ तबहीं ❋ रविसमतेज होइ निशिजबहीं ॥

दोहा-कहि अस वचन प्रबोध करि, शीशनाइ बल भाखि ॥
आयउ रघुपति कटकमें, निज देविहि उर राखि ॥ १३३ ॥

"गिरिजाकहेउ सुनो भगवाना ❋ अहिरावणको अतिबलवाना ॥
कहो तासु प्रभु उत्पति गाई ❋ सुन बोले शिव गिरा सुहाई ॥
मंदोदरि ऐसा सुत जायो ❋ रावण जाको सुन दुख पायो ॥
बीस व्यालयुत सुन विबुधारी ❋ राखनयोग नमनहि विचारी ॥
स्वानाननते कह्यो बुलाई ❋ आवहु याहि गाडि कहुँजाई ॥
दूत दाबि नैऋत्य सिधावा ❋ पृथ्वी खोदि तोपि तर आवा ॥
रघुपति चरित करनहित आगे ❋ मरा न सो बालकतेहि लागे ॥
खायसि खनि माटीयक मासा ❋ पुनिगा निकर नीरनिधिपासा ॥
तेहि लखिराहुजननि अनुरागी ❋ भवनलायनिज पालन लागी ॥
यक दिन तहाँ शुक्रचलि आयो ❋ बोले पुत्र कहा यह पायो ॥

दोहा-जेहि विधि पायो उदधि ढिग, सोसबदियासुनाय ॥
कह्यो शुक्र दशशीश सुत, यह जानो सतभाय ॥

आदिहिते सब चरित सुनाये ❋ अहिरावण धरि नाम सिधाये ॥
निजउत्पत्ति सुनो तेहि जबहीं ❋ कूदिपरा सागर महँ तबहीं ॥
निकसा तुरत वितलमहँ जाई ❋ तहां रहै अहिपुरी सुहाई ॥
तप प्रभाव तहँ सुनेउ घनेरा ❋ वासुकि नगर देख चहुँ फेरा ॥
तपहितचल्यो नदीढिग जाई ❋ कामन्दा देवी जेहि ठाई ॥
सुथलसमझ तहँ ध्यान लगावा ❋ संवत चौदहसहसबितावा ॥
सब विधि देखि समाधि अडोली ❋ वरंब्रूहि तव देवी बोली ॥
इष्टवचन सुनतेहि करजोरी ❋ मांगेहु वर सुख भोग बहोरी ॥

दोहा-शेष महेश दिनेश सुर, ईश अजीश अनन्त ॥
मरौं न काहू हाथसे, होउँनिशाचर कंत ॥

पितहि कीन्ह अपमानहमारा ❀ सोऊ मोहिं याँचे यकवारा ॥
सुनि देवी बोली सुन ताता ❀ करिहौ तुमबहुविधि सुखगाता ॥
त्रेता शेष समय दशशीशा ❀ याचहितोहिं जोरि भुजवीशा ॥
मारै तुम्हैं न कोउ जगमाहीं ❀ कपियक यमवाचा वशनाहीं ॥
कहिअस अन्तर भई भवानी ❀ अहिरावण तवयहमति ठानी ॥
विविध भेष धरि अहिपुरजाई ❀ अज गज हयखरडारहिखाई ॥
पुनिनागनसे भिरचो प्रचारी ❀ कीन्हो व्याकुल सबहिन मारी ॥
तब नृप दर्विक बोल्यो ताही ❀ विधिवत कन्या दई विवाही ॥
कुन्दनिनाम पाय तब नारी ❀ काननमें घर करन विचारी ॥
पुनि कामन्दाके ढिग आवा ❀ योजननव कर नगर वसावा ॥

दोहा–रह्यो असुरले ताहिमें, करन लग्यो सुख भोग ॥
अब त्रेताके शेषमें, भयो प्राप्त सोइ योग ॥"

सूझननिजकरअति अँधियारी ❀ मर्कट भट जागहिं तहँ भारी ॥
कहहिंजयतिजयजयतिकृपाला ❀ अतिहिअगमजहँनहिंगतिकाला ॥
तहँ मारुतसुत रचेउ उपाई ❀ करि लंगूर कोट कठिनाई ॥
सो शोभा इहिभांति सुनाई ❀ भुजगराज कुंडली लगाई ॥
देखिय उन्नत शैल समाना ❀ द्वार जहाँ तहँ मुख हनुमाना ॥
देखि हृदय अहिरावण हारा ❀ किमि रवि गृह कर तिमिर पसारा
एकौ युक्ति न मन ठहरानी ❀ कपटवेष तेहि कीन्ह भवानी ॥
वेष बिभीषण सब अनुहारी ❀ पवन तनय पहँगा छलकारी ॥

दोहा–सहज प्रतापी पवनसुत, पुनि सुरपति पति दास ॥
तिनहिं निदर चल राम पहँ, मूढ हृदय नहिंत्रास ॥ १३४

मर्म्म न जान प्रभंजनजाता ❀ कीन्हेसि गमन बिभीषण भांता ॥
ठाढ होहु बोलेउ सुनु भ्राता ❀ चलेउ जहाँ कृपालु जनत्राता ॥
मैं रघुपति सन आयसु पाई ❀ संध्या करन गयउँ सुन भाई ॥
तेहिते तुरत चलेउँ प्रभुपाहीं ❀ भइ विलम्ब जनि राम रिसाहीं ॥

---

१ ऊँचा। २ अंधकार। ३ अनुसार। ४ डर। ५ भेद। ६ हनुमान्।

सत्यवचन कपि निजमन माना ❋ सुनु खगेश भावी बलवाना ॥
कपट चतुरगति जानि नजाईं ❋ परमन हरे हरहि धनभाईं ॥
आयसु पाइ गयउ सो तहँवाँ ❋ रहे फणीश अरु प्रभु दोउ जहँवाँ॥
कपिपति जाम्बवंत नल नीला ❋ बालीसुत सुखेन बल शीला ॥

दोहा—द्विविद मयन्दरु कीश गुण, गय गवाक्ष कपिवीर ॥
सहित बिभीषण अपर भट, सोये सब रणधीर ॥ १३५ ॥

तिनहिं मध्य रावणशशिराहू ❋ एक संग सोवत फणिनाहू ॥
दक्षिणदिशि सोवत रघुनाथा ❋ अनुज बामदिशि तेहि परहाथा ॥
प्रभुकर कर पर राजत कैसे ❋ जातरूप पंकज फणि जैसे ॥
कपि समूह जनु सागर क्षीरा ❋ तहँ सोये मानहुँ दोउ वीरा ॥
शुभग बाण धनु धरे बनाई ❋ लक्ष्मणसह समीप रघुराई ॥
अहिरावण मनकीन्ह प्रणामा ❋ देखि राम सुन्दर घनश्यामा ॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्याननपावहिं ❋ मुनि महेश पूजा मन लावहिं ॥
करहिं विविध जपयोग विरागी ❋ जपहिं निरन्तर निशिदिन जागी ॥
सोप्रभु तेहि देखा भरिलोचन ❋ कृपासिंधु सेवक भयमोचन ॥
बहुरि हृदय तेहि कीन्ह विचारा ❋ करहुँ काज रावण अनुसारा ॥
कछु निज माया कृत गुण आई ❋ कवनी भांति जाहिं दोउभाई ॥

दोहा—मोहनते मोहे सकल, मंत्रनते मुख मूंदि ॥
भयउ अदृश्य उठाइकरि, प्रभुहि चलेउ लै कूदि ॥ १३६ ॥

याहि विधि गयउ दुहुँन लै सोई ❋ नभ मारगप्रकाश अति होई ॥
सो प्रकाश जब रावण देखा ❋ कियप्रमाणतेहि वचन विशेखा ॥
मनमहँ हर्ष करहि अति भारी ❋ अहिरावण लैगा असुरारी ॥
लै निज लोक गयउ पल माहीं ❋ भयउ शोरतब कपिदल माहीं ॥
जागे वानर श्रीहत भारी ❋ देखिय जिमि सरिता विनुवारी ॥
पुनिदेखिय जिमिनिशि विनुइन्दू ❋ भे वानर जिमिउड विनुचन्दू ॥
रवि विनु दिवसजीव विनु देहा ❋ जिमिदेखिय दीपक विनुगेहा ॥

१ लक्ष्मणजी । २ नदी । ३ चन्द्र । ४ घर ।

एकहि एक लगे तब बूझन ❋ कहाँगये त्रैलोक्य विभूषन ॥

दोहा-शोधेउ सबमिलि कटक तिन, नहिं पाये दोउ वीर॥
भेव्याकुल सब भालु कपि, जिमि जलचर गत नीर[1] १३७॥

सकल कहहिंयह विधिकहकीन्हा ❋ रघुपति विरहप्राणकतलीन्हा ॥
शोकग्रसित धरि सकहिं न धीरा ❋ कहां राम लक्ष्मण दोउ वीरा ॥
करुणाकरहिं कपीश अपारा ❋ बनी बात विधि कहा विगारा ॥
कटक निशाचर सकल सँहारी ❋ रहा एकरिपु रावण भारी ॥
सोउन रहत राम शर लागे ❋ भाइउ हम सब परम अभागे ॥
कबहुँजोदशशिर अरिरणजीतहिं ❋ उत्तरकवन देब हम सीतहिं ॥
असकहि विकल मूर्च्छिमहिपरे ❋ लागत वज्र शैल जिमि गिरे ॥
दशा विभीषण कही न जाई ❋ बिगत वत्स जनु धेनु लवाई ॥

दोहा-सहित पवनसुत ऋच्छपति, दुख मन भा बढिभांति
खगपति सूझ न कतहुँ कछु, तम अपार तिहिराति॥१३८॥

पवनतनय पुनिकह सब पाहीं ❋ विस्मयं एक होत मन माहीं ॥
कोउ इक आव बिभीषण वेषा ❋ प्रभुके निकट जात हम देखा ॥
पूछतबचन कहेसि अतिनीका ❋ कपट नजानिय निशिचरजीका ॥
बचन सुनत बोलेउ लंकेशा[3] ❋ अहिरावण लैगा अवधेशा ॥
पन्नगलोक निवासी सोई ❋ मम तनु वेष अवर नहिं कोई ॥
महाबली जानै सब माया ❋ निश्चय तेहि दशशीश पठाया ॥
जेहिबल होइ तहाँ सो जाई ❋ ताहि जीति आनै दोउ भाई ॥
कहेउ भालुपति[4] सुनु हनुमाना ❋ तव बल तात सकलजगजाना ॥
वेगि सो यतन विचारहुताता ❋ कृपासिंधु आनहु दोउ भ्राता ॥

दोहा-बिलखि कहेउ कपिपति बहुरि, सुन मारुतसुत तात
बिनु रघुनायक जन्म धिग, पल युग सरि सबिहात॥१३९॥

यथा तृषित बिनु वारिद बारी ❋ रविबिनुजलज[5] मीन बिनु बारी ॥
भट अशस्त्र रणअनी अनाथा ❋ वह्नि[6] अनिंधन गातसमाथा ॥

---

१ पानी । २ चिन्ता । ३ बिभीषण । ४ जाम्बवन्त । ५ कमल । ६ अग्नि ।

दीप अवँति सकल क्षण भंगी ❋ तिमि हम सब देखिय बजरंगी ॥
जिमि सीता सुधिभेषज आनी ❋ तेहि प्रकार आनहु सुखदानी ॥
सुनत वचन मारुतसुत बोला ❋ राखहुचितथिर कटक अडोला ॥
भुवन चारिदश तीनिहुँलोका ❋ आनहुँ प्रभुबल प्रभुतज्ञु शोका ॥
अबतुम सजग रहेउ सब भाई ❋ लरेहु कालसन जो चढिआई ॥
असकहिसकृत चलेउ हनुमाना ❋ गरजत प्रलय पयोधि समाना ॥
चलत बाट इक तरुतर गयऊ ❋ गीधिन गीध कहत अस भयऊ ॥

दोहा-नारिगर्भिणी गृध्रकर, बोली पतिसन बैन ॥
आनहु आमिष मनुज पिय, खाउँहोइजिय चैन ॥ १४० ॥

ताक्षुवचन सुनि खग अस कहेऊ ❋ अहिरावण रामहिंले गयऊ ॥
देइहि बलि देविहि सो जाई ❋ सो आमिष बड भागन पाई ॥
कवनेउ यतन देव मैं आनी ❋ असकहि विहँग वामसनमानी ॥
जबहिं पवनसुत अससुधिपाई ❋ चलेउ तहां सुमिरत रघुराई ॥
अभयप्लवंग पतालहि गयऊ ❋ अहिरावण पुर प्रविशत भयऊ ॥
द्वारपाल मकरध्वज कीशा ❋ कपिसन डाटि कहत बहु रीशा ॥
निदरि जान मोहिंतोहिं डरनाहीं ❋ दीपहि जिमि न पतंग डराहीं ॥
जानेसि मोहिं न मरुत सुतबालक ❋ स्वामि भक्त भंजनमुख कालक ॥

सो०-सुनत वचन हनुमान, बोलत भे विस्मय विवश ॥
अरे मूढ अज्ञान, मोरे सुत स्वप्नेहु नहीं ॥ १० ॥

कहत वचन शठसंयुत खोरी ❋ कामविवश कब भइ मति मोरी ॥
ममसुतबनसि मूढकेहि काजा ❋ इतना कहत तोहिं नाहिं लाजा ॥
केहि प्रकार तुव मम सुतभयऊ ❋ निजउत्पति मोसन किनकहऊ ॥
सुनत कहहि मकरध्वजवचना ❋ किहेउ दाह रावणपुर रचना ॥
जब आयो चलिउदधि समीपा ❋ बहेउ स्वेद तब तनु कपिदीपा ॥
सोऽस्वेद सागरमहँ गयऊ ❋ पियउ मीन तेहिते मैं भयऊ ॥
यहिप्रकार मैं तव सुत ताता ❋ गोवहुं नहिं निज पिता न माता ॥

१ ओषधि । २ मांस । ३ समुद्र । ४ पसीना । ५ मछली ।

अहिरावण सेवा मैं करहूं ❀ राखहुँ द्वार न कबहूं टरहूं ॥

दोहा-सत्यवचन हनुमान कहि, पुनि पूंछी सब बात ॥
लावा लक्ष्मण राम कह, कहा करत सो तात ॥ १४१ ॥

कहहु तात तेहि अस्थल नाऊँ ❀ जान चहौं मैं तव प्रभुठाऊँ ॥
यह वृत्तान्त अस जानहुताता ❀ यह मैं श्रवणसुनेउँ कछुबाता ॥
सीतापति अरु फणिपति साथा ❀ सोलैआयउ निशिचरनाथा ॥
करत होम तेहि कारण आजू ❀ देविहिबलि देई नृपराजू ॥
जो कछु निजश्रवणनसुनिपायउँ ❀ तातसकलसोतुमहिं सुनायउँ ॥
निजप्रभुकाजलागि दुखसहेऊं ❀ तुमसन सत्यवचन मैं कहेऊं ॥
जानकहहु तुम जान न देऊं ❀ प्रभु आज्ञा तजि अयश न लेऊं ॥
सुनि असपेलि चलेउ हनुमाना ❀ भयउ क्रोध मकरध्वज जाना ॥

दोहा-तेहि मुष्टिक कपि कहँ हनेउ, पुनि मारेउ कपि ताहिं
हनाहिं परस्पर एक इक, बल समान घट नाहिं ॥१४२॥

एकहि एक सकहिं नहि पारी ❀ पिता पुत्र दोऊ भट भारी ॥
सुतहि लूमसन[1] बांधि भवानी ❀ चलेउ बातसुत बिलँब न आनी ॥
धरि लघुरूप होम गृह देखा ❀ जीव सजीव परे नहिं लेखा ॥
तहँ देवी कर मण्डप रहई ❀ शोणित घट बहु कोकहि सकई ॥
विविध भांति मेवा पकवाना ❀ धरे आनि देवी अस्थाना ॥
मालिनि तहँ प्रसून[5] लै आई ❀ सुमन मध्य प्रविशेउ कपिराई ॥
सुमनहुँते करि अति हलुकाई ❀ लेत पाणि जेहि जानि नजाई ॥
जब देविहि सो पुष्प चढायउ ❀ बिकट रूप तब कपि दिखरायउ ॥

दोहा-छुवत चरण देवी तुरत, धरणी रही समाइ ॥
मुख बगारि ठाढे भये, कपि छबि लखत डराई ॥१४५॥

देवी प्रगट समुझ खलझारी ❀ करहिं विचार हृदय अतिभारी ॥
कहहिं कि देवि प्रगटभइ आजू ❀ बडभागी भानिशिचर राजू ॥
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं ❀ जो चढाव सो कपिमुख परहीं ॥

---

१ हाल । २ कानन । ३ जीती । ४ पूंछ । ५ पुष्प ।

जो जहँ रही वस्तु समुदाई ❋ बची न कछुक सकल कपिखाई ॥
कपि खिलारी कौतुक विस्तारा ❋ भा चह निशिचर कुलसंहारा ॥
अहिरावण उर भा सुख कैसे ❋ चंढे काँध पर बलिपशु जैसे ॥
जबहीं होम सिद्ध तेहि जाना ❋ लक्ष्मण राम सुरत तहँ आना ॥
ठाढ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी ❋ निशिचर बहु आयुध धरि पानी ॥
कोउ गदा कोऊ धनुबाणा ❋ शक्ति शूल धरि कोउ कृपाणा ॥

दोहा-तोमर मुद्गर परशु असि, पासि परिघ अरु बेत ॥
शूल भुशुण्डी पटि परशु,देखत बिसरत चेत॥ १४४ ॥

मायाबलते सकल विचक्षण ❋ अति विकारमय मूढ कुलक्षण ॥
यहि विधि सकल बीर तहँ रहहीं ❋ अहिरावण आज्ञा दृढ गहहीं ॥
आयसु पाइ खड्ग तिन्ह काढे ❋ मारन कहँ प्रभु पर भए ठाढे ॥
कोउ कह राजनीति अनु सरहू ❋ भरि त्रयदण्ड विलँब अब करहू ॥
पुनि अस बचन मूढमति कहहीं ❋ सुमिरहु जो तुम्हरे हितु अहहीं ॥
नाहिंत काल आइ नियराना ❋ निशा स्वप्न सम दोउ जनप्राना ॥
बोलहिं मूढ असम्भव बानी ❋ सुकुच लगे सो कहत भवानी ॥

दोहा-फाणिपति चितवत रामतन, राम चितव अहिराज ॥
प्रभुकर कौतुक कहिय किमि,सुनो दशा खगराज॥१४५॥

बिहँसि कीन्ह प्रभुहृदय बिचारा ❋ जपै सकल जगनाम हमारा ॥
जाना देखि रूप हनुमाना ❋ बिहँसि कहा तब राम सुजाना ॥
कालकौर तुम सुमिरहु रक्षक ❋ भई तुम्हारि देवि तुव भक्षक ॥
सुनत गिँरा तिन मारन ठयऊ ❋ घनै समान कपि गर्जत भयऊ ॥
निशिचर सकल त्रासित भे भारी ❋ कहहिं वचन भय हृदय विचारी ॥
अहिरावण भल कीन्ह न काजू ❋ आने कपटवेष सुरराजू ॥
तेहितै देवि क्रुद्ध भइ आजू ❋ अब भा सब कर मरण समाजू ॥
संभ्रम वश तब निशिचर झारी ❋ बहुरि कीशगर्जेउ अति भारी ॥

दोहा-प्रगटरूप करि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर ॥

१ अस्त्र शस्त्र। २ लक्ष्मणजी। ३ चरित। ४ वाणी। ५ मेघ। ६ शोक संदेह।

अति भय त्रासित रजनिचर, सुनहु उमापति धीर॥ १४६॥

डगमगाननिशिचर अभिमानी ❋ मारुतवेग यथा नदिपानी ॥
तेहि क्षण कपि लीन्हेंदोउ भाई ❋ धुनत तूल निशिचर समुदाई ॥
छीनि कृपाण लीन्ह हनुमाना ❋ काटत भुज शिर कृषी समाना ॥
खण्ड खण्ड तब खलदलकीन्हा ❋ गहि पदडारि अनलमहँ दीन्हा ॥
करि लंगूर कोट कपिराई ❋ तेहि महँ घिरिकोउ भागिन जाई ॥
इहि विधि सब निशिचर संहारे ❋ अहिरावण लखि वचन उचारे ॥
रेकपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं ❋ अहिरावण तैं जान न मोहीं ॥
जम्बुमाल कहँ जिमि तैं मारा ❋ अरु रावणसुत हतेउ विचारा ॥

दोहा–कालनेमि सम नाहिं मैं, करु कपि वचन प्रमान॥
असकहि खड्ग प्रहार किय, कपि तनुवज्रसमान ॥ १४७॥

लै असि ताहि पवनसुत मारा ❋ काटि शीश पावक महँ डारा ॥
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा ❋ लै पुनि चलेउ लषण जगदीशा ॥
मकरध्वज विनती तब कीन्हा ❋ बन्धन छोरि राज्य तेहि दीन्हा ॥
इहां राज्य भोगहु तुम ताता ❋ भजहु सदा मम प्रभु दोउ भ्राता ॥
अस कहि कपि निजदलसो आवा ❋ हर्षेउ कटक सबनिसुख पावा ॥
मृतकशरीर प्राण जिमि आवहिं ❋ गइमणि पाइ फणी सुख पावहिं ॥
बिछुरि अलभ्यमिले जनु आई ❋ तिमि हर्षे सब लखि दोउ भाई ॥
मिलेउ कपीशचरण धरि माथा ❋ पुनि पद गहे निशाचर नाथा ॥

दोहा–जाम्बवन्त अंगद सहित, मिले भालु अरु कीश॥
सन्माने कहि वचन प्रिय, लषण कोशलाधीश॥ १४८॥

बहुरि सबहिं भेंटे हनुमाना ❋ कहहिं तात तुम राखे प्राना ॥
देवन सुमन वृष्टि तब कीन्हीं ❋ प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्हीं ॥
अनुज सहित हर्षित रघुबीरा ❋ कहेउ वचन सुनु तनय समीरा ॥
तव समाननहिंकोउ हितकारी ❋ सुर मुनि सिद्ध मनुजतनुधारी ॥
यशतुम्हार त्रिभुवन महँ भयऊ ❋ सुनि प्रभु वचन चरण कपिनयऊ ॥

---

१ रुई। २ खेती। ३ अग्नि। ४ अक्ष। ५ सर्प।

नाथकीन्ह सब मैं केहिलेखे ❀ तरणी चलत अगम जल देखे ॥
तैसे सब प्रताप तव नाथा ❀ सुनि अस मिलेकपिहि रघुनाथा ॥
कटक सहित हर्षें दोउ भाई ❀ तेहि अवसर सुख किमि कहिजाई॥

छंद कहिजाइसुखकिमितेहिसमयकरसुनहुगिरिजाचितधरें
रघुवीर रुख अवलोकि हर्षेत आरती सुरगणकरे ॥
अति प्रेमसों मारुतसुवन यश गाइ विबुधन असकहा॥
नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगल महा ॥

दोहा-करि बहुविधि हरि आरती, वाणी सत्य सुनाय ॥
रामचरण अनुरागेउ, अमर सुमन झरिलाय ॥ १४९॥

देवनिडर प्रभु गुणगण गावहिं ❀ आरत हरकहँ विनय सुनावहिं ॥
विबुध विनय रघुपति सुनिकाना ❀ कह प्रभु सत्यसिन्धु भगवाना ॥
चतुरानन वर दीन्ह अपेला ❀ तेहि कारण यह बाढ्यो खेला ॥
नाहिंत लषण एक पल माहीं ❀ राखत यातुधान कुल नाहीं ॥
अजहुँ होय रण कौतुक भारी ❀ निरखहु तुम सब शोच बिसारी ॥
अबजो रहेउ निशाचर शेषा ❀ भटमहँ जासु भुजाकर रेखा ॥
तेहिरण महि महँहतहुँप्रचारी ❀ बिनु श्रम सबसों कहत खरारी ॥
शंभु कृपा अब संशय नाहीं ❀ सुनि सुर अति हर्षे मन माहीं ॥

दोहा-सत्य वचन सुनि रामके, आनन्दित सुरयूह ॥
चले कहत जय जयति प्रभु, वर्षे सुमन समूह ॥ १५०॥

यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा ❀ खगपति राम कृपा मैं गावा ॥
अब हिय हर्षि सुनहु द्विजराई ❀ मानस कदहुँ सुमिरि रघुराई ॥
याज्ञवल्क्य पद वन्दि सप्रीती ❀ भरद्वाज बोले शुचि नीती ॥
यह चरित्र अति रुचिरसुहावा ❀ सुनि ममनाथ परमसुखपावा ॥
अहिरावण बधान्त भगवाना ❀ चरित किये सो करहु बखाना ॥
सुनिमुनि विनय ऋषय पुलकाई ❀ बोले हृदय सुमिरि गिरिराई ॥
प्रश्न तुम्हार तात अतिपावन ❀ सहजसुभग सज्जनमनभावन ॥

१ नौका। २ ब्रह्मा। ३ देवगण।

मानस हरि चरित्र सुठि नीका ❋ सुनतकरत जो कोउ मनफीका ॥

दोहा-सोइ जगवंचक सुनहु मुनि, जेहि मानस न सुहाय ॥
भवसागर महँ भ्रमत सो, अमितकल्प चलिजाय ॥ १५१ ॥

मानस सुनत न मनहिं अघाहीं ❋ तासम धन्य अवरकोउ नाहीं ॥
धन्य धन्य तुमसनकोउ आना ❋ ललित चरित अतिसुनहु सुजाना
राम लषण दलसहित विराजे ❋ जयति रामकहि कपिगण गाजे ॥
राम सैन सुखमा अधिकाई ❋ निगमागम जानेउ बुध भाई ॥
वहां दशानन सब सुधि पाई ❋ दूत सँदेश दीन्ह सब जाई ॥
अहि रावण करवंध सुनि काना ❋ भयउ तेजहत अति दुखमाना ॥
वचन वज्र सम लागेउ ताही ❋ संभ्रम मूर्च्छि परेउ महि माही ॥
कटे पंख जिमि बिहँगविहाला ❋ रंगचीरगत निशि हिमकाला ॥
मुख सुखान लोचन जलवहई ❋ वचन न आव शीश धुनि रहई ॥

दोहा-मयतनया तब आइ पुनि, बहु प्रकार समुझाइ ॥
मान न मूरुख कालवश, परम क्रोध कहँ पाइ ॥ १५२ ॥

नारि वचन सुनितेहि रिस बाढी ❋ उठि बैठेउ धरि धीरजगाढी ॥
तेहि अवसर मंत्री यक आवा ❋ करि आदर दशमुख बैठावा ॥
सिन्धुरनाद नाम बलवाना ❋ वृद्धज्ञान मय परम सुजाना ॥
सदा बिभीषण कर सँग ठयऊ ❋ कबहूं दशमुख सभा न गयऊ ॥
आवा सो भल अवसर पाई ❋ कहेसिं नीति रावणहिं बुझाई ॥
ज्ञानकथा दशमुख न सुहानी ❋ तब वहिराइ बात कह आनी ॥
करिवर नाद हृदय अस गुनेऊ ❋ प्रभु दुइ ताग हृदय पट बुनेऊ ॥
अब यहिकहौं सो सहज उपाई ❋ जेहिं यहि मूल समूलनशाई ॥

दोहा-यह विचारि बोलेउ सचिव, सुनहु दनुजकुलराउ ॥
धीर धरहु संशय विगत, कहहुँ सो करिय उपाउ ॥ १५३ ॥

नरांतकका संग्राम ॥

अक्षादिकन सुतन बल दूना ❋ कस सुरारि मन मानहु ऊना ॥
सचिववचन सुनि दशमुख कहई ❋ अब हमरे कुलको भट अहई ॥

१ मरण । २ पक्षी । ३ । मन्दोदरी ।

अपने मन महँ करहु विचारा ❀ हैनारान्तक तनय तुम्हारा ॥
मूल अभुक्त माहिं भा जोई ❀ दियो बहाई मरा नहिं सोई ॥
शम्भुप्रसाद ताहि कछु भयऊ ❀ पुर विहवावल नृपता दयऊ ॥
कोटिबहत्तर एक प्रभाऊ ❀ राजा प्रजा भेद नहिं काऊ ॥
दूत पठाइ बुलावहु ताही ❀ जीतिहिसो रिपुरणके माही ॥
दनुज अधीश चतुर चरपठवौ ❀ धरहु धीर चित चिंता घटवौ ॥

दोहा-तासु मंत्र सुनि दशवदन, हृदय प्रमोद अमान ॥
धूमकेतु कहँबोलि ढिग, समझायउसनमान ॥ १५४ ॥

धूमकेतु तुम परम सयाना ❀ लै ममपाती करहु पयाना ॥
वसत जहाँ नारान्तक राजा ❀ तहां न तात अवरकर काजा ॥
अवसर पाइ हेतु समुझाई ❀ सपदि ताहि लै आनौ भाई ॥
आयसु पाइ चार तहँ गवना ❀ यह सुनि बिहँसि कह्यो अहिदवना ॥
काकनाथ यह गाथ सुहाई ❀ मोसन तात कहहु समुझाई ॥
नारान्तक उतपत्ति यथाविधि ❀ पुर विहवावलगा कवनीसिधि ॥
सुमिरिकाकपति उर अवधेशा ❀ मनप्रसन्न कर कह काकेशा ॥
अतिसुन्दर शुचि यह संवादू ❀ चित थिरकरि सुनिये उरगादू ॥

दोहा-नख चौगुण वसु ऊन तहँ, सप्त अकाश मिलाइ ॥
इतने निशिचर एक दिन, भैरावण पुर आइ ॥ १५५ ॥

पुरमहँ उपजे खल इक साथा ❀ तब सुनि हरषा निशिचर गाथा ॥
निज गुरु बोलि चरण शिरनाई ❀ बूझा मुदितसो कलश धराई ॥
भृगुनन्दन तव तेहिसन कहेऊ ❀ आजु बाल सब मूलन भयऊ ॥
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं ❀ भये आजु जे तव पुर माहीं ॥
वेसुत सब निज निज पितुघाती ❀ मुख देखत सुन सुर आराती ॥
घर राखे धनसहित विनाशा ❀ होइ अवशि नहिं उबरन आशा ॥
शुक्रवचन सुनि डरे निशाचर ❀ कह करिये अति वाद परस्पर ॥
निश्चय कीन्ह प्रसव शिशु आजू ❀ सौंपिय सिन्धुहिं और नकाजू ॥

१ गरुड़ । २ वैरी । ३ बालक ।

दोहा-संपदि करहु सब काज यह, लावहु बाल बटोर ॥
राखे होई हानि अति, कह दशवदन बहोर ॥ १५६ ॥

सेवक दशमुख आयसु पाई ❋ धाये तुरित चरण शिरनाई ॥
रावण आयसु नगर पुकारी ❋ सुनहु सकल पुर नर अरु नारी ॥
आजु अमुक्रमूल भये बालक ❋ डारहु सागर सब कुल घालक ॥
बोरे सबनि बाल इकठाईं ❋ भावीबश मधुमाखी नाईं ॥
पाय आधार वृक्ष वट बौरा ❋ पावन लगे क्षीरै चहुँ ओरा ॥
पीवत क्षीर अब्द भरसातो ❋ पुष्टभये खल निशिचर जाती ॥
पुनि सब एक संग तहँ जाई ❋ सुरसरि संगम भा जेहि ठाई ॥
तहँ शिव मन्दिर परम सुहावा ❋ सबनिविलोकि मुदित शिरनावा ॥

छंद-शिरनाइ मुदित विलोकि शिव मंदिर सुहावन पावनं
कछु दिनरहेतहँसकलपुनिउठिचलेसुनअहि दावनं
रावणपुरी ते दिशाप्राँची कोश शतरस चलिगये ॥
बैठे जलधिमहँ पाइ थल बर शंभु चरणनचितदिये १

दोहा-जानत नाहिं उत्पत्ति निज, मन महँ करत विचार ॥
गेतेहि ढिग जाकर विदित, रवि ते छंठवीं बार ॥ १५७ ॥

हरि अरि गुरुनिजशिष्यनचीन्हा ❋ करत प्रणाम आशिषादीन्हा ॥
कहि निजनाम सबनिसमुझावा ❋ कुलगुरु जाना विनय सुनावा ॥
निज उतपति बूझी शिरनाई ❋ भृगुनन्दनसो सकल सुनाई ॥
सुनत अपन वृत्तान्त लजाने ❋ लखिरुख भृगुनायक सन्माने ॥
करा प्रतोष मंत्र गुरुदीन्हा ❋ शिक्षा पाइ गमन तिन कीन्हा ॥
ज्ञान लहेउ सब संशयत्यागी ❋ भे विरंचिपद सब अनुरागी ॥
निराहार बैठे इक आसन ❋ वर्ष सहस तप किय उरगासन ॥
श्वास धार कृत वर्ष हजारा ❋ रहे ऊर्ध्व मुख विना अहारा ॥

दोहा-एकपाद पुहुमी दये, अपर अंग अनयास ॥
सबल पुष्ट तनु मन हरष, स्वप्नेहु भूख न प्यास ॥ १५८ ॥

---

१ शीघ्र । २ आज्ञा । ३ दूध । ४ पूर्व । ५ शुक्र । ६ शत्रु । ७ समाधान । ८ पृथ्वी ।

तप अतिउग्र विचार विधाता ❋ तिन ढिगगमने मुखमुसकाता ॥
हंसारूढ कमंडलु हाथे ❋ श्वेत मुकुट शुचि चारिउ माथे ॥
आनन चारि नयन वसु नीके ❋ चारिउ भाल भस्म शुभटीके ॥
उपमामय प्रभु सब जगअयना ❋ भाष्यो दयासदन बरवयना ॥
मांगहु वर जो सब मनभावा ❋ सुनेउ सबनिविधिपद शिरनावा ॥
नाथ चहत हम यह वरदाना ❋ हमहिं न कोउ जीते मयदाना ॥
एवमस्तु विधि कहेउ विचारी ❋ आनपाणि नहिं मृत्यु तुम्हारी ॥
हरिसुते है तुम्हार गुरु भाई ❋ तेहिसन किहेउ न कबहुँ लराई ॥

दोहा-जो तेहिसन करिहौ समर, मरिहौ वचन प्रमाण ॥
एकहि कहँ वरदान यह, दै कह कृपानिधान ॥ १५९ ॥

दियउ नरांतक कहँ वरदाना ❋ रहे अपर जे धरि उर ध्याना ॥
तिनसन बरंब्रूहि विधि कहेऊ ❋ सुनत प्रमोद[1] सबनि उर लहेऊ ॥
सुनि विधिगिरा सबनि कह स्वामी ❋ देहु एकवर अन्तरयामी ॥
देवासुर संग्रामहि माहा ❋ जीतहिं हम यह बर सुरनाहा ॥
असकहि रहे दनुज शिरनाई ❋ तिनसन कहेउ विरंचि बुझाई ॥
तुम अजीत सब सन सब भांती ❋ वानर भालु त्यागि दुइ जाती ॥
यहि विधि सब कहँ दै वरदाना ❋ ब्रह्मलोक गये ब्रह्म सुजाना ॥
विधिते लहि वर तिनसुख बाढा ❋ लागे करन बहुरि तप गाढा ॥

दोहा-गिरा गिरीश समेत सब, जपहिं निरन्तर ब्रह्म ॥
जोरि युगल कर एक पद, निशिदिन आठौ याम १६०

बिनु प्रयास ठाढे सब भाई ❋ क्षुधा[4] तृषा[5] निद्रा बिसराई ॥
गुण सहस्र संवत सब ऐसे ❋ गये बीति प्रथमहिं तप जैसे ॥
सबन शीश पुनि अवनी दीन्हा ❋ उभय चरण ऊरध कहँ कीन्हा ॥
जोरेकर निरोध कर श्वासा ❋ जपहिं मंत्र शंकर वर आशा ॥
मुनिगण तिनकर साधन देखी ❋ मन महँ मानत सकुच विशेखी ॥
हरिइच्छा वल हृदय विचारी ❋ निरखि चले मुनि जपत पुरारी ॥

१ कठिन । २ दधिबल । ३ हर्ष । ४ भूख । ५ पियास ।

अयुत शब्द बीते खगनायक ❋ भे प्रसन्न शिव जनसुखदायक ॥
चढे वरद[1] हिमसुतासमेता ❋ आये तिनतट कृपानिकेता ॥

दोहा-बोले तिनहिं प्रसंसि शिव, मांगहु बर मन भाव ॥
नारान्तक करि दण्डवत, बोला सुन सुरराव ॥ १६१ ॥

मैं तप किहेउँ दरश तव लागी ❋ नाथदीन जनचित अनुरागी ॥
अब मांगत आवत मोहिं लाजा ❋ ठाढरहा कहि निशिचरराजा ॥
मांगु सकुच तजि असहर कहेऊ ❋ नारांतक तब मांगत भयेऊ ॥
मोहिं विभव[2] अस देहु गोसांई ❋ भूप प्रजा नहिं परहुँ लखाई ॥
पुर अनयांस बसहि ममनाथा ❋ यह कहि रहा जोरि युग हाथा ॥
एवमस्तु कहि हर सुर ईशा ❋ गमने भवन सहित वागीशा ॥
शिवप्रसाद नारांतक पावा ❋ अंतरिक्ष पुर सपदि बसावा ॥
पुर विहवावलकी रुचिराई ❋ कहत कछू इक तुमसन गाई ॥

दोहा-ऋतु रवि दूने कोटिसो, भवन बसे इक ठौर ॥
जातरूप मय नग जटित, अति शोभित चहुँ ओर ॥ १६२ ॥

योजन ढाई शत चकलाई ❋ चौंसठ कोस उतंग सुहाई ॥
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा ❋ विस्मय विश्वकर्म्म मन घेरा ॥
चारि दुवार कुलिश पट रूरे ❋ गढ भीतर चौहट विधि पूरे ॥
वणिक पदम धनतुच्छबखाना ❋ बन उपवन सरिता सर नाना ॥
वसत प्रज्ञ पुर सघन अपारा ❋ नारांतक गढ मध्य सँभारा ॥
षोडशकोश कोट चहुँ ओरा ❋ मणि माणिक लागे नहिं थोरा ॥
हय गज रथ खच्चर समुदाई ❋ कहिन जाइ खग मृग विपुलाई ॥
कोटि बहत्तर एके साथा ❋ विद्या पढन लगे खगनाथा ॥

दोहा-हरि प्रेरित तेहि कालमहँ, दधिबलपहुँचा आय ॥
पुर विहवाबल निरखिसो, कछुदिनरहा लुभाय ॥ १६३ ॥

भावी वशनिशि चरसँगकीशा ❋ वर्ष एक पढ सुनहु मुनीशा ॥
गुरुइकबार कहेउ रिसियाई ❋ इतिहसितैं आपन गुरुभाई ॥

१ बैल । २ ऐश्वर्य । ३ वेपरीश्रम । ४ नरान्तक ।

विजु अघसुनि दधिबलगुणशापा ❀ विदा मांगि गवना करिदापा ॥
मारग मिले देवऋषि तेही ❀ गहे सुकंठ सुवन पग नेही ॥
लखि अशीष दै बूझातेही ❀ दधिबल कवन काजगएजेही ॥
तब नारांतकपुर प्रभुताई ❀ दधिबल नारदमुनिहि सुनाई ॥
सुनी निशाचर संपति भारी ❀ रहे ब्रह्मसुत हृदयविचारी ॥
क्षणक देवऋषि कीन्ह गुमाना ❀ बार बार सुमिरे भगवाना ॥

दोहा-दधिबलते नारद कहेउ, सुनहु तात चितलाइ ॥
तनु धारि जेहि हरि भक्ति नहिं, जन्मबादिजगजाइ॥१६४॥

यह विचारि भजु रामहिं ताता ❀ उपजेउ सुनत ज्ञानमुनिबाता ॥
ऋषिपद परशि आशिषा पाई ❀ कपिपति सुत गमने हरषाई ॥
सपदिकीश तब पहुँचा जहँवां ❀ पयँनिधिमध्य रुचिर गिरितहँवा ॥
धवलागिरि तेहि नाम सुहावा ❀ सुभग देखि कपिवर मनभावा ॥
गौरि गिरीश सुमिरि गणराई ❀ कीन्ह निवास बैठ हरषाई ॥
नारदताहि देइ उपदेशा ❀ गये विरंचिहि धाम खगेशा ॥
उत दशमुख सुत विद्यापाई ❀ जहां तहांकी विविध लराई ॥
विन्दुनाम इक निशिचरआहा ❀ सो खल रहा वितलथलमाहा ॥

सोरठा-अति रणधीर जुझार, चढे चक्रपर बलि विपुल ॥
कीन्हेउ समर अपार, अब्द एक श्रुति सन्तकह ॥ ११ ॥

सप्तकोटि निशिचर सँग ताके ❀ असित मेरु सम खल भटबांके ॥
सुनासीर कोपेउ इक बारा ❀ सब कहँ समर मध्य संहारा ॥
भाजि बिन्दुकेवल गृह गयऊ ❀ तासु नारि निशिचर सुखदयऊ ॥
सब निशि भोगकराखल पापी ❀ उपजे बहु बालक परतापी ॥
सप्तकोटि सुत नाना नामा ❀ उदर वक्र सकल बलधामा ॥
कोटि बहत्तर तनया जाके ❀ लाजहिं मृग लोचन लखिताके ॥
तिनमहँ विन्दुमती इक सुंदरि ❀ नभचारिनि रतिरूप निरन्तरि ॥
निरखि विन्दु निजमन अनुमाना ❀ नहिं नारांतकसम कोउ आना ॥

२ क्रोध । ३ राह । ४ नारद । ५ सुग्रीवसुत । ६ वृथा । ७ क्षीरसागर । ८ इन्द्र । ९ टेढ ।

दोहा-यह बिचारि चितबिन्दुतब, नारान्तकहि बुलाइ ॥
बिन्दुमती आदिक सुता, सुन्दर साज सजाइ ॥१६५॥

सकल सुता इक संग विवाही ❀ यथायोग्य जेहि कहँ जसचाही ॥
नारान्तक सब सेन समेता ❀ करि विवाह फिरगयउ निकेता ॥
पुर विहवावल कीन्ह बसेरा ❀ प्रजासहित सुख करत घनेरा ॥
जोतियचाहिय विबुध गृह भाई ❀ सोभावीवश निशिचर पाई ॥
नारि पतिव्रत जेहि घरमाहीं ❀ तेहि प्रतापनिज अमरडराहीं ॥
बिन्दुमती विद्या समताता ❀ बुधजनसभा चरित विख्याता ॥
नारान्तक उतपति मैं गावा ❀ सुन खगेश पुनि चरित सुहावा ॥
पुनि पुनि हरि हर पदशिरनाई ❀ गुरुसन सुनेउँ सो कहेउँ बुझाई ॥

दोहा-चारन दशमुखको तुरत, मगचलि पहुँचो जाय ॥
ग्रामान्तर योजन युगल, ठाढ भयउ हरषाय ॥ १६६ ॥

तेहि मारुतदिशि कानन भारी ❀ पर्णलेत देखेउ तहँ वारी ॥
सकुचि समीप जाइ भा ठाढा ❀ बूझेसि ताहि धीरधरि गाढा ॥
कवन रीति यहि पुर महँ भाई ❀ तरुपर चढत भूपसुत आई ॥
चारु वचन सुनि सो मुसकाना ❀ कवन नगर तुम बसत अयाना ॥
नारान्तक नृप के यह वारी ❀ तेहिकर सेवक मैं लघुचारी ॥
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा ❀ कछु डरि पुनि निजमारगलीन्हा ॥
लिये कनकघट सुखमापूरी ❀ वारिलेन आई तियरूरी ॥
देखि भयउ तेहि संशय भारी ❀ बूझा सत्य कहहु सुकुमारी ॥

दोहा-तुम्हरे पुर कह चेरि नहिं, रानी कहहु स्वभाव ॥
आइउ तुम जलभरन कहँ, बोलेउ त्याग डराव ॥ १६७ ॥

दूतवचन सुनि निशिचर चेरी ❀ बोली हँसि करि एकहि बेरी ॥
नारान्तकदासिनकी दासी ❀ हम ताकीदासी विश्वासी ॥
सदा भरैं यहि सागर पानी ❀ यहँ आवहिं केहि कारण रानी ॥
कहिहउ और काहु अस बाता ❀ पैहहु मार मुष्टिका लाता ॥

१ घर । २ वृक्षपर ।

असकहि गवनी लै जल नारी ❋ तिनसँगधूम्रकेतु पगधारी ॥
गढभीतर कीन्हेसि पैसारी ❋ निरखे विपुल कूप सर वारी ॥
नाना गज रथ खच्चर घोरा ❋ फिरत विलोकत पुर चहुँ ओरा ॥
अन्तरगढ तेहि चारि दुवारा ❋ तहां न चरपावहिं पैसारा ॥

छं०-पावत नहीं पैसार चरगति द्वारलगिफिरि आयऊ ॥
यहि भांति रावण दूत घटिका युगल दिवस गँवायऊ ॥
मनमहँ बिसूरत ठाढ चौहटमध्यसो जब रहि गयो ॥
निशिचर निकंदनै होन लगि विधि ताहिइक अवसर दयो १२

सो०-गमने भूपति द्वार, नृत्य करन इक कौतुकी ॥
लीन्ह धार तेहि मार, गढइमि कीन्ह प्रवेश चर ॥ १२ ॥

बैठेउ सभा नरान्तक जाई ❋ कोटि बहत्तर संयुत भाई ॥
व्योम तीनि रसगुणवसु एका ❋ अंकरीति लिखिगुणी विवेका ॥
बन्दीजन नट कौतुक करहीं ❋ प्रतिदिन कविकोविद उच्चरहीं ॥
रावणदूत सभा सो देखी ❋ मनमहँ चकित भयो विशेषी ॥
तव चारण मन अस अनुमाना ❋ कोटि बहत्तर रूप न आना ॥
भूषण वसन सुआसन जोहा ❋ देखि सुखद चारण मन मोहा ॥
याम दिवसगत अवसर पावा ❋ नारान्तक कहँ शीश नवावा ॥
दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई ❋ कुशल तासु बूझी हरषाई ॥

दोहा-नारान्तक निज कुशल कहि, बूझा दशमुख हेतु ॥
समाचार गढ लंककर, वरणेउ दूत सचेतु ॥ १६८ ॥

चरभाषित नारान्तक सुनेऊ ❋ क्षणकमाहिं निज कारण गुनेऊ ॥
पुनि पत्री निशिचरपति बांची ❋ मानी चार बात सब सांची ॥
उठ्यो सभाते हृदय रिसाई ❋ गा निजभवन शोच सरसाई ॥
बिन्दुमती कहँ बांचि सुनाई ❋ पितुपर भीर पत्रिका आई ॥
समाचार सुनि कह तेइ नारी ❋ तुम जनि करहु रामसन रारी ॥
गहहु चरणपिय अकसर जाई ❋ रसन सफलकरि विनय सुनाई ॥

। २ तालाव । ३ देखत । ४ नाश । ५ ब्रह्मा । ६ नट विशेष तमाशा करनेवाले । ७ अधिक ।

मांगि भक्ति वर प्रेम दृढाई ❋ निर्भय राज्य करहु गृह आई ॥
नारिवचन तेहिमनहिंन भावा ❋ तब उठि कोट द्वार खलआवा ॥

दोहा-कहत बजाव निशान घन, सजहु सेन चतुरंग ॥
जन्मभूमि जावा चहहुँ, पितु चारनके संग ॥१६९॥

आयसु दीन्ह नरान्तक राजा ❋ लगे निशाचर सजन समाजा ॥
अमित बाजि[1] गर्ज[2] उष्ट्र नाना ❋ रथ खच्चर खेचर बहुयाना ॥
नाना अस्त्र शस्त्र गहिपानी ❋ निशिचर अनी[3] नजाइ बखानी ॥
जय सब संयुत साज सजाई ❋ विविध निशान हने हरषाई ॥
कन्त जातनिश्चय जियजानी ❋ विन्दुमती निजचित अनुमानी ॥
राम विरोध न यहि कल्याना ❋ महूं संग अब करहुँ पयाना ॥
भूषण वसन सुअंग बनाई ❋ कन्त चरण गहि विनय सुनाई ॥
सासु श्वशुर दर्शन हित नाथा ❋ हमहूं चलव प्राणपति साथा ॥

दोहा-दशमुखसुत सुनि तियवचन,हृदयपरमसुखमानि॥
कहेउ चलहु सब सखिन सह,प्रमुदितछाँडि गलानि१७०॥

सुनिपति बचन नारि हरषानी ❋ चली संग लैं सखी सयानी ॥
लै दल नारान्तक पग धारा ❋ अमितसेन को कहिसक पारा ॥
बुधजन कहत सुनहु खगराजा ❋ अर्युत[4] सतावन बाजत बाजा ॥
धूम्रकेतु कहँ ढिग सँगलीन्हे ❋ अति आतुरगमना रिस कीन्हे ॥
चलत शकुन मग ताहि न होई ❋ गनइ न मृत्यु विवश शठ सोई ॥
तासु पयान जानि दिगपाला ❋ जिय महँ संशय करत विशाला ॥
कोलकूर्म अहिपति[5] अतिडरहीं ❋ पुनि पुनि रामचरण चित धरहीं ॥
समुझि रामबल संशय त्यागी ❋ सुर दिगेश प्रभु पद अनुरागी ॥

दोहा-नारान्तक लंका तुरत, दल समेत नियरान ॥
दिग योजन दल रहेउ जब, सुनु मुनीशसज्ञान॥१७१॥

इहां कृपालु रमेश खरारी ❋ असित जलदसमसेन निहारी ॥
प्रभु सर्वज्ञ नीति हित सेतू ❋ सचिव बोलि कह रघुकुलकेतू ॥

---

१ घोड़ा। २ हाथी। ३ सेना। ४ सत्तावनहजार। ५ शेषनाग।

सखा विलोकहु दक्षिण ओरा ❋ गर्जत घन आवत नहिं थोरा ॥
उमाराम सब अन्तर्यामी ❋ चरित हेतु बूझा अस स्वामी ॥
रामवचन सुनि दशमुख भ्राता ❋ कहहँसिगहि प्रभुपद जलजाता ॥
देव देव नहिं दल जलवाहा ❋ अहहि नरान्तक निशिचर नाहा ॥
विहवाबल पुर बसत गुसांई ❋ पठवातेहि दशकन्ध बुलाई ॥
आवत धूमकेतु चर संगा ❋ करत कुलाहल नाद उतंगा ॥

दोहा-तेहिसँगगुणी अनेक प्रभु, गावत हनत निशान ॥
सेनसंग चतुरंग खल, डोलत विविध दिशान ॥ १७२ ॥

यह प्रभावतेहि सुनि भगवाना ❋ विहँसे प्रभुबल बुद्धि निधाना ॥
पाइ राम रुख पवनकुमारा ❋ उठे हर्षि हिय गरजि प्रचारा ॥
सहित लषण प्रभुपद शिरनाई ❋ धाये कहि जय जय रघुराई ॥
वातजात निशिचर समुदाई ❋ देखि सपदि ढिग पहुँचे जाई ॥
कटकटाइ गरजे अति भारी ❋ देखेउ इमि आवत बनचारी ॥
बूझेउ दूतहि निशिचर त्राता ❋ यह आवत धावतको भ्राता ॥
स्वर्ण शैल विकराल शरीरा ❋ गर्जत प्रलय जलद समबीरा ॥
तब नरान्तक सन कह दूता ❋ यहै पवनसुत बली अकूता ॥

दोहा-सिन्धुलाँघि लंकहि दहेसि, पुनि हति अक्षकुमार ॥
कालनेमि कहँ मारिमग, लावा मेरु उपार ॥ १७३ ॥

पुनि अहिरावणसह परिवारा ❋ पैठि पताल सदल संहारा ॥
लै आवा तापस दोउ भाई ❋ आवत अब तव ढिग सोइ धाई ॥
यहिकर भुजबल अहै अपारा ❋ सुनि रिसान दशकण्ठकुमारा ॥
चाप चढाइ सुधारेसि बाना ❋ तजन न पाव गहेउ हनुमाना ॥
सो शर धनुष तोरि कपि डारा ❋ पुनि रिसाय उर मुष्टिक मारा ॥
परा दशानन सुत महि कैसे ❋ मिश्र रसातलगे गिरि जैसे ॥
पवनपूत बल लूम पसारा ❋ कोटिन रथ गहि तापर डारा ॥
रथ सारथी चूर्णसम भयऊ ❋ विधिवश तेहिकर प्राण न गयऊ ॥

१ हल्ला । २ रथारूढ, गजारूढ, अश्वारूढ, पदचर ।

दोहा-एकदण्ड अति विकल खल, रह भूतल धुनि माथ ॥
पुनिशठ उठा सँभारि तनु, धायउ धनु धरि हाथ ॥ १७४ ॥

छाँडेसि अगणित शायक कोपी * क्षण इक कीश कटक गातोपी ॥
रामप्रताप प्रभंजन जाया * करगहि अरि शर तोरि बहाया ॥
देखि पवनसुतकी प्रभुताई * बरषत सुमन विबुध झरिलाई ॥
जयजय पिंगलाक्षसुरभाषा * सुनि दशकन्धतनय मनमाषा ॥
नारान्तक अति हृदय रिसाई * कपि तट पहुँचा आतुर धाई ॥
कहकलकीशजो कछुबल धरहू * मोसन मल्लयुद्ध रण करहू ॥
गावहिं विबुधतोरि भुजजोरा * निज उर सहु इक मुष्टिक मोरा ॥
लागत ठाढ रहे जो वानर * तौ जानहुँ तव भुजबल आगर ॥

सो०-हरि सुनि ताकर बात, रामदूत रिसि रोंकि उर ॥
अति सकोप मुसक्यात, क्षणक ठाढसन्मुख रहेउ ॥ १३ ॥

तबतेहि कपिकहँ मुष्टिकमारा * भयउ तडित सम शब्द अपारा ॥
टरा न तहँते पग हनुमाना * हृदय न निशिचर नेकु लजाना ॥
दुइ मुष्टिक तेइँ फेरि चलावा * तव मारुतसुत कोप बढावा ॥
किलकिलाय लंगूर लपेटा * डारि भूमि तिन दीन्ह चपेटा ॥
विकलताहि करि कपि अतिगाजे * भे व्याकुल निशिचर बहुभाजे ॥
कोटिन निशिचर कपिकर गहहीं * रामदूत कर कौतुक अहहीं ॥
मर्दि मर्दि बहु वारिधि डारे * देखि देव जय जयति पुकारे ॥
एकदंड शत निशिचर जागा * बहुविधि समर करन सो लागा ॥

छंद-लागेउ करन पुनि समर बहुविधि निजसुभट बहु फेरिकै
खल कोटि कोटि प्रचंड नायक कपिहि रण महँ घेरिकै ॥
रणरंग रंजित बीर मारुत पूत पुनि पुनि गर्जही ॥
गहि गहि बिपुल दनुजहिं पछारत उर विदारत तर्जही १३

दोहा-सघनबाहिनी जलज वन, जिमि करिकृत उत्पात ॥
रिपुन हनत तिमि वायुसुत, विनु श्रमप्रमुदित गात ॥ १७५ ॥

---

१ फारत । २ गर्जहिं । ३ हनुमान । ४ तनु ।

करत समर आयउ तेहिठामा ❋ जहँ नित होत रहा संग्रामा ॥
लरत अकेल तहाँ हनुमाना ❋ धायउ वालितनय बलवाना ॥
ता पाछे कपि चमू अपारा ❋ चले कहत जय कृपा अगारा ॥
लीन्हे गिरिवर तरु पाषाणा ❋ जहँ तहँ करन लगे मैदाना ॥
अंगद आइ पवनसुत पाहीँ ❋ कहि जय रघुवर सन द्विजनाहीँ ॥
दोऊ भट इकसँग करि हूहा ❋ हतनलगे अरिसेन समूहा ॥
देखत भालु कीश कृतमारी ❋ भागिचले निशिचर भयभारी ॥
देखि अनीनिज त्रसित बहूता ❋ भा अति कुपितदशाननपूता ॥

छं०-अतिकुपितभादशमुखसुवननिजभटनशपथदिवाइकै
फेरेउ सबनि करि कोप बोला जात कहहुँ पराइकै ॥
विधिदीन विविध अहार कपि दलखात कस न अघाइकै
विनु भालु कपि महिकरहुपुनिहठधरहु तापसधाइकै १४

दोहा-सुनि नारान्तक सरुष वच, रजनीचर समुदाय ॥
लागे लरन सकोप सब, माया कपट कुभाय ॥ १७६ ॥

मायाँतिमिर पसार अपारा ❋ अस्त्र शस्त्र बहु भांति प्रहारा ॥
शक्ति शूलवर विशिषकराला ❋ डारहिं रज तरु शैल विशाला ॥
गिरत ऋच्छ कपिलागत शायक ❋ उठहिं बहुरिकहि जयरघुनायक ॥
निजदल बिकल बिलोकि खरारी ❋ सत्यसिंधु इकशर संचारी ॥
रिपु शर काटि तिमिरकर दूरी ❋ प्रभु शर हते निशाचर भूरी ॥
हरि निषंगमहँ पुनि सो तीरा ❋ प्रविशेउ आइ सुनहु मुनि धीरा ॥
निरखि प्रकाशभालु अरुकीशा ❋ गहि गिरितरुँ कहि जयजगदीशा ॥
निशिचर अनी मध्यगे जबहीं ❋ दिये डारि गिरि रज तरु तबहीं ॥

दोहा-मरे तमीचर कोटि षट, जानि निशा परिवेश ॥
दलयुत अंगद पवनसुत, चले जहाँ अवधेश ॥ १७७ ॥

अंगद हनुमदादि कपि भालू ❋ आये जहँ रघुवीर कृपालू ॥
प्रभुहि विलोकि चरण शिरधरे ❋ भे श्रमरहित सकल सुखभरे ॥

१ युद्ध । २ कृपाके स्थान । ३ नरान्तक । ४ अन्धकार । ५ तूण । ६ मेरु । ७ वृक्ष ।
८ निशाचर । ९ संध्याकाल ।

अतिआदर प्रभुकियसन्माना ❀ सब कहँबैठन कह भगवाना ॥
पुनि रजाइ लै थलनिसिधाये ❀ छबि बारिधि प्रभुपद शिर नाये ॥
अंगद हनुमत निकट निवासी ❀ रामचरण सुखमागुणराशी ॥
दोउभटकर परसत प्रभु पाऊ ❀ देखि सुरन मन भा अतिचाऊ ॥
हमहुँ होत जग कीश स्वरूपा ❀ पद गहि नित्त रहत नर भूपा ॥
हरि न सिहाहिं सुमनझरलाये ❀ निज निज आश्रम अमर सिधाये ॥

दोहा-बन्धु सचिव सेनासहित, शोभित श्रीभगवान ॥
तुलसिदास ते धन्यनर, जे यह ध्यान लुभान ॥ १७८ ॥

उत नारान्तक सेन समेता ❀ गयउ जहाँ दशकन्धनिकेता ॥
सुतहि सुरारि मिला पुलकाई ❀ कुशल बूझि बैठेउ हरषाई ॥
देखि नरान्तककै समुदाई ❀ दशमुखशठ सब शोच दुराई ॥
जेहि विधिहरि लावा जगमाता ❀ ताहि आदि कृतकृत विख्याता ॥
कुम्भकर्ण घननाद निपाता ❀ कहि विलखा अहिरावण घाता ॥
पितुमन मलिन नरान्तक देखा ❀ बोला खल उर गर्व विशेखा ॥
तजहु सकल संशय विबुधारी ❀ करिहहुँ प्रात समर अतिभारी ॥
चमूकीश विनु क्षिति करि ताता ❀ धरिहौं तापस होत प्रभाता ॥

छं० धरि आनि तापस भ्रात दोउ परभात बार नलाइहौं ॥
धरि धरि विपुल कपि भालु दीन निशाचरन अघवाइहौं ॥
भुजबल कहहुँ निज नहिं बहुत करिरिपुनप्रकट दिखाइहौं ॥
विनु श्रमहिं तातनको बयरलै तवचरणशिरनाइहौं ॥ १५ ॥

दोहा-सुनत बीसभुज सुतवचन, बार बार उर लाइ ॥
लाग करावन नृत्य जड, गुणी समूह बुलाइ ॥ १७९ ॥

विन्दुमती आदिक रनिवासू ❀ सब चलिगईं मँदोदरि पासू ॥
सासुहिं मिलि बैठीं सब नारी ❀ मयतनया करि आदर भारी ॥
बूझि परस्पर रावण घरनी ❀ प्रभुयश ताहि सुनायउ बरनी ॥
देइ पतोहुन वास सुहावन ❀ आपुलगी सुमिरन जगपावन

१ आज्ञा । २ रावण । ३ पृथ्वी ।

शयन करहु कह सुतहिनिशाचर ❋ उठा आपु मतिमन्द अघाकर ॥
भातेहि भवन कुटिल दशग्रीवा ❋ जहँ मयतनया सद्गुण सीवा ॥
आयउ पिय मन्दोदरि जानी ❋ पाइ सुअवसर गहि पगपानी ॥
पियसुनाय अतिकोमल बयना ❋ लगी कहन जल भरि युगनयना ॥

दोहा-नाथ निगम आगम विबुध, कहत प्रकट यह बात ॥
बुधजन सो जो आधहु, राखै सरबस जात ॥ १८० ॥

तजहि न हठ शठ सरबसखोवै ❋ यद्यपि अन्त शीश धुनि रोवै ॥
सो विचारि प्रभु परम सुजाना ❋ मोरवचन सुनि कीजिय काना ॥
अजहुँ करहु हठ दूरि गोसांई ❋ अनुजभांति मिलिये प्रभुजाई ॥
प्रथमहिं सीतहि देहु पठाई ❋ पुनि तुम गवनहुँ पुत्र लवाई ॥
प्रभुपद गहि मांगहु वरएहू ❋ पदपंकजरति विमल सनेहू ॥
प्रियावचन तेहि विषसम लागा ❋ सो गृहताजिगा अनत अभागा ॥
निजनारी कहि कटुअभिमानी ❋ कीन्हशयन निशि गइ बडजानी ॥
सो रजनी गत भयउ प्रभाता ❋ जागे रघुवर त्रयजगत्राता ॥

दोहा-ऋच्छ कीश जगदीशपद, शीश नाइ रुखपाइ ॥
धारि गिरि तरु धावत भयउ, कहि जय जय रघुराइ ॥ १८१ ॥

कपि घेरा गढ यह सुनि काना ❋ रावणसुत लखि निपट रिसाना ॥
साजि विपुलदल हनत निशाना ❋ गढतें चला निकर बलवाना ॥
चारि द्वार करि कठिन लराई ❋ विशिषबरषि कपिदल विचलाई ॥
निकरे निशिचर गढते कैसे ❋ शलभ समूह शैलतें जैसे ॥
मारुतसुत देखा कपि भाजे ❋ कटकटाइ मति विक्रमगाजे ॥
कपि लँगूर चहुँ ओर भँवाई ❋ रोके खल निशिचर समुदाई ॥
पटकत महि निशिचर खल बेलू ❋ केतिनदेत विदिशि दिशि मेलू ॥
इकदिशि इमि हरि कृत संग्रामा ❋ दिगदूजी अंगद बलधामा ॥

दोहा-निशिचर सेना उदधिसम, मन्दर इव दोउ कीश ॥
मथत देखि जय तरन लगि, हँसे विबुध सुरईश ॥ १८२ ॥

---

१ निद्रा । २ कुबुद्धि । ३ भाईकीतरह । ४ रात्रि व्यतीत हुये । ५ टीडी । ६ मंदराचल पर्वत ।

छं०इमि निरखि पराक्रम करतकीश, भाक्रोधपरमरजनीचरीश
कारि प्रलय कन्दते घोर शोर, धर कुधर शस्त्र धाये कठोर ॥
इकबार मार कर शर समूह, किय बिकल अस्त्र हनिकीशजूह ॥
कोउ टेरत कपिपतिचितउचोट,कोउसुरतकरतनिजधामओट १६
बहु चले कन्दरा शैल ताक, कोउ दबकतइतउतपातझाक॥
कोउ देत दुहाई लषण राम,कोउ कहत विधाता भयोवाम ॥
यहि बीच नरान्तक कर प्रधान, तेहिधायगहेउयुवराजपान ॥
बहुभटलपटाने अंग संग,सब संग उठेउ अंगद उतंग १७
नभकीश कीन्ह कौतुक अभूत,रविमंडलपहुँचेउबालिपूत ॥
अँगगारे जारे तपनि आंच, पुनि आयउ जहँसंग्रामराच ॥
यह निरखि अपर यूथप पिशाच,तुर आइ गयउ सेना समाच ॥
लै विषम शूल मारेसि प्रचण्ड,उर लागआन अतिकठिनदण्ड १८॥
महि परेउ तनयतारा तुरन्त, लखि दौरि परेउ हनुमन्त सन्त ॥
सोइ शूल खैंचि मारेउ प्रचण्ड,होइ गिरेउ यूथपति सहस खंड
सब चरित सुनेउ रविकुलदिनेश,कहु जाहुबेगि अहिराजै शेष ॥
चलेनाइ माथ शंकर मनाइ, धनु बांधि बांधि विकराललाइ
उरअंगद कर धारि सुमिरिराम,श्रमविगतभयउबलअतुलधाम॥१९॥
दोहा–बिगत भई मूर्च्छा तुरत, बहुरि चलेउ युवराज ॥
लक्ष्मण चाप टँकोर सुनि, फिरा कीश दलसाज ॥१८३॥

सुनत टँकोर शरासन निशिचर ❋ बधिर भयेनहिंसुनतशब्दपर ॥
वर्षा विशिष कीन्ह अहिनाथा ❋ काटे पानि पाँय बहुमाथा ॥
उडहिं अकाश शीश भुज कैसे ❋ धुनकत तूल रोमगण जैसे ॥
रुण्ड अशीश फिरहिं रणधरणी ❋ यथा अकाल क्षुधारतकरणी ॥
इतकपि भालु विजय अभिलाषे ❋ उतहिं निशाचर जय हित राखे ॥
मारुतसुत अंगद बलबीरा ❋ समरबाँकुरे अति रण धीरा ॥

---

१ नरांतक । २ समूह । ३ लक्ष्मण ।

सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ ❋ भाजे कपि रण गाजे सोऊ ॥
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं ❋ प्रमुदित भटकायरहिय डरहीं ॥

छंद-कायरडरहिं प्रमुदित सुभट सबलरतहारिनमानहीं
जहँ तहँ गिरैं पुनि उठि फिरैं दुहुँ ओर जयति बखानहीं ॥
कौतुक विलोकत विबुधगण विस्मय हरष उर आनहीं ॥
रघुवीर सेननि पर सुमन झरि लाय विनती ठानहीं ॥२०॥

दोहा-अति अद्भुत करणी करहिं, ऋच्छ कीश बल भूरि॥
करपद विनु कर रजंनिचर, तिन मुख डारहिं धूरि १८४॥

बहुतनिके शिर तोरिचलावहिं ❋ निजभुज बल रावणहिं जनावहिं ॥
गये याम युग दिवस भवानी ❋ नारान्तक अधसेन सिरानी ॥
मरे निशाचर अमित निहारी ❋ रावण सुवन कोप करि भारी ॥
रथ समेत ऊपर नभ जाई ❋ भयउ अदृश्य अस्त्र झरि लाई ॥
क्षणमहँ करि मूर्च्छित कपिसेना ❋ पुनि शठगा जहँ राजिवनैना ॥
गरजा मनहुँ मेघ समुदाई ❋ कहन लगा कटु वचन रिसाई ॥
होसि सजग निश्चर कुलद्रोही ❋ बन्धु वैर लगि मारहुँ तोही ॥
प्रभुकहँ कटुक कहत सुनि काना ❋ कोपेउ जाम्बवन्त बलवाना ॥

दोहा-शूल एक तेहि छाँडेऊ, सो करगहि ऋच्छेश ॥
धाय तासु उर मारेऊ, भाषि जयति अवधेश ॥१८५॥

लागत शूल सो मूर्च्छित भयऊ ❋ जाम्बवन्त तब करगहि लयऊ ॥
बार अमित महि माहँ पछारा ❋ बांधि गाडि वारू महँ डारा ॥
जागे सकल बली मुख ऋच्छा ❋ लगे करन रण निजनिजइच्छा ॥
जाम्बवन्त यह हृदय विचारा ❋ मरै नहीं यह खल मर्म मारा ॥
विधि इच्छा पुनि ताहि उखारी ❋ मुष्टि चारि उर माहिं प्रचारी ॥
गहिपद संचारा गढ माहा ❋ सपदि परा जहँ निशिचर नाहा ॥
दशौ वदन हाहाकर धावा ❋ नारान्तकहि हृदय तब लावा ॥
निरखि निशाचर गणसमुदाई ❋ गढकहँ गए सब संभ्रमधाई ॥

---

१ आकाश। २ कमलनयन श्रीरघुनाथजी। ३ जाम्बवन्त। ४ मरा। ५ फेंका। ६ रावण।

दोहा-कपिगण समय प्रदोष¹ लखि, रामचरण धरि माथ॥
ठाढभये सबतन चितै, दयादृष्टि रघुनाथ॥ १८६॥

बिनु श्रमकीन्ह सबनि जगदीशा ❀ गये सुवास भालु अरु कीशा॥
रुचिरासन आसीन² रमेशा ❀ ढिग बीरासन उरगनरेशा³॥
अंगद मारुतसुत प्रभु चरणा ❀ लाग पलोटन सुनहुँ अपरणा॥
पुण्यपुंज अरु भाग्यनिधाना ❀ जिनपर नित प्रसन्न भगवाना॥
वहां सुरारि सुतहिं पौढाई ❀ बिलखहिं तासु नारि समुदाई॥
होत प्रभात नरांतक जागा ❀ पितु बिलोकि लज्जारसपागा॥
रथचढि तुरत इकाकी धावा ❀ नभपथ समरपुहुमि⁴महँ आवा॥
कीशकटक यह मर्म नजाना ❀ होइ लोप⁵ कीन्हेसि झरिवाना॥

दोहा-धावहिं व्योम⁶हिं भालु कपि, ताहि न हेरैंनैन॥
घायल होइ होइ गिरहिं महि, भाषहिं आरत वैन॥ १८७॥

बाण एक शत तडित समाना ❀ छाँडेसि शठ जहँ कृपा निधाना॥
लागत विपुल कीश मुरझाने ❀ बहुतक कायर देखि पराने॥
भागि सेतढिग एक अयाना ❀ टेरे फिरहिं न सुन हरियाना॥
मारुतसुत अंगद सुग्रीवा ❀ कुमुद मयंद द्विविद बलसीवा॥
ये सब वीर हांक दे धावहिं ❀ नभपथताहिन खोजत पावहिं॥
तब सब वीर एक मत ठाना ❀ लै गिरितरु किय लंक पयाना॥
दशमुख भवन तासु कंगूरा ❀ बैठे कपि पसारि लंगूँरा⁷॥
करते डारि देहिं पार्षाना⁸ ❀ बहुत दनुज भे चूर्ण समाना॥

छंद-भे चूर्ण निशिचर यूथ, गै निशिचरी भय गूथ॥
सुख बीन आरत दीन्ह, भइ भवन रावण लीन्ह॥
सुनि बोलि भट दशभाल, कह खाहु कीश⁹ कराल॥ २१॥
करियत्न भागहिं कीश, अस कहेउ बच दशशीश॥
मम लहहु आयसु छोर, सोइ जानिहौं रिपु मोर॥
सो शूर मोकहँ प्यार, जो खाय मर्कट धार॥

---

१ संध्याकाल। २ विराजमान। ३ लक्ष्मणजी। ४ संग्रामभूमि। ५ अदृश्य। ६ आकाश। ७ पूंछ। ८ पत्थर। ९ बन्दर।

जो जाय आयसु छोर, सोइ जानिहौं रिपु मोर ॥ २२ ॥
दोहा-ऐतु ऐतु गुण रजनिचर, एक एक भुज जोर ॥
रावण पावन राखि शिर, धाये करि रवघोर ॥ १८८ ॥
देखि लँगूर सकल हरषाने ❋ मधुमाखीसम सब लपटाने ॥
कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा ❋ डारे सबनि पटकि कर दापा ॥
काचे घटसम दनुज बिदारी ❋ जयतिराम जय लषणखरारी ॥
सुभट छुहनि पुनि फेरि लँगूरा ❋ भूमि गिरावहिं कोटि कँगूरा ॥
अति विशालगहि कंचनखंभा ❋ जिमि प्रयासबिनुकरु आरम्भा ॥
लै ढाहत अपक्व घट जूहा ❋ कपि तिमि तोरत दनुजसमूहा ॥
पुनि बिचार करि हरिभट धाये ❋ निशिचर निकरमध्यचलि आये ॥
करि कोटिन बिनु नासा काना ❋ करपद हीन कीन्ह रिपुनाना ॥
छंद-रिपुकीन्ह कर पद हीन अगणित दीनबचनपुकारहीं
गढते निकर निशिचर अखिल खल विपिनबाटसिधारहीं
पीपरपरणसम धरणि लंका कम्प षट कीशनि करा ॥
तोरे कपाट निपाटि अरि तिय केश खैंचत गहिकरा ॥ २३ ॥
दोहा-भयउ कुलाहल लंक अति, नारान्तक सुनि कान ॥
नभते स्यन्दन सहित शठ, प्रकटि परम रिसियान ॥ १८९ ॥
निरखि दशा निज नारिन केरी ❋ कहन लागु कटु गिरा घनेरी ॥
शठ आयउ संग्राम बिहाई ❋ लरत तियँन सँग लाज न आई ॥
अबलनपै बल भटन कराहीं ❋ छाँडहु तियन लरहु ममपाहीं ॥
सुनि मरकटनि भयउ सुखभारी ❋ तजी निशाचरि दीन पुकारी ॥
भाजि भवनभययुत गइँ नारी ❋ लीन्ह कपिन कर शिला उपारी ॥
शिलप्रहार हयँ स्यन्दँन भंजा ❋ आयुधँ तोरि सारथीं गंजा ॥
धरि पछारि रावण दृग देखा ❋ कौतुक कीशनि कीन्ह विशेषा ॥
लागे पद गहि खलन फिरावन ❋ नाचहिं गाइ राम यश पावन ॥
दोहा-तोरत तिन तनु पटकि महि, कहत जयति रघुवीर ॥

१ शत्रु । २ शब्द । ३ बाल । ४ खिन । ५ वानरोंको । ६ घोडे । ७ रथ । ८ हथियार । ९ रथ हांकनेवालेको ।

करत युद्धगत याम युग, कीश छहौं रणधीर ॥ १९० ॥

अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा ❋ वन्दे चरण जाइ अवधेशा ॥
श्याम सरोरुह प्रभु तनु देषी ❋ पदधरि शिरसुखलहेउ विशेषी ॥
राम सबनि सादर सन्माना ❋ को दयालु रघुवीर समाना ॥
कह प्रभु होहु थलनि आसीना ❋ आयसु पाइ भये श्रमहीना ॥
भये विगत श्रम वानर भालू ❋ अनुजसहित मन मुदित कृपालू ॥
सुनहु उमा ता निशि रघुनायक ❋ गावत जन गुण सब गुणदायक ॥
याम तीनि यामिनि गत जबहीं ❋ उत्त नारान्तक जागेउ तबहीं ॥
शोच विवश मींजत दोउ हाथा ❋ लज्जित हृदय निशाचरनाथा ॥

छंद–लाजकै रथै सँभारि बाजि साजि रुष्ट पुष्ट ॥
शंक छाँडि शस्त्र मांडि गाढ वीर संग दुष्ट ॥
भेरि दुन्दुभी निशान गान काडकैत कर्त ॥
धीर वीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्द भर्त ॥ २४ ॥
जीव आश त्राश नाश बाज मोह छण्ड छण्ड ॥
बंक शूर शंक दूर वीरता सपूर चण्ड ॥
बाजि नाग शोर घोर पूरिगे दशो दिशान ॥
धूरि पूरि मेघ बोध शोध ना परो अपान ॥ २५ ॥
कूदि कूदि व्योम पन्थ जाय आइ जाइ भूमि ॥
अस्त्र शस्त्र काढि काटि क्रुद्ध क्रुद्ध झूमि झूमि ॥ २६ ॥

दोहा–प्रलय मनहुँ चाहत करन, अनीतमीचरचण्ड ॥
सुनु खगेश मर्कट विकट, जिमि धाये बरबण्ड ॥ १९१ ॥

छंद–निहारि हर्ष कीश ऋच्छ फूलि फूलि शैलभे ॥
बजाइ कटकटाइ हूह एक बारकै अभे ॥
उपारि भूधरा अपार वृक्ष अश्म शृंगहू ॥
मरे निशाचरानि रुण्ड झुण्ड शुण्ड भंगहू ॥

---

१ रात्रि । २ अश्व । ३ आकाशमार्ग । ४ राक्षसी । ५ पर्वत ।

रदीहरी मृगावती सवार उष्ट्र मण्डहू ॥
मनौ विचित्र बाहिनी दई मनोज खण्डहू॥२७॥
हलै धरा बलै विचारि भार धारि को सकै ॥
सुनै पुकारि जयति राम शत्रुसे नहीं थकै ॥
लँगूर शूलसे अकाश भीत उच्च औचट्यो ॥
गिरे पयोद पौनते झपेट भेटते कट्यो ॥ २८ ॥

सो०-शब्दकरत अति घोर,इमि पहुँच्यो दल भालुकपि॥
आयुध झरि अति जोर,परै लागि घन प्रलय सम ॥१४॥

सजगहोन कपि भालुनपाये ❋ अतिशय निकट तमीचर आये ॥
असित निशाचर अति अँधियारी ❋ तापर करैं शत्रुके मारी ॥
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे ❋ जहँ तहँ एकनि एक पुकारे ॥
सन्मुख कोउ न करत लराई ❋ कपिन मारि रण भूमि सुवाई ॥
गे अनेक भजि सिंधु समीपा ❋ सेन विकललखि रघुकुलदीपा ॥
सजि शारंग तजा इकबाना ❋ भा प्रकाश दिग तरणि समाना ॥
लखि तम विगत भालु कपि हरषे ❋ कटकटाइ धाये रिपु धरषे ॥
भिरे एकसन एक प्रचारी ❋ लागे करन कठिन हठ भारी ॥

दोहा-शीशशिला तरु करन धरि, काँखन भरि भरि धूरि॥
गरजे भालु बली वदन, धाय धाय नभ दूरि॥१९२॥

डारहिं गिरितरु निशिचर शीशा ❋ दधिघटसम फोरहिं भट कीशा ॥
चढहिं अनेक कन्धपर जाई ❋ काटहिं कान दृगनिरँज नाई ॥
तोरहिं शूल चाप नाराचा ❋ अरिदल अस्त्र न एको वाचा ॥
शस्त्रहीन रिपुसेन पराई ❋ देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई ॥
बैठि अवनि अतिलूम लफाई ❋ अति उतंग दीरघ चौडाई ॥
तर्कित खसे निशाचर कैसे ❋ पक्षहीन नभते खँग जैसे ॥

---

१ पृथ्वी। २ बादल। ३ वायु। ४ राक्षस। ५ काले। ६ धनुष। ७ श्रीसूर्य्यनारायण। ८ अँधियारा। ९ रीछ। १० बंदर। ११ पुकारकर। १२ आकाश। १३ नेत्र। १४ धूरि। १५ बरछी। १६ शरासन। १७ बाण। १८ पृथ्वी। १९ ऊँची। २० पक्षी।

गिरत कीशगहि चरण फिरावहिं ❋ पटकि भूमिगाडहिं विहँसावहिं ॥
तुम्हरि सम अगणित भुजतोरत ❋ अगणित रुण्ड सिंधु महँ बोरत ॥
दोहा-कोटि बयालिस तमीचर, नारान्तक कर घात ॥
रामकृपा बल हति खलनि, कपिन बिताई रात ॥ १९३ ॥
प्रभु तुणीर महँ हरि शर जबहीं ❋ प्रबिशे कीन्ह उदय रवि तबहीं ॥
देखि कटकनिज परमबिहाला ❋ नारान्तक भट कोटि कराला ॥
करि बहु शपथ लिये सँग वीरा ❋ वर्षत शक्ति उपलैं गण तीरा ॥
शर अस्तंभन विपुल पनारे ❋ भये अचल कपि टरहिं न टारे ॥
लैलै पाश निशाचर धाई ❋ बांधत जिमि चुंगेलि शुकपाई ॥
व्याधि पींजरा सम बहुजाना ❋ भरे जान प्रति अयुत प्रमाना ॥
जे कपि लखैं विपुलबल बंका ❋ ते मूर्च्छित फेकैं गढ लंका ॥
रावण देखि तनयकी करणी ❋ वन्दीजन जिमि भुजबल वरणी ॥
दोहा-हरि इच्छा जानै न कस, सुतहिं सरावत मूढ ॥
काल बिवस मति संभ्रमित, सुनहु ऋषय बुधिगूढ ॥ १९४ ॥
अंगद हनूमान जब जागे ❋ नारान्तक सन जूझन लागे ॥
क्षण इक कीश न पायउ लरई ❋ पुनि शर हति मूर्च्छा वश करई ॥
याम युगल तेहिकर वरदाना ❋ राखेउ तेहि कारण भगवाना ॥
रिपुहि खिलावत रघुकुलकेतू ❋ पालक बुधि वाणी श्रुति सेतू ॥
सो युगयाम गये जब वीती ❋ तब रघुवीर सजी जयरीती ॥
हांक देइ कपि भालु जगाये ❋ भये विगत मूर्च्छा सब धाये ॥
हनूमान अंगद जब जागे ❋ राम लषण चरणन अनुरागे ॥
प्रभुपद शीश रहे धरि कीशा ❋ तब हँसि बोले श्रीजगदीशा ॥
सो०-विधि वाचा लगि आज, तात तुमहिं मूर्च्छा भई ॥
पुनि कहि प्रभु रघुराज, अब श्रम स्वप्नेहुँ अनत नहिं ॥ १९५ ॥
तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना ❋ जितिहैं जगत मनुज रणनाना ॥
असवर जबहिं रमापति भाषा ❋ सुनत गिराँ हरषे मृगशाखा ॥
कहेउ बहोरि वचन रघुवीरा ❋ सुनु अंगद हनुमत रणधीरा ॥

१ मारकर । २ निषंग-धनुष । ३ सूर्य्य । ४ पत्थर । ५ वधिक । ६ सुत । ७ वाणी । ८ वन्द[illegible]

तात तुरत तुम उभयसिधावहु ❋ लंक भये कपि तिन्हैं छुडावहु ॥
सुनि दोउ भटगहि शैल विशाला ❋ सुमिरि कोशलाधीश कृपाला ॥
सपदि कीश गढ पर चढिगये ❋ देखि लंक महँ खरभर भये ॥
सकल कपिनके मूर्च्छा बीती ❋ तोरि पाश भजि राम सप्रीती ॥
वायुसुतु युवराज निहारी ❋ हरषे कहि जय जयति खरारी ॥

दोहा–मेषं बरूथहि पाइ जिमि, वृकंगण करहिं संहार ॥
तिमि मर्दहिं दनुजन सुभट, कीश भालु बरियार ॥ १९६ ॥

यामँ एक वासर अवशेषा ❋ कह अंगद कीशन तन देखा ॥
चलिय तात अबजहँ सुरभूपा ❋ देखिय पदपाथोज अनूपा ॥
अंगदवचन पवनसुत भाये ❋ सपदिसहित दल प्रभु पहँ आये॥
निशिचरकोटि नरान्तक संगा ❋ करतरहे बहु विधि रणरंगा ॥
माया करि निजगात बचावहिं ❋ जहँ तहँ खल रावणयश गावहिं ॥
अंदितिनन्द लखि तिन करमाया ❋ सभय भये जाना रघुराया ॥
दीननाथ अनुजहि अनुशासन ❋ उठे नमित गहि विशिषशरासनें ॥
अहिपति कहेउ तिष्ठ क्षण एका ❋ तैं कीन्हें रण खेल अनेका ॥

छंद–तैं कीन्ह खेल अनेकविधि अवतिष्ठ खलरणभूथला॥
इमि कहि अहीश चढाइ धनुशर करन निशिचर दलमला
निज अनी निरखि निदान हरिहर सुवन धावारिसिभरा ॥
डारत अनेक नराच प्रभु पर शिला तरु वर भूधरा ॥ २९ ॥
रघुवीर अनुज प्रवीण खलबलदलन श्रुति यश गावहीं ॥
तरु उपल गिरि अरि तीर उपरहि बाण लषण चलावहीं ॥
रिपु शस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक करि करि डारहीं ॥
सुरगण प्रफुल्लितसुमन झरि करिजयतिलषणपुकारहीं ३०
दोहा–मायापतिके अनुज सन, माया करत अयान ॥

१ शीघ्र । २ हनुमान । ३ अंगद । भेडोंकेझुण्ड । ५ भेडहा । ६ निशाचर । ७ पहर । ८ दिन
९ चरणकमल । १० सुग्रीव । ११ लक्ष्मणजी । १२ आज्ञा ।
१३ बाण । १४ धनुष । १५ सार । १६ पहाड़ ।

लगत न एको जानि जिय, तब खल निकट तुलान १९६॥

हना लषणउर पविसमशायक ❋ लगत गिरे रणमहि अहिनायकै॥
पुनिखलदलभा प्रबल अपारा ❋ भक्षणलाग भालुकपिधारा॥
चले पराय कीश भय भीता ❋ अब न बचब करि काल प्रतीता॥
निशिचर धारि भालुकपिवेषा ❋ लागे खान कपिन अस देखा॥
कपि डर कीश भालुडर ऋक्षा ❋ आपु आपु भय मिलन अनिक्षा॥
कोउ न काहु निकट नियराई ❋ जो जेहि पाव ताहि तेहि खाई॥
पुनि शठसाधि बिभीषणरूपा ❋ गहिं अंगद हनुमत कपिभूपा॥
काहु न यह माया कछु जानी ❋ कपट मिलाप बिभीषण ठानी॥

दोहा-तेहि अवसर जागे लषण, देखा सेनविनाश॥
अहिरावणछल पवनसुत, समुझत उडा अकाश १९७॥

गरजेउ जाय भयंकर भारी ❋ फटेउ हृदय सुनि निशिचर झारी॥
मायाहृत शर लषण पवारा ❋ उघरे कपटकपाट अपारा॥
नारान्तककै माया बीती ❋ गयउ यज्ञशाला अति प्रीती॥
खोजिसि सकल समग्री ताकी ❋ कीन्ह अरम्भ विजय निजताकी॥
यज्ञ आसुरी तेहि तब ठाना ❋ पशु समूह बलि कारण आना॥
भये निशामुख श्रम वश सैना ❋ फिरे सुमिरि सब राजिवनैना॥
तुरत अहीश राम पहँ आये ❋ सहित अनी प्रभु पद शिर नाये॥
कृपाअयन निरखे मृगशाखा ❋ प्रभु श्रम छीनदीन अभिलाषा॥

दोहा-टिकहु थलनि सबसन कहा, सुखसागर रघुनाथ॥
पायसुआयसु भालुकपि, चले सुमिरि गुणगाथ॥१९८॥

तब रघुराज अनुज उरलावा ❋ निज आसन समीप बैठावा॥
मघवासुत सुत अरु हनुमाना ❋ इनसम भाग्यवंत नहिं आना॥
अमलाम्बुज पदगहि निजपानी ❋ परशे सबनि सनेह भवानी॥
जाम्बवन्त लंकेश हरीशा ❋ प्रभुसमीप सब मुदित मुनीशा॥
अनुज सखा नारान्तक करणी ❋ युद्धप्रबलता बहु विधि वरणी॥

१ आया। २ वज्र। ३ बाण। ४ श्रीलक्ष्मणजी। ५ यूथकेयूथ। ६ कमलनेत्र श्रीरामचंद्रजी। ७ सुग्रीव।

शिवप्रताप तेहि अमितप्रतापा ❋ मरण न दीन्हे बहुसन्तापा ॥
सुने वचन रघुपति मुसकाने ❋ अति सनेह हरिचरित बखाने ॥
सुनहु सकल हम शम्भुनआना ❋ जिनहिं भेदते वश अज्ञाना ॥

दोहा-जे सुमिरहिं शिवसह उमा, ते जानह मम प्रीय ॥
शंकर भजहिं सो मोहिं भजहिं, मोहिं सो शंभु अतीय १९९

चारिपदारथ करतल ताके ❋ सबहिं महेश उमा उर जाके ॥
जो मम प्रण शिव सदानिबाहा ❋ सो जय देव न संशय आहा ॥
सुख कलत्र जय विजय विभूती ❋ शंकर सुमिरत होइ अकूती ॥
भक्तिमोरि शंकर आधीना ❋ जलाधीन जिमि जीवन मीना ॥
कह आश्चर्य नरान्तक एहा ❋ मोपर गिरिपति परम सनेहा ॥
सुमिरहु सदा विश्व इक साथा ❋ कपट त्यागि नावहु सब माथा ॥
होइहि विजय धीर मन धरहू ❋ बेगि उपाव पाव सुख करहू ॥
शंभुउपासन कर मम दासा ❋ तात हृदय धरि दृढ विश्वासा ॥

दोहा-जो नर चाहत भक्ति मम, सो छल कपट दुराइ ॥
शिवासमेत गिरीशपद, निशिदिन रहु मनलाइ ॥ २०० ॥

मन क्रम वचन शम्भुपदआशा ❋ करहिं ताहि उर सब गुणवासा ॥
निर्भय करि जो हरपद नेहू ❋ ता उर रमासहित मम गेहू ॥
भववारिधि लांघहिं बिनु खेवहिं ❋ यह विचारि बुध जन भव सेवहिं ॥
भवभंजन यह हित उपदेशा ❋ अनुजहि सखहि बुझाव रमेशा ॥
ध्रुववाणी सुनि अति सुख पावा ❋ अहिपति रामचरण शिर नावा ॥
अंगद हनूमान नल नीला ❋ कपिपति अरु ऋक्षेश सुशीला ॥
सहित विभीषण राजन साता ❋ सुन्न श्रीमुख हरयश विख्याता ॥
रामहिं शिवहिं एक जे जाने ❋ भयतजि नाम जपत हरषाने ॥

दोहा-कहत सुनत इतिहास शुचि, निशि बीती युगयाम ॥
खगपति आगम देवऋषि, जित शोभित श्रीराम ॥ २०१ ॥

राम लषण सुखसीव विराजे ❋ मार अपार निहारत लाजे ॥

१ अपरिमान। २ दुःख। ३ हाथ। ४ हृदय। ५ संसारसागर। ६ घाम।

निरखि मानि मुनि हृदय सनाथा ❀ उठे हरषि प्रभु रघुकुलनाथा ॥
शीशनाइ प्रभु आसन दीन्हा ❀ आशिष पाइ हरषि हित कीन्हा॥
मुनि नीके हरिरूप विलोका ❀ यथा इन्दु लखि सुखलह कोका ॥
पुलकि गात तब कह ऋषिराजा ❀ सुनहु नाथ आयउँ जेहि काजा ॥
चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी ❀ यदपि कृपानिधि अन्तर्यामी ॥
सदा अनाथ नाथ भगवाना ❀ विभव विरंचि करिय परिमाना ॥
जबलगि होन प्रभात न पावहि ❀ तबलगि हरिहरसुत लै आवहि ॥

दोहा-जपतनिरन्तर नाम तव, सो जानहु भगवान ॥
विधि वर हित इत आनिये, तेहि कहँ कृपानिधान॥ २०२॥

नारान्तकवध है तेहि हाथा ❀ दधिबल नाग भक्त तव नाथा ॥
नाथ बहुत यहि खलहि खिलावा ❀ रण विलोकि देवन दुखपावा ॥
अब रघुवीर करहु सोइ बाता ❀ विनु प्रयास रिपु मरइ प्रभाता ॥
तेहँ सन तुमहिं न सोइ लराई ❀ दधिबल सन्मुख करहु बुलाई ॥
सविनय नाइ शीश वर भाषी ❀ गवने मुनि प्रभु छवि उरराखी ॥
नारद गये जबहिं विधि लोका ❀ वायुतनयतन राम विलोका ॥
तात तुरत तुम गवनहु तहवाँ ❀ वारिधिमहँ धौरागिरि जहवाँ ॥
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये ❀ बहुत दिवस चलिगये सुभाये ॥

दोहा-अहै तपोबल तेजस्वी, तात तासु ढिगजाइ ॥
मन प्रसन्न करि चतुराई, आनहु बेगि बुलाइ ॥ २०३ ॥

पवनकुमार पाइ अनुशासन ❀ चले वन्दिपद हरषि उदासन ॥
बेगवन्त धावा कपि कैसे ❀ बर नराच दधिसुतसे तैसे ॥
लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा ❀ पहुँचे वायुपुत्र बलधामा ॥
देखि तरणिसम तासु प्रकाशा ❀ ठाढ भयउ कपि मंदिरपासा ॥
दण्ड युगल कपि इच्छित रहेऊ ❀ हिय महँ राम राम अस कहेऊ ॥
उत रण होई होत प्रभाता ❀ इत इन कर चित हरिपद राता॥
क्षण इक कपि मन कीन्ह विचारा ❀ प्रभु पहँ चलिये कवन प्रकारा ॥

---

१ चन्द्रमा । २ कमल । ३ ब्रह्मा । ४ दधिबल । ५ श्रमा-यत्न । ६ हनुमान् ।

जो गृहसहित चलहुँ लै येही ❋ नहिं अस आयसु भक्त सनेही ॥
दोहा-बुध जन शीश शिरोरतन, अति लजात मुनिराउ ॥
ताहि जगावन हेत तब, कीन्हे अमित उपाउ ॥ २०४ ॥
अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना ❋ तजि प्रवीणता भनि भगवाना ॥
रामचरण चित कपि बरदयऊ ❋ दण्ड एक औरौ चलिगयऊ ॥
विधिप्रेरित दधिबल लघु शंका ❋ करन उठेउ देखा भटबंका ॥
जयश्रीराम बायुसुत बोला ❋ सुनि दधिबल निज लोचन खोला ॥
बूझि हरिहि कीशहि उरलाई ❋ कही परस्पर दोउ कुशलाई ॥
पुनि हनुमान कहेउ सुन भ्राता ❋ चलहु विलोकन त्रिभुवनत्राता ॥
सानुज नाथ सुखद पद कंजा ❋ जिनमकरन्द शिला अघगंजा ॥
जेहि लगि तप कीन्हेउ बहुकाला ❋ सो तुमपर अनुकूल कृपाला ॥
दोहा-धूरजटी हृदमानसर, बसत हंस इव जोइ ॥
सादर तुमकहँलेन लगि, पठवा मोहिं प्रभुसोइ ॥ २०५ ॥
सुनि शुभ वचन सुकंठ कुमारा ❋ हरिपहँहरिसँग तुरतसिधारा ॥
आये नाथ निकट मृगशाखा ❋ देखे पद जे हर हियराखा ॥
रहेउ चरण गहि प्रीति समेता ❋ दधिबल निर खेउकृपानिकेता ॥
सानुज हरषि मिले सुखकंजा ❋ तासुपाणिगहिं निजकरकंजा ॥
बैठे ताहि निकट बैठावा ❋ तेहि अवसर सुकंठ तहँ आवा ॥
निरखितनय कपिपतिहरषाना ❋ मिलत प्रेमनहिं जायबखाना ॥
गइमणि पन्नग जनु पुनि पाई ❋ देही देह मीन जलजाई ॥
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेंटे ❋ अवगुण तीन ताहि क्षण मेटे ॥
सो०-दधिबल वालि कुमार, मिले परस्पर हरषिहिय ॥
भयउ आइ भिनुसार, न्हाइ सबनि प्रभुपद गहे ॥ १६ ॥
जहँ तहँ समर करन बनचारी ❋ चले कहत जय लषण खरारी ॥
वहाँ नरान्तक प्रात प्रबोधा ❋ रथ चढि चलेउ भयंकर योधा ॥
निशिचर अनी सुभटसँगताके ❋ आयुध अखिल भयानक वाके ॥

१ आंखें। २ आपसमें। ३ प्रसन्न। ४ सुग्रीवकुमार। ५ सर्प।

महि संग्राम निशाचर ठाढे ❋ असितमेघसम अति रिसबाढे ॥
करि माया तेइँ गात छिपावा ❋ भयउ प्रगट जब प्रभुढिग आवा ॥
दधिबल लखा सखा चलि आयउ ❋ भुजापसारि हर्षि उठि धायउ ॥
नारान्तकहु दीख गुरु भाई ❋ मुदित मिले उर उभय अघाई ॥
भेंटि सप्रेम बूझि कुशलाता ❋ निज निज दशा कीन्ह विख्याता ॥

दोहा-हरिपति पूत प्रवीण अति, सुनि तेहिमुखविख्यात॥
लगे बुझावन मित्र कहँ, सुनहु बीयपति बात ॥२०६॥

वंशस्वभाव सत्य कवि कहहीं ❋ फल पियूष विष बेलिन लहहीं ॥
समुझहु तात विचारि निदाना ❋ किहे अनीति न जग कल्याना ॥
पितुचरित्र समुझहु मनमाहीं ❋ रामविरोध कतहुँ जय नाहीं ॥
तुम प्रवीण भा मतिभ्रम कैसे ❋ कूप धसत बिकचाट अनैसे ॥
तुमहुँ कीन्ह दिनचारि लडाई ❋ जानेउ भालु कीश बल भाई ॥
तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना ❋ कहहु पाहि रघुवर भगवाना ॥
सफल करहु भव प्रभुपदपरशी ❋ करिहैं अभय तोहिं समदरशी ॥
मानहु सीख मोरि सुखकारी ❋ प्रणतपाल रघुवीर खरारी ॥

दोहा-शारंगी शर तरणि सम, दशमुख वपु खग लेख ॥
जरत राखु यहि समय तुव, करि बिज्ञान विशेष ॥२०७॥

सुनत वचन गुरु भ्राता केरा ❋ नारान्तक भा क्रोध घनेरा ॥
कहनलाग खल ताहि कुभाँती ❋ सहज सभीत कीश दिन राती ॥
बालिहि हतेउ जौन तपधारी ❋ भा अंगद तिन्ह आज्ञाकारी ॥
दधिबल यह बानर कुलरीती ❋ हमरे करहिं न अरिसन प्रीती ॥
यह कहि प्रभु सम्मुख सो धावा ❋ दधिबल लूम लपेटि टिकावा ॥
नारान्तक कह रे शठ बानर ❋ तव तनु नहीं मोर डर कादर ॥
छाँडहुँ मूढ समुझि गुरुभाई ❋ कहि अस पेलि चला कठिनाई ॥
तब सुकंठसुत क्रोधित भयऊ ❋ सपदि कूदि आगे गहि लयऊ ॥

दोहा-नारान्तक दधिबल भिरे, निरखि भालु अरु कीश॥
लगे लरन सँग निशिचरन, कहि जय श्रीजगदीश॥२०८॥

छंद-कपिशूरसँहारेशिलनिमारि,बहुमर्दिकरेसिकतापहारि

भट विह्वाबल वासी जितेक, कपि मारिगिराये वचन एक
रहे एकाकी मनुजाद वीर, किय द्वन्द्व युद्ध उरगादधीर ॥
दोउ लरतलहैं छबि एकभांति, गिरि कज्जलकंचनउभयगाति
युग घटिका ऊपर एक याम, दोउ भिरे समर बलयोगधाम
पुनिभा अलक्ष सोकरत युद्ध, बलवन्तउभयश्रमगतसक्रुद्ध
कह षट प्रकार श्रुतियुद्धरीति; सुखमानेउ सुरदेखतसुप्रीति
लखि पुत्रइकाकी पुलकिगात, कहबालिअनुजअतिहर्षबात३३
दोहा-जाम्बवन्तसन वचन मृदु, कहेउ सुकण्ठ पुकारि ॥
कहहु तात दधिबलकबहिं, दनुजहि डारिहि मारि ॥२०९॥

समर करत लागी अति बारा ❋ यह सुनि बोलेउ ऋक्षभुवारा ॥
क्षणक हृदय धरु धीर कपीशा ❋ दधिबल गुरुसन लही अशीशा ॥
सो अवसर अब आय तुलाना ❋ एक पलक महँ मरिहि अयाना ॥
सुनि हरीश मन महँ अतिहरषे ❋ तबहीं विबुध सुमन बहु वरषे ॥
दधिबल धन्य भुजाबल तोरा ❋ रणकौतूहल कीन्ह न थोरा ॥
हरिअस्तुति सुनि हरिअरिकोपा ❋ कपिहिसहित खल भयउ अलोपा॥
योजन अयुतअष्ट नभ जाई ❋ दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई ॥
गहि मनुजाद भूमिपर डारा ❋ करि चिकार तेहि मरती बारा ॥

छंद-मरतीसमयअतिशब्दकरिदशमुखतनयहरिहरिकही
तजिअधमतनु धरि शुभगवपुद्विजनाथसुनिसोगतिलही ॥
जेहि हेतु सुर मुनि सिद्ध नाना भांति जप तप मख किये ॥
श्रीराम करुणासिन्धु सो फल सहजहीं दनुजै दिये ॥३४॥
दोहा-देखि तासु गति विबुध गण, अभय भये खगराइ ॥
प्रमुदित वरषे पुहुप झरि, रामचरण चितलाइ ॥२१०॥

मरा नरान्तक दधिबल जानी ❋ तोरि तासु शिर गहि निजपानी ॥
रुण्ड तासु गहि लंक सचारी ❋ आपु चले जहँ नाथ खरारी ॥

निशाप्रवेश भूत वैताला ❀ चढि चढि वाहन वेषकराला ॥
जाइ समर महि सुखद समेता ❀ उदर अघाइ गये सुनिकेता ॥
आयउ दधिबल प्रभुके पासा ❀ देखि हरषि उठि रमानिवासा ॥
सानुज राम मिले अति प्रीती ❀ परमप्रसाद नाथ नितरीती ॥
बैठे रघुकुलमणि दोउ भाई ❀ सखासुतहि निज ढिग बैठाई ॥
हनुमदादि मर्कट प्रभु पाहीं ❀ नाइ माथ प्रमुदित मनमाहीं ॥

दोहा—राम रजायसु पाय पुनि, होइ विगतश्रम कीश ॥
तब दधिबल प्रभुचरण गहि, आगे धारि अरिशीश ॥ २११ ॥

समुझि कौतुकी रिपुसुतशीशा ❀ सुनहु सुकण्ठ कहा जगदीशा ॥
नारान्तक कर शीश धरावहु ❀ यतनसमेत न सेत चलावहु ॥
नाथ रजाय पाय कपिराई ❀ राखेउ सो शिर यतन कराई ॥
पुनि दधिबल हरि कीन्ह बडाई ❀ श्रीपति श्रीमुख बहुविधिगाई ॥
जासु बडाई किय बडईशा ❀ सबहि सराहत सो जगदीशा ॥
दधिबलप्रभु अनुकूल बिलोकी ❀ सफलजन्म लखि भयउ विशोकी ॥
प्रेमबारि लोचन कर जोरी ❀ बोलेउ गिरा भक्तिरस बोरी ॥
जगदात्मा तुम्हार यह बाना ❀ सन्तत करहु दीनसनमाना ॥

दोहा—बनचर पांवर सहज जड, बुद्धि विषम अज्ञान ॥
बिरद स्वभाव कृपालु प्रभु, सेवक सुयश बखान ॥ २१२ ॥

तव यश विमल विदित अवधेशा ❀ कहत न पार पाव श्रुति शेषा ॥
सो मैं प्रभु कहि सकहुँ न कैसे ❀ पर्णबणिक गजमणिगुण जैसे ॥
असकहि हरहरिपद लपटाने ❀ देखि प्रेम कपि विबुध सिहाने ॥
अनअभिमान ताहि प्रभु जाना ❀ दीनदयालु बहुरि सनमाना ॥
मांगु बच्छ जो वर मन भावा ❀ सुनि दधिबल करि विनय सुनावा ॥
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा ❀ करहि निरन्तर मम उर धामा ॥
होइ मुहिं प्रिय पदपंकज कैसे ❀ कामहिं बामँ सूमँ धन जैसे ॥
एवमस्तु तुम कहँ वर येहू ❀ मम इच्छा कछु औरो लेहू ॥

१ स्थान। २ अनुशासन। ३ सदैव। ४ वेद। ५ शेषनाग। ६ स्त्री। ७ लोभी।

सो०-विहवाबलपुर राज, करहु तात तुम मुदित मन ॥
छांडि और सब काज, शिवाशम्भुपद भक्ति दृढ ॥ १७ ॥

यहै काज शुभ संतत चहई ❋ जोइ सोइ प्राणी मम मन रहई ॥
उमा राम कर यहै स्वभाऊ ❋ जनपर प्रेम न कबहुँ दुराऊ ॥
मोहिं निजरूप रमापति जानै ❋ तातै बारम्बार बखानै ॥
जानेउ श्रीरघुवर स्वभाव जिन ❋ सब तजि प्रेमभक्ति मांगी तिन ॥
रामभक्तिवारीश जासु उर ❋ महिमा तासु कहत श्रुति बुधवर ॥
सर सरिता सब सुखद सुहाये ❋ सहजहि आवत विनहिं बुलाये ॥
ताहि शुद्ध शिष दे रघुनाथा ❋ पुनि प्रभु कीन्ह तिलक निजहाथा ॥
सारंगी रुख सबही पावा ❋ अंगदादि ताकहँ शिर नावा ॥

दोहा-पाइ भक्ति वर राज्य वर, प्रभु चरणन शिर नाइ ॥
दधिबल पठयउ तुरत हठ, सुनहु ऋषय मन लाइ ॥ २१३ ॥

तन मन राम चरण अनुरागे ❋ दधिबल राज्य करत भयत्यागे ॥
सेनसहित श्रीराजिवनयना ❋ राजत देखि विबुध चितचयना ॥
हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा ❋ पुहुपमाल झरि करत अपारा ॥
करि अस्तुतिवर विनय पुकारे ❋ अदितिसूनु निज गेह सिधारे ॥
उताहि जहां बैठा दशभाला ❋ बिनु शिर बपु सो परा विशाला ॥
देखि विकल आपै उठि धावा ❋ पहिचानत तेहि अति दुखपावा ॥
हा नारांतक कहि खल परा ❋ महा खँभार लंकगढ भरा ॥
मयतनयाआदिक निशिचरीं ❋ शोकसमाज विषादहिं भरीं ॥

दोहा-बिन्दुमतीआदिक सकल, नारान्तककी नारि ॥
व्याकुल महि लोटहिं परी, निज निज दशा विसारि २१४ ॥

करि विलाप जिमि निशिचरनारी ❋ सो न जात कहि सुन नभचारी ॥
शोक जलधि लंका लघुतरणी ❋ चढीं सकल निशिचरकी घरणी ॥
बूडत जानि न कतहुँ निवाहा ❋ कहत मँदोदरि तब सब पाहा ॥
बिन्दुमती कर महि बैठाई ❋ नागसुताकी कथा सुनाई ॥

१ समुद्र । २ दुःख । ३ नाव । ४ स्त्री । ५ सुलोचना ।

सुनत सुनयनाकी शुचिकरणी ❋ धारि धीर नारान्तकघरणी ॥
सवनि बुझाय सासुपग लागी ❋ तजि धनधाम स्वामिअनुरागी ॥
मातु करहु सो यतन उताउल ❋ मिलहुँ जाइ जेहि पद निज राउल॥
सुन सुतवधू न आन उपाऊ ❋ जाउ जहां राजत रघुराऊ ॥

दोहा-जेहिं विधि गई सुलोचना, तेहि गति तुम भय त्यागि
निरखहु रघुपतिपदकमल, लावहु पतिशिर मांगि॥२१५॥

सासुवचन सुनि जानि प्रभाता ❋ उठि निशिचरतिय पुलकितगाता॥
जातरूपमय यान मँगाई ❋ निज कर गहि पति देह चढाई ॥
चली अकेलि यान चढि जबहीं ❋ तासु सवति इक आई तबहीं ॥
नाम चित्ररेखा अस तासू ❋ गुण गण सुभग बसै तनु जासू ॥
सो करि विनय चढी तेहि संगा ❋ कीन्ह पयान रँगी सतरंगा ॥
रथ अकेल आवत कपि देखा ❋ कायर डरपे हृदय विशेखा ॥
आवत मानि सबल रिपु कोऊ ❋ नल अरु नील सुभट वर दोऊ ॥
आये धाय सपदि तब आगे ❋ युगल नारि तनु निरखन लागे ॥

दोहा-समुझि बूझि वृत्तांन्त दोउ, फिरि आये प्रभु पास ॥
बन्दि कंजपद उभय कह, सुनिये रमानिवास ॥२१६॥

नाथ नरान्तककी दोउ नारी ❋ आवत शरण प्रणत भयहारी ॥
सुनि रघुवीर हृदय मुसकाने ❋ उतहि टिकावहु सखा सयाने ॥
सुनि प्रभुवचन बहुरिसो धाये ❋ कटक विगत रथ दूरि टिकाये ॥
विन्दुमती चितरेखा दूनो ❋ विनय हमारि कीश अस सूनो ॥
कहहु जाइ तुम प्रभुहि बुझाई ❋ केहि कारण हम दरशन पाई ॥
हम अवला कपि विनवैं तोहीं ❋ बूझि नाथसन कहिये मोहीं ॥
नारिविनय सुनि कपि दोउ भले ❋ नीति विचारि राम पहँ चले ॥
विनती नारि जाय नल बरणी ❋ सुनि विहँसे प्रभु तिनकी करणी॥

दोहा-परम मृदुल रघुनाथ चित, कहत सन्त बुध बेद ॥
ताकहँ देत न दरश प्रभु, सुनु खगेश सो भेद ॥२१७॥

---

१ घर । २ स्वामी । ३ शोभित । ४ रथ । ५ व्यवस्था । ६ नम्र ।

प्रेमपरीक्षाहित रघुनायक ❋ कौतुक करत समर सुखदायक॥
नाथ सखा तव बहुरि बुझाई ❋ पुनि नल नारिन पास पठाई॥
कह कपि सुनहु नरान्तकनारी ❋ दरशन तुमहिं न देत खरारी॥
तुम गृह जाहु वचन मम मानी ❋ बोली सो तिय वचन सयानी॥
हम अबला दरशनहित आई ❋ नयनसफलविनु किमि गृह जाई॥
यहि विधि करत विनय दोउ नारी ❋ कीशन कटक कीन पैसारी॥
आवत निकट जानि रिपुखनी ❋ यद्यपि पतिव्रतहैं सुखभवनी॥
तदपि नाथ तेहि दरशन देहीं ❋ जाइ निकट बिनती की तेहीं॥

दोहा-प्रभु सीतापति जगतपति, सुरनरपति रघुनाथ॥
देउ दरशकरुणायतन, दीनबन्धु श्रुतिमाथ॥ २१८॥

बोले राम न सो तिय बोली ❋ विमलज्ञान पतिव्रत अनुडोली॥
नाथ सत्य यह नीति बखानै ❋ पुरुष न परतिय स्वप्नेहुं जानै॥
प्राकृत पुरुषनकी यह रीती ❋ जिनके हृदय कपट पर प्रीती॥
समदरशी कछु दोष न स्वामी ❋ सो विचारु प्रभु अन्तर्यामी॥
आरतबन्धु विलम्ब न कीजै ❋ करुणाकर वर दरशन दीजै॥
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहई ❋ तव यश अस श्रुति गावत अहई॥
गौतमनारि राम तुम तारी ❋ अधम जाति भिलनी निस्तारी॥
सुनि मम हृदय परी परतीती ❋ अब प्रभु कस देखिय विपरीती॥

दोहा-तारि तारि अधमनि अमित, बार बार श्रमजान॥
ताते करत अनाकनी, मोरि ओर भगवान॥ २१९॥

प्रभु मुसकाहिं न उत्तर देहीं ❋ ताकर प्रेमपरीक्षा लेहीं॥
विकल उभय नारान्तकवाला ❋ बार बार करि विनयविशाला॥
धर्म्मधुरंधर प्रभु अवतारा ❋ केवल पतिव्रतधर्म्म हमारा॥
जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी ❋ द्रवहु बेगि उर अन्तर्यामी॥
वृथा करतकत प्रभु श्रुति भाषा ❋ पूजत नाथ न मम अभिलाषा॥
लीन भयउ पतिप्राण राम महँ ❋ अर्द्धभाग हम कहहु जाइँ कहँ॥

१ लीला। २ श्रीरामचन्द्र। ३ शत्रुकी स्त्रियां। ४ अहल्या। ५ शबरी। ६ कृपाकरहु।

वृन्दाचरित नाथ सुधि करहू ❋ विनय हमारि बेगि उर धरहू ॥
विनय प्रीति सतधर्म जनाई ❋ परीं प्रेमवश महि अकुलाई ॥

दोहा–पाहि पाहि रघुवंशमणि, हतहु न बिरद प्रतीति ॥
प्रीतम प्रीति न नरक डर, तुम कहँ नाथ अनीति ॥ २२० ॥

सती निराश विनय सुनि बानि ❋ पुलके दीनदयालु भवानी ॥
दुहुन लीन निजकटक बुलाई ❋ परीं युगल प्रभुपदतर आई ॥
तिन्हैं उठाय राम बैठावा ❋ जगदीश्वर मृदुवचन सुनावा ॥
बिन्दुमती तैं परम सयानी ❋ पतिपदरति दृढ हृदय समानी ॥
बहुत करहुँका तव गुण गाना ❋ मांगु बेगि वर जो मन माना ॥
सुनत वचन लोचँन जल बाढीं ❋ जोरि युगल कर दोऊ ठाढीं ॥
प्रभु तुम दानि देव तरुवरसे ❋ पदजलजात देखि सुरसरिसे ॥
परमपवित्र भई हम दोऊ ❋ हम सम धन्य नारि नहिं कोऊ ॥

छंद–को धन्य हम सम नारि जग महँ सुनहु श्रीरघुनायकं ॥
अब दै दरश कीन्ही पतितपावन नाथ सुरआरि धायकं ॥
कृपासागर यशउजागर देहु बर सुरभावरं ॥
जेहि मिलैं पतिकहँ जाइ विनु श्रम बढै तव यश श्रीधरं ॥ ३५ ॥

सो०–यह कहि विन्दुकुमारि, सहित सौति प्रभुपद परी ॥
तिन्हैं उठाइ खरारि, जगत्राता इमि कहत पुनि ॥ १७ ॥

धरहु धीर तुम जनि अब डरहू ❋ निजपति लेहु भवनँ सुखकरहू ॥
कहेउ देव हम कहँ यह नीका ❋ हमहुँ कहत अब भावत जीका ॥
गिरिजासहित गिरीश विरागी ❋ नाथ तुम्हार दरश अनुरागी ॥
नारदादि सनकादिक जेते ❋ जपतप करहिं विविध विधि तेते ॥
तेउ न कबहुँ हमारी नाईं ❋ देखहिं पदजलजात अघाईं ॥
हरिदरशनलवलेश प्रमाना ❋ जगके सबसुख नाहिं समाना ॥
अमिय अघाइ गरलको खाई ❋ विनय हमारि यहै सुरसाई ॥
देहु कन्त शिर संपदि मँगाई ❋ दयाशील सागर रघुराई ॥

१ भूमिमें। २ त्राहि। ३ दोनो। ४ आँखैं। ५ कल्पवृक्ष। ६ गंगाजी। ७ घर।
८ अमृत। ९ विष। १० शीघ्र।

दोहा-नारान्तककरशीश तब, दीन्ह मँगाइ रमेश ॥
पाइ स्वामिशिर मुदितव्है, बोलीं दोउ उरगेश ॥ २२१ ॥

नाथ विनय हम औरो करहीं ❋ दाह विना हम केहि विधि जरहीं ॥
सुखसागर सुनि वचन प्रमाना ❋ हनुमत अंगदादि भट नाना ॥
कह प्रभु सखा लंकमहँ धावहु ❋ चन्दन अगर भार बहु लावहु ॥
पाइ राम अनुशासन धाये ❋ लंका गढ गृह गृह सचुपाये ॥
कपिन शोधि चन्दन बहु भारा ❋ लाये जहँ श्रीनाथ उदारा ॥
कह रघुवीर सुनहु लंकेशा ❋ तात यहै बड हित उपदेशा ॥
विंदुमती जहँ चाहत ठाऊ ❋ दाह भार सँग तुम तहँ जाऊ ॥
दशकन्धर कर वैर बिहाई ❋ चिता चारु शुचि देहु बनाई ॥

दोहा-रघुवर आज्ञा धारि शिर, उठे दशानन भाइ ॥
अयुत भार चंदन अगर, तेहि सँग चले लिवाइ ॥ २२२ ॥

जहां जरी मघवांजितनारी ❋ तेहि गहर शुचि चिता सवाँरी ॥
उहवां अपर सौति मनुनारी ❋ विंदुमती मनभाव पियारी ॥
मूर्च्छित परीं प्रथम सुधि नाहीं ❋ चलीं सुनत गति दुख मनमाहीं ॥
चलीं चतुर्दश निशिचरि कैसे ❋ निरखि दवास मृगीगण जैसे ॥
हाहा विंदुमतो पतिप्यारी ❋ कहां गई तुम हमहिं विसारी ॥
पहुँचीं सहविलाप तहँ सोऊ ❋ हरषीं हृदय विलोकत दोऊ ॥
षोडश निशिचरि भईं सभागी ❋ मन वच क्रम पतिपद अनुरागी ॥
सकल अन्हायमृतक अन्हवाईं ❋ सुमिरत हृदय रामगतिदाईं ॥

दोहा-उत दशकन्धर जगेउ शठ, सुनेउ श्रवण सब हेतु ॥
संगमँदोदरि आदि तिय, गवना लै खगकेतु ॥ २२३ ॥

बाजत ढोल कपिनँ सुनि काना ❋ अपने मनतिन अस अनुमाना ॥
आव युद्ध हित उत कोउ वीरा ❋ हमकहँ ठाढ करत यहि तीरा ॥
कीश अयुत तब प्रभुपहँ आये ❋ पूरणप्रेम चरण शिरनाये ॥
नाथ उतहि दशकंधर जाता ❋ कीश एक कह सुनु जनत्राता ॥

१ गरुड । २ विभीषण । ३ सुन्दर । ४ दसहजार । ५ इंद्रजीत । ६ सोलह ।
७ बन्दरन । ८दशहजार ।

प्रभु कह कुमुद तुरत तुम धावहु ❋ वेगि विभीषण कहँले आवहु ॥
राम रजाइ सुशिर धरि धाये ❋ सपदि विभीषण पहँ सो आये ॥
तात तुमहिं रघुराज बुलावा ❋ सुनत लंकपति आतुर आवा ॥
हेतु पतोहुन कहि समुझावा ❋ कुमुदसहित रघुपति पहँ आवा ॥

दोहा-मोहनिशातहँ तरुण रवि, तिन चरणन शिर नाइ ॥
भागवंतरावण अनुज, बैठेउ प्रभु रुखपाइ ॥ २२४ ॥

दशमुख तियनसहित गा तहँवाँ ❋ बिंदुमती चितरेखा जहँवाँ ॥
देखत अतिबिलखा विबुधारी ❋ करुणाकरत निशाचरि झारी ॥
सासुश्वशुर कहँ देखि दुखारी ❋ ज्ञान नवीन नरांतकनारी ॥
कहि शुचिगाथ सबन समुझाई ❋ स्वामिसमेत चितापर आई ॥
यथायोग्य बैठीं सब तैसे ❋ पतिगृह रहत रहीं नित जैसे ॥
अग्नि दीन ज्वाला अति धाई ❋ पहुँचीं सुरपुर सब तिय जाई ॥
देखि दशा तिनकी सुररवनी ❋ तिनहि सराहि भवन निय गवनी ॥
रावणसहित युवति निजगेहा ❋ गयउ भरोसा सति संदेहा ॥

छंद-संदेह सासत भरेउ रावण सहित दारनिगृह गयो ॥
इमिमयसुतादिकनिशिचरिनिलखिविकलबलमूर्च्छितभयो
दशमाथ गतिदेखत विपुल बिलखैं निशाचर निशिचरी ॥
संताप शोक विलाप भय भ्रम कटक लंका महँ परी ॥ ३६ ॥

दोहा-राम विरोधिहिं जस उचित, तसदिन पहुँचा आइ॥
सो विचार करि लंक गढ, उतरी विपति बजाइ ॥ २२५ ॥

इहां देव देवायसु जाना ❋ वर आसन शोभित भगवाना ॥
यथायोग्य बैठे मृगशाषा ❋ सब कीन्हे प्रभुपद अभिलाषा ॥
रिपु वड मरेउ हर्ष सबके मन ❋ पुनि पुनि हेरत सुभग श्यामतन ॥
तिनकी रुचि लखि दीनदयाला ❋ शिवयश गावहु कहा कृपाला ॥
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई ❋ गावहिं कपि कलकंठ लजाई ॥
डमरु भृङ्गि शृङ्गी करतारी ❋ घ्राँण-पाँनि-मुखते वनचारी ॥

१ राक्षसी । २ पवित्रकथा । ३ देववधू । ४ वानर । कोकिल । ६ नाक । ७ हाथ ।

गोंडर तन्तु वेणु मंजीरा ❋ शंख मृदंग नाद गंभीरा ॥
नृत्यत कोश भाव दिखरावत ❋ शिवासहित शिव कीरति गावत ॥

छंद-शिवशिवा कीरति विमलगावत भालुवानर सुखभरे ॥
अहिनाथयुत रघुनाथ छबिनिरखत सकल चित पदधरे ॥
प्रभु देखि कौतुक अनुजसहितसखन बखानत श्रीमुखं ॥
तुलसी पगे यहि ध्यान जे जन पाइहैं नित यश सुखं ॥ ३७॥

सो०-गत रजनी युग याम, तब कौशन करुणा अयन ॥
करि पूरण मन काम, सबनि कहेउ राजहु थल न ॥ १९ ॥

बैठे निजनिज थल रणधीरा ❋ अनुजसहित राजत रघुवीरा ॥
सुखमासीव[२] सेनयुत राजै ❋ जयजय ध्वनि कपि भालु समाजै
उमाचरित यह रुचिर[३] सुहावा ❋ नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा ॥
अपर[४]चरित गिरिराज कुमारी ❋ सुनहु कहत तव प्रीति निहारी॥
वहां मध्य निशि रावण जागा ❋ कोउ कोउ सचिव सिखावन लागा
उग्र सिखावन काहि बुध बाके ❋ थके न कछु मन माने ताके ॥
रावण मन औरै कछु लसई ❋ मेटिको सकै जो विधिउर वसई ॥
प्रभुविरोध करि चह कल्याना ❋ मोहविवश सो शठ अज्ञाना ॥

इति क्षेपक ॥

वचन सुनततेइँ कछु सुखमाना ❋ कालविवश जस तीरथ ज्ञाना ॥
इहि विधि जल्पत भा भिनुसारा ❋ लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥
सुभट बुलाय दशानन बोला ❋ रणसन्मुख जाकर मनडोला ॥
सो अबहीं बरु जाहु पराई ❋ रणसन्मुख भागे न भलाई ॥
निज भुजबल मैं वैर बढावा ❋ देहौं उतर जो रिपु चढि आवा॥
असकहि मरुतवेग रथ साजा ❋ बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा ॥
चले वीर सब अतुलित बली ❋ जनु कज्जल गिरि आँधी चली ॥
अशकुन अमित होहिं तेहि काला ❋ गनैन भुजबल गर्व विशाला ॥

छंद-अतिगर्वगनत नशकुन अशकुन श्रवहिं आयुधहाथते

[१] दयाके धाम-श्रीरामचन्द्रजी। २ मर्य्यादा। ३ सुभग। ४ औरचरित्र। ५ पार्व्वती। ६ वायु।

भट गिरहिं रथते बाजि गज चिक्करत भाजत साथते ॥
गोमायुगृध्रशृगालखर रव श्वान बोलहिं अति घने ॥
जनु कालदूतउलूक बोलहिं सकल परम भयावने ॥ ३९ ॥
दोहा–ताहि कि सम्पति शकुन शुभ, स्वप्रेहुमन विश्राम ॥
भूतद्रोह रत मोहवश, रामविमुख रतकाम ॥ २२६ ॥
चली निशाचरअनी अपारा ❁ चतुरंगिनी चमू बहुधारा ॥
विविध भांति वाहन रथ याना ❁ विपुल वरण पताक ध्वज नाना ॥
चले मत्तगज यूथ घनेरे ❁ मनहुँ जलद[३] मारुतके प्रेरे ॥
वर्ण वर्ण वर दैत्य निकाया ❁ समर शूर जानहिं बहु माया ॥
अति विचित्र वाहिनी विराजी ❁ वीर वसन्तसेन जनु साजी ॥
चलत कटक दिगसिन्धुरडगहीं ❁ क्षुभित पयोधि कुधर डगमगहीं ॥
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई ❁ पवन थकित वसुधा अकुलाई ॥
पणव निशान घोर रव बाजहिं ❁ महाप्रलयके जनु घन गाजहिं ॥
भेरि नफीर बाज सहनाई ❁ मारू राग शूर सुखदाई ॥
केहरिनाद वीर सब करहीं ❁ निज निज बल पौरुष अनुसरहीं ॥
कहै दशानन सुनहु सुभट्टा ❁ मर्दहु भालु कपिनकर ठट्टा ॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई ❁ अस कहि सन्मुख सैन चलाई ॥
यह सुधि सकल कपिन जबपाई ❁ धाये करि रघुवीर दुहाई ॥
छंद–धाये विशाल कराल मर्कट भालु काल समानते ॥
मानहुँ सपक्ष उडाहिं भूधरवृन्द नाना बाणते ॥
नख दशनशैलन करन द्रुमगहिसबल शंकन मानहीं ॥
जयराम रावण मत्तगजमृगराजसुयश सुनावहीं ॥ ३८ ॥
दोहा–दुहुँ दिशि जयजयकार करि, निजनिज जोरी जानि
भिरे वीर इत रघुपतिहि, उत रावणहिं बखानि ॥ २२७ ॥
रावण रथी विरथ रघुवीरा ❁ देखि विभीषण भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रीति उर भा संदेहा ❁ वन्दि चरण कह सहित सनेहा ॥

१ कुत्ता। २ घूघू। ३ मेघ। ४ हवा। ५ दिग्गज। ६ समुद्र। ७ पर्वत। ८ पृथ्वी।
९ सिंहनाद। १० कपि। ११ वृक्ष।

नाथ न रथ नाहीं पदत्राना ❋ केहि विधि जीतव रिपुबलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना ❋ जेहि जय होइ सो स्यंदन आना॥
शौरज धर्म्म जाहि रथचाका ❋ सत्य शील दृढ ध्वजा पताका॥
बल विवेक दम परहित घोरे ❋ क्षमा दया समता रजु जोरे॥
ईशभजन सारथी सुजाना ❋ बिरति चर्म्म सन्तोष कृपाना॥
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा ❋ वर विज्ञान कठिन कोदण्डा॥
संयम नियम शिलीमुख नाना ❋ अमल अचल मन त्रोण समाना॥
कवच अभेद विप्रपदपूजा ❋ इहि समविजय उपाय न दूजा॥
सखा धर्म्म मय अस रथ जाके ❋ जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके॥

दोहा-महाघोर संसार रिपु, जीति सकै सो बीर॥
जाके अस रथ होइ दृढ, सुनहु सखा मतिधीर॥२२८॥
सुनत बिभीषण प्रभुवचन, हर्षि गहे पदकंज॥
इहि विधि मोहिं उपदेश किय, रामकृपासुख पुंज२२९
उत प्रचार दशकन्धर, इत अंगद हनुमान॥
लरत निशाचर भालु कपि, करि निजनिज प्रभु आन२३०

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना ❋ देखहिं रण नभ चढे विमाना॥
हमहूं उमा रहे तेहि संगा ❋ देखत रामचरित रणरंगा॥
सुभट समररस दुहुँ दिशि माते ❋ कपि जयशील रामबल ताते॥
एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं ❋ एकन एकमर्दि महि पारहिं॥
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं ❋ शीश तोरि शीशनसन मारहिं॥
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं ❋ गहिपद अवनिपटकि भटडारहिं॥
निशिचर भटमहि गाडहिं भालू ❋ ऊपर डारि देहिं बहु बालू॥
वीर बली मुख युद्ध विरुद्धा ❋ देखिय विपुल काल जनु क्रुद्धा॥

छंद-क्रुद्धे कृतान्त समान कपितनु श्रवत शोणित राजहीं॥
मर्दहिं निशाचरकटक भट बलवंत जिमि घन गाजहीं॥

---

१ शरीरबल, विद्याबल, बुद्धिबल, । २ सारासारकर विचार सारको ग्रहण असारकोत्याग। ३ पांच ज्ञानइन्द्रिय पांच कर्मइन्द्रिय इनोको स्वाधीन रखना। ४ मनवचनकर्मते परावाउपकारकरे ये चार घोडे। ५ सहना। ६ अहेतु दीनोपर द्रवना।

मारहिं चपेटन काटि दांतन डारि लातन मीजहीं ॥
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिंजेहिखलछीजहीं४०
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ॥
प्रहलादपति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं॥
धरु मारु काटि पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ॥
जयराम जो तृणते कुलिश करु कुलिशते करु तृणसही४१

दोहा–निजदल विचल विलोकि तब, बीसभुजा दशचाप ॥
चला दशानन कोप करि, फिरहु फिरहु करिदाप ॥२३१॥

धावा परम क्रोध दशकन्धर ❋ सन्मुख चले हूह करि बन्दर ॥
गहि गिरि पादप उपल पहारा ❋ डारहिं तेहिपर एकहि बारा ॥
लागहिं शैल बज्र तनु तासू ❋ खण्ड खण्ड होइ फूटहिं आसू ॥
चला न अचल रहारथ रोपी ❋ रणदुर्मद रावण अति कोपी ॥
इत उत झपटि दपटि कपियोधा ❋ मरदै लाग भयो अति क्रोधा ॥
चले पराय भालु कपि नाना ❋ त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
पाहि पाहि रघुवीर गुसाईं ❋ यह खल आव कालकी नाईं ॥
तेहि देखे कपि सकल पराने ❋ दशहु चापै शायक सन्धाने ॥

छंद-संधानिधनुशरनिकर छांडेसिउरगजिमिउडिलागहीं
रहे पूरिशर धरणीगगनादिशि बिदिशिकहँकपिभागहीं ॥
भा अति कोलाहल विकल दल कपि भालु बोलहिं आतुरे॥
रघुबीर करुणासिन्धु आरतबन्धु जन रक्षकहरे ॥ ४२॥

दोहा–विचलत देखा कपिकटक, कटिनिषंग धनु हाथ ॥
लक्ष्मण चले सकोप तब, नाइ रामपद माथ ॥ २३२॥

रे खल का मारसि कपि भालू ❋ मोहिं बिलोकु तोर मैं कालू ॥
खोजत रहेउँ तोहिं सुतघाती ❋ आजु निपाति जुडावों छाती ॥
कहि अस छांडेसि बाण प्रचंडा ❋ लक्ष्मण किये तुरत शतखंडा ॥

१ हृदय । २ वज्र । ३ बडामद । ४ धनुष । ५ सर्प । ६ आकाश । ७ दुःखित ।
८ मारि । ९ सौटुकडे ।

कोटिन आयुध रावण डारे ❋ तिलप्रमाण प्रभु काटि निवारे ॥
पुनि निजबाणन कीन्ह प्रहारा ❋ स्यन्दन भंजि सारथी मारा ॥
शत शत शर मारे दशभाला ❋ गिरिशृंग न जनु प्रविशहिं व्याला ॥
पुनि शत शर मारे उरमाहीं ❋ परेउ अवनि तनु सुधि कछु नाहीं ॥
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छा जागी ❋ छाँडेसि ब्रह्मदत्त जो सांगी ॥

छं०-जो ब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ति अनन्त उर लागी सही ॥
पऱ्यो विगल बीर उठाव दशमुख अतुलबल महिमा रही ॥
ब्रह्माण्ड भुवन विराज जाके एक शिर जिमि रजकनी ॥
तेहि चह उठावन मूढरावण जान नहिं त्रिभुवनधनी ४३॥

दोहा-देखत धावा पवनसुत, बोलत बचन कठोर ॥
आवत तेहि उर महँ हनेउ, मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥२३३॥

जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ ❋ उठा सँभारि बहुरि रिस भरेऊ ॥
मुष्टिक एक ताहि कपि मारा ❋ परेउ शैल जिमि वज्रप्रहारा ॥
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा ❋ कपिबल विपुल सराहन लागा ॥
धृक धृक धृक बल पौरुष मोही ❋ जोतैं जियत उठा सुरद्रोही ॥
असकहि कपि लक्ष्मण कहँ ल्याये ❋ देखि दशानन विस्मय पाये ॥
कह रघुबीर समुझि जियभ्राता ❋ तुम कृतांतभक्षक सुरत्राता ॥
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला ❋ गगन गई सो शक्ति कराला ॥
पुनि कोदँण्ड बाण गहि धाये ❋ रिपुसन्मुख अतिआतुर आये ॥

छंद-आतुर बहोरिविभंजिस्यन्दनसूतहतिव्याकुलकियो
गिऱ्यो धरणि दशकंधर विकलतनुबाणशत वेधोहियो ॥
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो ॥
रघुवीरबन्धुप्रताप पुंज बहोरि प्रभुचरणन नयो ॥ ४४ ॥

दोहा-वहाँ दशानन जाइकै, करन लाग कछु यज्ञ ॥
जय चाहत रघुपतिविमुख, शठ हठ वशअति अज्ञ॥२३४॥

---

१ रथ। २ सर्प। ३ बहुत। ४ शोक। ५ काल। ६ देवतोंके रक्षक। ७ धनुष। ८ सारथी।

इहां विभीषण सब सुधि पाई ❋ सपदि जाय रघुपतिहि सुनाई ॥
नाथ करै रावण इक यागा ❋ सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा ॥
पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर ❋ करहिं विध्वंस आव दशकंधर ॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये ❋ हनुमदादि अंगद सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढे कपि लंका ❋ पैठे रावणभवन अशंका ॥
जबहीं यज्ञ करत तेहि देषा ❋ सकल कपिन भा क्रोध विशेषा ॥
रणते भागि निलज गृह आवा ❋ इहां आइ बकध्यान लगावा ॥
असकहि अंगद मारेउ लाता ❋ चितव न शठ स्वारथ मनराता ॥

छंद—नहिंचितवजबकपिकोपितबगहिदशनलातनमारहीं
धरि केश नारि निकारि बाहर तेपि दीन पुकारहीं ॥
तब उठा कोपि कृतांतसम गहि चरण बानर डारहीं ॥
इहि भांति यज्ञ विध्वंस करि कपिनेकु मनहिं न हारहीं४५॥

दोहा—मखविध्वंस करि कपि सकल,आये रघुपति पास ॥
चला दशानन क्रोध करि,छाँडी जियकी आस॥२३५॥

चलत होहिं तेहि अशुभ भयंकर ❋ बैठहिं गृध्र उडाहिं शिरन पर ॥
भयउ कालवश कहा न माना ❋ कहेसि बजावहु युद्धनिशाना ॥
चली तमीचर अनी अपारा ❋ बहु गज रथ पदचर असवारा ॥
प्रभुसन्मुख खल धावहिं कैसे ❋ शलभसमूह अनल कहँ जैसे ॥
इहां देव सब विनती कीन्हीं ❋ दारुणविपति हमहिं इन दीन्हीं ॥
अब जनि नाथ खेलावहु एही ❋ अतिशय दुखित होति वैदेही ॥
देववचन सुनि प्रभु मुसकाना ❋ उठि रघुवीर सुधारेउ बाना ॥
जटाजूट बांधी दृढ माथे ❋ सोहत सुमन बीच बिच गाथे ॥
अरुणनयन वारिद तनु श्यामा ❋ अखिललोक लोचनअभिरामा ॥
कटि तट परिकर कसे निषंगा ❋ कर कोदण्ड कठिन शारंगा ॥

छंद—शारंगकरसुन्दरनिषंग शिलीमुखाकरकटि कस्यो॥
भुजदण्ड पीन मनोहरायत उर धरा सुरपद लस्यो ॥

१ दांत। २बाल। ३ राक्षसी सैन्य। ४ पतंगसमूह। ५आनन्ददाता।६मुनिपट। ७ पुष्ट। ८भृगुलता

कह दासतुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे ॥
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे४६॥
दोहा–हर्षे देव विलोकि छबि, वर्षहिं सुमन अपार ॥
जय जय प्रभु गुण ज्ञान बल,धाम हरण महिभार॥२३६॥

इहिके बीच निशाचरअनी ❋ कसमसाति आई अतिघनी ॥
देखि चले सन्मुख कपिभट्टा ❋ प्रलयकालके जिमि घनघट्टा ॥
शक्ति शूल तलवारि चमकहिं ❋ जनु दशदिशि दामिनी दमकहिं ॥
गज रथ तुरँग चिकार कठोरा ❋ गर्जत मनहुँ बलाहक घोरा ॥
कपिलंगूर विपुल नभ छाये ❋ मनहुँ इन्द्रधनु उदय सुहाये ॥
उठी रेणु मानहुँ जलधारा ❋ बाणबुन्द भइ वृष्टि अपारा ॥
दुहुँ दिशि पर्वत करत प्रहारा ❋ वज्रपात जनु बारहिं बारा ॥
रघुपति कोपि बाण झरिलाई ❋ घायल भे निशिचर समुदाई ॥
लागत बाण बीर चिक्करहीं ❋ घुर्मि घुर्मि अगणित महिं परहीं ॥
श्रवहिं शैल जनु निर्झर बारी ❋ शोणितसर कादर भय भारी ॥
छंद–कादर भयंकर रुधिर सरिता चली परम अपावनी ॥
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त्त बहति भयावनी ॥
जलजन्तु गज पदचर तुरँग रथ विविध वाहनको गने॥
शर शक्ति तोमर सर्प चाप तुरंग चर्मकमठ घने ॥४७॥
दोहा–बीर परे जनु तीर तरु, मज्जा बह जनु फेन ॥
कादर देखत डरहिं जिय, सुभटनके मन चैन ॥ २३७॥

मज्जहिं भूत पिशाच बैताला ❋ केलि करहिं योगिनी कराला ॥
काक कंक धरि भुजा उडाहीं ❋ एकते एक छीनि धरि खाहीं ॥
एक कहहिं ऐसिउ बहुताई ❋ शठ तुम्हार दारिद्र न जाई ॥
कहरत भट घायल तट गिरे ❋ जहँ तहँ मनहुँ अर्द्धजल परे ॥
खैंचहिं आँत गृध्र तट भये ❋ जनु बनशी खेलत चित दये ॥

१ मेघ । २ पूंछ । ३ वर्षा । ४ पर्वत । ५ रुधिरके तालाव । ६ ढाल । ७ कछुआ । ८ गृध्र ।

बहुभट बहे चढे खग जाहीं ❋ जिमि नावरि खेलहिं जलमाहीं ॥
योगिनि भरि भरि खप्पर सँचहिं ❋ भूत पिशाच विविध विध नाचहिं॥
भट कपाल करताल बजावहिं ❋ चामुण्डा नानाविधि गावहिं ॥
जम्बुक निकर तहाँ कटकटहीं ❋ खाहिं अघाहिं हुआहिं दपटहीं ॥
कोटिन रुण्ड मुण्ड विनु डोलहिं ❋ शीशपरे महि जय जय बोलहिं ॥
छंद-बोलहिंजोंजयजयरुण्डमुण्डप्रचण्डशिरबिनुधावहीं
परिणामयुद्ध अग्रुह्य बोलहिं सुभट सुरपुर पावहीं ॥
निशिचर वरूथ निमर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भये ॥
संग्राम अंगन सुभट सोहहिं रामशर निकरनहये ॥४८॥
"सो०-सप्त दिवस दिनरात, बाजेउ घंटा धनुष कर ॥
हरि पूजाकी भांत, भये सुभट संहार सब ॥
दोहा-घंटाकी परमान अब, सुनिये संगर बीच ॥
नाग अयुत दशलाखहैं, रथी डेढ सत मीच ॥
मरहिं कोटि दश पैदर जवहीं ❋ नाचत एक कबंध रण तवहीं ॥
नृत्यकरहिं जब कोटि कवन्धा ❋ तब एक खेचर उठत निबन्धा ॥
खेचर कोटि नचहिं निहकंटा ❋ तब इक धनुकर बाजत घंटा ॥
श्लोक-एवं सप्तदिनख्यातंस्वर्गमर्त्येरसातले ॥
भवेद्भूरिभटंनाशंरामरावणसंगरे ॥ "
दोहा-हृदय विचारेसि दशवदन, भा निशिचर संहार ॥
मैं अकेल कपि भालु बहु, मायाकरौं अपार ॥ २३८॥
देवन प्रभुहि पयादेहि देखा ❋ उर उपजा अति क्षोभ[1] विशेषा ॥
सुरपति[5] निजरथ तुरत पठावा ❋ हर्षसहित मातलि लै आवा ॥
तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा ❋ विहँसि चढे कोशलपुरभूपा ॥
चंचल तुरंग मनोहर चारी ❋ अजर[6] अमर[7] मानस गतिहारी ॥
रथारूढ रघुनाथहिं देखी ❋ धाये कपि बल पाइ विशेषी ॥

---

१ देवी । २ शृगाल । ३ पृथ्वी । ४ संदेह । ५ इन्द्र । ६ वृद्धतासे रहित ।
७ किसीके मारे न मरें ।

सही न जाइ कपिनकी मारी ❋ तब रावण माया विस्तारी ॥
सो माया रघुवीरहिं बांची ❋ सब काहू मानीकर सांची ॥
देखी कपिन निशाचरअनी ❋ बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी ॥
छंद-बहुवालिसुत लक्ष्मण कपीश विलोकि मर्कट अपडरे
जनु चित्र लिखित समेत लक्ष्मण जहँसो तहँ चितवतखरे
निज सेन चकित विलोकि हँसि धनुतानि शर कोशलधनी
माया हरी हरि निमिष महँ हर्षी सकल मर्कट अनी॥४९॥
दोहा-बहुरि राम सबतन चितै, बोले वचन गँभीर ॥
द्वन्द्वयुद्ध देखहु सकल, श्रमित भये अति वीर ॥२३९॥
असकहि रथ रघुनाथ चलावा ❋ विप्रचरणपंकज शिरनावा ॥
तब लंकेश क्रोध करि धावा ❋ गर्जि तर्जि प्रभु सन्मुख आवा ॥
जीतेहु जो भट संयुग माहीं ❋ सुन तापस मैं तिनसम नाहीं ॥
रावण नाम जगत यश जाना ❋ लोकप जेहि के बन्दीखाना ॥
खर दूषण विराध तुम मारा ❋ हतेउ व्याध इव वालि बिचारा ॥
निशिचर सुभट सकल संहारे ❋ कुम्भकर्ण घननादहि मारे ॥
आज करौं खल कालहवाले ❋ परेहु कठिन रावणके पाले ॥
आजु बैर सब लेउँ निबाही ❋ जो रणभूमि भागि नहिं जाही ॥
सुनि दुर्वचन कालवश जाना ❋ कहेउ बिहँसि तब कृपानिधाना ॥
सत्य सत्य तब सब प्रभुताई ❋ जनि जल्पसि देखब मनुसाई ॥

छन्द-हरिगीतिका ॥

जनिजल्पनाकरिसुयशनाशहिनीतिसुनि शठ करुक्षमा ॥
संसार महँ पूरुष त्रिविध पाटल रसाल पनसःसमा ॥
यक सुमनप्रद यक सुमनफल इक फलै केवल लागहीं ॥
इक कहहिं करहिं न एक कहिकर एक करहिं नबागहीं ॥
दोहा-राम वचन सुनि बिहँसि कह,मोहिं सिखावहु ज्ञान॥

---

१ द्वन्द्वकही तीनोंलोकमें न ऐसायुद्ध हुआ न होगा जैसा हमारा रावणका होगा तुमखडेदेखो। २ संग्राम गिनती। ३ इन्द्रादिक। ४ बार बार अपने मुखसे अपनी प्रशंसा मतकर। ५ आँब। ६ कटहर।

बैर करत तब नहिं डरेहु, अब लागत प्रियप्रान ॥२४०॥
कहि दुर्वचन क्रोधि दशकन्धर ❀ कुलिशसमान लाग छाँडन शर ॥
नानाकार शिलीमुख धाये ❀ दिशि अरु विदिशि गगन महँ छाये ॥
अनलबाण छाँडे रघुवीरा ❀ क्षणमहँ जरे निशाचर तीरा ॥
छाँडेसि तीव्र शक्ति खिसियाई ❀ बाणसंग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन चक्र त्रिशूल पवाँरे ❀ तृणसमान प्रभु काटि निवारे ॥
विफल होइँ रावणशर कैसे ❀ खलके सकल मनोरथ जैसे ॥
तब शतबाण सारथिहि मारेसि ❀ परे भूमि जय राम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा ❀ तब प्रभु परम क्रोधकर पावा ॥
छंद–भये क्रुद्ध युद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोण शायक कसमसे॥
कोदण्ड धुनि सुनि चण्ड अति मनुजादि भय मारुतग्रसे ॥
मन्दोदरी उर कम्प कम्पित कमठ भूधर अति त्रसे ॥
चिक्करहिं दिग्गज दशनगहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥
दोहा–तान्यो चाप जो श्रवण लगि, छाँडे विशिख कराल॥
रामबाण नभ मग चले, लहलहात जनु व्याल ॥२४१॥
चले बाण सपक्ष जनु उरगाँ ❀ प्रथमहिं हते सारथी तुरगा ॥
रथ विभंजि हनि केतु पताका ❀ गर्जा अति अन्तर बल थाका ॥
तुरत आन रथ चढि खिसियाना ❀ छाँडेसि अस्त्र शस्त्र विधि नाना ॥
विफल होइँ सब उद्यम ताके ❀ जिमि परद्रोह निरतमन साके ॥
तब रावण दशशूल चलाये ❀ बाजि चारि महि मारि गिराये ॥
तुरँग उठाइ कोपि रघुनायक ❀ छाँड अति कराल बहु शायक ॥
रावणशिर सरोज बनचारी ❀ चले रघुनाथ शिली मुख धारी ॥
दश दश बाण भाल दश मारे ❀ निसरिगये चल रुधिर पनारे ॥
श्रवत रुधिर धावा बलवाना ❀ प्रभु पुनि कृत धनु शर संधाना ॥
तीस तीर रघुवीर पवाँरे ❀ भुजन समेत शीश महि पारे ॥
काटतही पुनि भये नवीने ❀ राम बहोरि भुजा शिर छीने ॥

१ वज्र। २ दिशोंके कोने-आग्नेय, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य । ३ रथहाँकनेवालेको । ४ राक्षस । ५ कान । ६ बाण । ७ सर्प्प । ८ घोडा । ९ बर्छी ।

कटित झटित पुनि नूतन भये ❋ प्रभु बहु बार बाहु शिर हये ॥
पुनि पुनि प्रभु काटहिं भुजशीशा ❋ अति कौतुकी कोशलाधीशा ॥
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू ❋ मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥

छंद-जनु राहु केतु अनेक नभ पथ श्रवत शोणित धावहीं ॥
रघुवीर तीर प्रचण्ड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
इक एक शर शिर निकर छेदे नभ उडत इमि सोहई ॥
जनु कोपि दिनकर करनिकर जहँ तहँविधुन्तुद पोहई ९२

दोहा-जिमिजिमिप्रभुहततासुशिर, तिमितिमिहोहिंअपार
सेवत विषय विवर्द्धजिमि, नित नित नूतन मार ॥२४२॥

दशमुख दीख शिरनकी बाढी ❋ बिसरा मरण भई रिस गाढी ॥
गरजेउ मूढ महा अभिमानी ❋ धायउ दशहु शरासन तानी ॥
समरभूमि दशकन्धर कोपा ❋ वर्षि बाण रघुपति रथ तोपा ॥
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ ❋ जनु निहार महँ दिनकर[3] दुरेऊ ॥
हाहाकार सुरन सब कीन्हा ❋ तब प्रभुकोपि धनुष कर लीन्हा ॥
शर निवारि रिपुके शिर काटे ❋ ते दिशि विदिशि गगन महिपाटे ॥
काटे शिर नभ मारग धावहिं ❋ जयजय ध्वनि कहि भय उपजावहिं ॥
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा ❋ कहँ रघुवीर कोशलाधीशा ॥

छंद-कहँ राम कहिशिरनिकरधावहिंदेखिमर्कटभजिचले
सन्धानि शर रघुवंशमणि तब शरन शिर बेधे भले ॥
शिरमालिका गहि कालिका तहँ वृन्द वृन्दनि सों मिलीं ॥
करि रुधिर सर सज्जन मनहुँ संग्रामवट पूजनचलीं ॥९३॥

दोहा-पुनि रावण अति कोप करि, छाँडी शक्ति प्रचण्ड ॥
सन्मुख चली बिभीषणहिं, मनहुँ काल कोदण्ड ॥२४३॥

आवत देखि शक्ति अतिभारी ❋ प्रणतारत हरि विरद सँभारी ॥
तुरत बिभीषण पाछे मेला ❋ सन्मुख राम सहेउ सो शेला ॥

१ राहुकेतु । २ कुहिरा । ३ सूर्य्य । ४ मालावनाके । ५ शक्ति ।

लगी शक्ति मूर्च्छा कछु भई ❀ प्रभुकृत खेल सुरन्द विकलई ॥
देखि बिभीषण प्रभु श्रम पायउ ❀ गहिकर गदा क्रोध करि धायउ ॥
रे अभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे ❀ तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे ॥
सादर शिव कहँ शीश चढाये ❀ एक एकके कोटिन पाये ॥
तेहि कारण खल अवलगिवाचा ❀ अब तव काल शीशपर नाचा ॥
राम विमुख शठ चहसि सम्पदा ❀ अस कहि हनेसि मांझ उरगदा ॥

छंद-उरमांझगदाप्रहार घोर कठोर लागत महिपरयो ॥
दशवदन शोणित श्रवत पुनि संभारि धायो रिसि भरयो ॥
दोउ भिरे अति बल मल्लयुद्ध विलोकि एकहि इक हनै ॥
रघुवीर बल गर्वित बिभीषण माल नहिं ता कहँ गनै ॥९४॥

दोहा-उमा बिभीषण रावणहिं, सन्मुखचितव कि काउ ॥
भिरत सो काल समान अब, श्रीरघुवीर प्रभाउ ॥२४४॥

देखा श्रमित बिभीषण भारी ❀ धावा हनूमान गिरिधारी ॥
रथ तुरंग सारथी निपाता ❀ हृदय मांझ मारेउ तेहि लाता ॥
ठाढ रहा अति कम्पित गाता ❀ गयउ बिभीषण जहँ जनत्राता ॥
पुनि रावण तेहि हतेउ प्रचारी ❀ चला गगन कपि पूंछ पसारी ॥
गहेसि पूछ कपिसहित उडाना ❀ पुनि नभ भिरेउ प्रबलहनुमाना ॥
लरत अकाश युगल समयोधा ❀ हनत एक एकहि करि क्रोधा ॥
शोभित नभछल बल बहुकरहीं ❀ कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं ॥
बुधिवल निशिचर परे न पारा ❀ तब मारुतसुत प्रभुहि सँभारा ॥

छंद-संभारि श्रीरघुवीर धीर प्रचारि कपि रावण हन्यो ॥
महि परत पुनि उठि लरत देवन युगल कहँ जयजय भन्यो ॥
हनुमन्त संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ॥
रण मत्त रावण सकल सुभट प्रचंड भुजबल दलिमले ॥९५॥

दोहा-राम प्रचारे बीरसब, धाये कीश प्रचण्ड ॥
कपिदल विपुल विलोकितेइँ, कीन्ह प्रकट पाषण्ड ॥२४५॥

---

१ देवता । २ पर्वतलेके । ३ श्रीरामचन्द्र । ४ स्मरणकिया ।

अन्तर्धान भयो क्षणएका ❋ पुनि प्रकटेसि खल रूप अनेका ॥
रघुबर कटक भालु कपि जेते ❋ जहँ तहँ प्रकट दशानन तेते ॥
देखे कपिन अमित दशशीशा ❋ भागे भालु बिकल भटकीशा ॥
चले वलीमुख धरहिं न धीरा ❋ त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुबीरा ॥
दश दिशि कोटिन धावहिं रावण ❋ गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
डरे सकल सुर चले पराई ❋ जयकी आश तजहुरे भाई ॥
सब सुर जिते एक दशकंधर ❋ अब बहु भये तकहु गिरिकंदर ॥
रहे बिरंचि शंभु मुनि ज्ञानी ❋ जिन निज प्रभुकी महिमा जानी ॥

छं०—जानहिं प्रतापते रहे निर्भय कपिन रिपु मानेउ फुरे ॥
चले बिकल मर्कट भालु सकल कृपालु पाहि भयातुरे ॥
हनुमन्त अंगद नील नल बलवन्त अति रणबांकुरे ॥
मर्दहिं दशानन कोटिकोटिन्ह कपट भटके आंकुरे ॥ ५६ ॥

दोहा—सुर वानर देखे बिकल, हँसे कोशलाधीश ॥
साजि शरासन निमिष महँ, हरे सकल दशशीश ॥ २४६ ॥

प्रभु क्षण महँ माया सब काटी ❋ जिमि रबिउदय जाहि तम फाटी ॥
रावण एक देखि सुर हर्षे ❋ विपुल सुमन पुनि प्रभु पर वर्षे ॥
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे ❋ फिरे एक एकनिके टेरे ॥
प्रभु बल पाइ भालु कपि धाये ❋ तरलै तमकि संयुगमहि आये ॥
करत प्रशंसा सुर तेइँ देखे ❋ भयउ एक मैं इनके लेखे ॥
शठहु सदा तुम मोर मरायल ❋ असकहि गगनपंथ कहँ धायल ॥
हाहाकार करत सुर भागे ❋ शठहु जाहु कहँ मोरे आगे ॥
देखि विकल सुर अंगद धावा ❋ कूदि चरण गहि भूमि गिरावा ॥

छंद-गहि भूमि पाऱ्या लात माऱ्यो बालिसुत प्रभुपहँ गयो
संभारि उठि दशकण्ठ घोर कठोर करि गर्जत भयो ॥
करि दापे धनुष चढाइ दश सन्धानि शर बहु वर्षई ॥
किये सकलभटघायलबियाकुलदेखिनिजबलहर्षई ॥ ५७ ॥

१ रावण । २ अन्धकार । ३ अतिशयक्रोधकरिकै । ४ सम्मुख । ५ क्रोध ।

दोहा–तब रघुपति लंकेशके, शीश भुजा शर चाप ॥
काटे भये नवीन पुनि, जिमि तीरथके पाप ॥ २४७

शिर भुजबाढि देखि रिपु केरि ❁ भालु कपिन रिसि भई घनेरी ॥
मरत न मूढ कटे भुज शीशा ❁ धाये कोपि भालु अरु कीशा ॥
वालितनय मारुत नल नीला ❁ द्विविद मयन्द महाबल शीला ॥
विटप महीधर करहिं प्रहारा ❁ सोइ गिरि तरुगहिकपिनसो मारा ॥
एकन नख गहि वपुष विदारी ❁ भागि चलहिं यक लातन मारी ॥
तब नलनील शिरनि चढि गयऊ ❁ नखनि ललाट विदारत भयऊ ॥
रुधिर विलोकि सकोप सुरारी ❁ तिनहिं धरन कहँ भुजापसारी ॥
गहे न जाहिं शिरनिपर फिरहीं ❁ जनु युगमधुप कमल बनचरहीं ॥
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी ❁ महि पटकेसि गँहि भुजामरोरी ॥
पुनि सकोपि दशधनु करलीन्हा ❁ शरनि मारि घायल कपिकीन्हा ॥
हनुमदादि मूर्च्छित सब बन्दर ❁ पाइ प्रदोष हर्ष दशकन्धर ॥
मूर्च्छित देखि सकल कपि बीरा ❁ जाम्बवन्त धावा रणधीरा ॥
संग भालु भूधर तरु भारी ❁ मारन लगे प्रचारि प्रचारी ॥
भयो क्रोध रावण बलवाना ❁ गहि पद महि पटके भटनाना ॥
देखि भालुपति निज दलघाता ❁ कोपि मांझ उरमारेसि लाता ॥

छंद–उरलात घात प्रचण्ड लागत विकल रथते महिगिरा॥
गहि भालु वीसहु करनि मानहुँ कमल निशिबश मधुकरा
मूर्च्छित विलोकि बहोरि पदहति भालुपति प्रभुपहँ गयो॥
निशि जानि स्यन्दन घालितेहि तबसूत यत्नसुगृहनयो ५८

दोहा–मूर्च्छा गइ कपि भालु तब, सब आये प्रभु पास ॥
सकल निशाचर रावणहिं, घेरि रहे अतित्रास ॥ २४८ ॥

तेहि निशि महँ सीता पहँ जाई ❁ त्रिजटा कहि सब कथा बुझाई ॥
शिर भुजबाढि सुनतरिपु केरी ❁ सीता उर भै त्रास घनेरी ॥

१ शरीर । २ रावण । ३ भ्रमर । ४ पकड । ५ संध्याकाल । ६ पर्वत । ७ देखि ।
८ जाम्बवन्त । ९ रात्रि । १० रथ । ११ सारथी । १२ भय । १३ रावण ।

मुख मलीन उपजी मन चिन्ता ❋ त्रिजटासन बोली तब सीता ॥
होइहि कहा कहसि किन माता ❋ केहि विधि मरिहि विश्वदुखदाता ॥
रघुपतिशर शिर कटे न मरई ❋ विधि विपरीति चरित सब करई ॥
मोर अभाग्य जिआवत ओही ❋ जेहि हौं हरिपदकमल बिछोही ॥
जेइँ कृतकनक कपट मृग झूठा ❋ अजहुँ सो दैव मोहिं पर रूठा ॥
जेइँ विधि मोहिं दुखदुसह सहावा ❋ लक्ष्मण कहँकटुवचन कहावा ॥
रघुपतिविरह विषम शर भारी ❋ तकि तकि बार बार मोहिं मारी ॥
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना ❋ सो विधि ताहि जिआवन आना ॥
बहुविधि करत विलापजानकी ❋ करि करि सुरति कृपानिधानकी ॥
कह त्रिजटा सुन राजकुमारी ❋ उर शर लागत मरिहि सुरारी ॥
ताते प्रभु उर हतहिं न तेही ❋ इहिके हृदय बसत वैदेही ॥

छंद–इहिके हृदय बस जानकी मम जानकी उर बासहै ॥
मम उदर भुवन अनेक लागत बाण सबको नाशहै ॥
अस सुनत हर्षविशाद उर अतिदेखि पुनित्रिजटाकहा
अब मरिहिरिपुइहिभांतिसुंदरितजहुतुमसंशयमहा९९॥

दोहा–काटत शिर होइहि विकल,छुटि जाइ तब ध्यान ॥
तब रावणके हृदय शर, मारहिं राम सुजान ॥ २४९ ॥

असकहि बहुप्रकार समुझाई ❋ पुनि त्रिजटा निजभवन सिधाई ॥
राम स्वभाव सुमिरि वैदेही ❋ उपजी विरह व्यथा अति तेही ॥
निशिहि शशिहि निन्दत बहुभांती ❋ युगसम भई विहाति नराती ॥
करत विलाप मनहिं मनभारी ❋ रामबिरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयो विरह उरदाहू ❋ फरकेउ वाम नयन अरु बाहू ॥
शकुन विचारि धरी उर धीरा ❋ अब मिलिहहिं कृपालु रघुबीरा ॥
इहां अर्द्ध निशि रावण जागा ❋ निजसारथि सन खीझन लागा ॥
शठ रणभूमि छुडायहु मोहीं ❋ धृक धृक अधम मन्दमति तोहीं ॥
तेइँ पदगहि बहुविधि समुझावा ❋ भोरभये रथचढि पुनि आवा ॥

१ संसार । २ लीला । ३ स्वर्णमृगमारीच । ४ घर । ५ विदेहमहाराज जनककुमारी सीताजी । ६ चन्द्र ।

सुनि आगमन दशानन केरा ❀ कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥
जहँ तहँ भूधर विटप उपारी ❀ धाये कटकटाइ भट भारी ॥

छंद–धाये जो मर्कट विकट भालु कराल कर भूधर धरा
अति कोपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा
बिचलाइ दल बलवन्तकीशनि घेरि पुनि रावणलियो ॥
दशशिदिचपेटन्हमारिनखनविदारितेहिव्याकुलकियो॥
दोहा–देखि महा मर्कट प्रबल, रावण कीन्ह विचार ॥
अन्तर्हित होइ निमिष महँ, करिमायाविस्तार॥२५०॥
छंदलीला-जब कीन्ह तेइँ पाखण्ड,भये प्रगट जन्तुप्रचण्ड
बैताल भूत पिशाश, कर धरे धनुष नराचं ॥
योगिनि गहे करवाल, इक हाथ मनुज कपाल ॥
करि सद्य शोणित पान, नाचहिं करहिं शुणगान ॥६१॥
धरु मारु बोलहिं घोर, रहि पूरि धुनिचहुँ ओर ॥
मुखबाय धावहिं खान, तब लगे कीश परान ॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि, तहँ बरत देखहिं आगि ॥
भय बिकल बानर भालु, पुनि लाग बर्षनबालु ॥६२
जहँ तहँ थकित करि कीश, गर्जाबहुरि दशशीश ॥
लक्ष्मण कपीश समेत, भये सकल बीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ, कहि सुभट मींजहिं हाथ ॥
इहिविधिसकल बल तोरि, तेहिकीनकपटबहोरि ॥६३॥
प्रगटेसि विपुल हनुमान, धाये गहे पाषान ॥
तिन राम घेरेउ जाइ, चहुँ दिशि बरूथ बनाइ ॥
मारहु धरहु जनिजाइ, कटकटटिं पूंछ उठाइ ॥
दशदिशि लँगूर विराज, तेहि मध्य कोशलराज ॥६४॥

---

१ बाण । २ खड्ग । ३ तुरन्तका । ४ झुण्डके झुण्ड ।

छंद हरिगीति॥

तेहि मध्य कोशलराज सुन्दर श्याम तनु शोभा सही॥
जनु इन्द्रधनुष अनेक किय बर बारि तुंगतमालही ॥
प्रभु देखि हर्षविषाद उरसुर वदति जय जय जय करी॥
रघुवीर एकहि तीर कोपित निमिष महँ मायाहरी६५॥
माया विगत कपि भालु हर्षे विटप गिरि गहि सब फिरे
शर निकर छाँडे राम रावण बाहु शिर पुनि पुनि हरे॥
श्रीरामरावण समरचरित अनेक कल्प जो गावहीं ॥
शत शेष नारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं६६॥

दोहा—कहे तासु गुणगण कछुक, जडमति तुलसीदास ॥
निज पौरुष अनुसार जिमि, मशक उडाहिं अकास२९१॥
काटि शीश भुज बार बहु, मरै न भट लंकेश ॥
प्रभु क्रीडत मुनि सिद्धसुर, व्याकुल देखि कलेश॥ २९२॥

काटत बढहिं शीश समुदाई ❋ जिमिप्रति लाभ लोभ अधिकाई ॥
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेषा ❋ राम विभीषण तन तब देखा ॥
उमा काल मरु जाकी इच्छा ❋ सो प्रभु जनकी लेत परिच्छा ॥
सुन सर्वज्ञ चराचर नायक ❋ प्रणतपाल सुरमुनि सुखदायक ॥
नाभी कुंड सुधा बस याके ❋ नाथ जियत रावण बलताके ॥
सुनत विभीषण वचन कृपाला ❋ हर्षि गहे प्रभुबाण कराला ॥
अशकुन होन लगे विधि नाना ❋ रोवहिं बहु शृगाल खर श्वाना ॥
बोलहिं खग अति आरतहेतू ❋ प्रगट भये जहँ तहँ नभकेतू ॥
दश दिशि दाह होन तब लागा ❋ भयउ पर्व बिनु रवि उपरागा ॥
मन्दोदरि उर कम्पित भारी ❋ प्रतिमा श्रवहिं नयन बह बारी ॥

हरिगीतिकाछंद-प्रतिमाश्रवहिंपविपातनभअतिवाँतबहडोलतमही
वर्षहिं वलाहक रुधिर कच रज अशुभ अति सक को कही॥

१ मसा । २ लीलाकरतेहैं । ३ अमृत । ४ पक्षी । ५ मूर्ति । ६ पत्थर । ७ वायु । ८ मेघ

उत्पात अमित विलोकि नभसुर विकल बोलहिं जय जये
सुर सभय जानि कृपालु रघुपति चाप शर जोरत भये ६७

दोहा–आकर्षेउ धनु श्रवण लगि, छाँडे शर इकतीश ॥
रघुनायक शायक चले, मानहुँ काल फणीश ॥ २५३ ॥

शायक एक नाभि शर शोषा ❋ अपर लगे शिर भुज करि रोषा ॥
लै शिर बाहु चले नाराचा ❋ शिरभुजहीन रुंड महि नाचा ॥
धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा ❋ तब शर हति प्रभु कृतयुगखण्डा ॥
गर्जेउ मरत घोर रव भारी ❋ कहां राम रण हतौं प्रचारी ॥
डोली भूमि गिरत दशकन्धर ❋ क्षुभित सिन्धु सर दिग्गजभूधर ॥
परेउ भूमि युग खंड बढाई ❋ चापि भालु मर्कट समुदाई ॥
मन्दोदरि आगे भुज शीशा ❋ धरि शर चले जहाँ जगदीशा ॥
प्रविशे सब निषंग महँ आई ❋ देखि सुरन दुन्दुभी बजाई ॥
तासु तेज समान प्रभुआनन ❋ हर्षे देव शम्भु चतुरानन ॥
जय ध्वनि पूरि रही नवखंडा ❋ जय रघुवीर प्रबल भुजदंडा ॥
वर्षहिं सुमन देव मुनि वृन्दा ❋ जय कृपालु जय जयति मुकुन्दा ॥

छंद–जय कृपाकन्दमुकुन्द हरि मर्दन निशाचर मदप्रभो
खलदल विदारण परम कारण कारुणीक सदा विभो ॥
सुर सुमन वर्षत सकल हर्षत बाजि दुन्दुभि गहगँही ॥
संग्राम अंगनराम अंग अनंग बहु शोभा लही ॥ ६८ ॥
शिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं
जनु नीलगिरिपर तडितपटलसमेत उडुगण भ्राजहीं ॥
भुज दण्ड फेरत शर शरासन रुधिरकण तनु अतिबने ॥
जनु रायमुनिय तमालतरुवर बैठिबहु सुख आपने ६९ ॥

दोहा–कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु, अभय किये सुरवृन्द ॥
हर्षे वानर भालु सब, जय सुखधाम मुकुन्द ॥ २५४ ॥

१ वाण । २ जल ऊपरको उछलने लगा । ३ समुद्र । ४ मुख । ५ ब्रह्मा ।
६ करुणाके मर्य्यादा श्रीरामचन्द्रजी । ७ गंभीर । ८ नक्षत्र । ९ शोभित ।

पति शिर दीख जबहि मन्दोदरि ❋ मूर्च्छित बिकल खसी धरणी परि ॥
युवतिबृन्द रोवत उठि धाई ❋ तेहि उठाय रावण पहँ ल्याई ॥
पतिगति देखि सो करति पुकारा ❋ छूटे केश न देह सँभारा ॥
उर ताडना करै बिधि नाना ❋ रोदन करै प्रताप बखाना ॥
तव बलनाथ डोल नित धरणी ❋ तेजहीन पावक[1] शशि तरणी[2] ॥
शेष कमठ सहि सकहिं न भारा ❋ सो तनु आजु परा महिछारा ॥
वरुण कुबेर सुरेश समीरा ❋ रणसन्मुख धरु काहु न धीरा ॥
भुजबल जीति कालयम साईं ❋ आजु सो परेउ अनाथ किनाईं ॥
जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई ❋ सुत परिजन बल वरणि न जाई ॥
रामविमुख अस हाल तुम्हारा ❋ रहा न कुल कोउ रोवनि हारा ॥
तव वश विधि प्रपंच सब नाथा ❋ सब दिगपति तोहिं नावहिं माथा ॥
अब तवशिर भुज जम्बुक खाहीं ❋ रामविमुख यह अनुचित नाहीं ॥
कालविवशपति कहा न माना ❋ अग जगनाथ[3] मनुज करि जाना ॥

छंद–जानेउ मनुज करि दनुज काननदहन पावक हरिस्वयं
ज्यहि नमत शिवब्रह्मादि सुर पिय भजेहु ना करुणामयं ॥
आजन्मते परद्रोहरत पापोघमय[4] तव तनु अयं ॥
तुमहूं दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥७०॥

दोहा–अहहंनाथ रघुनाथ सम, कृपासिन्धु को आन ॥
मुनि दुर्लभ जो परमगति, तुमहिं दीन्ह भगवान ॥२९९

मन्दोदरीवचन सुनि काना ❋ सुर मुनि सिद्ध सबहिं सुख माना ॥
अज महेश नारद सनकादी ❋ जे मुनिवर परमारथवादी[5] ॥
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी ❋ प्रेम मगन सब भये सुखारी ॥
रोदन करत विलोकेउ नारी ❋ गये बिभीषण मन दुख भारी ॥
बन्धुदशा देखत दुख भयऊ ❋ तब प्रभु अनुजहि आयसु दयऊ ॥
लक्ष्मण तेहि बहुविधि समुझाये ❋ सहित बिभीषण प्रभु पहँ आये ॥
कृपादृष्टि प्रभु ताहि विलोका ❋ करहु क्रिया परिहरि[6] सब शोका ॥

---

१ अग्नि । २ श्रीसूर्य्यनारायण । ३ अनेक ब्रह्माण्ड चराचरके स्वामी । ४ पापोंका समूह । ५ ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मज्ञानी । ६ त्याग ।

कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी ❋ विधिवत देश काल गति जानी ॥

दोहा-मयतनयादिक नारिसब, देइँ तिलांजलि ताहि ॥
भवन गईं रघुवीरगुण,गण बरणति मनमाहि ॥ २५६ ॥

आइ बिभीषण पुनि शिरनावा ❋ कृपासिंधु तब अनुज बुलावा ॥
तुम कपीश अंगद नल नीला ❋ जाम्बवन्त मारुतसुत शीला ॥
सब मिलि जाहु बिभीषण साथा ❋ सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥
पितावचन मैं नगर न जाऊं ❋ आपुसरिस कपि अनुज पठाऊं ॥
तुरत चले कपि सुनि प्रभुवचना ❋ कीन्ही जाइ तिलककी रचना ॥
सादर सिंहासन बैठारी ❋ तिलक कीन्ह अस्तुति अनुसारी ॥
जोरि पाँणि सबही शिर नाये ❋ सहित बिभीषण प्रभु पहँ आये ॥
तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे ❋ कहि प्रियवचन सुखी सब कीन्हे ॥

छंद-कीन्हे सुखी सबकहि सुवाणी बल तुम्हारे रिपुहँयो ॥
पायो बिभीषण राज्य तिहुँपुर यश तुम्हारो नित नयो ॥
मोहिं सहित शुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ॥
संसारसिन्धु अपारपार प्रयासबिनु तरिजाइहैं ॥ ७१ ॥

दोहा-सुनत रामके वचन मृदु, नहिं अघात कपिपुंज ॥
बारहिं बार बिलोकि मुख, गहे सकल पदकंज ॥ २५७ ॥

तब प्रभु बोलि लिये हनुमाना ❋ लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु ❋ तासु कुशल लै तुम चलि आवहु ॥
तब हनुमान नगर महँ आये ❋ सुनि निशिचरी निशाचर धाये ॥
पूजा बहु प्रकार तिन कीन्ही ❋ जनकसुता दिखाय पुनि दीन्ही ॥
दूरिहिते प्रणाम कपि कीन्हा ❋ रघुपतिदूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता ❋ कुशल अनुज प्रभु सेनसमेता ॥
सब विधि कुशल कोशलाधीशा ❋ मातु समर जीत्या दशशीशा ॥
अविचल राज्य बिभीषण पावा ❋ सुनि कपिवचन हर्ष उरछावा ॥

१ आज्ञा। २ भाई। ३ हाथ। ४ शत्रुकानाशभयो। ५ श्रम। ६ मधुर। ७ अचल।

छंद-अतिहर्षमनतनुपुलकलोचनसजलपुनिपुनिकहरमा
का देउँ तोहिं त्रैलोक्य महँ कपि किमपि नहिं वाणीसमा
सुन मातु मैं पायउँ अखिल जगराज्य आजु न संशयं ॥
रण जीति रिपुदल बन्धुयुत पश्यामि राम निरामयं॥७२॥

दोहा-सुन सुत सद्गुण सकल तव, हृदय बसैं हनुमन्त ॥
सानुकूल रघुवंशमणि, रहहिं समेत अनन्त ॥२५८॥

अब सोइ यतन करहु तुमताता ❋ देखौं नयन श्याम मृदुगाता ॥
तब हनुमन्त राम पहँ आई ❋ जनकसुता कर कुशल सुनाई ॥
सुनि बाणी पतंगकुलभूषण ❋ बोलि लिये कपिराज विभीषण ॥
मारुतसुतके संग सिधावहु ❋ सादर जनकसुता लै आवहु ॥
तुरतहि सकल गये जहँ सीता ❋ सेवहिं सब निशिचरीविनीता ॥
वेगि विभीषण तिनहिं सिखावा ❋ सादर तिन सीतहिं अन्हवावा ॥
दिव्यवसन भूषण पहिराये ❋ शिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याये ॥
तेहि पर हर्षि चढी वैदेही ❋ सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥
वेतपाणि रक्षक चहुँपासा ❋ चले सकल मन परम हुलासा ॥
संग लिये त्रिजटा निशिचरी ❋ चली राम पहँ सुमिरत हरी ॥
देखन भालु कीश बहु धाये ❋ रक्षक कोटि निवारण आये ॥
कह रघुबीर कहा मम मानहु ❋ सीतहि सखा पयादेहि आनहु ॥
देखहिं कपि जननीकी नाईं ❋ बिहँसि कहा रघुवीर गुसांई ॥
सुनि प्रभुवचन भालुकपि हरषे ❋ नभते सुरन सुमन बहु वरषे ॥
सीतहि प्रथम अग्नि महँ राखी ❋ प्रगट कीन्ह चह अन्तरसाखी ॥

दोहा-तेहि कारण करुणाअयन,, कहे कछुक दुर्बाद ॥
सुनत यातुधानी सकल, लागीं करन विषाद ॥२५९॥

प्रभुके वचन शीश धरि सीता ❋ बोली मन क्रम वचन पुनीता ॥
लक्ष्मण होहु धर्मके नेगी ❋ पावक प्रगट करहु तुम वेगी ॥
सुनि लक्ष्मण सीताकी बानी ❋ विरह विवेक धर्म रतिसानी ॥

१ आमय षट् विकार जन्म, वृद्धि, विवरण, क्षीण, जरा, मृत्यु । २ समीचीन । ३ लक्ष्मणजी । ४ विभीषणके चोपदार । ५ अग्नि । ६ ज्ञान । ७ प्रीति ।

लोचन सजल जोरि कर दोऊ ❀ प्रभुसन कछु कहिसकत न ओऊ॥
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये ❀ पावक प्रगट काठ बहु लाये॥
प्रबल अनल विलोकि वैदेही ❀ हृदय हर्ष कछु भय नहिं तेही॥
जो मन क्रम वच मम उरमाही ❀ तजि रघुवीर आन गति नाहीं॥
तौ कृशानु सबकी गति जाना ❀ मोकहँ होहु श्रीखण्डसमाना॥

छंद-श्रीखंडसमपावकप्रकटकियसुमिरिप्रभुतेहिमहँचली
जय कोशलेश महेशवन्दित चरणरज अति निर्मली॥
प्रतिबिम्ब अरु लौकिक कलंक प्रचण्ड पावक महँ जरे॥
प्रभुचरित काहु न लखेउ सुरमुनिसिद्धसब देखहिं खरे७३
तब अनल भूसुररूप करगहि सत्यश्री श्रुतिविदित जो॥
जिमि क्षीरसागर इन्दिरा रामहिं समर्प्पी आनिसो॥
सोइ राम बामविभागराजित रुचिर अति शोभा भली॥
नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकजकी कली ७४

दोहा—हर्षि सुमन वर्षहिं विबुध, बाजहिं गगन निशान॥
गावहिं किन्नर अप्सरा, नाचहिं चढी विमान॥ २६०॥
श्रीजानकीसमेत प्रभु, शोभा अमित अपार॥
देखि भालुकपि हरषेउ, जय रघुपति सुखसार॥२६१॥

तब रघुपति अनुशासन पाई ❀ मातलि चले चरण शिर नाई॥
आये देव सदा स्वारथी ❀ वचन कहहिं जनु परमारथी॥
दीनबंधु दयालु रघुराया ❀ देव कीन्ह देवनपर दाया॥
विश्वद्रोहरत खल अतिकामी ❀ निज अघ गयउ कुमारगगामी॥
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनाशी ❀ सदा एक रस सहज उदासी॥
अकल अगुण अनवद्य अनामय ❀ अजित अमोघ एक करुणामय॥
मीन कमठ शूकर नरहरी ❀ वामन परशुराम वपुधरी॥
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पावा ❀ नाना तनु धरि तुमहिं नशावा॥

१ नेत्रोंमे जल भराहै। २ चन्दन। ३ अग्निब्राह्मणका रूपधरके। ४ इन्द्रका सारथी। ५ परमार्थ कही परमअर्थ श्रीरामचन्द्र स्वरूप परब्रह्म प्रताप ऐश्वर्य तेज कृपा परमादिव्य देवता वर्णनकरतेहैं। ६ कलारहित। ७ तामस, राजस, सात्विकतेपरे।

रावण पापमूल सुरद्रोही ❋ काम क्रोध मद रति अति कोही ॥
अधम शिरोमणि तवपद पावा ❋ यह हमरे मन अचरज आवा ॥
हम देवता परम अधिकारी ❋ स्वारथरति तव भक्ति विसारी ॥
भव प्रभाव सन्तत हम परे ❋ अब प्रभु पाहि शरण अनुसरे ॥
दोहा—करि विनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ करजोरि ॥
अतिशय प्रेम सरोज विधि, अस्तुति करत बहोरि ॥ २६२ ॥
तोटकछंद-जयरामसदासुखधामहरे, रघुनायकशायकचापधरे
भववारण दारुणसिंह प्रभो, गुणसागर नागर नाथ विभो ॥
तनु काम अनेक अनूप छबी, गुणगावत सिद्ध मुनींद्र कवी
यशपावनरावननागमहा, खगनाथयथाकरि कोपगहा ७५
जनरंजन भंजन शोक भयं, गत कोह सदा प्रभु बोधमयं ॥
अवतार उदार अपार गुनं, महि भार विभंजन ज्ञानघनं ॥
अजव्यापकमेकमनादिसदा, करुणाकररामनमामिमुदा
रघुवंशविभूषणदूषणहा, कृतभूपविभीषणदीनरहा ॥७६॥
गुणज्ञान निधानअमान अजं, नितरामनमामिविभुंविरजं
भुजदण्डप्रचण्ड प्रताप बलं, खलवृन्दनिकन्द महाकुशलं ॥
विनुकारण दीनदयालुहितं, छबि धाम नमामि रमासहितं
भवतारण कारण काजपरं, मनसम्भव दारुण दोषहरं ॥७७॥
शरचाप मनोहर तूणधरं, जलजारुण लोचन भूप वरं ॥
सुखमन्दिर सुन्दर श्रीरमनं, मदमार महा ममता शमनं ॥
अनवद्य अखंड अगोचरगो, समरूप सदा सब होइनसो ॥
इतिवेदवदन्तिनदन्तकथा, रविआतपभिन्ननभिन्न यथा ७८
कृतकृत्य[11] विभो[12] सब वानरये, निरखन्त तवानन[13] सादरये ॥
धृकजीवन देव शरीरहरे, तव भक्ति विना भवभूलि परे ॥

१ सर्वोपरिश्रेष्ठ अतिप्रवीण । २ जनोंके आनन्दकर्त्ता । ३ स्थान । ४ सबप्रकारसमर्थहो । ५ मायाते रहितहौ । ६ प्रवीण । ७ योग वैराग्य, ज्ञान, ध्यान, समाधि इत्यादिकको अभिमान ८ नाशकर्ता । ९ वाणीतेपरेहो । १० तेज । ११ कृतार्थ । १२ ऐश्वर्य । १३ मुख ।

अब दीनदयालु दया करिये, मति मोरि विभेदकरी हरिये
जिहितेविपरीतक्रियाकरिये, दुखमेंसुखमान सुखीचरिये७९
खलखण्डन मण्डन रम्य क्षमा, पदपंकज सेवितशम्भुउमा
नृपनायक दे वर दानमिदं, चरणाम्बुजप्रेमसदाशुभदं ८०॥

दोहा—विनय कीन्ह बहु भांति विधि, प्रेम प्रफुल्लित गात ॥
वदन विलोकत रामकर, लोचन नाहिं अघात ॥ २६३ ॥

तिहि अवसर दशरथ तहँ आये ❀ तनय विलोकि नयन जल छाये॥
सहित अनुज प्रणाम प्रभु कीन्हा ❀ आशिर्वाद पिता तब दीन्हा ॥
तात सकल तव पुण्य प्रभाऊ ❀ जीतेउ अजेय निशाचर राऊ ॥
सुनि सुत वचन प्रीति अति बाढी ❀ नयन सलिल रोमावलि ठाढी ॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना ❀ चितै पितहि दीन्हेउ दृढ ज्ञाना ॥
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा ❀ दशरथ भेद भक्ति मन लावा ॥
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं ❀ तिन्हकहँ राम भक्ति निज देहीं ॥
बार बार करि प्रभुहि प्रणामा ❀ दशरथ हर्षि गये निजधामा ॥

दोहा—अनुज जानकी सहित प्रभु, कुशल कोशलाधीश ॥
छबि विलोकि मन हर्षि अति, अस्तुति कर सुर ईश२६४॥

तोमरछंद—जय राम शोभाधाम, दायक प्रणत विश्राम ॥
धृत तूण वर शरचाप, भुजदण्ड प्रबल प्रताप ॥
जय दूषणारि खरारि, मर्दन निशाचर झारि ॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ, भये देव सकल सनाथ ॥८१॥
जय हरण धरणीभार, महिमा उदार अपार ॥
जय रावणारि कृपाल, किये यातुधान विहाल ॥
लंकेश अति बलगर्व, किये वश्य सुर गन्धर्व ॥
मुनि सिद्ध नर खगनाग, हठि पन्थ सबके लाग ॥८२॥

---

१ दान। राक्षस। २ सम्पूर्ण भुवनके शृंगार। ३ स्वरूप। ४ जो किसीके जीतने योग्य नहीं। ५ पानी। ६ शरणागत। ७ तरकस ८ धनुर्बाण। ९ रावण।

पर द्रोह रत अति दुष्ट, पायो सो फल पापिष्ट ॥
अब सुनहु दीनदयाल, राजीव नयन विशाल ॥
मोहिं रहा अति अभिमान, नहिं कोउ मोहिं समान ॥
अब देखि प्रभु पदकंज, गत मानप्रदढुखपुंज ॥ ८३ ॥
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव, अव्यंक्त जिहि श्रुतिगाव ॥
मोहिं भाव कोशलभूप, श्रीराम सगुण स्वरूप ॥
वैदेहिं अनुज समेत, मम हृदय करहु निकेत ॥
मोहिं जानिये निजदास, देभक्ति रमानिवास ॥ ८४ ॥

छंद—दे भक्ति रमा निवास त्रास हरण शरण सुखदायकं ॥
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ॥
सुरवृन्दरंजन द्वन्द भंजन मनुज तनु अतुलित बलं ॥
ब्रह्मादि शंकर सेव्यराम नमामि करुणा कोमलं ॥ ८५ ॥

दोहा—अब करि कृपा विलोकि मोहिं, आयसु देहुकृपालु ॥
काह करौं सुनि प्रिय वचन, बोले दीनदयालु ॥ २६५ ॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे ❋ परे भूमि निशिचरके मारे ॥
ममहित लागि तजे इन प्राना ❋ सकल जिआउ सुरेश सुजाना ॥
सुनु खगेश प्रभुकी यह बानी ❋ अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी ॥
प्रभुचहइ त्रिभुवन मारि जिवाई ❋ केवल शक्रहि दीन्हि बडाई ॥
सुधाबरषि कपि भालु जिआये ❋ हर्षि उठे सब प्रभु पहँ आये ॥
सुधा वृष्टि भइ दुहुँ दल ऊपर ❋ जिये भालु कपि नहिं रजनीचर ॥
रामाकार भये तिन्हके मन ❋ गये ब्रह्मपद तजि शरीर रन ॥
सुर अंशिक सब कपि अरु ऋच्छा ❋ जिये सकल रघुपतिकी इच्छा ॥
राम सरिस को दीन हितकारी ❋ कीन्हे मुक्त निशाचर झारी ॥
खल मल धाम काम रत रावन ❋ गति पाई जो मुनि वर पावन ॥

दोहा—सुमन वर्षि सब सुर चले, चढि चढि रुचिर विमान ॥

अप्रकट अदृश्य । २ वेद । ३ जन्ममरणके नाशकर्ता । ४ इन्द्र । ५ अमृतकी वर्षा । ६ राक्षस ।

देखि सुअवसर राम पहँ, आये शम्भु सुजान ॥ २६६ ॥
परम प्रीति कर जोरि युग, नयन नलिन भरि बारि ॥
पुलकित तनु गदगदगिरा, बिनय करत त्रिपुरारि २६७

छंद—मामभिरक्षयरघुकुलनायक, धृतवरचापरुचिरकरसायक
मोहमहा घन पटल प्रभंजन, संशयविपिनअनलसुररंजन
अगुणसगुणगुणमंदिर सुंदर, भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर
कामक्रोधमद गज पंचानन, वसहुनिरन्तरजनमनकानन८६
विषय मनोरथ पुंज कंजबन, प्रबल तुषार उदार पारमन॥
भव वारिधि मन्दर परमन्दर, वारय तारय संसृतिदुस्तर॥
श्यामगात राजीव विलोचन, दीनबन्धु प्रणतारत मोचन॥
अनुजजानकीसहितनिरन्तर, बसहुरामनृपममउरअन्तर
मुनिरंजनमहिमण्डलमण्डन, तुलसिदासप्रभुत्रासविखण्डन॥

दोहा—नाथ जबहि कोशलपुर, होइहि तिलक तुम्हार ॥
तब आउब हम सुन्हु प्रभु, देखन चरित उदार॥२६८॥

करि विनती जब शम्भु सिधाये ❀ तब प्रभु निकट बिभीषण आये॥
नाइ चरण शिर कह मृदुवाणी ❀ विनय सुनिय मम शारंगपाणी ॥
सकुल सदल प्रभु रावण मारा ❀ पावन यश त्रिभुवन विस्तारा ॥
दीन मलीन हीन मति जाती ❀ मोपर कृपा कीन्ह बहु भांती ॥
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजै ❀ मर्ज्जन करिय सकल श्रम छीजै ॥
देश कोश मन्दिर सम्पदा ❀ देहु कृपालु कपिन कहँ मुदा ॥
सब विधि नाथ मोहिं अपनाइय ❀ पुनि मोहिं सहित अवधपुर जाइय॥
सुनत वचन मृदु दीनदयाला ❀ सजल भये हरि नयन विशाला ॥

दोहा—तोरकोश गृह मोर सब, सत्य वचन सुनु तात ॥
दशा भरतकी सुमिरि मोहिं, पलक कल्पसम जात ॥२६९॥
तापस वेष शरीर कृश, जपैं निरन्तर मोहिं ॥

---

१ कमलनेत्र २ घनमेघ । ३ सिंह । ४ जन्ममरण । ५ शृंगार । ६ विशेषखण्डनकर्ता ।
७ पवित्र । ८ स्नान । ९ खजाना । १० आनंदसह । ११ दूबर ।

देखौं वेगि सो यतनकरि, सखा निहोरो तोहिं ॥२७०॥
जो जैहों वीते अवधि, जियत न पाऊं बीर ॥
प्रीति भरतकी समुझि प्रभु,पुनि पुनि पुलक शरीर २७१
करहु कल्प भरि राज्य तुम, मोहिं सुमऱ्यहु मन माहिं
पुनि ममधाम सिधाऱ्यउ, जहाँ संत सब जाहिं २७२ ॥
सुनत बिभीषण वचन रामके ❀ हर्षि गहे पद कृपाधामके ॥
वानर भालु सकल हर्षाने ❀ प्रभुपद गहि गुण विमल बखाने ॥
बहुरि बिभीषण भवन सिधाये ❀ मणिगण बसन विमान भराये ॥
लै पुष्पक प्रभु आगेराखा ❀ हँसिके कृपासिन्धु अस भाषा ॥
चढिबिमान सुन सखा बिभीषण ❀ गगन जाइ बर्षहु पट भूषण ॥
नभ पर जाइ बिभीषण तबहीं ❀ वर्षि दिये पट भूषण सबहीं ॥
जो जेहि मन भावै सो लेहीं ❀ मणिमुख मेलि डारि कपि देहीं ॥
हँसत राम सिय अनुजसमेता ❀ परम कौतुकी कृपानिकेता ॥
दोहा—ध्यान न पावहिं जासु मुनि, नेति नेति कहवेद ॥
कृपासिन्धु सोइ कपिन सों,करत अनेक बिनोद॥२७३॥
उमा योग जप दान तप, नाना व्रत मख नेम ॥
रामकृपा नहिंकरहिं तस, जस निःकेवल प्रेम ॥ २७४ ॥
भालु कपिन पट भूषण पाये ❀ पहिरि पहिरि रघुपति पहँ आये ॥
नाना जिंनिसि देखि प्रभु कीशा ❀ पुनि पुनि हँसत कोशलाधीशा ॥
चितै सबनि पर कीन्ही दाया ❀ बोले मधुर वचन रघुराया ॥
तुम्हरे बल मैं रावण मारा ❀ तिलक बिभीषण कहँ पुनि सारा ॥
निज निज गृह अब तुम सब जाहू ❀ सुमिरहु मोहिं डरहु जनि काहू ॥
बचन सुनत प्रेमाकुल बानर ❀ जोरि पाणि बोले सब सादर ॥
प्रभु जो कहहु तुमहिं सबसोहा ❀ हमरे हिय उपजे सुनि मोहा ॥
दीन जानि कपि कियेसनाथा ❀ तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा ॥
सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं ❀ मशक कबहुँ खगपति हित करहीं

१ चौदहवर्षकीमर्यादा । २ कपडे । ३ आकाश । ४ वस्त्र । ५ गहना । ६ काले, नीले, हरित, लाले श्वेत पीले लघु मध्य दीर्घ ।

देखि राम रुख वानर ऋच्छा ❋ प्रेम मगन नहिं गृहकी इच्छा ॥

दोहा–प्रभु प्रेरित कपि भालु सब, राम रूप उर राखि ॥
हर्ष विषाद समेत तब, चले विनय बहु भाषि ॥ २७५ ॥
जाम्बवन्त कपिराज नल, अंगदादि हनुमान ॥
सहित बिभीषण अपरजे, यूथप अति बलवान ॥ २७६ ॥
कहि न सकहिं कछु प्रेमवश, भरि भरि लोचन बारि ॥
सन्मुख चितवहिं राम तन, नयन निमेष निवारि ॥ २७७ ॥

अतिशय प्रीति देखि रघुराई ❋ लीन्हे सकल विमान चढाई ॥
मन महँ विप्र चरण शिरनावा ❋ उत्तर दिशिहि विमान चलावा ॥
चलत विमान कोलाहल होई ❋ जय रघुबीर कहैं सब कोई ॥
सिंहासन अतिउच्च मनोहर ❋ सिय समेत बैठे प्रभु तापर ॥
राजत राम सहित भामिनी ❋ मेरु शृङ्ग जनु घनदामिनी ॥
रुचिर विमान चला अति आतुर ❋ कीन्ही सुमन वृष्टि हर्षे सुर ॥
परमसुखद चलि त्रिविध बयारी ❋ सागर सुरसरि निर्मल बारी ॥
शकुन होहिं सुन्दर चहुँपासा ❋ मन प्रसन्न निर्मल नभ आशा ॥
कह रघुबीर देख रण सीता ❋ लक्ष्मण हत्यो इहां इंद्रजीता ॥
अंगद हनूमानके मारे ❋ रणमहँ परे निशाचर भारे ॥
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई ❋ इहां हतेउँ सुर मुनि दुखदाई ॥

दोहा–सुन्दरि सेतु देखु यह, थापेउँ शिव* सुखधाम ॥
सीता सहित कृपायतन, शम्भुहि कीन प्रणाम ॥ २७८ ॥
जहँ जहँ कृपासिन्धु वन, कीन्ह बास विश्राम ॥
सकल देखाये जानकिहि, कहि कहि सबके नाम २७९ ॥

सपदि विमान तहांचलिआवा ❋ दण्डकवन जहँ परम सुहावा ॥

---

* श्लोक-अत्रपूर्वंमहादेवःप्रसादमकरोद्विभुः ॥ एतत्तुदृश्यतेतीर्थंसागरस्यमहात्मनः ॥
सेतुबन्धइतिख्यातंत्रैलोक्येनचपूजितम् ॥ एतत्पवित्रंपरमंमहापातकनाशनम् ॥

१ सीता । २ बिजुली । ३ मेघनाद ।

कुम्भजादि मुनि नायक नाना ❋ गये राम सबके अस्थाना ॥
सकल मुनिन सों पाइ अशीशा ❋ आये चित्रकूट जगदीशा ॥
तहँ करि ऋषिन केर सन्तोषा ❋ चला विमान तहांते चोखा ॥
बहुरि राम जानकी दिखाई ❋ यमुना कलिमल हरणि सुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता ❋ राम कहा प्रणाम करु सीता ॥
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा ❋ देखत जाहि पाप सब भागा ॥
देखि राम पावन पुनि वेनी ❋ हरण शोक सुरलोक निशेनी ॥
देखो अवधपुरी अति पावनि ❋ त्रिविधताप भव दापनशावनि ॥

दोहा—तब रघुनन्दन सिय सहित, अवधहिं कीन प्रणाम ॥
सजल विलोचन पुलक तनु, पुनि पुनि हर्षित राम ॥ २८० ॥
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु, हर्षित मज्जन कीन्ह ॥
कपिनसहितमहिसुरन्हकहँ, दानविविधविधिदीन्ह २८१

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई ❋ धरि द्विज रूप अवधपुर जाई ॥
भरतहिकुशल हमारि सुनावहु ❋ समाचार लै पुनि चलि आवहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयउ ❋ तब प्रभु भरद्वाज पहँ गयउ ॥
नानाविधि पूजा मुनि कीन्ही ❋ अस्तुतिकरि पुनि आशिषदीन्ही ॥
मुनि पदवन्दि युगलकर जोरी ❋ चढि विमान प्रभु चले बहोरी ॥
इहां निषाद सुना प्रभु आये ❋ नाव नाव करि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लांघि यान जब आवा ❋ उतरा तहँ प्रभु आयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी ❋ बहु प्रकार करि चरणन परी ॥
दीन्ह अशीष मुदित मन गंगा ❋ सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥
सुनतहि गुह धावा प्रेमाकुल ❋ आवा निकट परम सुख संकुल ॥
प्रभुहि विलोकि सहित वैदेही ❋ परेउ अवनि तनुसुधि नहिं तेही ॥
परम प्रीति विलोकि रघुराई ❋ हर्षि उठाइ लीन्ह उरलाई ॥

छंद—लिये हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राम रमा पती ॥
बैठारि परम समीप पूछी कुशल सोकरि वीनती ॥

१ अतिशीघ्र । २ अधिभूत अध्यात्म अधिदैवत । ३ गंगा, यमुना, स्वरस्वतीकासंगम ।
४ ब्राह्मणसमूह । ५ पूर्णप्रेमभरे । ६ पृथ्वी ।

अब कुशल पदपंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्यजे ॥
सुखधाम पूरणकाम राम नमामि राम नमामिते ॥८८॥
सब भांति अधम निषाद सो हरि भरत ज्योंउरलायऊ॥
मतिमंद तुलसीदास सोप्रभु मोह बश बिसरायऊ ॥
यह रावणारि चरित्र पावन रामपद रतिप्रद सदा ॥
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ८९

दोहा–समर विजय रघुबीरके, सुनहिं जे संत सुजान ॥
विजय विवेक विभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान॥२८२॥
यह कलिकाल मलायतनु, मन करि देखु विचार॥
श्रीरघुनायक नाम तजि, नहिं कछु आन अधार॥२८३॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल विज्ञानवैराग्यसम्पादनोनाम ६ षष्ठःसोपानःसमाप्तः ॥

इदं तुलसीकृतरामायणे लङ्काकाण्डं श्रीकृष्णदासात्मजेन गंगाविष्णुना स्वकीये "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रायन्त्रालयेऽङ्कितम्

---

१ रामचन्द्रका । २ प्रीतिदाता । ३ षड्विकारहरता ।

इति

लङ्काकाण्डम्

श्रीरघुनाथजीका समरविजय

समाप्तम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना

कल्याण–(मुम्बई)

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत-

रामायणे-

उत्तरकाण्डप्रारम्भः।

वही

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

इन्होंने

निज

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर"

नामक

मुद्रायन्त्रालयमें छापकर

प्रसिद्ध किया।

कल्याण—(मुम्बई)

संवत् १९४९ शके १८१४

लक्ष्मीवेङ्कटेशाय नमः ।

अथ उत्तरकाण्डम् ।

दोहा–नाथनमोहिं संदेहकछु, स्वप्नेहु शोकनमोह ॥
केवलकृपा तुम्हारिप्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥

दोहा–आई जानि बसन्त ऋतु, बनहिं बिलोकनराम ॥
धरणिपरसे सीतासहित, रतिसमेत जनुकाम ॥
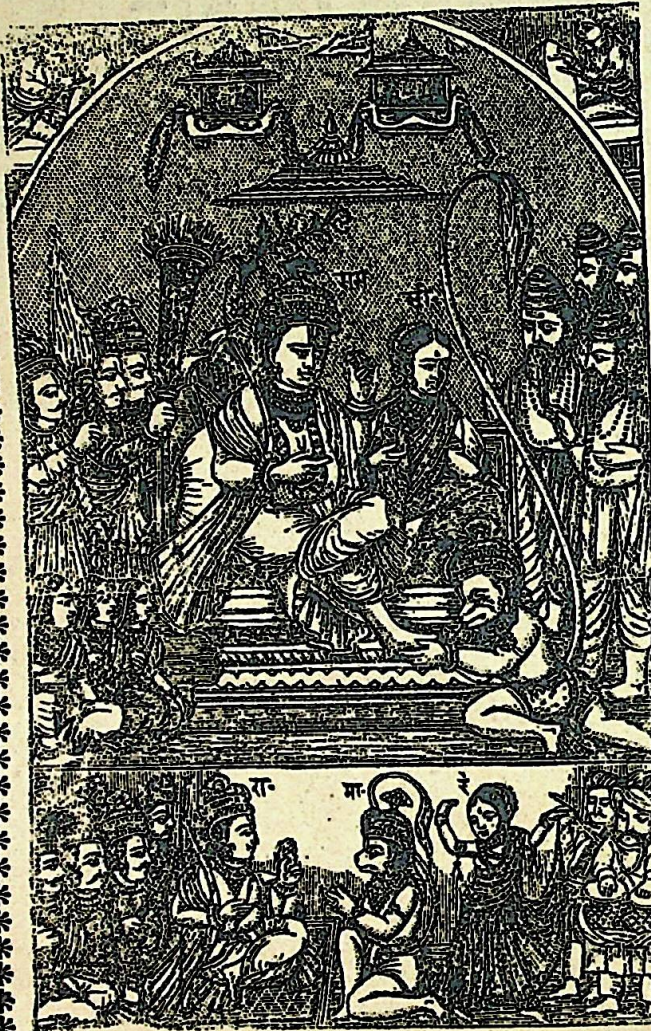
दोहा–वरुण कुबेर यम पतिपुरी, सुरपतिपुर सुखदानि ॥
समलोक वैकुण्ठसम, बस्यौं अवधमें आनि ॥

छन्द–मणि दीपराजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुमरची ॥
सुन्दर मनोहर मंदिरायत अजिर अति फटिकन खची ॥
मणिखम्भ भीति विरंचि विरचितकनक मणि मरकतरचे ॥
प्रति द्वारद्वार कपाट पुरट बनाय बहु बज्रन खचे ॥

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास–
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना कल्याण (मुंबई)

श्रीः ।

अथ रामायणे उत्तरकाण्डम् ।
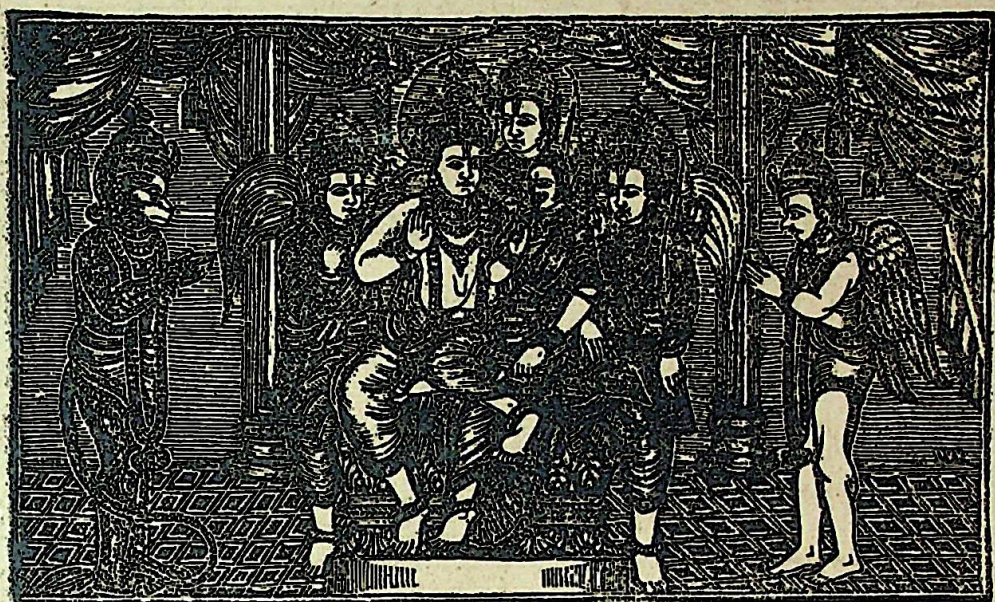
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्लोक ॥ केकीकण्ठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्ज चिह्नं शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदासुप्रसन्न म् ॥ पाणौनाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुनासेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥ १ ॥ कोशलेन्द्रपदकंजमंजुलौ पद्मयोनिशितिकंठवन्दितौ ॥ जानकीकरसरोजलालितौचिंतकस्यमनभृङ्गसंगिनौ ॥ २ ॥

दो० पूर्णेन्दुसमजगसुखद, रामचंद्ररघुराज॥ निर्मलमूरतिअवधपुर, रही विराजसमाज करदंडवतसप्रेमसे, चरणहियेमेंधार ॥ उत्तरको शोधन करहुँ, कछु निजमति अनुसार

श्लोकार्थ—मोरके कंठकी कान्तिकी समान नीलवर्ण देवताओंमें श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके चरणकमलकी जिनके हृदयमें चिह्न हैं शोभाके निधि पीतवस्त्र धारण किये कमलसे नेत्र सदाप्रसन्न रहनेवाले हाथमें धनुष बाण लिये कपि समूहोंसे युक्त भाइयोंसे सेवित जानकीके पति पुष्पकपर बैठेहुये स्तुतियोग्य रामकी मैं वंदना करताहूं ॥ १ ॥

रामचंद्र कोशलपुरीके ईश्वर जिनके युगलचरणकमल ब्रह्मा शंकरसे वंदनीयहैं जो जानकीके हस्तकमलसे प्यार किये हुयेहैं और ध्यानकरनेवाले दासोंके मनभृंगके संगीहैं तिनकी वंदना करताहूं ॥ २ ॥

इंदुकुंददरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ॥
कारुणीककलकंजलोचनं नौमिशंकरमनंगमोचनम् ॥ ३॥

दोहा-रहा एक दिन अवधिकर, अति आरत पुरलोग ॥
जहँ तहँ शोचहिंनारि नर, कृशतनु राम वियोग ॥ १ ॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु, नगररम्य चहुँ फेर ॥ २ ॥
कौशल्यादिक मातु सब, मन अनंद अस होइ ॥
आये प्रभु सिय अनुज युत, कहन चहत अस कोइ ॥ ३॥
भरत नयन भुजदक्षिण, फरकहिं बारहिं बार ॥
जानि शकुन मन हर्ष अति, लागे करन बिचार ॥ ४ ॥

रहा एक दिन अवधि अधारा ❋ समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥
कारण कवन नाथ नहिं आये ❋ जानिकुटिल प्रभुमोहिंबिसराये ॥
अहह धन्य लक्ष्मणबड भागी ❋ राम पदारविन्द अनुरागी ॥
कपटी कुटिलनाथ मोहिं चीन्हा ❋ ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जोकरणी समुझैं प्रभु मोरी ❋ नहिं निस्तार कल्प शत कोरी ॥
जन अवगुण प्रभुमानन काऊ ❋ दीनबन्धु अतिमृदुल स्वभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढसोई ❋ मिलिहहिं राम शकुन शुभ होई ॥
बीते अवधि रहैं जो प्राना ❋ अधमकवनजग मोहिं समाना ॥

दोहा-राम विरह सागर महँ, भरत मगन मन होत ॥
विप्र रूप धरि पवनसुत, आइ गये जिमि पोत ॥ ५ ॥
बैठे देखि कुशासन, जटा मुकुट कृशगात ॥
राम राम रघुपति जपत, श्रवत नयन जलजात ॥ ६ ॥

चंद्रमा कुंदके पुष्प शंखकीसमान गौरवर्ण गिरिजाके पति इच्छित सिद्धिके दाता करुणारससे भरे उत्तम कमलकी समान नेत्र और कामके जलानेहारे शिवजीको नमस्कार करताहूं ॥ ३ ॥

---

१ मर्यादा चौदह वर्षकी । २ दूबर । ३ विक्षेप । ४ कोमल । ५ डूबत । ६ नौका । ७ टपकतेहैं । ८ कमल ।

देखत हनूमान अति हर्षे ❀ पुलकि गांत लोचन जल वर्षे ॥
मनमहँ बहुत भांतिसुख मानी ❀ बोले श्रवण सुधांसम वानी ॥
जासु विरह शोचहु दिन राती ❀ रटहु निरन्तर गण गुण पाती ॥
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता ❀ आवत कुशल देव मुनि त्रांता ॥
रिपुरणजीति सुयश सुरगावत ❀ सीता अनुजसहितप्रभु आवत ॥
सुनत वचन बिसरे सब दूखा ❀ तृषावन्त जनु पाय पियूषा ॥
को तुम तात कहांते आये ❀ मोहिं परम प्रिय वचन सुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना ❀ नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर ❀ सुनत भरत भेटे उठिसादर ॥
मिलत प्रेमनहिं हृदय समाता ❀ नयन श्रवत जलपुलकित गाता ॥
कपितव दरश सकल दुखवीते ❀ मिले आजु मोहिं राम सप्रीते ॥
बार बार पूंछी कुशलाता ❀ तो कहँ काह देउँ सुनु भ्राता ॥
यहि संदेश सरिस जग माहीं ❀ करि विचार देखा कछु नाहीं ॥
नाहिंन उऋण तात मैं तोहीं ❀ अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं ॥
तब हनुमान नाइ पदमाथा ❀ कहेसि सकल रघुपति गुणगाथा ॥
कहु कपि कबहुँ कृपालु गुसाईं ❀ सुमिरत मोहिं दासकी नाईं ॥

छंद–निजदासज्योंरघुबंशभूषणकबहुँममसुमिरनकऱ्यो॥
सुनि भरतवचन विनीतअतिकपि पुलकतनुचरणनपऱ्यो॥
रघुवीर निज मुख जासु गुण गण कहत अग जगनाथसो॥
काहेन होहु विनीत परम पुनीत सद्गुण गाथसो॥ १ ॥

दोहा–राम प्राणप्रिय नाथ तुम, सत्यवचन मम तात ॥
पुनि पुनि मिलत भरतसन, प्रेम न हृदय समात ॥७॥

सोरठा–भरत चरण शिरनाइ, तुरतगये कपिराम पहँ ॥
कही कुशल सब जाइ, हर्षि चले प्रभु यानचढि॥ १॥

हर्षि भरत कोशलपुर आये ❀ समाचार सब गुरुहिं सुनाये ॥
पुनि मन्दिरमहँ बात जनाई ❀ आवत नगर कुशल रघुराई ॥

१ शरीर । २ अमृतमय । ३ रक्षक । ४ सुधा । ५ सेवक ।

सुनत सकल जननी उठिधाई ❋ कहि प्रभुकुशल भरतसमुझाई ॥
समाचार पुरवासिन पाये ❋ नर अरु नारि हर्षि उठिधाये ॥
दधि दूर्वा रोचन फल फूला ❋ नव तुलसीदल मंगल मूला ॥
भरि भरिथारहेमवर भामिनि ❋ गावत चलीं सिन्धुरागामिनि ॥
जो जैसे तैसे उठि धावहिं ❋ बाल वृद्ध कोउ संग न लावहिं ॥
एक एक सन पूछहिं धाई ❋ तुम देखे दयालु रघुराई ॥
अवधपुरी प्रभुआवत जानी ❋ भई सकल शोभाकी खानी ॥
भा सरयू अति निर्मल नीरा ❋ वहै सुहावनि त्रिविध समीरा ॥

दोहा—हर्षित गुरु पुरजन अनुज, भूसुर वृन्द समेत ॥
चले भरत अति प्रेममन, सन्मुख कृपानिकेत ॥ ८ ॥
बहुतक चढीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन विमान ॥
देखि मधुर स्वर हर्षित, करहिं सुमंगलगान ॥ ९ ॥
राकाशशि रघुपति पुरि, सिन्धु देखि हर्षान ॥
बढे कोलाहल करत जनु, नारि तरंग समान ॥ १० ॥

रविकुल कमलदिवाकर आवत ❋ नगर मनोहर कपिनदेखावत ॥
सुन कपीश अंगद लंकेशा ❋ पावनिपुरी रुचिर यह देशा ॥
यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना ❋ वेद पुराण विदित जगजाना ॥
अवध सरिस प्रिय मोहिन सोऊ ❋ यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥
जन्मभूमि ममपुरी सोहावनि ❋ उत्तरदिशि सरयू वह पावनि ॥
जोमज्जंहिं सो विनहिं प्रयासा ❋ मम समीप नर पावहिं वासा ॥
अतिप्रिय मोहिं इहांके बासी ❋ मम धामदापुरी सुखरासी ॥
हर्षे कपि सुनि प्रभुकी बानी ❋ धन्य अवध जेहि राम बखानी ॥

दोहा—आवत देखे लोग सब, कृपासिंधु भगवान ॥
नगर निकट प्रभु आयउ, उतरे भूमि विमान ॥ ११ ॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि, तुम कुबेर पहँ जाहु ॥

---

१ माता। २ कंचनकेथार। ३ गजगामिनी। ४ वायु। ५ पूर्णमासीकाचन्द्रमा।
६ पवित्र। ७ स्नानकरै। ८ परिश्रम। ९ हमारे।

प्रेरित राम चलेउ सो, हर्ष बिरह अति ताइ ॥ १२ ॥

आये भरत संग सब लोगा ❋ कृश तनु श्रीरघुबीर वियोगा ॥
वामदेव वशिष्ठ मुनिनायक ❋ देखे प्रभु महिधरि धनुशायक ॥
धाइ धरे गुरुचरण सरोरुह ❋ अनुजसहित अतिपुलकिततनूरुह ॥
भेंटे कुशल पूंछि मुनिराया ❋ हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया ॥
सकलद्विजन कहँ नायउ माथा ❋ धर्म धुरन्धर रघुकुल नाथा ॥
गहे भरत पुनि प्रभुपद पंकज ❋ नवहिंजिनहिंशंकरसुर मुनिअज ॥
परे भूमि नहिं उठत उठाये ❋ बल करि कृपासिंधु उरलाये ॥
श्यामलगात रोम भये ठाढे ❋ नव राजीव नयन जल बाढे ॥

हरिगीतिका छंद ॥

छं०राजीव लोचन श्रवतजल तनु ललित पुलकावलिबनी ॥
अति प्रेम हृदय लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी ॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मोपहँ जात नहिं उपमा कही ॥
जनु प्रेम अरु शृंगार तनु धरि मिलत बर सुखमा लही ॥ २ ॥
पूँछत कृपानिधि कुशल भरतहि बचन बेगि न आवई ॥
सुनि शिवा सो सुख बचन मनते भिन्न जान न पावई ॥
अब कुशल कोशल नाथ आरत जानि जन दरशन दियो ॥
बूडत बिरह बारिधि कृपानिधि काढि मोहिं कर गहि लियो ३

दोहा–"सधन चोर मम मुदित मन, धनी गही जिमि फेंट ॥
तिमि सुग्रीव बिभीषण, प्रभुहि भरतकी भेंट ॥ १३ ॥"
पुनि प्रभु हर्षित शत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ ॥
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि, प्रेम न हृदय समाइ ॥ १४ ॥

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे ❋ दुसह बिरह सम्भव दुख मेटे ॥
सीता चरण भरत शिरनावा ❋ अनुज समेत परम सुखपावा ॥
प्रभु विलोकि हरषे पुरबासी ❋ जनित वियोग विपति सब नासी ॥

१ तनके रोम खडे होगये हैं । २ ब्रह्मा । ३ कमल । ४ शोभा ।

प्रेमातुर सब लोग निहारी ❋ कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी ॥
अमितरूप प्रकटे तेहि काला ❋ यथायोग्य मिलिसबहिंकृपाला ॥
कृपा दृष्टि सब लोगबिलोका ❋ किये सकल नर नारि बिशोका ॥
क्षणमहँ सबहिमिले भगवाना ❋ उमा मर्म यह काहु न जाना ॥
यहिविधि सबहिं सुखी करिरामा ❋ आगे चले शीलगुणधामा ॥
कौशल्यादि मातु सब धाईं ❋ निरखि बच्छ जनु धेनु लवाईं ॥

हरिगीतिछंद ॥

जनुधेनुबालकबच्छतजिगृहचरनबनपरबशगईं ॥
दिन अन्त पुर रुख श्रवत थन हुंकार करि धावति भईं ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटे बचन मृदु बहु विधि कहे ॥
गइ विषम विपति वियोगभवतिन्हहर्षसुखअगणितलहे४॥
दोहा-भेंटेउ तनय सुमित्रा, रामचरण रति जानि ॥
रामहिं मिलत केकयी, हृदय बहुत सकुचानि ॥ १५ ॥
लक्ष्मण सब मातन्ह मिले, हर्षे आशिष पाइ ॥
केकयि कहँ पुनि पुनि मिलें, मन कर क्षोभ न जाइ १६॥

सासुन सबहिं मिली वैदेही ❋ चरणन लागि हर्ष अति तेही ॥
देहिं अशीष पूंछि कुशलाता ❋ होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥
सब रघुपतिपदकमल बिलोकी ❋ मंगल जानि नयन जल रोकी ॥
कनकथार आरती उतारहिं ❋ वार वार प्रभु गात निहारहिं ॥
नानाभांति निछावरि करहीं ❋ परमानन्द हर्ष उर भरहीं ॥
कौशल्या पुनि पुनि रघुवीरहिं ❋ चितवहिं कृपासिन्धु रणधीरहिं ॥
हृदय विचारति बारहिं बारा ❋ कवन भांति लंकापति मारा ॥
अति सुकुमार युगलै मम बारे ❋ निशिचर सुभट महाबलभारे ॥
दोहा-लक्ष्मण अरु सीता सहित, प्रभुहिं विलोकहिं मात ॥
परमानन्द मगनमन, पुनि पुनि पुलकित गात ॥ १७ ॥

---

१ भगवान् कहीं षट् भग संयुक्त, ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य, मोक्ष । २ सुहाग । ३ सोनेकेथार । ४ रामलक्ष्मण ।

लंकापति कपीश[1] नल नीला ❋ जाम्बवन्त अंगद शुभ शीला ॥
हनुमदादि सब बानर बीरा ❋ धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥
भरत सनेह शील व्रत नेमा ❋ सादर सब वर्णहिं अति प्रेमा ॥
देखि नगर बासिनकी रीती ❋ सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती ॥
पुनि रघुपति निजसखा बुलाये ❋ मुनिपद लागहु सबहिं सिखाये ॥
गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य हमारे ❋ इनकी कृपा दनुज रण मारे ॥
ये सब सखा सुनहु मुनि मेरे ❋ भये समर सागर कहँ बेरे[3] ॥
मम हित लागि जन्म इनहारे ❋ भरतहुये मोहिं अधिक पियारे ॥
सुनि प्रभुबचन मगन सब भये ❋ निमिषनिमिषं उपजत सुखनये ॥

दोहा–कौशल्याके चरण युग, पुनि तिन नायउ माथ ॥
आशिष दीन्ही हर्षि हिय, तुम प्रिय जिमि रघुनाथ ॥ १८ ॥
सुमनवृष्टि नभ संकुल, भवनचले सुखकन्द ॥
चढे अटारिन्ह देखहिं, नगरनारि नर वृन्द ॥ १९ ॥

कंचनकलश बिचित्र सँवारे ❋ सबनिधरे सजि निज निज द्वारे ॥
बन्दनवार पताका केतू ❋ सबन्हि बनाये मंगलहेतू ॥
बीथिन सकल सुगंधि सिंचाये ❋ गजमणि रचि बहु चौकपुराये ॥
नानाभांति सुमंगल साजे ❋ हर्षि निशाँन नगर बहुबाजे ॥
जहँ तहँ नारिनिछावरि करहीं ❋ देहिं अशीष हर्ष उर भरहीं ॥
कंचनथार आरती नाना ❋ युवती साजि करहिं कलगाना ॥
करहिं आरती आरत हरके ❋ रघुकुल कमल विपिन दिन करके ॥
पुर शोभा सम्पति कल्याना ❋ निगम शेष शारदा बखाना ॥
तेउ यह चरित देखिठग रहहीं ❋ उमा तासु गुण नर किमि कहहीं ॥

दोहा–नारि कुमुदिनी अवध सर, रघुपति विरह दिनेश ॥
अस्त भये विकसित भईं, निरखि राम राकेश ॥ २० ॥
होहिं शकुन शुभविविधविधि, बाजहिंगगननिशान ॥
पुर नर नारि सनाथ कारि, भवन चले भगवान ॥ २१ ॥

---

१ बिभीषण । २ सुग्रीव । ३ जहाज । ४ पलपल । ५ अतिसघन । ६ गलिनमें । ७ बाजा । ८ मधुरगान । ९ सूर्य्य । १० फूली । ११ चन्द्र ।

प्रभु जाना केकयी लजानी ❋ प्रथम तासु गृह गये भवानी ॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा ❋ पुनि निज भवनगवन प्रभुकीन्हा॥
कृपासिन्धु जब मन्दिर गयऊ ❋ पुर नरनारि सुखी सब भयऊ ॥
गुरुवशिष्ठ द्विज लिये बुलाई ❋ आजु सुघरी सुदिन सुखदाई ॥
सब द्विज देहु हर्षि अनुशासन ❋ रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन ॥
मुनि वशिष्ठके वचन सुहाये ❋ सुनत सकल विप्रनमन भाये ॥
कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका ❋ जग अभिराम राम अभिषेका ॥
अब मुनिवर विलम्ब नहिंकीजै ❋ महाराज कहँ तिलक करीजै ॥

दोहा—जहँ तहँ धावन पठै पुनि, मंगल द्रव्य मँगाइ ॥
हर्ष समेत वशिष्ठ पद, पुनि शिर नायउ आइ॥२२॥
तब मुनि कहेउ सुमन्त्र सन, तुरत चले शिरनाइ ॥
रथ अनेक गज बाजि बहु, सकल सँवारे जाइ॥२३॥

अवधपुरी अति रुचिर बनाई ❋ देवन सुमन वृष्टि झरिलाई ॥
राम कहा सेवकन्ह बुलाई ❋ प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
सुनत वचन जन जहँ तहँ धाये ❋ सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
पुनि करुणा निधि भरतहँकारे ❋ निज कर जटा राम निरवारे ॥
अन्हवाये पुनि तीनिहु भाई ❋ भक्त वछल कृपालु रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई ❋ शेष कोटिशत सकहिंन गाई ॥
पुनि निज जटा राम बिवराये ❋ मुनि अनुशासन पाइ अन्हाये ॥
करि मज्जन भूषण प्रभुसाजे ❋ अंग अनंग कोटि छबि लाजे ॥

दोहा—सासुन सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराइ ॥
दिव्य बसन बर भूषणनि, अँग अँग सजे बनाइ ॥ २४॥
राम बाम दिशि शोभित, रमा रूप गुणखानि ॥
देखि सासु सब हर्षित, जन्म सफलनिज जानि ॥ २५॥
सुन खगेश तेहि अवसर, ब्रह्मा शिव मुनि वृन्द ॥
चढि विमान आये सकल, सुर देखन सुखकन्द ॥ २६॥

---

१ आज्ञा । २ राज्यतिलक । ३ दूत । ४ आज्ञा । ५ स्नान । ६ श्रेष्ठ । ७ गहना ।

प्रभु विलोकि मुनिमन अनुरागा ❀ तुरत दिव्य सिंहासन मांगा ॥
रवि सम तेज वरणि नहिं जाई ❀ बैठे राम द्विजन शिरनाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई ❀ देखि प्रहर्षे¹ मुनि समुदाई ॥
वेदमंत्र द्विजवर उच्चारे ❀ नभसुर मुनि जय जयति पुकारे ॥
प्रथम तिलक वशिष्ठमुनि कीन्हा ❀ पुनि सब विप्रन आयसु दीन्हा ॥
सुत विलोकि हर्षित महतारी ❀ बार बार आरती उतारी ॥
विप्रन दान विविध विधिदीन्हे ❀ याचक सकल अयाचक कीन्हे ॥
सिंहासन पर त्रिभुवन साईं ❀ देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाईं ॥

छं०ह०—नभदुन्दुभी²बाजहिं विपुलगन्धर्वकिन्नरगावहीं ॥
नाचहिं अप्सरा वृन्द परमानन्द मुनि सुर पावहीं ॥
भरतादि अनुज बिभीषणांगद हनुमदादि समेतजे ॥
गहेछत्र चामर व्यजन धनु असिचर्म⁴ शक्ति विराजते ॥
सिय सहित दिनकर वंशभूषण कामबहु³छबि सोहहीं ॥
नवअम्बुधर वरगात अम्बर पीत मुनि मन मोहहीं ॥
मुकुटांगदादि विचित्र भूषण अंग अंगन प्रति सजे ॥
अंभोज⁵नयन विशालउर भुज धन्य नरनिरखंतजे॥६॥

दोहा—वह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेश ॥
वर्णै शारद शेष श्रुति, सो रस जान महेश ॥ २७॥

॥ अथ क्षेपक ॥

उठ्यो विभीषण तब सुखपाई ❀ रत्नमाल कर लई उठाई ॥
दीन्ह जलधि रावणको जोई ❀ पुनः विभीषण पाई सोई ॥
सोई रत्नमाल सुखकारी ❀ दीन्ह जानकीके गरडारी ॥
जासु ज्योति अस भई विशाला ❀ सन्मुख लख न सकत महिपाला ॥
राज समूह अधिक तहँ सोहा ❀ तेहि विलोकि सबकर मन मोहा ॥
तेहि क्षण जनकसुता महारानी ❀ चितै राम तनपुनि मुसकानी ॥

---

१ अतिउत्कर्ष हर्ष । २ नगारा । ३ बहुत । ४ ढाल । ५ विशाल अरुणकमल तद्वत् ने...

कह्यो कृपालु प्रिया सुन लीजे ❋ जो इच्छा जेहिको सो दीजे ॥
सुनत वचन तव जनकदुलारी ❋ सोई गलसे माल उतारी ॥
काहि देउँ यह हृदय विचारी ❋ मारुतसुतकी ओर निहारी ॥

दोहा-कृपा दृष्टि लखि पवनसुत, हर्षि दंडवत कीन्ह ॥
रत्नमाल सो जानकी, डारि गरेमहँ दीन्ह ॥

महावीर मनमाहिं विचारी ❋ है कोइ गुण मालामें भारी ॥
परमानन्द प्रेम रस पागे ❋ मणियें सकल विलोकन लागे ॥
विनु प्रकाश कछु और न तामें ❋ मन लागे भक्तनको जामें ॥
मणि भीतर कछु न्हैहै सारा ❋ मुक्ता एक तोरि तव डारा ॥
ताके मध्य विलोकन लागे ❋ देख लोग अचरजमें पागे ॥
पुनि दूजो तोरचो हनुमाना ❋ देख निसार तज्यो बलवाना ॥
इहि विधि तोरत क्रमक्रम मोती ❋ पोर अधिक दर्शक गण होती ॥
कहन लगे निज निज मन माहीं ❋ जो कोई अधिकारी नाहीं ॥
ताको ऐसी वस्तु नदीजे ❋ नहितो यही दशा लख लीजे ॥

दोहा-बोल उठ्यो कोउ नृपति यह, कहा करत हनुमान ॥
क्यों तोरतहो माल तुम, सुन्दर रत्न सुजान ॥

वचन सुनत कहै मारुति वानी ❋ देखहुँ राम नाम सुखदानी ॥
नाम न यामें परत लखाई ❋ ताते तोरत डारत भाई ॥
कह कोउ सकल वस्तुके माहीं ❋ राम नाम कहुँ सुनियत नाहीं ॥
कह मारुति न नाम जेहि माहीं ❋ सोतौ काहु कामकी नाहीं ॥
बोलो सोइ सुनो बलधामा ❋ तुम तनु माहिं रामको नामा ॥
सुनत वचन कह पवनकुमारा ❋ निश्चय तनु हरि नाम उदारा ॥
असकह कपि निजहृदय विदारा ❋ रोम रोम प्रभु नाम अपारा ॥
अंकित राम नाम सब ठाहीं ❋ लखि सब चकित भयेमनमाहीं ॥
पुष्पवृष्टि नभ जयति उचारी ❋ कृपादृष्टि रघुनाथ निहारी ॥

दोहा-अंग भयो पुनि कुलिश सम, उठ तुरंत भगवान ॥
वारि विलोचन पुलकतन, हिय लाये हनुमान ॥

भयो तहाँ अचरज यह भारी ❋ देवन जय जय जयति उचारी ॥

इति क्षेपक ॥

दोहा–भिन्न भिन्न अस्तुति करि, गेसुरनिजनिजधाम ॥
बन्दि बेषधरि वेदतब, आये जहँ श्रीराम ॥ २८ ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान ॥
लखानकाहूमर्म कछु, लगे करनगुणगान ॥ २९ ॥

प्रथम सामवेद बोल्यो ॥

छं०ह० गी० जयसगुणनिर्गुणरूपरामअनूपभूपशिरोमने
दशकन्धरादिप्रचण्ड निशिचर प्रबल खल भुज बल हने ॥
अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुण दुख दहे ॥
जय प्रणतपाल दयालु प्रभु संयुक्त शक्तिनमामहे ॥ ७ ॥ १

पुनि यजुर्वेदबोल्यो ॥

तव विषय माया बश सुरासुर नाग नर अग जग हरे ॥
भव पंथ भ्रमित श्रमितदिवस निशि काल कर्म गुणनि भरे
जेहिनाथ करि करुणाबिलोकहु त्रिविध दुख ते निर्बहे ॥
भव खेद छेद न दक्ष हम कहँ रक्ष राम नमामिहे ॥ ८ ॥ २

छंदार्थ–हेअनूपरूप भूपशिरोमणे आपकी जयहो क्योंकि तुम्हारे सगुण निर्गुण रूपमें यह प्रधान भूपरूपहै रावण आदि भयंकर राक्षसोंको अपनी भुजाओंके बलसे नाशकरनेवालेहो मनुष्यका अवतार धारणकर संसारके भारको उतार दारुणदुःखके जलादेनेवाले हो दीनोंके पालनेवाले दयायुक्त शक्ति सहित आपको प्रणाम करते हैं ॥ १ ॥

हेहरे! तुम्हारी तीक्ष्णमायाके अर्थात् अविद्याके वशमें होकर सुर,असुर, नाग, नर और जड चैतन्य हैं ते भवके मार्गमें रातदिन घूमतेहुए थकगयेहैं इसपरभी उनके ऊपर कालकर्म गुणोंके अनुकूल बोझधराहै हेनाथ! जिनपर आप करुणाकरके दृष्टि करतेहो वोह तीनों प्रकारके दुःख अर्थात् कालकर्मगुणोंसे छुटजाते हैं हेजगत्के दुःख काटनेमें चतुर रामजी हमारी रक्षा करो हम आपको नमस्कार करते

पुनि अथर्ववेदबोल्यो ॥

जेचरण शिव अज पूज्य रज शुभ परसि मुनिपत्नीतरी ॥
नख निर्गता सुरवन्दिता त्रैलोक्य पावनि सुरसरी ॥
ध्वज कुलिश अंकुशकंजयुत वन फिरत कंटक किनलहे ॥
पदकंज द्वंद्व मुकुन्दराम रमेश नित्य भजामिहे ॥ ९ ॥ ३
जेज्ञानमान विमत्त तव भव हरणि भक्ति न आदरी ॥
तेपाइ सुरदुर्लभ पदादपि परत हम देखतहरी ॥
विश्वासकरि सब आश परिहारि दास तव जे होरहे ॥
जपि नामतव विनु श्रमतरहिं भवनाथ रामनमामिहे १०।४

पुनि ऋग्वेदबोल्यो ॥

अव्यक्त मूल मनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ॥
षट्कन्ध शाखा पंच विंश अनेक पर्ण सुमनघने ॥

जिनचरणोंकी रजको शिव ब्रह्मा पूजन करते हैं और जिसको स्पर्शकर मुनिकी पत्नी तरगई और जिनके नखोंसे नमस्कार योग्य त्रैलोक्यपावनी गंगा निकली है और जिनचरणोंमें ध्वज कुशिल अंकुशका चिह्न है जिनमें कि वनोंके फिरनेसे कांटे आदिकोंसे चिह्नपडगये हैं वा कंटकिन कोल किरातोंने जो चरण पाये हैं हेलक्ष्मीपति राम आपके चिन्ह मोक्षदेनेवाले दोनों चरणकमलोंका हम भजन करते हैं ॥ ३ ॥

जिन्होंने ज्ञानके मानसे मतवाले होकर तुम्हारी भक्तिका आदर नहींकियाहै उन्हें हम देखतेहैं कि सुरदुर्लभपदको पाकर फिरभी पतित होते हैं और जो सब आशा छोड विश्वासकरके तुम्हारे दास होरहे हैं वे तुम्हारा नाम जपके विनाही श्रम भवसागर पार होजातेहैं ऐसे आपका हम भजनकरतेहैं ॥ ४ ॥

इस संसाररूपी वृक्षकी जडविद्या मायारूपी अदृश्य है और यह वृक्ष अनादि है इसमें चारखान अंडज पिंडज स्वेदज जरायुज ये चारवक्कल हैं यह वेद शास्त्र कहता है और इसमें छःस्कंध हैं सुख, दुःख, शीत, उष्ण, ज्ञान अज्ञान, इन छःस्कंधोंसे पचीस शाखा निकलती हैं पांच तत्त्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश,

फल युगल विधिकटुमधुरवेलि अकेलि जेहिआश्रितरहे॥
पल्लवित फूलत नवल निति संसार विटप नमामिहे ११।५
जेब्रह्म अज अद्वैत अनुभव गम्य मन पर ध्यावहीं॥
तेकहहु जानहु नाथ हम तव सगुण यश नितगावहीं॥
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह वर माँगहीं॥
मन कर्म्म वचनविकारतजितवचरणहमअनुरागहीं १२।६
दोहा—सबके देखत वेदन, विनती कीन्ह उदार॥
अन्तर्द्धान भये तब, गये ब्रह्म आगार॥ ३०॥
वैनतेय सुन शंभु तब, आये जहँ रघुवीर॥
बिनय करत गद्गद गिरा, पूरित पुलक शरीर॥
तो॰छं॰जयरामरमारमणंशमनं,भवतापभयाकुलपाहिजनं

पांच इनके विषय शब्द स्पर्श रूप रस गंध और दशइंद्रिय पांच ज्ञानेन्द्रिय नाक कान आंख जिह्वा त्वक पांच कर्मेन्द्रिय चरण लिंग गुदा हाथ वाक्य और अन्तःकरण मन बुद्धि अहंकार चित्त महत्तत्व और अनेक प्रकारकी वासना पत्तोंके समूह हैं जो लगते और झडते रहते हैं और अनेक प्रकारके संकल्प फूल हैं किसीमें फल लगता है कोई वैसेही गिरपडताहै वोह फल पापपुण्यरूप होनेसे दोप्रकारके हैं एक खट्टा एक मीठा उसपर अविद्या मायाकी बेल चढरही है उसमेंसों नितपल्लव निकलते हैं और वोह नित्य फूलती रहती है ऐसे संसारवृक्षरूपी आपको हम नमस्कार करते हैं॥ ५॥

जो जन आपको ब्रह्मरूप अज जन्म और मायारहित अद्वैत उत्पत्ति एकअनुभवसे जाननेयोग्य मनसे परे ध्यावते हैं सो वही कहैं वही जानें हम तौ तुम्हारा सगुणरूपनित्य अर्त्थात् ब्रह्मकहिके ध्यावते हैं और हेदेव करुणानिधान सद्गुणोंकी खान आपसे हम यही वर मांगते हैं कि मन वचन कर्मसे विकार तज तुम्हारे चरणोंमें प्रीति करते रहैं॥ ६॥

हे रमारमण राम भवताप अर्थात् जरामरणके दूर करनेवाले और डरसे व्या-

१ ब्रह्मलोक। २ गरुड।

अवधेश सुरेश रमेश विभो, शरणागत मांगत पाहिप्रभो ॥
दशशीश विनाशन वीसभुजा, कृतदूरिमहामहि भूरिरुजा
रजनीचरवृन्द पतंगरहे, शरपावकतेज प्रचण्ड दहे॥१३॥१
महिमण्डलमण्डन चारुतरं, धृतशायक चापनिषंगबरं ॥
मदमोह महा ममतारजनी, तमपुंजदिवाकर तेजअनी ॥
मन जात किरातनिपात किये, मृगलोग कुभोगशरेनहिये
हितनाथअनाथनिपाहिहरे, बिषयाबशपामरभूलिपरे १४ २
बहुरोग वियोगन्ह लोग हये, भवदंघ्रि निरादरके फलये ॥
भवसिन्धु अगाध परे नरते, पदपंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं, जिनमें पदपंकज प्रीतिनहीं
अवलंबभवंतकथाजिनको, प्रियसंतअनंतसदातिनको १५ ३

कुलजनोंकी रक्षा करनेवाले हो अवधेश हो और यही रूप आपका सुरेश रमेश है और व्यापक है हेप्रभो ! शरणागतकी रक्षा करो रावणके दशशिर वीसभुजा- ओंके तुम नाश करनेवाले हो और पृथ्वीके रोगरूपी अनेक राक्षसोंको आपने दूर किया और जो पतंग रूपी राक्षसोंके समूह थे वो आपकी तीक्ष्णबाणरूपी अग्नि- में जलगये ॥ १ ॥

पृथ्वीमंडलके आप श्रेष्ठ भूषण हैं धनुष बाण तरकस धारण कियेहुए मद मोह ममताकी बडी अँधेरी रात उसके नाश करनेमें आप तेजोंकी सेनाकेलिये सूर्य हैं कामरूप बहेलियेने उन लोग मृगोंको जो अनाथ थे कुभोगबाण हृदयमें मारकै निपात किया सो उस भयसे मैं शरणागत होताहूं आप मेरे नाथ हो और जो और जीव मारेगयेथे वे अधम विषयवनमें भूलेपडे थे ॥ २ ॥

और उनमेंसे जो बचे सो कोई रोग कोई मरेहुओंके वियोगमें नष्ट हूए सो आ- पके चरणोंके निरादरका यही फल है और जो उनमेंसेभी बचे थे सो इस अ- थाह भवसागरमें पडे डूबते हैं क्योंकि उन्होंने आपके चरणकमलमें प्रेम नहीं कि- या क्योंकि जिनको आपके चरणकमलोंमें प्रीति नहीं है वोह नित्यही दीन और मलीन दुःखी रहतेहैं और जिनको आपका अवलम्ब है वा आपकी भवछेदन क- रनेवाली कथाका जिनको अवलम्बहै वा जिनको अनन्त सन्त सदा प्यारेहैं ॥ ३ ॥

नहिंराग न रोष न मान मदा, तिनके सम वैभव बादि पदा ॥
यहिते तव सेवक होतमुदा, मुनि त्यागत योग भरोससदा॥
करिप्रेम निरंतर नेमलिये, पदपंकज सेवत शुद्धहिये ॥
सममाननिरादरआदरही, सबसन्तसुखीविचरन्तमही १६
मुनि मानस पंकज भृङ्ग भजे, रघुबीर महारण धीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी, भवरोगमहामद मान अरी॥
गुणशील कृपा परमायतनं, प्रणमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनन्दनिकन्दनद्वन्द्वघनं, महिपाल बिलोकयदीनजनं १७॥

दोहा-बार बार बर मांगौं, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोजअनपावनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ ३२ ॥
बरणि उमा पति रामगुण, हर्षि गये कैलास ॥
तब प्रभु कपिन दिवाये, सब बिधि सुखप्रद बास॥३३॥

सुनुखगपति यह कथा सुहावनि ❋ त्रिविधताप भवदोष नशावनि ॥
महाराज कर शुभ अभिषेका ❋ सुनत लहहिं नर विरति विवेका॥
जे सकाम नर सुनहिंजे गावहिं ❋ सुखसम्पति नाना विधि पावहिं॥

कैसे सन्त हैं कि जिनको राग रोष मान मद नहीं है विपत्ति सम्पत्ति समान है इसी-से तुम्हारे सेवक मुनि आनन्दसे रहते हैं और योगके भरोसेको छोडदेते हैं जो आ-पके प्रेमका नियमलिये शुद्धहृदयसे आपके चरणकमलको सेवते हैं और आदर अनादरको सम मानके पृथ्वीमें विचरते हैं ॥ ४ ॥ १६

ऐसे मुनियोंके मनकमलको आप भ्रमर होकै सेवते हो रघुवीर महारणधीर और अजित हो मुनियोंके मनमें वसते हो हेहरे आपके नामको हम जपते हैं और आपकोप्रणाम करतेहैं तुम्हारा नाम भवरोग महामद मानका शत्रु है गुण शील कृ-पा आर परम शोभाके घर हो ऐसे आप श्रीरमणको मैं अतिशय प्रणामकरतांहूं हेद्वंद्वघन अर्थात् रावण कुम्भकर्णके नाशक रघुनाथ महिपाल कृपाकर मुझ दीन जनको देखिये हेलक्ष्मीपति बार २ यही वर मांगताहूं कि आपके चरणकमलकी अनपावनीभक्ति मिलै ॥ ५ ॥ १७

सुर दुर्लभ सुख करि जगमाहीं ❀ अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं ॥
सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषई ❀ लहहिं भक्तिसुख सम्पति नितई ॥
खगपाति राम कथा में बरणी ❀ सुमति विलास त्रास दुख हरणी ॥
विरति विवेक भक्ति दृढ़करणी ❀ मोहनदी कहँ सुन्दर तरणी ॥
नित नव मंगल कोशलपुरी ❀ हर्षित रहहिं लोगसब कुरी ॥
नित नव प्रीति रामपद पंकज ❀ सेवत जेहि शंकर सुर मुनि अज ॥
मंगन बहु प्रकार पहिराये ❀ द्विजन दान नाना विधि पाये ॥

दोहा–परमानन्द मगन कपि, सबके प्रभु पद प्रीति ॥
जात नजानेउ दिवस निशि, गये मास षट बीति ॥३४॥

विसरे गृह स्वप्ने सुधि नाहीं ❀ जिमि परद्रोह सन्त मन माहीं ॥
तब रघुपति सब सखा बुलाये ❀ आइसबहिं सादर शिरनाये ॥
प्रेम समेत निकट बैठारे ❀ भक्तसुखद मृदु वचन उचारे ॥
तुम अति कीन्ह मोरि सेवकाई ❀ मुख पर केहि विधि करौं बड़ाई ॥
ताते मोहिं तुम अतिप्रिय लागे ❀ मम हितलागि भवन सुख त्यागे ॥
अनुज राज्य सम्पति वैदेही ❀ देह गेह परिवार सनेही ॥
सब मोहिं प्रियनहिं तुमहिंसमाना ❀ मृषा न कहौं मोर यह बाना ॥
सब कहँ प्रियसेवक यह नीती ❀ मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥

दोहा–अब गृह जाहु सखा सब, भजहु मोहिं दृढनेम ॥
सदा सर्वगत सर्व हित, जानि करेहु अति प्रेम ॥३५॥

सुनि प्रभुवचन मगन सब भये ❀ को हम कहाँ विसरि गृहगये ॥
यकटक रहे जोरि कर आगे ❀ कहि नसकत कछु अतिअनुरागे ॥
परम प्रीति तिनकर प्रभु देखी ❀ कहा विविध बिधि ज्ञान विशेषी ॥
प्रभु सन्मुख कछु कहै नपारहिं ❀ पुनि पुनि चरणसरोज निहारहिं ॥
तब प्रभु भूषण बसन मँगाये ❀ नाना रंग अनूप सुहाये ॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराये ❀ भरत वसन निज हाथ बनाये ॥
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये ❀ लंकापति रघुपति मन भाये ॥

१ ज्ञान विज्ञान । २ चारिउ वर्णके अनेक भेद । ३ छःमहीना । ४ व्यापक ।

अंगद बैठि रहे नहिं डोले ❋ प्रीति जानि प्रभु ताहि न बोले ॥

दोहा-जाम्बवन्त नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ ॥
हिय धारि राम स्वरूप सब, चले नाय पद माथ ॥३६॥
तब अंगद उठि नाइ शिर, सजल नयन करजोरि ॥
अति विनीत बोले वचन, मनहुँ प्रेम रस बोरि ॥ ३७ ॥

सुन सर्वज्ञ कृपा सुख सिन्धो ❋ दीन दयाकर आरत बन्धो ॥
मरती बार नाथ मोहिं वाली ❋ गयो तुम्हारे पगतर घाली ॥
अशरण शरण बिरद सम्भारी ❋ मोहिं जनि तजहु भक्त भयहारी॥
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता ❋ जाउँकहा तजि पदजल जाता ॥
तुमहिं विचारि कहहु नरनाहा ❋ प्रभु तजि भवनकाज ममकाहा॥
बालक अबुध ज्ञान बलहीना ❋ राखहु शरण जानि जन दीना ॥
नीच टहल गृहकी सब करिहौं ❋ पद बिलोकि भवसागर तरिहौं ॥
असकहि चरण परे प्रभु पाहीं ❋ अब जनि नाथ कहहु गृहजाहीं ॥

दोहा-अंगद वचन विनीत सुनि, रघुपति करुणासींव ॥
प्रभु उठाय उर लायऊ, सजलनयन राजीव ॥ ३८ ॥
निज उरमाला वसन मणि, वालितनय पहिराय ॥
बिदा किये भगवान तब, बहु प्रकार समुझाय ॥ ३९ ॥

भरत अनुज सौमित्र[1] समेता ❋ पठवन चले भक्तकृत[2]चेता ॥
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा ❋ फिरिफिरि चितवन प्रभुकी ओरा॥
बार बार करि दण्ड प्रणामा ❋ मन अस रहन कहहिं मोहिंरामा॥
राम बिलोकनि बोलनि चलनी ❋ सुमिरिसुमिरिशोचतहँसिमिलनी॥
प्रभुरुख देखि विनय बहु भाषी ❋ चले हृदय पदपंकज राखी ॥
अति आदर सब कपि पहुँचाये ❋ भाइन सहित रामफिरि आये ॥
तब सुग्रीव चरण गहि नाना ❋ भांति विनय कीन्ही हनुमाना ॥
दिन दश करि रघुपति पद सेवा ❋ तब फिरि चरण देखिहौं देवा ॥
पुण्यपुंज तुम पवनकुमारा ❋ सेवहु जाइ कृपालु अगारा ॥

१ लक्ष्मणजी । २ सबभक्तनके बाह्यांतरके चैतन्यकर्त्ता ।

असकहि कपिपति चलेतुरंता ❋ अंगद कहेउ सुनहु हनुमंता ॥

दोहा—करेहु दण्डवत प्रभु सन, तुमहिं कहौं करजोरि ॥
बार बार रघुनायकहि, सुरति करायहु मोरि ॥ ४० ॥
अस कहि चलेउ वालिसुत, फिरि आये हनुमंत ॥
तासु प्रीति प्रभुसन कही, मगन भये भगवंत ॥ ४१ ॥
कुलिशहुँ चाह कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ॥
चित खगेश रघुनाथ अस, समुझि परै कहुकाहि ॥ ४२ ॥

पुनि कृपालु लिये बोलि निषादा ❋ दीन्हेउ भूषण वसन प्रसादा ॥
जाहु भवन मम सुमिरण करहू ❋ मन क्रम वचन धर्म अनुसरहू ॥
तुम मम सखाभरत सम भ्राता ❋ सदा रहहु पुर आवत जाता ॥
वचन सुनत उपजा सुखभारी ❋ परेउ चरण लोचन भरिवारी ॥
चरण कमल उरधरि गृह आवा ❋ प्रभु प्रभाव परिजनहिं सुनावा ॥
रघुपति चरित देखि पुरवासी ❋ पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी ॥
राम राज्य बैठे त्रयलोका ❋ हर्षित भयउ गयउ सब शोका ॥
वैर न कर काहूसन कोई ❋ राम प्रताप विषमता खोई ॥

दोहा—वर्णाश्रम निज निजधरम, निरत वेदपथ लोग ॥
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय शोक नरोग ॥ ४३ ॥

दैहिक[1] दैविक[2] भौतिक[3] तापा ❋ रामराज्य नहिं काहुहिं व्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ❋ चलहिं सुधर्म निरत श्रुति नीती ॥
चारिउ चरण धर्म्म जगमाहीं ❋ पूरि रहा स्वप्नेहु अघ नाहीं ॥
राम भक्ति रत नर अरु नारी ❋ सकल परमगतिके अधिकारी ॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउँ पीरा ❋ सब सुंदर सब निरुज शरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी नदीना ❋ नहिं कोउ अबुध न लक्षणहीना ॥
सब निर्दम्भ धर्म्म रति धरणी ❋ नर अरु नारि चतुर शुभकरणी ॥

---

१ दैहिककही अध्यात्म देहसम्बन्धी तामें दो भेद हैं एक बाह्यज्वर, मिथ्याभाषणादि पुनि एक अन्तर काम, क्रोध, लोभ, मात्सर्यइत्यादि । २ अधिदैवत जो देवतोंकरके विघ्नहोय पाला, पत्थर, अतिवृष्टि अनावृष्टि वज्रपातादि । ३ अधिभूत जो जीवनकरकेपीडितहोयराजा चोर सर्प इत्यादि ।

सब गुणज्ञ सब पण्डित ज्ञानी ❋ सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी ॥

दोहा–राम राज्य बिहँगेश सुनु, सचराचर जगमाहिं ॥
कालकर्मस्वभाव गुण, कृतदुख काहुनि नाहिं ॥ ४४ ॥

भूमि सप्त सागर मेखला ❋ एक भूप रघुपति कोशला ॥
भुवन अनेक रोमप्रति जासू ❋ यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी ❋ यह वर्णत हीनता घनेरी ॥
यह महिमा खगेश जिन जानी ❋ फिरि यहचरित तिनहुँ रतिमानी॥
सोजाने कर फल यह लीला ❋ कहहिं महामुनि सुमति सुशीला॥
राम राज्य कर सुख सम्पदा ❋ वरणि न सकहिं फणीश शारदा॥
सब उदार सब पर उपकारी ❋ द्विजसेवक सबनर अरु नारी ॥
एकनारि व्रत रत नर झारी ❋ ते मन बच क्रमपाति हितकारी ॥

दोहा–दण्ड यतिनकर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज ॥
जीतहिं मनहिं सुनिय अस, रामचन्द्रके राज ॥ ४५ ॥

फूलहिं फलहिं सदा तरुकानन ❋ रहहिं एकसँग गज पंचानन ॥
खग मृग बैर सहज विसराई ❋ सबनि परस्पर प्रीति बढाई ॥
कूजहिं खग मृग नानावृन्दा ❋ अभय चरहिं वन करहिं अनन्दा॥
शीतल सुरभि पवन वहमन्दा ❋ गुंजत अलि लेचलु मकरन्दा ॥
लता विटप मांगे फल द्रवहीं ❋ मनभावते धेनु पय स्रवहीं ॥
शशिसम्पन्न सदा रह धरणी ❋ त्रेता भै सतयुगकी करणी ॥
प्रगटे गिरि नाना मणि खानी ❋ जगदात्मा भूप पहिंचानी ॥
सरिता सकल वहैं वर वारी ❋ शीतल अमल स्वाद सुखकारी॥
सागर निज मर्य्यादा रहहीं ❋ डारहिंरत्न तटनि नर लहहीं ॥
सरसिज संकुल सकल तडागा ❋ अतिप्रसन्न दशादिशा विभागा ॥

दोहा–बिधुमहि पूर पियुषन, रवितप तेज न काज ॥
माँगे बारिद देहिं जल, रामचन्द्रके राज ॥ ४६ ॥

कोटिन बाजपेय प्रभुकीन्हें ❋ अमित दान विप्रन कहँ दीन्हें ॥

१ वन । २ सिंह । ३ सुगंधित । ४ भ्रमर । ५ रस । ६ डालैं । ७ गाय ८ दूध । ९ धान्य । १० कमल । ११ चन्द्र । १२ किरणामृत । १३ मेघ ।

श्रुति पथपालक धर्मधुरन्धर ❋ गुणातीत अरु भोग पुरन्दर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता ❋ शोभा खानि सुशील विनीता ॥
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई ❋ सेवत चरण कमल मनलाई ॥
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी ❋ सब प्रकार सेवा विधि लीनी ॥
निजकर गृहपरिचर्य्या करहीं ❋ रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं ॥
जेहि विधि कृपासिन्धु सुखमानहीं ❋ सोइ सियसेवा विधि उर आनहीं ॥
कौशल्यादि सासु गृह माहीं ❋ सेवहिं सबै मान मद नाहीं ॥
उमारमा ब्रह्माणि वन्दिता ❋ जगदम्बा सन्ततमनिन्दिता ॥

दोहा—जाकी कृपा कटाक्षसुर, चाहत चितवनि सोइ ॥
रामपदारविन्दरत, रहति स्वभावहिं सोइ ॥ ४७ ॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई ❋ रामचरण रति प्रीति सुहाई ॥
प्रभुपदकमल बिलोकत रहहीं ❋ कबहुँ कृपालु हमहिं कछु कहहीं ॥
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती ❋ नानाभांति सिखावहिं नीती ॥
हर्षित रहहिं नगरके लोगा ❋ करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥
अहंनिशि विधिहि मनावत रहहीं ❋ श्रीरघुवीरचरण रति चहहीं ॥
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये ❋ लव कुश वेद पुराणन गाये ॥
दोउविजयी विनयी अतिसुन्दर ❋ हरि प्रतिबिंब मनहुं गुणमंदिर ॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे ❋ भये रूप गुण शील घनेरे ॥

दोहा—ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया गुण गोपार ॥
सोइ सच्चिदानन्द घन, कर नर चरित अपार ॥ ४८ ॥

प्रातकाल सरयू करि मज्जन ❋ बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन ॥
वेद पुराण वशिष्ठ बखानहिं ❋ सुनहिं राम यद्यपि सब जानहिं ॥
अनुजन संयुत भोजन करहीं ❋ देखि सकल जननी सुख भरहीं ॥
भरत शत्रुहन दोनो भाई ❋ सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
पूछहिं बैठि रामगुण गाहा ❋ कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥
सुनत बिमलगुण अति सुख पावहिं ❋ बहुरि बहुरिकै विनय सुनावहिं ॥

---

१ टहल । २ चरणकमल । ३ रातदिन ४ प्रीति । ५ इन्द्रिय ६ भाइन । ७ माता ८ निर्मल

सबके गृह गृह होय पुराना ❋ रामचरित सुन्दर विधिनाना ॥
नर अरु नारि राम गुणगावहिं ❋ करहिं दिवस निशि जातन जानहिं

दोहा–अवधपुरी वासिन्ह कर, सुख सम्पदा समाज ॥
सहसशेष[१] नहिंकहि सकहिं, जहँ नृप राम बिराज ॥ ४९ ॥

नारदादि सनकादि मुनीशा ❋ दरशन लागि कोशलाधीशा ॥
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं ❋ देखि नगर बिराग बिसरावहिं ॥
रत्नजटित मणि कनक अटारी ❋ नाना रंग रुचिर गच ढारी ॥
पुर चहुँपास कोट अति सुंदर ❋ रचे कँगूरा रंग रंग बर ॥
नव गृह सुन्दरनिकर बनाई ❋ मनहु घेरि अमरावति आई ॥
महि बहु रूपरुचिरगचकाँचा ❋ जो बिलोकि मुनिवर मनराँचा ॥
धवल धाम ऊपरनभचुम्बत ❋ कलशमनहुँशशिरविद्युतिनिन्दत ॥
बहुमणि रचित झरोखन भ्राजैं ❋ गृह गृह प्रति मणि दीपविराजैं ॥

छंद–मणि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम[२] रची ॥
सुंदर मनोहर मंदिरायत अँजिर[३] अति फटिकन खची ॥
मणिखंभ भीतिविरंचि विरचित कनक मणि मरकतरचे॥
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाय बहु वंज्रन खचे ॥ १८ ॥

दोहा–चारु चित्रशाला अमित, गृह गृह रचे बनाइ ॥
रामधाम जो निरखत, मुनि मनलेत चुराइ ॥ ५० ॥

सुमनवाटिका सबहिं लगाई ❋ विविध भांति करियतन बनाई ॥
लता ललित बहुभांति सुहाई ❋ फूलहिं सदा वसन्त किनाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर ❋ मारुत त्रिविध सदा वह सुंदर ॥
नाना खग बालकनजिआये ❋ बोलत मधुर उडात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत ❋ भवननपर शोभा अतिपावत ॥
जहँ जहँ देखहिं निज परिछाहीं ❋ बहुविधि कूजहिं नृत्यकराहीं ॥
शुक शारिका पढावहिं बालक ❋ कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
राजद्वार सबही विधिचारू ❋ बीथी चौभट रुचिर बजारू ॥

---

१ शेषनाग। २ मूंगा। ३ अंगनाई। ४ हीरा। ५ सुंदर। ६ भ्रमर। ७ वायु। ८ बोलहिं।

छंद-बाजार रुचिर न बनै वर्णत वस्तु बिनु गंथ पाइये ॥
जहँ भूप रमा निवास तहँकी सम्पदा किमि गाइये ॥
बैठे बजाज सराफ वणिक अनेक मनहुँ कुबेरते ॥
सब सुखी सब सुचरित्र सुन्दर नर युवा शिशु जरठ ते१९॥
दोहा-उत्तरदिशि सरयू बहै, निर्मल जल गम्भीर ॥
बांधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ ५१ ॥
दूर पराक रुचिर सोघाटा ❋ जहँ जल पियहिं बाजि गज ठाटा ॥
पनिघट परम मनोहरनाना ❋ तहांन पुरुष करहिं अस्नाना ॥
राजघाट सबही विधि सुंदर ❋ मज्जहिं तहाँ बरण चारिउ नर ॥
तीर तीर देवनके मन्दिर ❋ चहुँदिशि तिहिंके उपवन सुंदर ॥
कहुँ कहुँ सरिता तीर निवासी ❋ सबहिं ज्ञान रत मुनि संन्यासी ॥
जहँ तहँ तुलसी वृन्द सुहाये ❋ बहुप्रकार सब मुनिन लगाये ॥
पुर शोभा कछु बरणि नजाई ❋ बाहर नगर परम रुचिराई ॥
देखतपुरी अखिल अघभागा ❋ वन उपवन बापिका तडागा ॥
छंद-बापी तडाग अनूप कूप मनोहरायत सोहइ ॥
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहई ॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ॥
आराम रम्य पिकादि खगरव मनहुं पथिक हँकारहीं ॥
दोहा-रमानाथ जहँ राजा, सोपुर बरणि नजाइ ॥
अणिमादिक सुख सम्पदा, रहीं अवधपुर छाइ ॥ ५२ ॥
जहँ तहँ नर रघुपति गुण गावहिं ❋ बैठि परस्पर इहै सिखावहिं ॥
भजहु प्रणतप्रतिपालक रामहिं ❋ शोभा शील रूप गुणधामहिं ॥
जलंजविलोचन शामलगातहिं ❋ पलकनयन इव सेवक त्रांतहिं ॥
धृत शर रुचिर चाप तूंणोरहिं ❋ सन्त कंज वन रविरण धीरहिं ॥
काल कराल व्याल खगराजहिं ❋ नमत राम अकाम ममताजहिं ॥

१ सुन्दर । २ बेमूल्य । ३ कीच । ४ घोडे । ५ समूह । ६ मुसाफिर । ७ कमलनयन । ८ रक्षक । ९ धारणकियेहैं । १० तरकस । ११ गरुड ।

लोभ मोह मृगयूथ किरातहिं ❀ मनसिज[1] करि[2] हरि[3] जन सुखदातहिं ॥
संशय शोक निबिडतम[4] भानुहिं[5] ❀ . दनुजगहन बनदहन कृशानुहिं[6] ॥
जनकसुतासमेत रघुबीरहिं ❀ कसन भजहु भंजन भवभीरहिं ॥
बहुवासना मशकहिमराशिहिं ❀ सदा एकरस अज[8] अविनाशिहिं ॥
मुनिरंजन भंजन महि भारहिं ❀ तुलसिदासके प्रभुहि उदारहिं ॥

दोहा–इहि विधि नगर नारि नर, करहिं राम गुण गान ॥
सानुकूल सन्तत रहत, सब पर कृपानिधान ॥ ५३ ॥

जबते राम प्रताप खगेशा ❀ उदित भयउ अतिप्रबल दिनेशा ॥
पूरि प्रकाश रह्यो तिहुँ लोका ❀ बहुतन सुख बहुतन मन शोका ॥
जिनहिं शोक तेहि कहौं बखानी ❀ प्रथम अविद्या निशा सिरानी ॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने ❀ काम क्रोध कैरव[10] सकुचाने ॥
विविध कर्म गुण काल स्वभाऊ ❀ ये चकोर सुख लहहिं नकाऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा ❀ इनकहँ सुख नहिं कवनिहुँ ओरा ॥
धर्म तडाग ज्ञान विज्ञाना ❀ ये पंकज विकसे विधि नाना ॥
सुख सन्तोष विराग विवेका ❀ विगत शोकये कोक[11] अनेका ॥

दोहा–यह प्रताप रवि जासु उर, जब प्रभु करहिं प्रकाश ॥
पाछिल बाढहिं प्रथमजे, कहेते पावहिं नाश ॥ ५४ ॥

भ्रातन सहित राम इक बारा ❀ संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥
सुन्दर उपवन देखन गयऊ ❀ सब तरु कुसुमित पल्लव नयऊ ॥
जानि समय सनकादिक आये ❀ तेज पुंज गुण शील सुहाये ॥
ब्रह्मानन्द[12] सदा लय लीना ❀ देखत बालक बहु कालीना ॥
धरे देह जनु चारिउ वेदा ❀ समदरशी मुनि विगत विभेदा ॥
आसा बसन[13] व्यसन नहिं तिनहीं ❀ रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं ॥
तहाँ रहे सनकादि भवानी ❀ जहँ घटसम्भव[14] मुनिवर ज्ञानी ॥
रामकथा मुनि बहु विधि वरणी ❀ ज्ञान योग पावक जिमि अरणी[15] ॥

---

१ कामदेव । २ हाथी । ३ सिंह । ४ अतिसघनअन्धकार । ५ श्रीसूर्य्यनारायण । ६ अग्नि । ७ पालाकीराशि । ८ अजन्मा । ९ आनन्दकर्त्ता । १० कुमुदिनी । ११ चकचकई । १२ तदात्मक ब्रह्माकारवृत्ति एकरसअखंड । १३ दशोदिशा । १४ अगस्त्यमुनि । १५ लकडी ।

दोहा–देखि राम मुनि आवत, हर्षि दण्डवत कीन्ह ॥
स्वागत पूंछि पीत पट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥ ५५ ॥

कीन्ह दण्डवत तीनिउँ भाई ❋ सहित पवनसुत सुख अधिकाई ॥
मुनि रघुपति छबि अतुल विलोकी ❋ भये मग्न मन सकत नरोकी ॥
श्यामलगात सरोरुह लोचन ❋ सुंदरता मन्दिर भव मोचन ॥
इकटक रहे निमेष न लावहिं ❋ प्रभु कर जोरे शीश नवावहिं ॥
तिनकी दशा देखि रघुवीरा ❋ श्रवत नयन जल पुलक शरीरा ॥
करगहि प्रभु मुनिवर बैठारे ❋ परम मनोहर वचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा ❋ तुम्हरे दरश जाहिं अघ खीशा ॥
बडे भाग्य पाइय सतसंगा ❋ विनहिं प्रयास होहिं भव भंगा ॥

दोहा–सन्त संग अपवर्ग[1] कर, कामी भव कर पन्थ ॥
कहहिं सन्त कबि कोविद, श्रुति पुराण सद्ग्रन्थ ॥ ५६ ॥

सुनि प्रभुवचन हर्षि मुनिचारी ❋ पुलकगात अस्तुति अनुसारी ॥
जय भगवन्त अनन्त अनामय[2] ❋ अनघ[3] अनेक एक करुणामय ॥
जय निर्गुण जय जय गुणसागर ❋ सुख निधान तिहुँलोक उजागर ॥
जय इन्दिरा[4] रमण जयभूधर ❋ अनुपम अज अनादि शोभाकर ॥
ज्ञान निधान अमान मानप्रद ❋ पावन सुयश पुराण वेद बद ॥
तज्ञ[5] कृतज्ञ[6] अज्ञता भंजन ❋ नाम अनेक अनाम निरंजन[7] ॥
सर्व सर्वगत सर्व उरालय ❋ बसहु सदा हमकहँ प्रतिपालय ॥
द्वंद्व विपति भवफंद विभंजन[8] ❋ हृद बसु राम काम मद गंजन ॥

दोहा–परमानन्द कृपायतन[9], तुम परिपूरण काम ॥
प्रेमभक्ति अनपावनी, देहु हमहिं श्रीराम ॥ ५७ ॥

देहु भक्ति रघुपति अन पावनि ❋ त्रिविध ताप भव[10] दाप[11]नशावनि ॥
प्रणत[12] काम सुरधेनु कल्पतरु ❋ होइ प्रसन्न प्रभु दीजै यह वरु ॥
भववारिधि कुंभज[13] रघुनायक ❋ सेवक सुलभ सकल सुखदायक ॥

---

१ मोक्ष। २ षट्विकारते रहित। ३ पापरहित। ४ लक्ष्मी। ५ परमतत्त्वरूप, परमतत्त्ववेत्ता। ६ सबकी करणीके जाननहार। ७ मायातराहत। ८ नाशकर्त्ता। ९ कृपाकेस्थान। १० संसार। ११ दुःख। १२ शरण। १३ अगस्त्यमुनि।

मनसम्भव दारुण दुखदायर ❋ दीनबन्धु समता विस्तारय ॥
आश त्रास ईर्षादि निवारक ❋ विनय विवेक विरति विस्तारक ॥
भूप मौलि मणि मण्डन धरणी ❋ देहु भक्ति संसृति सरि तरणी ॥
मुनि मन मानस हंस निरंतर ❋ चरण कमल वन्दित अज शंकर ॥
रघुकुलकेतु सेतु श्रुतिरक्षक ❋ काल कर्म स्वभाव गुणभक्षक ॥
तारण तरण हरण सब दूषण ❋ तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषण ॥

दोहा—बार बार अस्तुति करि, प्रेम सहित शिरनाइ ॥
ब्रह्म भवन सनकादि गे, अति अभीष्ट वर पाइ ॥ ५८ ॥

सनकादिक विधिलोक सिधाये ❋ भ्रातन रामचरण शिरनाये ॥
पूंछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं ❋ चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ॥
सुना चहहिं प्रभुमुखकर बाणी ❋ जो सुनि होय सकल भ्रमहानी ॥
अन्तर्यामी प्रभु सब जाना ❋ पूँछत कहा कहहु हनुमाना ॥
जोरि पाणि तब कह हनुमंता ❋ सुनिये दीनबन्धु भगवन्ता ॥
नाथ भरत कछु पूंछन चहहीं ❋ प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं ॥
तुम जानहु कपि मोर स्वभाऊ ❋ भरतहि मोहिं न कछू दुराऊ ॥
सुनि प्रभुबचन भरतगहि चरणा ❋ सुनिय नाथ प्रणतारति हरणा ॥

दोहा—नाथ न मोहिं संदेह कछु, स्वप्नेहु शोक न मोह ॥
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु, चिदानन्द संदोह ॥ ५९ ॥

करौं कृपानिधि एक ढिठाई ❋ मैं सेवक तुम जन सुखदाई ॥
संतनकी महिमा रघुराई ❋ बहुविधि वेद पुराणन गाई ॥
श्रीमुख पुनि तुम कीन्ह बडाई ❋ तिन्हपर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई ॥
सुना चहौं प्रभु तिन्हकर लक्षण ❋ कृपासिन्धु गुणज्ञान विचर्क्षण ॥
सन्त असन्त भेद विलगाई ❋ प्रणतपाल मोहिं कहिय बुझाई ॥
सन्तनके लक्षण सुनु भ्राता ❋ अगणित श्रुति पुराण विख्याता ॥
सन्त असन्तन की अस करणी ❋ जिमि कुठार चन्दन आचरणी ॥

१ उत्पन्न । २ नाशकर्त्ता । ३ वासना । ४ जन्ममरण । ५ पताका । ६ अभिवांछित । ७ समूहसमुद्रहौ । ८ प्रवीण । ९ फरसा ।

काटे पर सुमलय सुनु भाई ❋ निज गुण देइ सुगन्ध बसाई ॥

दोहा–ताते सुर शीशन चढत, जगवल्लभ श्रीखण्ड ॥
अनल दाहि पीटत घनहिं, परशु बदन यह दण्ड ॥ ६० ॥

विषय अलंपट शील गुणाकर ❋ परदुख दुखसुख सुख देखेपर ॥
सम अभूत रिपु विमद विरागी ❋ लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी ॥
कोमल चित दीननपर दाया ❋ मन वच क्रम ममभक्त अमाया ॥
सबहि मानप्रद आपु अमानी ❋ भरत प्राणसम मम ते प्राणी ॥
बिगतकाम ममनाम परायँन ❋ शान्त विरक्त विदित मुदितायँन ॥
शीतलता सरलता मयत्री ❋ द्विजपद प्रेम धर्म जनु यँत्री ॥
यह सब लक्षण बसहिं जासु उर ❋ जानेहु तात संत संतत फुर ॥
शम दम नियम नीति नहिं डोलहिं ❋ परुष बचन कबहूँ नाहिं बोलहिं ॥

दोहा–निन्दा अस्तुति उभय सम, ममता मम पदकंज ॥
ते सज्जन मम प्राणप्रिय, गुणमन्दिर सुख पुंज ॥ ६१ ॥

सुनहु असन्तन केर स्वभाऊ ❋ भूलेहु संगति करिये नकाऊ ॥
तिनकर संग सदा दुखदाई ❋ जिमि कपिलहिं घाले हरहाई ॥
खलन हृदय अतिताप विशेषी ❋ जरहिं सदा परसम्पति देषी ॥
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई ❋ हर्षहिं मनहुँ परी निँधिपाई ॥
काम क्रोध मद लोभ परायन ❋ निर्दय कपटी कुटिल मलायँन ॥
वैर अकारण सब काहूसों ❋ जोकर हित अनहित ताहूसों ॥
झूठै लेना झूठै देना ❋ झूठै भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिं मधुरवचन जिमि मोरा ❋ खाहिं महा अहि हृदय कठोरा ॥

दोहा–परद्रोही परदाररत, परधनपरअपवाद ॥
तेनर पामर पापमय, देह धरे मँनुजाद ॥ ६२ ॥

लोभै ओढन लोभै डासन ❋ शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन ॥
काहूकी जो सुनहिं बडाई ❋ श्वास लेहिं जनु जूडी आई ॥

---

१ प्रिय । २ चन्दन । ३ रहित । ४ लीन । ५ आनंदकेस्थान । ६ मातापिता । ७ पराईद्रव्य । ८ पापोंकेस्थान । ९ नरपशु । १० राक्षस ।

जब काहूकी देखहिं विपती ❀ सुखी होहिं मानहुँ जगनृपती ॥
स्वारथरत परिवार विरोधी ❀ लम्पट काम लोभ अतिक्रोधी ॥
मात पिता गुरु विप्र न मानहिं ❀ आपु गये अरु घालहिं आनहिं ॥
करहिं मोहवश द्रोह परावा ❀ सतसंगति हरि भक्ति न भावा ॥
अवगुणसिंधु मन्दमति कामी ❀ वेद विदूषक परधनस्वामी ॥
विप्रद्रोह परद्रोह विशेषी ❀ दम्भ कपट जिय धरे सुवेषी ॥

दोहा—ऐसे अधम मनुज खल, कृतयुग त्रेता नाहिं ॥
द्वापर कछुक वृन्द बहु, होइहैं कलियुग माहिं ॥ ६३ ॥

परहित सरिस धर्म नहिं भाई ❀ पर पीडा सम नहिं अधमाई ॥
निर्णय सकल पुराण वेदकर ❀ कहेउ तात जानहिं कोविद नर ॥
नर शरीर धरि जो परपीरा ❀ करहिं ते सहहिं महा भवभीरा ॥
करहिं मोहवश नर अघ नाना ❀ स्वारथरत परलोक नशाना ॥
कालरूप मैं तिनकहँ ताता ❀ शुभ अरु अशुभ कर्मफलदाता ॥
अस विचार जो परम सयाने ❀ भजहिं मोहिं संसृतदुख जाने ॥
त्यागहिं कर्म शुभाशुभदायक ❀ भजैं मोहिं सुर नर मुनिनायक ॥
सन्त असन्तनके गुण भाषे ❀ ते न परहिं भव जिन लखिराषे ॥

दोहा—सुनहु तात मायाकृत, गुण अरु दोष अनेक ॥
गुण यह उभय न देखिये, देखिय सो अविवेक॥ ६४ ॥

श्रीमुखवचन सुनत सबभाई ❀ हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई ॥
करहिं विनयअति वारहिं बारा ❀ हनूमान हिय हर्ष अपारा ॥
पुनि रघुपति निजमन्दिर गये ❀ इहि विधि चरितकरत नितनये ॥
बार बार नारद मुनि आवहिं ❀ चरित पुनीत रामकर गावहिं ॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं ❀ ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
सुनि विरंचि अतिशयसुख मानहिं ❀ पुनिपुनि तात करहु गुणगानहिं॥
सनकादिक नारदहिं सराहहिं ❀ यद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं ॥

---

१ लीन । २ ईर्षा । ३ कुकर्म । ४ अल्पबुद्धि । ५ परस्त्रीरत । ६ निंदक । ७ अत्यंतकर । ८ ठगनार्थ अनेक भेष धरना । ९ अन्तर और प्रकट और । १० समूह । ११ गैरको तन मन धनसेसहारादेना । १२ निचोड । १३ पंडित । १४ घोरसागर । १५ ब्रह्मा ।

सुनि गुणगान समाधि बिसारी ❋ सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥
दोहा–जीवन मुक्त ब्रह्म पर, चरित सुनहिं तजि ध्यान ॥
जेहरि कथा न करहिं रति, तिनके हृदय पषान ॥६५॥

एक बार रघुनाथ बुलाये ❋ गुरु द्विज पुरवासी सब आये ॥
बैठे गुरु द्विज बर मुनि सज्जन ❋ बोले वचन भक्त भय भंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी ❋ कहौं न कछु ममता उर आनी ॥
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई ❋ सुनौ करहु जो तुमहिं सुहाई ॥
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई ❋ मम अनुशासन मानै जोई ॥
जो अनीति कछु भाषौं भाई ❋ तो मोहिं बरजेहु भय बिसराई ॥
बडे भाग्य मानुष तनु पावा ❋ सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा ॥
साधन धाम मोक्षकर द्वारा ❋ पाइन जे परलोक सवाँरा ॥
दोहा–सो परन्तु दुख पावई, शिर धुनि धुनि पछिताइ ॥
कालहि कर्म्महिं ईश्वरहिं, मिथ्या दोष लगाइ ॥ ६६ ॥

यहि तनुकर फलविषय न भाई ❋ स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥
नर तनु पाइ विषय मन देही ❋ पलटि सुधाते शठ विष लेही ॥
ताहि कबहुँ भल कहै नकोई ❋ गुंजा गहै परसमणि खोई ॥
आकर चारि लाख चौरासी ❋ योनि भ्रमत यह जिव अविनासी ॥
फिरत सदा मायाके प्रेरे ❋ काल कर्म स्वभाव गुण घेरे ॥
कबहुंक करि करुणानरदेही ❋ देत ईश बिनु हेतु सनेही ॥
नर तनु भव बारिधि कहँ बेरे ❋ संमुख मरुत अनुग्रह मेरे ॥
कर्णधार सद्गुरु दृढ नावा ❋ दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥
दोहा–जो न तरै भवसागरहिं, नर समाज अस पाइ ॥
सोकृतनिन्दक मन्दमति, आतमहन गति जाइ ॥६७॥

जो परलोक इहाँ सुख चहहू ❋ सुनि मम वचन हृदय दृढ गहहू ॥
सुलभ सुखद यह मारग भाई ❋ भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई ॥

---

१ प्रीति । २ पत्थर । ३ अपनपौ । ४ आज्ञा । ५ शरीर । ६ रत्ती । ७ चारिखानि-जरायुज उद्भिज, अंडज, ऊष्मज । ८ संसारसागर । ९ जहाज । १० पवन । ११ कृतानिन्दक कही जो काहुते नीकि करणीकरै और वह न माने ।

ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका ❋ साधन कठिन न मन महँ टेका ॥
करत कष्ट बहु पावत कोई ❋ भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोई ॥
भक्तिस्वतंत्र सकल सुखखानी ❋ बिन सतसंग न पावहिं प्रानी ॥
पुण्यपुंज बिन मिलहिं न संता ❋ सत संगति संसृति कर अंता ॥
पुण्य एक जगमहँ नहिं दूजा ❋ मन क्रम वचन विप्र पद पूजा ॥
सानुकूल तिहिपर सब देवा ❋ जो तजि कपट करै द्विज सेवा ॥

दोहा–औरौ एक गुप्त मत, सबहिं कहौं कर जोरि ॥
शंकर भजन बिनानर, भक्ति न पावै मोरि ॥ ६८ ॥

कहहु भक्तिपथ कवन प्रयासा ❋ योग न मख जप तप उपवासा ॥
सरलस्वभाव न मन कुटिलाई ❋ यथालाभ सन्तोष सदाई ॥
मोर दास कहाइनर आसा ❋ करै तो कहहु कहाँ विश्वासा ॥
बहुत कहौं का कथा बढाई ❋ इहि आचरण वश्य मैं भाई ॥
बैर न विग्रह आश न त्रासा ❋ सुखमय ताहि सदा सब आसा ॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी ❋ अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी ॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा ❋ तृण सम विषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
भक्ति पक्षता नहिं शठताई ❋ दुष्ट कर्म सब दूरि बिहाई ॥

दोहा–ममगुण ग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह ॥
ताकर सुख सोइ जानै, परमानंद सन्दोह ॥ ६९ ॥

सुनत सुधासम वचन रामके ❋ सबन्हि गहे पद कृपाधामके ॥
जननि जनक गुरुबन्धु हमारे ❋ कृपानिधान प्राणते प्यारे ॥
तन धन धाम राम हितकारी ❋ सब विधि तुम प्रणतारति हारी ॥
अस सिख तुम बिनुदेइन कोऊ ❋ मातु पिता स्वारथ रतओऊ ॥
हेतु रहित सब विधि उपकारी ❋ तुम तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथ मीत सकल जगमाहीं ❋ स्वप्नेहुं कोउ परमारथ नाहीं ॥
सबके वचन प्रेमरस साने ❋ सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने ॥
निज निज गृह गए आयसु पाई ❋ वर्णत प्रभुकी गिरा सुहाई ॥

---

१ विघ्न । २ दम्भ, पाखण्ड, कपट, छल छिद्र, ईर्षा इनतेरहित । ३ पापरहित ।

दोहा-उमा अवध बासी नर, नारि कृतारथ रूप ॥
ब्रह्मसच्चिदानन्द घन, रघुनायक जहँ भूप ॥ ७० ॥

एक बार वशिष्ठमुनि आये ❋ जहाँ राम सुखधाम सुहाये ॥
अति आदर रघुनायक कीन्हा ❋ पद पखारि चरणोदक लीन्हा ॥
राम सुनहु मुनिकह करजोरी ❋ कृपासिन्धु बिनती इक मोरी ॥
देखि देखि आचरण तुम्हारा ❋ होत मोह मम हृदय अपारा ॥
महिमा अमित वेद नहिं जाना ❋ मैं केहि भांति कहौं भगवाना ॥
उपरोहितीकर्म अतिमन्दा ❋ वेद पुराण स्मृतिकर निन्दा ॥
जब न लेउँ तबहीं बिधि मोहीं ❋ कहा लाभ आगे सुत तोहीं ॥
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा ❋ होइहैं रघुकुल भूषण भूपा ॥

दोहा-तब मैं हृदय बिचार किय, योग यज्ञ जप दान ॥
जेहि नित करिय सो पाइये, धर्म न इह सम आन ॥ ७१ ॥

जप तप नियम योग व्रतधर्मा ❋ श्रुति सम्भव नानाविधि कर्मा ॥
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन ❋ जहँलगि धर्म कहैं श्रुति सज्जन ॥
आगम निगम पुराण अनेका ❋ पढे सुने कर फल प्रभु एका ॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर ❋ सब साधन कर फल यह सुंदर ॥
छूटै मल कि मलहिके धोये ❋ घृतकि पाव कोउ बारि विलोये ॥
प्रेमभक्ति जल बिनु रघुराई ❋ अभ्यन्तर मल कबहुँ न जाई ॥
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पंडित ❋ सोइ गुणज्ञ विज्ञान अखंडित ॥
दक्ष सकल लक्षण युत सोई ❋ जाके पद सरोज रति होई ॥

दोहा-नाथ एक बर मांगौं, मोहिं कृपा करि देहु ॥
जन्म जन्म प्रभु पद कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु ॥ ७२ ॥

असकहि मुनिवशिष्ठ गृह आये ❋ कृपासिन्धुके मन अति भाये ॥
हनूमान भरतादिक भ्राता ❋ संगलिये सेवक सुखदाता ॥
पुनि कृपालु पुर बाहर गयऊ ❋ गज रथ तुरंग मँगावत भयऊ ॥

---

१ भगवानकही षट्भगयुक्त-ऐश्वर्य, धर्म, यश श्री वैराग्य मोक्ष । २ ज्ञानमें दो भेद एक शास्त्रजन्य दूसरा आत्मज्ञान । ३ शुद्धमनइंद्रियनको जीतना । ४ तत्त्ववेत्ता ।

देखि कृपा करि सकल सराहे ❋ दिये उचित जिन्हजिन्ह जो चाहे॥
हरण सकल श्रम प्रभु श्रमपाई ❋ गये जहाँ शीतल अमराई ॥
भरत दीन्ह निज वसन डसाई ❋ बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुत सुत मारुत तब करई ❋ पुलकि गात लोचन जल भरई ॥
हनूमान सम को बड भागी ❋ नहिं कोउ राम चरण अनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई ❋ बार बार प्रभु निज मुख गाई ॥

दोहा-तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल बीन ॥
गावन लागे राम गुण, कीरति सदा नवीन ॥७३॥

मामवलोकय पंकज लोचन ❋ कृपा विलोकनि शोच विमोचन॥
नीलतामरस श्याम काम अरि ❋ हृदय कंज मकरंद मधुपहरि ॥
यातुधान वरूथ बल गंजन ❋ मुनि सज्जन रंजन अघ भंजन ॥
भूसुर नवशशि वृन्दबलाहक ❋ अशरण शरण दीनजन गाहक ॥
भुजबल विपुल भार महि खंडित ❋ खर दूषण विराध वध पण्डित ॥
रावणारि सुख रूप भूपवर ❋ जय दशरथ कुल कुमुद सुधाकर॥
सुयश पुराण विदित निगमागम ❋ गावत सुर मुनि सन्त समागम ॥
कारुणीक बाली मद खंडन ❋ सब विधि कुशल कोशला मंडन॥
कलिमल मथन नाम ममताहन ❋ तुलसिदास प्रभु पाहि प्रणतजन॥

दोहा-प्रेम सहित मुनि नारद, बर्णि राम गुणग्राम ॥
शोभा सिन्धु हृदय धरि, गये जहाँ बिधि धाम ॥ ७४॥

गिरिजा सुनहु विशद यह कथा ❋ मैं सब कही मोरि मति यथा ॥
राम चरित शत कोटि अपारा ❋ श्रुति शारदा न वरणै पारा ॥
राम अनन्त अनन्त गुणानी ❋ जन्म कर्म अगणित नामानी ॥
जलशीकर महिरज गणि जाहीं ❋ रघुपति चरित न वरणि सिराहीं॥
वमलकथा यह हरिपद दायिनि ❋ भक्तिहोइ सुनि अति अनपायिनि॥
उमा कहेउँ सोइ कथा सुहाई ❋ जो भुशुण्ड खगपतिहि सुनाई ॥
कछुक राम गुण कहेउँ बखानी ❋ अबका कहौं सो कहहु भवानी ॥

---

१ वायु । २ मेरीओरदेखो । ३ नीलकमल । ४ दानव । ५ ब्राह्मण । ६ मेघ ।
७ अतिपावनी उज्ज्वलि ।

सुनिशुभ कथा उमा हरषानी ❋ बोलीं अति विनीत मृदुबानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी ❋ सुनेउँ राम गुण भव भयहारी ॥

दोहा–तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृत कृत्यें नमोह ॥
जानेउँ राम प्रभाव प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥ ७५ ॥
नाथ तवानन शशि श्रवत, कथा सुधा रघुबीर ॥
श्रवणपुटन मन पानकरि, नहिं अघात मतिधीर ॥ ७६ ॥

राम चरित जे सुनत अघाहीं ❋ रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं ॥
जीवनमुक्त महा मुनि जेऊ ❋ हरि गुण सुनत अघात न तेऊ ॥
भवसागर चह पार जो पावा ❋ राम कथा ताकहँ दृढ नावा ॥
विषयिन कहँ पुनि हरि गुणग्रामा ❋ श्रवणसुखद अरु मनविश्रामा ॥
श्रवणवंत अस को जगमाहीं ❋ जाहि न रघुपति कथा सुहाहीं ॥
ते जड जीव निजात्म घाती ❋ जिनहिं न रघुपति कथा सुहाती ॥
रामचरित मानस तुम गावा ❋ सुनि मैं नाथ परम सुख पावा ॥
तुम जो कही यह कथा सुहाई ❋ काकभुशुण्डि गरुड प्रति गाई ॥

दोहा–बिरति ज्ञान बिज्ञान दृढ, रामचरण अति नेह ॥
बायस तनु रघुपति भगति, मोहिं परम संदेह ॥ ७७ ॥

नर सहस्रमहँ सुनहु पुरारी ❋ कोउ इक होई धर्म व्रतधारी ॥
धर्म शील कोटिन महँ कोई ❋ विषय विमुख विरागरत होई ॥
कोटि विरक्त मध्यश्रुति कहई ❋ सम्यक्ज्ञान सुकृत कोउलहई ॥
ज्ञानवन्त कोटिन महँ कोई ❋ जीवन्मुक्त सुकृत काइ होई ॥
तिनसहस्रन महँ सब सुखखानी ❋ दुर्लभ ब्रह्म निरत विज्ञानी ॥
धर्म शील विरक्त अरु ज्ञानी ❋ जीवन्मुक्त ब्रह्म पर प्रानी ॥
सबते सो दुर्लभ सुरराया ❋ रामभक्ति रत गत मद माया ॥
सो हरिभक्ति काक किमि पाई ❋ विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई ॥

दोहा–रामपरायण ज्ञानरत, गुणागारमतिधीर ॥
नाथ कहहु केहि कारण, पायउ काक शरीर ॥ ७८ ॥

---

१ पार्व्वती । २ कृतार्थ । ३ मुख । ४ चन्द्रमा । ५ अमृत । ६ कान । ७ लीला ।
८ अपने आत्माको नाश करनेवाले । ९ वैराग्य ।

यह प्रभुचरित पवित्र सुहावा ❋ कहहु कृपालु काक किमि पावा ॥
तुम केहिभांति सुना मदनारी ❋ कहहु मोहिं यह कौतुक भारी ॥
गरुड महा ज्ञानी गुणराशी ❋ हरिसेवक अतिनिकट निवासी ॥
सो केहि हेतु काक सन जाई ❋ सुनी कथा मुनि निकर विहाई ॥
कहहु कवन विधि भा सम्बादा ❋ दोउ हरि भक्त काक उरगादा ॥
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई ❋ बोले शिव सादर सुख पाई ॥
धन्य सती पावनि मतितोरी ❋ रघुपति चरण प्रीति नहिं थोरी ॥
सुनहु परम पुनीत इतिहासा ❋ जो सुनि होइ सकल भ्रम नाशा ॥
उपजहि रामचरण विश्वासा ❋ भवनिधि तरनर विनहिं प्रयासा ॥

दोहा–ऐसे प्रश्न बिहंगपति, कीन्ह काकसन जाइ ॥
सो सब सादर कहतहौं, सुनहु उमा चितलाइ ॥ ७९ ॥

मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि ❋ सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि ॥
प्रथम दक्षगृह जब अवतारा ❋ सती बाम तब रहा तुम्हारा ॥
दक्ष यज्ञ तब भा अपमाना ❋ तुम अति क्रोध तजे तहँ प्राना ॥
मम अनुचरन कीन्ह मख भंगा ❋ जानहु तुम सो सकल प्रसंगा ॥
तब अतिशोच भयउ मन मोरे ❋ दुखित भयउँ वियोग प्रिय तोरे ॥
सुन्दर गिरि बन सरित तडागा ❋ कौतुक देखत फिरौं विभागा ॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी ❋ नील शैल इक सुन्दर भूरी ॥
तासु कनकमय शिखर सुहाये ❋ चारि चारु मोरे मन भाये ॥
तेहिपर इक इक विटप विशाला ❋ वट पीपर पाकरी रसाला ॥
शैलोपरि सुंदर सरसोहा ❋ मणि सोपान देखि मन मोहा ॥

दोहा–शीतल अमल मधुर जल, जलज विपुल बहुरंग ॥
कूजत कल रव हंस गुण, गुंजत नाना भृंग ॥ ८० ॥

तेहि गिरिरुचिर बसै खग सोई ❋ तासु नाश कल्पांत नहोई ॥
माया कृत गुण दोष अनेका ❋ मोह मनोज आदि अविवेका ॥

---

१ शम्भु । २ सन्देह । ३ गरुड । ४ वाणी । ५ काकभुशुण्डि । ६ गणन । ७ इतिहास । ८ विक्षेप । ९ नदी । १० स्वर्णके । ११ पवित्र । १२ वृक्ष । १३ आंब । १४ पर्व्वतके ऊपर । १५ तलाव । १६ सीढी । १७ कमल । १८ अनेक ।

रहेउ व्यापि समस्त जग माहीं ❋ तेहिगिरि निकट कबहुं नहिंजाहीं॥
तहँबसि हरिहि भजे जिमि कागा ❋ सो सुन उमा सहित अनुरागा॥
पीपर तरुतर ध्यान सो धरई ❋ जाप योग पाकर तर करई॥
आंब छाहँ करि मानस पूजा ❋ तजि हरि भजन काज नहिंदूजा॥
बटतर कह हरिकथा प्रसंगा ❋ आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा॥
रामचरित विचित्र विधि नाना ❋ प्रेम सहित करु सादर गाना॥
सुनहिं सकलमति विमल मराला ❋ वसहिं निरंतर जो जेहि काला॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा ❋ उर उपजा आनन्द विशेषा॥

दोहा—तब कछु काल मराल तनु, धरि तहँ कीन्ह निवास॥
सादर सुनि रघुपति चरित, पुनि आयउँ कैलास॥८१॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा ❋ मैं जेहिसमय गयउँ खगपासा॥
अबसो कथा सुनहु जेहि हेतू ❋ गयउ काक पहँ खगकुलकेतू॥
जब रघुनाथ कीन्ह रण क्रीडा ❋ समुझत चरित होत मोहिं व्रीडा॥
इंद्रजीत कर आपु बँधावा ❋ तब नारद मुनि गरुड पठावा॥
बंधन काटि गयउ उरगादा ❋ उपजा हृदय प्रचण्ड विषादा॥
प्रभुबन्धन समुझत बहु भांती ❋ करत बिचार उरग आराती॥
व्यापक ब्रह्म बिरज बागीशा ❋ माया मोह पार परमीशा॥
सो अवतार सुनेउ जगमाहीं ❋ देखा सो प्रभाव कछु नाहीं॥

दोहा—भवबन्धनसे छूटहीं, नर जपि जाकर नाम॥
खर्ब निशाचर बांधेऊ, नागफांस सोइ राम॥८२॥

नानाभांति मनहिं समुझावा ❋ प्रकट न ज्ञान हृदय भ्रमछावा॥
खेद खिन्न मन तर्क बढाई ❋ भयउ मोहवश तुम्हरी नाई॥
व्याकुल गयउ देवऋषि माहीं ❋ कहेसि जो संशय निजमन माहीं॥
सुनि नारदहि लागि अतिदाया ❋ सुनु खग प्रबल रामकीमाया॥
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई ❋ बरिआई बिमोह बश करई॥

---

१ पक्षी २ हंस। ३ लज्जा ४ मायातेपरे ५ सर्व ईशानके ईश ६ अल्प।
७ दुःख। ८ नारद।

जेहि बहु बार नचावा मोहीं ❀ सो व्यापी विहंगपति तोहीं ॥
महामोह उपजा मन तोरे ❀ मिटहि न वेगि कहे खग मोरे ॥
चतुरानन पहँ जाहु खगेशा ❀ सोइ करहु जो होहि निदेशा ॥

दोहा—असकहिं चले देवऋषि, करत राम गुणगान ॥
हरिमाया बल वर्णत, पुनि पुनि परम सुजान ॥ ८३ ॥

तब खगपति विरंचिपहँ गयऊ ❀ निज सन्देह सुनावत भयऊ ॥
सुनि विरंचि रामहिं शिरनावा ❀ समुझि प्रताप प्रेम उर छावा ॥
मनमहँ करहिं विचार विधाता ❀ मायाबश कवि कोविद ज्ञाता ॥
हरि मायाकर अमित प्रभावा ❀ विपुल बार जो मोहिं नचावा ॥
अग² जगमय³ जग मम उपजाया ❀ नहिं आश्चर्य मोह खगराया ॥
पुनि बोले विधि गिरा सुहाई ❀ जानु महेश राम प्रभुताई ॥
वैनतेय⁵ शंकर पहँ जाहू ❀ तात अनत पूंछहु जनि काहू ॥
तहां होइ तव संशय हानी ❀ चला विहँगपति सुनि विधिवानी ॥

दोहा—परमातुर सुविहंगपति, तब आयउ मम पास ॥
जात रहेउँ कुबेर गृह, उमा रहिहु कैलास ॥ ८४ ॥

तेइँ मम पद सादर शिरनावा ❀ पुनि आपुन संदेह सुनावा ॥
सुनि ताकर पुनीत मृदु बानी ❀ प्रेमसहित मैं कहेउँ भवानी ॥
मिलेउ गरुड मारग महँ मोहीं ❀ कवनि भांति समुझावों तोहीं ॥
जब कछुकाल करिय सतसंगा ❀ तब यह होइ मोह भ्रम भंगा ॥
सुनिय तहाँ हरिकथा सुहाई ❀ नानाभांति मुनिन्ह जो गाई ॥
जेहिमहँ आदि मध्य अवसाना ❀ प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
नित हरि कथा होत जहँ भाई ❀ पठवौं तोहिं सुनहु तहँ जाई ॥
जाइहि सुनत सकल सन्देहा ❀ होइहि रामचरण दृढ नेहा ॥

दोहा—विनु सतसंग न हरिकथा, तेहि बिनु मोह नभाग ॥
मोहगये बिनु राम पद, होइ न दृढ अनुराग ॥ ८५ ॥

मिलहिं न रघुपति विनु अनुरागा ❀ किये योग जप ज्ञान विरागा ॥

---

१ ब्रह्मा । २ स्थावर । ३ जंगम । ४ संसार । ५ गरुड । ६ नाश । ७ अन्त । ८ प्र...

उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला ❋ तहँ रह काक भुशुण्ड सुशीला॥
राम भक्ति पथ परम प्रवीना ❋ ज्ञानी गुण गृह बहु कालीना ॥
राम कथा सोइ कहै निरंतर ❋ सादर सुनहिं विविध विहंगवर ॥
जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूरी ❋ होइहि मोह जनित दुख दूरी ॥
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई ❋ चले हर्षि मम पद शिरनाई ॥
ताते उमा न मैं समुझावा ❋ रघुपति कृपा मर्म सब पावा॥
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना ❋ सो खोवा चह कृपानिधाना ॥
कछु तेहिते पुनिमैं नहिंराखा ❋ खग जानै खगहीकी भाखा ॥
प्रभु माया बलवंत भवानी ❋ जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी॥

दोहा–ज्ञानीभक्तशिरोमणि, त्रिभुवनपति कर यान ॥
ताहि मोह माया प्रबल, पामरँ करहिं गुमान ॥ ८६ ॥
शिव विरंचि कहँ मोहई, कोहै बपुरा आन ॥
अस जिय जानि भजहिं मुनि, मायापति भगवान ॥ ८७॥

गयउ गरुड जहँ बसैं भुशुण्डी ❋ मति अकुण्ठ हरिभक्ति अखण्डी॥
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ ❋ माया मोह शोक भ्रम गयऊ ॥
करितडाग मज्जन जल पाना ❋ बटतर गयउ हृदय हर्षाना ॥
वृद्ध वृद्ध विहंग तहँ आये ❋ सुनहिं रामके चरित सुहाये ॥
कथा अरम्भ करै सो चाहा ❋ ताही समय गयउ खगनाहा ॥

---

* एक समय कागभुशुंडि दशरथके आंगनमें बाललीला देखरहेथे कि देखते देखते मोह हुआ तब रामजीके हाथसे पूरी छीनकै भागे रामजीने मोहसे इनकी ढिठाई देख गरुडका स्मरण किया सो गरुड और भुशुंडि दोनोंमें अत्यन्त युद्ध भया निदान कागभुशुंडजी भागे और त्रिलोकीमें फिरे परन्तु गरुडने पीछा नहीं छोडा जब फिर रामजीकी शरणमें आये तब रामजीने गरुडको निवारण कर कागभुशुंडिको ज्ञानउपदेश किया वही अभिमान गरुडको रहा सो कृपानिधानने श्रोता बनायकै सो अभिमान दूर किया ॥

---

१ जोमैंअन्तरनपरै । २ पक्षी । ३ समूह । ४ उत्पन्न । ५ पखेरू । ६ वाहन ।
७ अधमनर । ८ दुःखितजीवी । ९ अबाध्य ।

आवत देखि सकल खगराजा ❀ हर्षेउ बायस सकल समाजा ॥
अति आदर खगपति करकीन्हा ❀ स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा ❀ मधुरवचन बोलेउ तब कागा ॥

दोहा—नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दर्शन खगराज ॥
आयसु होइ सो करौं अब, प्रभु आयहु केहि काज ८८
सदा कृतारथ रूप तुम, कह मृदु बचन खगेश ॥
जाकी अस्तुति सादरहि, निज मुख कीन्ह महेश ॥८९॥

सुनहु तात जेहिकारण आयउँ ❀ सो सब भयउ दर्श तव पायउँ ॥
देखि परम पावन तव आश्रम ❀ गयउ मोह संशय नाना भ्रम ॥
अब श्रीरामकथा अतिपावनि ❀ सदा सुखद दुख पुंज नशावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोहीं ❀ बारबार विनवौं प्रभु तोहीं ॥
सुनत गरुडकी गिरा विनीता ❀ सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भयउ तासु मन परम उछाहा ❀ कहै लाग रघुपति गुणगाहा ॥
प्रथमहिं अतिअनुराग भवानी ❀ रामचरित सब कहेसि बखानी ॥
पुनि नारद कर मोह अपारा ❀ कहेसि बहुरि रावण अवतारा ॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई ❀ पुनि शिशुचरित कहेसि मनलाई ॥

दोहा—बालचरित, कहि विविधविधि, मन महँ परम उछाह
ऋषि आगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर बिवाह ॥९०॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा ❀ पुनि नृप वचन राज रसभंगा ॥
पुरवासिन कर विरह विषादा ❀ कहेसि राम लक्ष्मण संवादा ॥
विपिनँ गवन केवट अनुरागा ❀ सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥
वाल्मीकि प्रभुमिलन बखाना ❀ चित्रकूट जिमिबस भगवाना ॥
सचिवागमन नगर नृपमरणा ❀ भरतागमन प्रेम अति बरणा ॥
करि नृपक्रिया संग पुरवासी ❀ भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी ॥
पुनि रघुपति बहुविधि समुझाये ❀ ले पादुका अवध फिरि आये ॥

---

१ अतिप्रीतिसे आगमन । २ आज्ञा । ३ दीनतायुक्त । ४ आनंद । ५ राजतिलककीवार्ता । ६ दशरथ । ७ वन । ८ सुमंत । ९ खडाऊं ।

भरत रहनि सुरपतिसुत करणी ❋ प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरणी॥

दोहा–कहि विराध वध जाहिविधि, देह तजी शरभंग ॥
बर्णि सुतीक्षण प्रेम पुनि, प्रभु अगस्त्य सतसंग॥ ९१ ॥

कहि दण्डकवन पावन ताई ❋ गृध्र मइत्री पुनि तेइँ गाई ॥
पुनि प्रभु पंचवटी कृतवासा ❋ भंजेउ सकल मुनिनकरत्रासा ॥
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा ❋ शूर्पणखा जिमिकीन्ह कुरूपा ॥
खर दूषणवध बहुरि बखाना ❋ जिमि सब मर्म दशानन जाना ॥
दशकन्धर मारीच बतकही ❋ जेहि विधि भई सकल तेइँ कही ॥
पुनि माया सीताकर हरणा ❋ श्रीरघुबीर बिरह कछु बरणा ॥
पुनि प्रभु गृध्रक्रिया जिमि कीन्हा ❋ बधि कबंध शबरिहिं गतिदीन्हा ॥
बहुरि विरह बर्णत रघुबीरा ❋ जेहि विधि गयउ सरोवर तीरा ॥

दोहा–प्रभु नारद सम्बाद कहि, मारुत मिलन प्रसंग ॥
पुनि सुग्रीव मिताई, वालि प्राणकर भंग॥ ९२ ॥
कपिहि तिलक करि रामकृत, शैल प्रवर्षण वास ॥
बर्णत वर्षा शरदऋतु, राम रोष कपित्रास ॥ ९३ ॥

जेहिविधि कपिपति कीश पठाये ❋ सीताखोज सकलदिशि धाये ॥
बिवर प्रवेश कीन्ह जेहि भांति ❋ कपिन बहोरि मिला संपाती ॥
सुनि सब कथा समीरँ कुमारा ❋ लांघत भयउ पयोधि अपारा ॥
लंका कपि प्रवेश जिमिकीन्हा ❋ पुनि सीतहि धीरज जिमिदीन्हा॥
बन उजारि रावणहिं प्रबोधी ❋ पुर दहि लाँघेउ बहुरि पयोधी ॥
आये कपि सब जहँ रघुराई ❋ वैदेहीकी कुशल सुनाई ॥
सेन समेत यथा रघुबीरा ❋ उतरे जाइ वारिनिधि तीरा ॥
मिला बिभीषण जेहिविधि आई ❋ सागर निग्रह कथा सुनाई ॥

दोहा–सेतु बांधि कपि सेन जिमि, उतरे सागर पार ॥
गयो बशीठी बीर बर, ज्यहि विधि वालिकुमार ॥ ९४ ॥

---

१ जयन्त । २ रावण । ३ हनूमान । ४ सुग्रीव । ५ बंदर । ६ गिरिकंदरा ।
७ हनूमान । ८ समुद्र । ९ दूत ।

निशिचर कीश लड़ाई, बर्णिसि विविध प्रकार ॥
कुम्भकर्ण घननादकर, बल पौरुष संहार ॥ ९५ ॥

निशिचर निकर मरण विधिनाना ❋ रघुपति रावणसमर बखाना ॥
रावण वध मन्दोदरि शोका ❋ राज्य बिभीषण देव अशोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी ❋ सुरन कीन्ह अस्तुति करजोरी ॥
पुनि पुष्पकचढि सीय समेता ❋ अवध चले प्रभु कृपानिकेता ॥
जेहि विधि राम नगर नियराये ❋ वायस विशद चरित सबगाये ॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका ❋ पुर बर्णन नृपनीति अनेका ॥
कथा समस्त भुशुंड बखानी ❋ जो मैं तुमसन कहा भवानी ॥
सुनि सब राम कथा गुणगाहा ❋ कहत वचन मन परम उछाहा ॥

सो०–गयउ मोर सन्देह, सुनेउँ सकल रघुपति चरित ॥
भयउ रामपद नेह, तवप्रसाद वायस तिलक ॥ २ ॥
मोहिं भयउ अति मोह, प्रभु बंधन रण महँ निरखि ॥
चिदानन्दसन्दोह, राम बिकल कारण कवन ॥ ३ ॥

देखि चरित अति नर अनुहारी ❋ भयउ हृदय मम संशय भारी ॥
सो भ्रम अब मैं हित करिमाना ❋ कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥
जो अति आतप[१] व्याकुल होई ❋ तरुछाया[२] सुख जानै सोई ॥
जो नहिं होत मोहअति मोहीं ❋ मिलितेउँ तातकवनिविधि तोहीं ॥
सुनितेउँ किमि हरिकथा सुहाई ❋ अति विचित्र सबविधि तुम गाई ॥
निगमागम पुराण मत एहा ❋ कहहिं सिद्ध मुनि नाहिं सन्देहा ॥
सन्त विशुद्ध[३] मिलहिं पुनि तेही ❋ चितवहिं राम कृपाकरि जेही ॥
रामकृपा तव दरशन भयऊ ❋ तवप्रसाद मम संशय गयऊ ॥

दोहा–सुनि विहंगपति वाणी, सहित विनय अनुराग ॥
पुलक गात लोचन सजल, मन हर्षे अति काग ॥ ९६ ॥

---

१ घाम । २ वृक्षकीछाया । ३ विशुद्धकही बिशेषशुद्ध योग, ज्ञान, वैराग्य, इत्यादिक, संयुक्त, श्रीरामानन्य ।

श्रोता सुमति सुशील[१]शुचि[२], कथा रसिक[३] हरिदास ॥
पाइ उमा यह गोप्यमत, सज्जन करहिं प्रकास ॥ ९७ ॥

बोलेउ कागभुशुण्ड बहोरी ❋ नभगनाथ पर प्रीति नथोरी ॥
सब बिधि नाथ पूज्य तुम मेरे ❋ कृपापात्र रघुनायक केरे ॥
तुमहिं न संशय मोह न माया ❋ मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया ॥
पठै मोहमिसु खगपति तोहीं ❋ रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं ॥
तुम निज मोह कहा खगसाईं ❋ सो नहिंकछु आश्चर्य गुसाईं ॥
नारद शिव विरंचि सनकादी ❋ जे मुनि नायक आतमवादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही ❋ को जग काम नचाव नजेही ॥
तृष्णा केहिन कीन्ह बौराहा ❋ केहिके हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥

दोहा–ज्ञानी तापस शूर कवि, कोविद गुण आगार ॥
केहिके लोभ बिडंबना, कीन्ह न यह संसार ॥ ९८ ॥
श्रीमद[४] वक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि ॥
मृगनयनीके नयनशर, को अस लागु न जाहि ॥ ९९ ॥

गुणकृत सन्निपात नहिं केही ❋ को न मान मद व्यापेउ जेही ॥
यौवनज्वर केहिनहिं बलकावा ❋ ममता केहिकर यश न नशावा ॥
मत्सर काहि कलंक न लावा ❋ काहि न शोक समीर डोलावा ॥
चिंता साँपिनि काहि न खाया ❋ को जग जाहि न व्यापी माया ॥
कीट मनोरथ दारु शरीरा ❋ जेहि न लागु घुनको अस धीरा ॥
सुत वित लोक ईषणा[५]तीनी ❋ केहिकी मति इन्हकृत न मलीनी ॥
यह सब मायाकृत परिवारा ❋ प्रबल अमितको वरणै पारा ॥
शिव चतुरानन देखि डराहीं ❋ अपरजीव केहि लेखे माहीं ॥

दोहा–व्यापि रह्यो संसार महँ, माया कटक प्रचण्ड ॥
सेनापति कामादि भट, दम्भ कपट पाषण्ड ॥ १०० ॥

---

१ सहनशील। २ पवित्र। ३ श्रीरामचन्द्रके चरित रसका पानकरे अपर साधनके रसके अनइच्छितहाइ। ४ श्रीकहीलक्ष्मी, धन, जाति, कुल, युवा, विद्या ज्ञान, ध्यान। ५ इच्छा।

सोदासी रघुवीरकी, समुझै मिथ्या सोपि ॥
छुटै न राम कृपा विनु, नाथ कहौं प्रण रोपि ॥ १०१ ॥

सोमाया सब जगहि नचावा ❋ जासु चरित लखि काहु न पावा ॥
सोइ प्रभु भ्रूविलास खगराजा ❋ नाच नटीइव सहित समाजा ॥
सोइ सच्चिदानन्द घनश्यामा ❋ अज विज्ञान रूप गुणधामा ॥
व्यापक ब्रह्म अखंड अनन्ता ❋ अखिल अमोघ एकभगवन्ता ॥
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता ❋ समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा ❋ नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
प्रकृतिपार प्रभु सब उर वासी ❋ ब्रह्म निरीह विरज अविनाशी ॥
इहां मोहकर कारण नाहीं ❋ रविसम्मुख तम कबहुँ न जाहीं ॥

दोहा—भक्त हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप ॥
किये चरित पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥ १०२ ॥
यथा अनेकन वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ ॥
जोइ जोइ भाव दिखावै, आपु न होइ न सोइ ॥ १०३ ॥

अस रघुपति लीला उरगारी ❋ दनुज विमोहन जनसुखकारी ॥
जो मतिमलिन विषयवश कामी ❋ प्रभुपर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
नयनदोष जाकहँ जब होई ❋ पीतवर्ण शशि कहँ कह सोई ॥
जब जेहि दिग्भ्रम होइ खगेशा ❋ सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा ॥
नौकारूढ चलत जग देखा ❋ अचल मोहवश आपुहि लेखा ॥
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी ❋ कहहिं परस्पर मिथ्यावादी ॥
हरि विषइक अस मोह विहंगा ❋ स्वप्नेहुँ नहिं अज्ञान प्रसंगा ॥
मायावश मतिमंद अभागी ❋ हृदय जमनिकाँ बहुविधि लागी ॥
ते शठ हठवश संशय करहीं ❋ निज अज्ञान राम पर धरहीं ॥

दोहा—काम क्रोध मद लोभ रत, गृहासक्त सुखरूप ॥
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ परे तमकूप ॥ १०४ ॥

---

१ सफल । २ मूलप्रकृति, अव्याकृत, अध्यात्मशक्ति, महामाया । ३ निरिच्छ । ४ मायाविकारसे रहित । ५ अन्धकार । ६ सूर्य्य । ७ मोहरूपीकाई । ८ आसक्त ।

निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुण न जाने कोय ॥
सुगम अगम नाना चरित, सुनिमुनिमन भ्रमहोय ॥ १०५ ॥

सुनु खगपति रघुपति प्रभुताई ❋ कहौं यथामति कथा सुहाई ॥
जेहिविधि मोह भयउ प्रभु मोहीं ❋ सो सबचरित सुनावों तोहीं ॥
रामकृपा भाजन तुम ताता ❋ हरिगुण प्रीति मोहिं सुखदाता ॥
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावों ❋ परमरहस्य मनोहर गावों ॥
सुनहु रामकर सहज स्वभाऊ ❋ जन अभिमान न राखैं काऊ ॥
संसृति मूल शूलप्रद नाना ❋ सकल शोकदायक अभिमाना ॥
ताते करहिं कृपानिधि दूरी ❋ सेवक पर ममता अतिभूरी ॥
जिमि शिशुतनु [१]व्रणहोइ गुसाईं ❋ [२]मातु चिराव कठिनकी नाईं ॥

दोहा-यदपि प्रथम दुख पावै, रोवै बाल अधीर ॥
व्याधि नाश हित जननी, गनै न सो शिशुपीर ॥ १०६ ॥
तिमि रघुपति निज दास कर, हरहिं मान हित लागि ॥
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं, कस न भजहु भ्रम त्यागि ॥ १०७ ॥

रामकृपा आपनि जडताई ❋ कहौं खगेश सुनहु मनलाई ॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीं ❋ भक्तहेतु लीला बहु करहीं ॥
तब तब अवधपूरी मैं जाऊं ❋ शिशु लीला विलोकि हर्षाऊं ॥
जन्म महोत्सव देखौं जाई ❋ वर्ष पांचतहँ रहौं लुभाई ॥
इष्टदेव मम बालक रामा ❋ शोभा [३]वपुष कोटि शतकामा ॥
निज प्रभु वदन निहारि निहारी ❋ लोचन सफल करौं उरगारी ॥
लघु वायस वपु धरि हरि संगा ❋ देखौं बाल चरित बहुरंगा ॥

दोहा-लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उडाउँ ॥
जूठन परै [४]अजिर महँ, सो उठाय पुनि खाउँ ॥ १०८ ॥
एक बार अतिशय प्रबल, चरित कीन्ह रघुबीर ॥
सुमिरत प्रभुलीला सोई, पुलकित भयउ शरीर ॥ १०९ ॥

---

१ बडतोर-फोडा । २ माता । ३ देह । ४ आंगन ।

कहै भुशुण्ड सुनहु खगनायक ❁ रामचरित सेवक सुखदायक ॥
नृपमन्दिर सुन्दर सब भांती ❁ खचित कनक मणि नानाजाती ॥
वरणि न जाय रुचिर अँगनाई ❁ जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥
बाल विनोद करत रघुराई ❁ विचरत अजिर जननि सुखदाई ॥
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा ❁ अंग अंग प्रति छबि बहुकामा ॥
नवराजीव अरुण मृदु चरणा ❁ पदपंकज नख शशिद्युति हरणा ॥
ललितअंग कुलिशादिक चारी ❁ नूपुर चारु मधुर रव कारी ॥
चारु पुरट मणि रचित बनाई ❁ कटिकिंकिणि कलमुखर सुहाई ॥

दोहा–रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गंभीर ॥
उरआयत भ्राजत विविध, बालबिभूषण चीर ॥ ११० ॥

अरुणपाणि नखकरंज मनोहर ❁ बाहु विशाल विभूषण सोहर ॥
कन्धबाल केहरिदर[11]ग्रीवां ❁ चारु चिबुक आनन[12]छवि सींवां ॥
कल[13]बल वचन अधर अरुणारे ❁ दुइ दुइ दशन विशद वरवारे ॥
ललित कपोल मनोहर[14] नासा ❁ सकलसुखदशशिकरसम हासा ॥
नीलकंज लोचन भवमोचन ❁ भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥
विकट[15] भ्रुकुटि[16]सम श्रवण[17] सुहाये ❁ कुंचित[18] कच[19] मेचक[20] छवि छाये ॥
पीत झीन झंगुलि तनु सोही ❁ किलकनि चितवनि भावत मोही ॥
रूपराशि नृप अजिर विहारी ❁ नाचहिं निज प्रतिबिंब[21] निहारी ॥
मोसन करहिं विविध विधि क्रीडा ❁ वर्णत चरित होत मन ब्रीडा[22] ॥
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं ❁ चलौं भाजि तब पूप देखावहिं ॥

दोहा–आवत निकट हँसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं ॥
जाउँ समीप गहन पद, फिरि फिरि चितै पराहिं ॥ १११ ॥
प्राकृत शिशु इव लीला, देखि भयउ मोहिं मोह ॥
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥ ११२ ॥

---

१ क्रीडा । २ घरमांझ । ३ माताकेसुखदाता । ४ श्याममणि । ५ कोमल । ६ सुंदर । ७ सुवर्ण । ८ पेटमें । ९ चौडी । १० अंगुरियां । ११ शंख । १२ मुख । १३ तोतर । १४ रुचिर । १५ टेढी । १६ भौंह । १७ कान । १८ घुंघुवारे । १९ बाल । २० श्यामसचिक्कन । २१ छाया । २२ लज्जा ।

इतना मन आनत खगराया ❀ रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया नदुखद मोहिं काहीं ❀ आनजीव इव संसृति नाहीं ॥
नाथ इहां कछु कारण आना ❀ सुनहु सो सावधान हरियाना ॥
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर ❀ मायावश्य जीव सचराचर ॥
जो सबके रह ज्ञान एक रस ❀ ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥
मायावश्य जीव अभिमानी ❀ ईशवश्य माया गुणखानी ॥
परवश जीव स्ववश भगवन्ता ❀ जीव अनेक एक श्रीकन्ता ॥
मृषा भेद यद्यपि कृतमाया ❀ विनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥

दोहा–रामचन्द्रके भजन विनु, जो चह पद निर्वाण ॥
ज्ञानवन्त अपि सोपि नर, पशु विनुपूछ विषाण ॥ ११३ ॥
राकापति षोडश उगहिं, तारागण समुदाय ॥
सकल गिरिन दव लाइये, रविविनु राति नजाय ॥ ११४ ॥

ऐसे विनु हरिभजन खगेशा ❀ मिटै न जीवन केर कलेशा ॥
हरिसेवकहिं न व्याप अविद्या ❀ प्रभु प्रेरित तेहि व्यापै विद्या ॥
ताते नाश न होइ दासकर ❀ भेद भक्ति बाढे विहंगवर ॥
भ्रमते चकित राम मोहिं देखा ❀ विहँसे सो सुन चरित विशेषा ॥
तेहि कौतुक कर मर्म नकाहू ❀ जाना अनुज न मातु पिताहू ॥
जानु पाणि धाये मोहिंधरणा ❀ श्यामलगात अरुणं मृदुचरणा ॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी ❀ रामगहन कहँ भुजा पसारी ॥
जिमि जिमि दूरि उडाउँ अकाशा ❀ तिमि तिमि भुज देखौंनिजपासा ॥

दोहा–ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं, चितवत पाछ उडात ॥
युग अंगुल कर बीचरह, राम भुजहि मोहिंतात ॥ ११५ ॥
सप्तावर्ण भेद करि, जहँ लगि रहि गति मोरि ॥
गयों तहाँ प्रभु भुज निरखि, व्याकुल भयों बहोरि ॥ ११६ ॥

मूँदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ ❀ पुनि चितवत कोशलपुर गयऊँ ॥

---

१ जन्ममरण । २ पूर्णमासीका चन्द्रमा सोलह । ३ सूर्य । ४ माया । ५ लाल । ६ कोमल । ७ गरुड ।

मोहिं बिलोकि राम मुसकाहीं ❋ बिहँसत तुरत गयउँ मुखमाहीं ॥
उदर मांझ सुन अंडजराया ❋ देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥
अति विचित्र तहँ लोक अनेका ❋ रचना अमित एकते एका ॥
कोटिन चतुरानन गौरीशा ❋ अगणित उडुगण रवि रजनीशा ॥
अगणित लोकपाल यम काला ❋ अगणित भूधर भूमि विशाला ॥
सागर सरि सरं विपिनं अपारा ❋ नाना भांति सृष्टि विस्तारा ॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर ❋ चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दोहा—जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनहूँ न समाय ॥
सब अद्भुत तहँ देखेउँ, वर्णि कवन विधि जाय ॥ ११७ ॥
एक एक ब्रह्माण्ड महँ, रहेउँ वर्ष शत एक ॥
यहि विधि मैं देखत फिरेउँ, अण्डकटाह अनेक ॥ ११८ ॥

लोक लोक प्रतिभिन्न विधाता ❋ भिन्नविष्णु शिव मनु दिशित्राता ॥
नर गन्धर्व भूत बैताला ❋ किन्नर निशिचर पशुखग व्याला ॥
देव दनुज गण नाना जाती ❋ सकल जीव तहँ आनहिं भांती ॥
महिसरि सागर सर गिरि नाना ❋ सब प्रपंच तहँ आनहिं आना ॥
अंडकोश प्रति प्रति निदरूपा ❋ देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रतिभुवन निहारी ❋ सरयू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दशरथ कौशल्यादिक माता ❋ विविध रूप भरतादिक भ्राता ॥
प्रतिब्रह्माण्ड राम अवतारा ❋ देखेउँ बाल विनोद अपारा ॥

दोहा—भिन्न भिन्न सब देखेउँ, अति विचित्र हरियान ॥
अगणित भुवन फिरेउँ मैं, राम न देखा आन ॥ ११९ ॥
सोइ शिशुपन सोइ शोभा, सोइ कृपालु रघुवीर ॥
भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरित मोह समीर ॥ १२० ॥

भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका ❋ बीते मनहुँ कल्पशत एका ॥
फिरत फिरत निजआश्रम आयउँ ❋ तहँ पुनि रहि कछुकाल गवायउँ ॥

१ पर्वत । २ नदी । ३ तालाव । ४ वन । ५ संसारकीबातें रचना । ६ ब्रह्माण्ड । ७ लडकपन

निज प्रभुजन्म अवधसुनि पायउँ ❋ निर्भर प्रेम हर्षि उठि धायउँ ॥
देखेउँ जन्ममहोत्सव जाई ❋ जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई ॥
राम उदर देखेउँ जगनाना ❋ देखत बनै न जात बखाना ॥
तहँ पुनि देखेउँ रामसुजाना ❋ मायापति कृपालु भगवाना ॥
करौं विचार बहोरि बहोरी ❋ मोहकलित[1] व्यापित मति भोरी ॥
उभयँ घरीमहँ मैं सब देखा ❋ भयउँ भ्रमित मनमोह विशेषा ॥

दोहा–देखि कृपालु बिकलमुहिं, बिहँसे तब रघुवीर ॥
विहँसतही मुख बाहर, आयउँ सुन मतिधीर ॥१२१॥
सोइ लरिकाई मोहिंसन, लगे करन पुनि राम ॥
कोटि भांति समुझावौं, मन न लहै विश्राम ॥१२२॥

देखि चरित यहसो प्रभुताई ❋ समुझत देह दशा बिसराई ॥
धरणिपरेउँ मुख आव न बाता ❋ त्राहि त्राहि आरतजन त्राता ॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहिं बिलोकी ❋ निज माया प्रभुता तब रोकी ॥
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ ❋ दीनदयालु दुसह दुख हरेऊ ॥
कीन्ह राम मोहिं विगत बिमोहा ❋ सेवक सुखद कृपा सन्दोहा ॥
प्रभुता प्रथम विचार बिचारी ❋ मनमहँ होइ हर्ष अति भारी ॥
भक्तबछलता प्रभुकै देखी ❋ उपजा मम उरहर्ष विशेषी ॥
सजलनयन पुलकित करजोरी ❋ कीन्ही बहुबिधि बिनय बहोरी ॥

दोहा–सुनि सप्रेम मम वाणी, देखि दीन निजदास ॥
बचनसुखद गम्भीर मृदु, बोले रमानिवास ॥१२३॥
कागभुशुण्डी मांगु बर, अतिप्रसन्न मोहिं जानि ॥
अणिमादिकसिधिअपरनिधि,मोक्षसकलसुखखानि १२४

ज्ञान विवेक विरति विज्ञाना ❋ मुनि दुर्लभ गति जो जगजाना ॥
आजु देउँ सब संशय नाहीं ❋ मांगु जो तोहिं भाव मन माहीं ॥
सुनि प्रभुवचन बहुत अनुरागेउँ ❋ मनअनुमान करन तब लागेउँ ॥

१ मोहसे घिरीहुई । २ बावली । ३ दोघडी । ४ घर । ५ अष्टसिद्धिनवौनिधि ।

प्रभुकह देन सकल सुखसही ❋ भक्ति आपनी देन न कही ॥
भक्ति हीन गुण सुखसब ऐसे ❋ लवण बिना बहु ब्यंजन जैसे ॥
भक्तिहीन सुख कवने काजा ❋ अस बिचारि बोलेउँ खगराजा ॥
जो प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू ❋ मोपर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मनभावत वर मांगौं स्वामी ❋ तुम उदारउर अन्तरयामी ॥

दोहा–अविरल भक्ति विशुद्ध तव, श्रुति पुराण जो गाव ॥
जेहि खोजत योगीश मुनि, प्रभु प्रताप कोउपाव ॥ १२५ ॥
भक्त कल्पतरु प्रणत हित, कृपासिन्धु सुखधाम ॥
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु, देहु दया करि राम ॥ १२६ ॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक ❋ बोले वचन परम सुखदायक ॥
सुनु वायसतैं परमसयाना ❋ काहेन मांगसि अस बरदाना ॥
सब सुखखानी भक्ति तैं मांगी ❋ नहिं जग कोउ तोहिंसम बडभागी ॥
जो मुनि कोटियत्न नहिं लहहीं ❋ कै जप योग अनलं तनु दहहीं ॥
रीझेउँ तोरि देखि चतुराई ❋ मांगेउ भक्ति मोहिं अतिभाई ॥
सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे ❋ सब शुभगुण वसिहैं उरतोरे ॥
भक्तिज्ञान विज्ञान विरागा ❋ योगचरित्र रहस्य विभागा ॥
जानब तैं सबही कर भेदा ❋ मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥

दोहा–मायासम्भव सकल भ्रम, अब नहिं ब्यापिहि तोहिं ॥
जानेसि ब्रह्म अनादि अज, अगुण गुणाकर मोहिं ॥ १२७ ॥
मोहिं भक्ति प्रिय सन्तत, अस बिचारि सुनु काग ॥
कायँ बचन मन मम चरण, करहु अचल अनुराग ॥ १२८ ॥

अब सुन परम वमल ममवानी ❋ सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥
निज सिद्धांत सुनावौं तोहीं ❋ सुन मन धरि सब तजि भजु मोहीं ॥
मम माया संभव संसारा ❋ जीव चराचर विविध प्रकारा ॥

---

१ भोजन। २ सबकुछदेवेयोग्य। ३ अन्तरकेजाननहार। ४ अखंड। ५ वेद। ६ श्रीरामचन्द्र। ७ अग्नि। ८ भिन्नभिन्न। ९ दुःख। १० उत्पन्न। ११ शरीर। १२ मत।

सब ममप्रिय सब मम उपजाये ❋ सबते अधिक मनुज मुहिं भाये॥
तिन्हमहँ द्विज¹ द्विजमहँ श्रुतिधारी² ❋ तिन्हमहँ निगमधर्म³ अनुसारी ॥
तिन्हमहँ प्रियविरक्त⁴ पुनिज्ञानी ❋ ज्ञानिहुँते अतिप्रिय विज्ञानी ॥
तिनते पुनि मोहिं प्रिय निजदासा ❋ जेहिगति मोरि न दूसरि आसा ॥
पुनि पुनि सत्यकहौं तोहिं पाहीं ❋ मोहिं सेवकसम प्रिय कोउ नाहीं॥
भक्तिहीन विरंचि किन होई ❋ सब जीवनमहँ अप्रिय सोई ॥
भक्तिवन्त अति नीचो प्राणी ❋ मोहिं परमप्रिय सुनु ममवाणी॥

दोहा–शुचि सुशील सेवक सुमति, कहु प्रिय काहिन लाग ॥
श्रुति पुराण कह नीति अस, सावधान सुनु काग ॥ १२९ ॥

एक पिताके विपुल⁷ कुमारा ❋ होइँ पृथक्गुण शील अचारा ॥
कोउ पण्डित कोउ तापस ज्ञाता ❋ कोउ धनवन्तशूर कोउ दाता ॥
कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई ❋ सबपर पितहिं प्रीतिसम होई ॥
कोउ पितुभक्त वचनमनकर्म्मा ❋ स्वप्नेहु जान न दूसर धर्म्मा ॥
सो प्रिय सुत पितु प्राणसमाना ❋ यद्यपि सो सब भांति अयानां ॥
इहिविधि⁶ जीव चराचर जेते ❋ त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिलविश्व यह मम उपजाया ❋ सब पर मोरि बराबरि दाया ॥
तिनमहँ जो परिहरि सब माया ❋ भजहि मोहिं मन वच अरु काया ॥

दोहा–पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ ॥
सर्व भाव भजु कपट तजि, मोहिं परम प्रिय सोइ ॥ १३० ॥
सो०–सत्य कहौं खग तोहिं, शुचि सेवक मम प्राणप्रिय ॥
अस बिचारि भजु मोहिं, परिहरि आश भरोस सब ॥ ४ ॥

कबहुँ काल नहिं व्यापै तोहीं ❋ सुमिरेहु भजेहु निरंतर मोहिं ॥
प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊं ❋ तनुपुलकित मन अतिहर्षाऊं ॥
सो सुख जानै मन अरु काना ❋ नहिं रसनां प्रति जाइ बखाना ॥
प्रभु शोभासुख जानत नयना ❋ कहि किमिसकैं तिन्हैं नहिं बयनां॥

---

१ ब्राह्मण। २ वेदके जाननेवाले। ३ वेदके अनुसारचलनेवाले। ४ वैरागि, ब्रह्मज्ञानजाननेवाले। ५ कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड चारिउफल। ६ विधि। ७ अनेक। ८ अलग अलग। ९ मूर्ख। १० समूह। ११ त्याग। १२ सदासर्वदा। १३ जिव्हा। १४ वाणी

बहुविधि राम मोहिं सिख देईं ❋ लगे करन शिशु कौतुक तेईं ॥
सजलनयन कछु मुखकरि रूखा ❋ चितै मातु तनु लागी भूखा ॥
देखि मातु आतुर उठि धाई ❋ कहि मृदुवचन लिये उरलाई ॥
गोद राखि कराय पय पाना ❋ रघुपति चरित ललितकरि गाना॥

सो० जेहि सुखलागि पुरारि,अशिव भेष कृत शिव सुखद॥
अवधपुरी नरनारि, तेहि सुख महँ संतत मगन ॥ ५ ॥
सोई सुख लवलेश, जिन बारेक स्वप्नेहु लहेउ ॥
ते नहिं गणहिं खगेश, ब्रह्म सुखहिं सज्जन सुमति ॥ ६ ॥

मैं पुनिरह्यों अवध कछुकाला ❋ देख्यों बालै विनोद रसाला ॥
राम प्रसाद भक्ति बर पायउँ ❋ प्रभुपद वन्दि निजाश्रम आयउँ ॥
तबते मोहि न व्यापी माया ❋ जबते रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्तचरित मैं गावा ❋ हरिमाया जिमि मोहि नचावा ॥
निज अनुभव अब कहौं खगेशा ❋ बिनु हरिभजन नजाहि कलेशा ॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराई ❋ जानि नजाइ राम प्रभुताई ॥
जाने बिनु नहोइ परतीती ❋ बिनु परतीति होइ नहि प्रीती ॥
प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढाई ❋ जिमि खगेश जलकी चिकनाई ॥

सो०—बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विरागबिनु ॥
गावहिं वेद पुरान, सुख कि लहहि बिनु हरि भगति ॥ ७ ॥
कोउ बिश्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष बिनु ॥
चलै कि जल बिनु नाव, कोटि यतन पचि पचि मरै ॥ ८ ॥

बिनु सन्तोष न कामनशाहीं ❋ काम अछत सुखस्वप्नेहुँ नाहीं ॥
रामभजन बिनु मिटहिं नकामा ❋ थलविहीन तरु कबहुँकि जामा ॥
बिना ज्ञानकी समता आवै ❋ कोउ अबकासकिनभ बिनुपावै ॥
श्रद्धा बिना धर्म नाहिं होई ❋ बिनु महि गन्ध कि पावै कोई ॥
बिनु तप तेज कि करु विस्तारा ❋ जल बिनु रस कि होइ संसारा ॥

---

१ बालपन । २ सुंदर । ३ महादेव । ४ शिशुक्रीडा । ५ अपनानिवासस्थान । ६ सिद्धांत ।
७ नआयेकोहर्षनगयेकोशोच । ८ कामना । ९ रहते । १० वृक्ष ११ आकाश । १२ पृथ्वी

शीलकि मिलु विनु बुध सेवकाई ❋ जिमि बिनुतेज न रूप गुसाई ॥
निजसुख विनु मनहोइ कि थीरा ❋ परसै किहोइ विहीन समीरा ॥
कवनेउ सिद्धि किविनु विश्वासा ❋ विनु हरिभजन न भव भय नाशा॥

दोहा–बिनु विश्वास भक्ति नहिं, तेहि विन द्रवंहिं न राम ॥
रामकृपा बिनु स्वप्नेहु, मनकि लहै बिश्राम ॥ १३१ ॥
सो०-अस बिचारि मति धीर, तजि कुतर्क संशय सकल ॥
भजहु राम रण धीर, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥ ९ ॥

निजमति सरिस नाथमैं गाई ❋ प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥
कह्यों न कछुकरि युक्ति विशेषी ❋ यह सब मैं निज नयनं न देखी ॥
महिमा नाम रूप गुणगाथा ❋ सकल अमितअनन्तं रघुनाथा ॥
निजनिज मतिमुनि हरिगुण गावहिं ❋ निगम शेष शिव पार न पावहिं॥
तुम्हें आदि खग मशक प्रयन्ता ❋ नभ उडाहिं नहिं पावहिं अन्ता ॥
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा ❋ तात कबहुँ कोउ पावकि थाहा ॥
रामकाम शतकोटि सुभगतन ❋ दुर्गा कोटि अमित अरिमर्दन ॥
शक्रं कोटिशत सरिस विलासा ❋ नभशतकोटिअमित अवकाशा ॥

दोहा–मरुत कोटि शत बिपुल बल,रबि शत कोटि प्रकास
शशि शतकोटि सुशीतल,शमन सकल भवत्रास १३२॥
काल कोटि शत सरिस अति, दुस्तरं दुर्ग दुरन्तं ॥
धूम्रंकेतु शत कोटि सम, दुराधर्ष भगवन्त ॥ १३३ ॥

प्रभु अगाध शत कोटि पताला ❋ शमन कोटिशत सरिस कराला॥
तीरथ अमितकोटि शतपावन ❋ नाम अखिल अघ पुंजनशावन ॥
हिमगिरि कोटि अचल रघुवीरा ❋ सिन्धु कोटिशत सरिस गँभीरा ॥
कामधेनु शत कोटि समाना ❋ सकल कामदायक भगवाना ॥
शारद कोटि अमित चतुराई ❋ विधि शतकोटि अमित निपुनाई॥

---

१ पंडित । २ आत्मक । ३ छूना । ४ वायु । ५ कृपा । ६ आंखें । ७ अथाह । ८ सुन्दर । ९ शत्रु । १० इन्द्र । ११ विस्तारित । १२ तरिवे योग्यनहीं । १३ ज्यहिकर अन्त पावनाहूँरहे । १४ अग्नि । १५ दूरिहैधारणा जिनकैं । १६ हिमाचल ।

विष्णु कोटिशत पालनकर्त्ता ❀ रुद्र कोटिशत सम संहर्त्ता ॥
धनंद कोटि शत सम धनवाना ❀ माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
धेरा धरण शतकोटि अहीशा ❀ निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा॥
छंद–निरवधि निरूपमरामसम नहिं आन निगमागमकहैं
जिमि कोटिशत खद्योत रवि कहँ कहत अति लघुतालहैं ॥
इहिभांति निज निजमति विलासमुनीश हरिहि बखानहीं ॥
प्रभु भाग गाहक अति कृपालु सप्रेम सुनि सुखपावहीं २१
दोहा–राम अमित गुणसागर, थाह कि पावै कोइ ॥
सन्तन सन जसकछु सुनेउँ,तुमहिं सुनायउँ सोइ॥१२४॥
सो०–भाववश्य भगवान, सुखनिधान करुणा भवन ॥
तजि ममता मद मान, भजिय राम सीतारमण॥१०॥
सुनि भुशुंडके वचन सुहाये ❀ हर्षित खगपति पंख फुलाये ॥
नयन नीर मन अतिहर्षाना ❀ श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥
पाछिलमोह समुझि पछिताना ❀ ब्रह्म अनादि मनुजकरि जाना ॥
पुनि पुनि कागचरण शिरनावा ❀ जानि रामसम प्रेम बढावा ॥
गुरु विनु भवनिधि तरै न कोई ❀ जो विरंची शंकरसम होई ॥
संशयसर्प ग्रसेउ मोहिं ताता ❀ दुख पल हरि कुतर्क बहु व्राता॥
तव स्वरूप गारुडि रघुनायक ❀ मोहिं जियायहु जनसुखदायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नशाना ❀ रामरहस्य अनूपम जाना ॥
दोहा–ताहि प्रशंसेउ बिबिध बिधि, शीश नाइ करजोरि ॥
बचन सप्रेम बिनीत मृदु, बोलेउ गरुड बहोरि ॥ १२५॥
प्रभु अपने अबिबेक ते, पूंछौं स्वामी तोहिं ॥
कृपासिन्धुसादर कहहु,जानि दास निज मोहिं॥१२६॥
तुम सर्वज्ञ तज्ञ तम पारा ❀ सुमति सुशील सरल आचारा ॥
ज्ञानविरति विज्ञान निवासा ❀ रघुनायकके प्रिय तुम दासा ॥

---

१ कुबेर। २ पृथ्वी। ३ जुगुनू। ४ गरुडमंत्र जिससे सांपका विष उतरिजाय।
५ परमतत्त्ववेत्ता। ६ अविद्यातेपरे।

कारण कवनदेह यह पाई ❋ तात सकल मोहिं कहहु बुझाई ॥
रामचरित सर सुन्दर स्वामी ❋ पायहु कहां कहहु नभगामी ॥
नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं ❋ महाप्रलय महँ क्षय तवनाहीं ॥
मृषा वचन नहिं शंकर कहहीं ❋ सो मेरे मन संशय अहहीं ॥
अग जग जीव नाग नरदेवा ❋ नाथ सकल जग काल कलेवा ॥
अंडकटाह अमित लयकारी ❋ काल महादुरंतिक्रम भारी ॥

सो०—तुमहिं न व्यापै काल, अतिकराल कारण कवन ॥
सो मोहिं कहहु कृपाल,ज्ञानप्रभाव कि योग बल॥११॥
दोहा—प्रभु तव आश्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग ॥
कारण कवन सो नाथ अब,कहहु सहित अनुराग॥१३७॥

गरुड गिरा सुनि हर्षेउ कागा ❋ बोलेउ उमा सहित अनुरागा ॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी ❋ प्रश्न तुम्हार मोहिं अति प्यारी ॥
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई ❋ बहुत जन्मकी सुधि मोहिं आई ॥
सब निज कथा कहौं मैं गाई ❋ तात सुनहु सादर मनलाई ॥
जप तप मख शम दम व्रत दाना ❋ विरति विवेक योग विज्ञाना ॥
सबकर फल रघुपतिपद प्रेमा ❋ तेइ बिनु कोइ न पावे क्षेमा ॥
इहि तनु राम भक्ति मैं पाई ❋ ताते मोहिं ममता अधिकाई ॥
जेहिते कछु निज स्वारथ होई ❋ तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सो०—पन्नगारि असि नीति, श्रुति सम्मत सज्जन कहहिं ॥
अति नीचहु सन प्रीति, करिय जानि निज परमहित ॥१२॥
पाट कीटते होइ, ताते पाटम्बर रुचिर ॥
कृमि पालै सब कोइ, परम अपावन प्राणसम ॥ १३ ॥

स्वारथ सर्व्व जीव कह एहा ❋ मन क्रम बचन राम पद नेहा ॥
सोइ पावन सोइ सुभग शरीरा ❋ जो तनु पाइ भजिय रघुबीरा ॥
रामविमुख लहि विधिसम देही ❋ कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही ॥

१ अनेकब्रह्मांडविस्तारित । २ दुस्तर । ३ कुशल । ४ गरुड । ५ कीडा ।

राम भक्ति यहि तुममहँ जामी ❋ ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी ॥
तजौं न तनु निजइच्छा मरणा ❋ तनु बिनु वेद भजन नहिंवरणा ॥
प्रथम मोह मोहिं बहुत बिगोवा ❋ राम विमुख सुख कबहुँ न सोवा ॥
नाना जन्म कर्म्मपुनि नाना ❋ किये योग जप तप मख दाना ॥
कवन योनि जन्मेहुँजहँ नाहीं ❋ मैं खगेश भ्रमि भ्रमिजगमाहीं ॥
देखेहुसब करि कर्म्म गुसाईं ❋ सुखी न भयउँ अबहिं कीनाईं ॥
सुधि मोहिं नाथ जन्मबहु केरी ❋ शिव प्रसाद मति मोह न घेरी ॥

दोहा–प्रथम जन्मके चरित अब, कहौं सुनहु बिहँगेश ॥
सुनि प्रभु पद रति ऊपजै, जाते मिटै कलेश ॥ १३८ ॥
पूर्वकल्पमें एक प्रभु, कलियुग मलकर मूल ॥
नर अरु नारि अधर्मरत, सकल निगमप्रतिकूल ॥ १३९ ॥

तेहि कलियुग कोशलपुर जाई ❋ जन्मत भयउँ शूद्र तनु पाई ॥
शिव सेवक मन क्रम अरु बानी ❋ आनदेव निन्दक अभिमानी ॥
धन मद मत्त परम बाचालौं ❋ उग्रबुद्धि उर दम्भ विशाला ॥
यदपि रहेउँ रघुपति रजधानी ❋ तदपिनहीं महिमा कछु जानी ॥
अब जाना मैं अवध प्रभावा ❋ निगमागम पुराण अस गावा ॥
कवनिहुँ जन्म अवधबस जोई ❋ राम परायण सो परिहोई ॥
अवध प्रभाव जान तब प्राणी ❋ जब उर बसहिं राम धनु पाणी ॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी ❋ पाप परायण सब नर नारी ॥

दोहा–कलिमल ग्रसेउ धर्म सब, गुप्त भये सद्ग्रन्थ ॥
दम्भिन निजमति कल्पि कारि, प्रगट कीन्हबहुपन्थ १४० ॥
भये लोग सब मोहवश, लोभ ग्रसे शुभ कर्म ॥
सुनु हरियान ज्ञाननिधि, कहौं कछुक कलिधर्म ॥ १४१ ॥

वर्ण धर्म नहिं आश्रम चारी ❋ श्रुति विरोध रत सब नर नारी ॥

---

१ भरमाया। २ यज्ञ। ३ गरुड। ४ प्रीति। ५ पाप। ६ वेद। ७ वक्ता। ८ बडीतीक्ष्ण। तामस राजससे मिलितबुद्धि। ९ शास्त्रके पदार्थ सबको देखावत रहौं अरु त्यहि की कर्तव्यते प्रतिकूलरहौं। १० लगाहुआ। ११ शास्त्रकी रीति।

द्विज श्रुतिवंचक भूप प्रजाशन ❋ कोउ नहिं मान निगम अनुशासन॥
मारग सोइ जाकहँ जो भावा ❋ पण्डित सोइ जा गाल बजावा॥
मिथ्या रम्भ दम्भरत जोई ❋ ताकहँ सन्त कहै सब कोई॥
सोइ सयान जो परधन हारी ❋ जो करु दम्भ सो बड आचारी॥
जा बहुझूठ मसखरी जाना ❋ कलियुग सोइ गुणवन्त बखाना॥
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी ❋ कलियुग सोइ ज्ञानी वैरागी॥
जाके नख अरु जटा बिशाला ❋ सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला॥

दोहा-अशुभ वेष भूषण धरैं, भक्ष्या भक्ष्य जे खाहिं॥
त्यइ योगी त्यइ सिद्ध नर, पूज्यते कलियुग माहिं॥१४२॥
सोरठा-जे अपकारी चार, तिनकर गौरव मान्यता॥
मन क्रम बचन लवाँर, ते वक्ता कलिकाल महँ॥१४॥

नारि बिवश नर सकल गुसाईं ❋ नाचहिं नट मर्कटकी नाईं॥
शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना ❋ मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी ❋ देव विप्र गुरु सन्त विरोधी॥
गुण मन्दिर सुंदर पति त्यागी ❋ भजहिं नारि परपुरुषअभागी॥
सौभागिनी विभूषणहीना ❋ विधवनके श्रृंगार नवीना॥
गुरु शिष अंध बधिरकर लेखा ❋ एक न सुनै एक नहिं देखा॥
हरै शिष्य धन शोक न हरई ❋ सो गुरुघोर नरक महँ परई॥
मात पिता बालकन बुलावहिं ❋ उदर भरे सोइ कर्म सिखावहिं॥

दोहा-ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, करहिं न दूसरि बात॥
कौडी कारण मोहबश, करहिं विप्र गुरु घात॥१४३॥
बाद शूद्र कह द्विजन सन, हम तुमते कछु घाटि॥
जानै ब्रह्म सो विप्रबर, आंखि दिखावहिं डाटि॥१४४॥

परतिय लम्पट कपट सयाने ❋ मोह द्रोह ममता लपटाने॥
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर ❋ देखा मैं चरित्र कलियुग कर॥

१ वेदकी निंदा करनेवाले। २ प्रजाका अन्नखानेवाले। ३ आदर। ४ झूंठे। ५ बंदर। ६ बहिरा। ७ आसक्त।

आपु गये अरु आनहिं घालहिं ❋ जोकोउ श्रुतिमारग प्रतिपालहिं ॥
कल्प कल्प भरि इक इक नर्का ❋ परहिंजे दूषहिं श्रुतिकरि तर्का ॥
जे वर्णाधम तेलि कुम्हारा ❋ श्वपच किरात कोल्ह कलवारा ॥
नारि मुई गृह सम्पति नाशी ❋ मूड मुडाइ भये संन्यासी ॥
ते विप्रन सन पाँव पुजावहिं ❋ उभय लोक निज हाथ नशावहिं ॥
विप्र निरक्षर लोलुप कामी ❋ निराचार शठ वृषली स्वामी ॥
शूद्र करहिं जप तप व्रतदाना ❋ बैठि वरासने कहहिं पुराना ॥
सब नरकल्पित करहिं अचारा ❋ जाइ न वर्णि अनीति अपारा ॥

दोहा–भये वर्णसंकर कलिहि, भिन्न सेतु सब लोग ॥
करहिं पाप दुख पावहीं, भय रुज शोक वियोग १४५
श्रुति सम्मत हरि भक्तिपथ, संयुत ज्ञान विवेक ॥
तेन चलहिं नर मोहवश, कल्पहिं पंथ अनेक ॥ १४६ ॥

त्रोटक छंद ॥

बहु धाम सँवारहिं योगि यती, विषया हरि लीन्हगईविरती ॥
तपसी धनवन्त दरिद्र गृही, कलि कौतुक तातन जात कही
कुलवंति निकारहिं नारि सती, गृहआनहिं चेरिहिं चोरगती ॥
सुत मानहिं मात पिता तबलौं, अबलानन दीखनहीं जबलौं
ससुरारि पियारि लगी जबते, रिपु रूप कुटुम्ब भये तबते ॥
नृपपापपरायण धर्म नहीं, करि दण्ड विदण्ड प्रजा नितहीं
धनवंत कुलीन मलीन अपी, द्विज चिन्ह जनेउउघार तपी
नहिं मान पुराणहिं वेदहिजो, हरिसेवक संतसही कलिसो ॥
कवि वृंद उदार दुनी न सुनी, गुण दूषत बातन कोपि गुनी
कलि बारहिंबार दुकालपरैं, विन अन्न दुखीबहुलोग मरैं २४
दोहा–सुन खगेश कलि कपट हठ, दम्भ द्वेष पाषण्ड ॥

---

१ चांडाल । २ भील । ३ लोभी । ४ दासी । ५ श्रेष्ठआसन ऊँचो । ६ रोग । ७ वैराग्य ।
८ अपनीछीनकोमुख । ९ मार । १० निश्चय । ११ बैर ।

काम क्रोध लोभादि मद, व्यापि रहेउ ब्रह्मण्ड ॥ १४७॥
तामस धर्म करहिं नर, जप तप मख व्रत दान ॥
देव न वरषै धरणि पर, बये न जामहिं धान ॥ १४८ ॥

त्रोटक छंद ॥

अबला कच[1] भूषण भूरि[2] क्षुधा[3], धनहीन दुखी ममता[4] बहुधा
सुख चाहहिं मूढन धर्मरता, मति थोरि कठोरिन कोमलता
नर पीडित रोगनभोग कही, अभिमान विरोधअकारणही
लघुजीवन संवत पंचदशा, कल्पांतन नाशगुमान अशा २५
कलिकालबिहाल कियेमनुजा, नहिं मानतकोउअनुजा[6] तनुजा[7]
नहिं तोष विचारन शीतलता, सब जातिकुजाति भयेमँगता
इरषा परुषाँ[7] छल लोलुपता[8], भरि पूरि रही समता विगता[9]॥
सब लोग वियोग विशोक हये, वर्णाश्रमधर्म अचार गये ॥
दमदान दयानहिं जानपनी, जडता परपंचकतात घनी २६
तनु पोषकनारि नरा सगरे, परनिंदक जे जगमें बगरे[11] ॥

दोहा-सुनु व्यालारि[12] कराल कलि, मल अवगुण आगार[13] ॥
गुणहु बहुत कलिकाल कर, बिनु प्रयास निस्तार ॥ १४९ ॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहु, पूजा मख अरु योग ॥
जो गति होइ सो कलिहहारि, नाम ते पावहिं लोग ॥ १५० ॥

कृतयुग सब योगी विज्ञानी ❋ करि हरिध्यान तरहिं भव प्रानी॥
त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं ❋ प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं ॥
द्वापर करि रघुपति पदपूजा ❋ नर भवतरहिं उपाय न दूजा ॥
कलि केवल हरिगुणगण गाहा ❋ गावत नर पावहिं भव थाहा ॥
कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना ❋ एक अधार राम गुण गाना ॥

१ बाल । २ अधिक । ३ भूख । ४ प्यार । ५ छोटीबहिन । ६ अपनी कन्या । ७ कठोर ।
८ लुब्ध । ९ जातीरही । १० इन्द्रियनकर जीतब । ११ फैले । १२ गरुड । १३ घर ।

सब भरोस तजि जो भज रामहिं ❋ प्रेम समेत गावगुण ग्रामहिं ॥
सो भव तर कछु संशय नाहीं ❋ नाम प्रताप प्रगट कलिमाहीं ॥
कलिकर एक पुनीत प्रतापा ❋ मानस पुण्य होइ नहिं पापा ॥

दोहा—कलियुगसम युग आन नहिं, जो नर कर बिश्वास॥
गाइ राम गुणगण बिमल,भवतर बिनाहिंप्रयास॥१५१॥
प्रगट चारि पद धर्मके, कलि महँ एक प्रधान ॥
येन केन विधि दीन्हे, दान करै कल्यान ॥ १५२ ॥

कृतयुग धर्म होहिं सब केरे ❋ हृदय राम मायाके प्रेरे ॥
शुद्ध सत्व समता विज्ञाना ❋ कृत प्रभाव प्रसन्न मनजाना ॥
सत्व बहुत कछु रजरतिकर्मा ❋ सब विधि शुभ त्रेताकर धर्मा ॥
बहु रज सत्व स्वल्प कछुतामस ❋ द्वापर धर्म हर्ष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुण थोरा ❋ कलिप्रभाव विरोध चहुँ ओरा ॥
बुध युग धर्म जानि मन माहीं ❋ तजि अधर्म रत धर्म कराहीं ॥
काल कर्म नहिं व्यापहि ताही ❋ रघुपति चरण प्रीति अतिजाही ॥
नटकृत कपट विकट खगराया ❋ नट सेवकहिं न व्यापै माया ॥

दोहा—हरिमाया कृत दोष गुण, बिनु हरि भजन न जाहिं॥
भजियरामसबकामतजि, असबिचारिमनमाहिं ॥ १५३॥
तेहि कलिकाल बर्ष बहु, बसेउँ अवध बिहँगेश ॥
परेउ दुकाल विपत्ति बश, तब मैं गयउँ बिदेश ॥ १५४॥

गयउँ उजैन सुनहु उरगारी ❋ दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गये काल कछु सम्पति पाई ❋ तहँ पुनि करौं शम्भु सेवकाई ॥
विप्र एक वैदिक[1] शिवपूजा ❋ करै सदा तेहि काज न दूजा ॥
परमसाधु परमारथ बिन्दक[2] ❋ शंभु उपासक नहिं हरि निन्दक॥
सेवों मैं तेहि कपट समेता ❋ द्विज दयालु अति नीति निकेता॥
बाहिर नम्र देखि मुहिं सांई ❋ विप्र पढाव पुत्रकी नाईं ॥

१ वेदवेत्ता। २ परमार्थको जाननेवाला।

शम्भुमंत्र मोहिं द्विजवर दीन्हा ❀ शुभ उपदेश विविध विधि कीन्हा॥
जपौं मंत्र शिवमन्दिर जाई ❀ हृदय दम्भ अहंमिति अधिकाई ॥

दोहा–मैं खल मल संकुल मति, नीच जाति बश मोह ॥
द्विज हरिजन देखत जरौं, करौं विष्णु कर द्रोह ॥ १५५ ॥
सो०–गुरु नित मोहिं प्रबोध, दुखित देखि आचरण मम ॥
मोहिं उपजै अति क्रोध, दम्भिहि नीति कि भावई ॥ १६ ॥

एक बार गुरु लीन्ह बुलाई ❀ मोहिं नीति बहु भांति सिखाई ॥
शिव सेवा कर फलसुत सोई ❀ अबिरल भक्ति रामपद होई ॥
रामहिं भजहिं तात शिव धाता ❀ नर पामर कर केतिक बाता ॥
जासु चरण शिव अज अनुरागी ❀ तासु द्रोह सुख चहसि अभागी ॥
हरकहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ ❀ सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ ॥
अधम जाति मैं विद्या पाये ❀ भयउँयथा अँहि दूध पियाये ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती ❀ गुरुसन द्रोह करौं दिनराती ॥
अतिदयालु गुरु स्वल्प न क्रोधा ❀ पुनि पुनि मोहिं सिखाव सुबोधा ॥
ज्यहिते नीच बड़ाई पावा ❀ सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा ॥
धूम अनलसम्भव सुन भाई ❀ तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥
रज मग परी निरादर रहई ❀ सब कर पद प्रहार नित सहई ॥
मरुतं उड़ाइ प्रथमतेहि भरई ❀ पुनि नृप नयन किरीटन्ह परई ॥
सुन खगपति अससमुझि प्रसंगा ❀ बुध न करहिं अधमन कर संगा ॥
कवि कोविद गावहिं अस नीती ❀ खलसन कलह न भलसन प्रीती ॥
उदासीन वरु रहिय गुसांई ❀ खल परिहरिय श्वानकी नाईं ॥
मैंखल हृदय कपट कुटिलाई ❀ गुरु हित कहै न मोहिं सुहाई ॥

दोहा–एक बार हर मन्दिर, जपत रहउँ शिव नाम ॥
गुरुआये अभिमान ते, उठि नहिं कीन्ह प्रणाम ॥ १५६ ॥
सोदयालु नहिं कहेउ कछु, उर न रोष लवलेश ॥
अति अघ गुरु अपमानता, सहि नहिं सके महेश ॥ १५७ ॥

१ अहंकार । २ युक्त । ३ वैष्णव । ४ सर्प । ५ धूरि । ६ चोट । ७ हवा । ८ आंखन ।

मन्दिर माँझ भई नभ बानी ❀ रेहतभाग्य अधम अभिमानी ॥
यद्यपि तवगुरु स्वल्प न क्रोधा ❀ अतिकृपालु जित सम्यक बोधा ॥
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं ❀ नीति विरोध सुहात नमोहीं ॥
जो नहिं करौं दण्ड शठ तोरा ❀ भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा ॥
जो शठ गुरुसन ईर्षा करहीं ❀ रौरव नरक कल्पशत परहीं ॥
त्रिजगयोनि पुनि धरहिं शरीरा ❀ अयुत जन्मभरि पावहिं पीरा ॥
बैठि रहेसि अजगरइव पापी ❀ होसि सर्प्प खलमलमति व्यापी ॥
महा विटप कोटर महँ जाई ❀ रहुरे अधम अधोगति पाई ॥

दोहा–हाहाकार कीन्ह गुरु, सुनि दारुणं शिव शाप ॥
कंपित मोहिं विलोकि अति, उर उपजा परिताप ॥ १५८ ॥
करि दण्डवत सप्रेम गुरु, शिव सन्मुख करजोरि ॥
विनय करत गद्गद गिरा, समुझि घोर गति मोरि ॥

भुजंगप्रयात छंद ॥

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं, विभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपं
अजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं, चिदाकाशमाकाशवासंभजेहं
निराकारमोंकारमूलंतुरीयं, गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं
करालंमहाकालकालंकृपालंगुणागारसंसारपारंनतोहं २७

छंदार्थ–हेईशानईश। मुक्तिरूप आप कैसेहो विभु अर्थात् समर्थ और व्यापक ब्रह्म वेदस्वरूप और अपनेसे प्रगट होनेवाले गुणसे रहित निर्विकल्प अर्थात् एकरस रहनेवाले और निरीह चेष्टारहित और सूक्ष्म और महाकाशमें है वास जिनका वा जिनमें दोनों आकाश वसते हैं उनको मैं भजताहूं आकारसे रहित और ओंकारका मूल और तुरीय अर्थात् जाग्रत सुषुप्तिसे परे वचन ज्ञान इंद्रियोंसे परे ईश कैलासके स्वामी और कराल जो महाकाल है उसकेभी आप महाकालहैं कृपालु गुणोंके आगार संसारसे परे हो मैं आपको नमस्कार करताहूं ॥ २७ ॥

---

१ उत्कृष्ट । २ दशहजार । ३ नीचगति-शिरनीचे पूंछऊपर । ४ कठिन । ५ दुःख ।

तुषाराद्रिसंकाशगौरंगभीरं,मनोभूतकोटिप्रभासीशरीरं॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा, लसद्भालबालेंदुकंठेभुजंगा
चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रंविशालं,प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं,प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि२८
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं,अखंडंअजंभानुकोटिप्रकाशं
त्रयीशूलनिर्मूलनंशूलपाणिं, भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं
कलातीतकल्याणकल्पांतकारी सदासज्जनानंददातापुरारी
चिदानंदसंदोहमोहापहारी,प्रसीदप्रसीदप्रभो मन्मथारी२९
नयावत्उमानाथपादारविंदं,भजंतीहलोकेपरेवानराणाम्
नतावत्सुखं शांतिसंतापनाशं,प्रसीदप्रभो सर्वभूताधिवासं
नजानामि योगंजपंनैवपूजां,नतोहंसदा सर्वदाशम्भुतुभ्यं

आप हिमाचल पर्वतके समान गौरवर्ण और गम्भीर हैं और करोडों कामके समान शरीरकी शोभाहै और मस्तकपर गंगा आनन्दसे शोभित हैं और ललाटमें द्वीजका चंद्रमा और कंठमें सर्प शोभित हैं जिनके कानोंमें कुंडल हलरहे हैं बडे विशाल नेत्रहैं जिनका मुख प्रसन्न कंठ नीलहै और दयाके घर हैं सिंहका चर्म मुंडकी माला जिनको प्रिय हैं ऐसे जो सबके नाथ आप शंकर अर्थात् कल्याण कारक हो सो तुम्हारे स्वरूपको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २८ ॥

प्रचंड अतिउत्तम अति ढीठ बडे ईश्वरखंडरहित अज कोटिभानुवत् प्रकाशित तीनों शूलके नाश करनेवाले त्रिशूल हाथमें लियेहुए भावसे प्राप्त होनेयोग्य भवानीपतिको मैं नमस्कार करताहूं कलासे परे कल्याण और कल्पांतके करनेवाले सदा सज्जनोंके आनंद देनेवाले त्रिपुरासुरके शत्रु चैतन्य आनंदके वासन और मोहके हर्त्ता मन्मथके नाश कर्त्ता प्रभु मेरे ऊपर कृपा करके रक्षा करो ॥ २९ ॥

हेउमानाथ जबतक सबजीवोंसे सेवित भक्तजन आपके चरणारविंदकी नहीं सेवाकरते तबतक इसलोक वा परलोक उनलोगोंको सुख शान्ति नहीं और संतापका नाश नहीं होता योग जप पूजाको मैं नहीं जान्ताहूं और हेशिवजी मैं सदा सबको नमस्कार करताहूं और बुढाई जन्मके दुःखोंके समूह, करके जो मैं दुःखी

जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं,प्रभोपाहि आपन्नमामीशशंभो३०

श्लोक–रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ॥
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥४॥

दोहा–सुनि विनती सर्वज्ञ शिव, देखि विप्र अनुरागु ॥
पुनि मन्दिर बाणी भई, हेद्विजवर वर मांगु॥ १६० ॥
जो प्रसन्न प्रभु मोहिंपर, नाथ दीनपर नेहु ॥
निजपद भक्ति देहु प्रभु, पुनि दूसर बर देहु॥ १६१ ॥
तव मायावश जीव जड़, सन्तत फिरै भुलान ॥
तेहिपर क्रोध न करिय प्रभु,कृपासिन्धु भगवान॥१६२॥
शंकर दीनदयालु अब, यहिपर होहु कृपाल ॥
शापानुग्रह होइ ज्यहि, नाथ थोरही काल॥ १६३ ॥

इहिकर होइ परम कल्याना ❋ सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥
विप्र गिरा सुनि परहित सानी ❋ एवमस्तु इति भइ नभ बानी ॥
यदपि कीन यह दारुणपापा ❋ मैं पुनि दीन क्रोधकरि शापा ॥
तदपि तुम्हारि साधुता देखी ❋ करिहौं इहिपर कृपा विशेषी ॥
क्षमा शील जे पर उपकारी ❋ ते द्विज प्रिय मोहिंयथा खरारी ॥
मोर शाप द्विज मृषा नहोई ❋ जन्म सहस्र पाव यह सोई ॥
जन्मत मरत दुसह दुख होई ❋ इहिकहँ स्वल्प न व्यापिहि सोई ॥
कौनिहु जन्म मिटिहि नाहिं ज्ञाना ❋ सुनहु शूद्र ममवचन प्रमाना ॥
रघुपति पुरी जन्म तब भयऊ ❋ पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ ॥
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे ❋ राम भक्ति उपजहि उरतोरे ॥
सुन ममवचन सत्य अब भाई ❋ हरि तोषक व्रत द्विज सेवकाई ॥

हूं आपकी शरणमेंहूं हेप्रभो! आप रक्षा करो मैं आपको हे ईश नमस्कार करताहूं ३०

श्लोकार्थ–इस रुद्राष्टकको पढ़कर ब्राह्मणने महादेवजीको प्रसन्न किया जो कोई इसको पढ़ैंगे उनपर शिवजी कृपा करैंगे ॥

---

२ रामचन्द्र । १ कृपा ।

अब जनि करसि विप्र अपमाना ❋ जानसि ब्रह्म अनन्तसमाना ॥
इन्द्रकुलिश मम शूल विशाला ❋ कालदण्ड हरिचक्र कराला ॥
जो इनकर मारा नहिं मरई ❋ विप्ररोष पावक सो जरई ॥
अस विवेक राखेहु मनमाहीं ❋ तुमकहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
औरो एक आशिषा मोरी ❋ अप्रतिहत गति होइहि तोरी ॥

दोहा–सुनि शिव वचन सप्रेम गुरु, एवमस्तु इति भाषि ॥
मोहिं प्रबोधि गयउ गृह, शंभुचरण उर राखि ॥१६४॥
प्रेरित काल विंध्यगिरि, जाइ भयउँ मैं व्याल ॥
बिनु प्रयास सो तनु तजेउँ, नाथ थोरही काल ॥१६५॥
जो तनु धरौं सो तजौं पुनि, अनायास हरियान ॥
जिमि नूतनपट पहिरिकै, नर परिहरै पुरान ॥ १६६॥
शिव राखेउ श्रुति नीति विधि, मैं नहिं पाव कलेश ॥
इहिबिधि धरेउ बिबिध तनु, ज्ञान न गयउ खगेश १६७॥

त्रियग योनि जो जो तनु धरेऊं ❋ तहँ तहँ रामभक्ति अनुसरेऊं ॥
एक शूल मोहिं बिसरु न काऊ ❋ गुरुके कोमल शील स्वभाऊ ॥
चर्म देह द्विज कर मैं पाई ❋ सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गाई ॥
खेलौं तहां बालकन मीला ❋ करौं सकल रघुनायक लीला ॥
प्रौढ़भये मोहिं पिता पढावा ❋ समुझौं सुनौं गुणौं नहिं भावा ॥
मनते सकल वासना भागी ❋ केवल रामचरणलयलागी ॥
कहु खगेश अस कवन अभागी ❋ खरीसेव सुरधेनुहि त्यागी ॥
प्रेम मगन मोहिं कछु न सुहाई ❋ हारेउ पिता पढाय पढाई ॥
भयउ कालबश जब पितुमाता ❋ मैं बन गयउँ भजन जनत्राता ॥
जहँ तहँ विपिन मुनीश्वर पावों ❋ आश्रम जाइ जाइ शिरनावों ॥
पूँछौं तिनहिं रामगुण गाहा ❋ कहौं सुनौं हर्षित खगनाहा ॥
सुनत फिरौं हरिगुण अनुवादा ❋ अव्याहतगति शंभुप्रसादा ॥

---

१ वज्र । २ जहांजीचाहे तहां चलाजावे । ३ अन्तमें । ४ सयान । ५ गदही । ६ कामधेनु । ७ परमेश्वर ।

छूटी त्रिविध ईषणा[1] गाढी ❋ एक लालसा उर अति बाढी ॥
रामचरण पंकज जब देखौं ❋ तब निजजन्म सफलकरि लेखौं ॥
जेहि पूँछौं सो मुनि असकहई ❋ ईश्वर सर्वभूतमय अहई ॥
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई ❋ सगुण ब्रह्म रति उर अधिकाई ॥

दोहा–गुरुके वचन सुरति करि, रामचरण मन लाग ॥
रघुपति यश गावत फिरौं, क्षण क्षण नव अनुराग १६८
मेरु शिखर बट छाया, मुनिलोमश आसीन ॥
देखि चरण शिर नायउँ, वचन कहेउँ अतिदीन ॥१६९॥
सुनि मम बचन बिनीत मृदु, मुनि कृपालु खगराज ॥
मोहिं सादर बूझत भयउ, द्विज आयउ केहिकाज १७०॥
तब मैं कहेउँ कृपानिधि, तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
सगुणब्रह्म अवराधना, मोहिं कहहु भगवान ॥ १७१ ॥

तब मुनीश रघुपति गुणगाथा ❋ कहेउ कछुक सादर खगनाथा ॥
ब्रह्मज्ञानरत मुनि विज्ञानी[2] ❋ मोहिं परम अधिकारी जानी ॥
लागे करन ब्रह्म उपदेशा ❋ अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ॥
अकल[3] अनीह[4] अनाम[5] अरूपा ❋ अनुभवगम्य[6] अखंड अनूपा ॥
मनगोतीत[7] अमल अविनाशी ❋ निर्विकार[8] निरवधि[9] सुखराशी ॥
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा ❋ वारि वीचि इव गावहिं वेदा ॥
विविधभांति मोहिंमुनि समुझावा ❋ निर्गुणमत ममहृदय न आवा ॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद शीशा ❋ सगुण उपासन कहहु मुनीशा ॥
रामभक्ति जल मम मन मीना ❋ किमि बिलगाइ मुनीश प्रवीना ॥
सोइ उपदेश कहहु करि दाया ❋ निजनयनन देखौं रघुराया ॥
भरिलोचन बिलोकि[10] अवधेशा ❋ तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा[11] ॥
पुनि मुनि कह हरिकथा अनूपा[12] ❋ खंडि सगुणमत अगुणनिरूपा ॥

---

१ सुत वित्त लोकमर्यादापर ममता । २ परमप्रवीण । ३ कलारहित । ४ चेष्टारहित । ५ नामरहित । ६ अनुभवकरके प्राप्तहै । ७ मनवाणीतेपरे । ८ षट्विकाररहित । ९ जिनकीमर्यादाकीथाहनहीं । १० देखि । ११ शिक्षा । १२ जिसकीतुलनानहीं ।

तब मैं निर्गुण मत करि दूरी ❋ सगुण निरूपौं करि हठ भूरी ॥
उत्तर प्रत्युत्तर मैं कीन्हा ❋ मुनि उरभयउ क्रोधकर चीन्हा ॥
सुन प्रभु बहुत अवज्ञा किये ❋ उपज क्रोध ज्ञानिहुके हिये ॥
अति संघर्षण करै जो कोई ❋ अनल प्रगट चन्दन ते होई ॥

दोहा–बारहि बार सकोपि मुनि, करहिं निरूपण ज्ञान ॥
मैं अपने मन बैठि तब, करौं बिबिध अनुमान ॥ १७२ ॥
क्रोध कि द्वैतक बुद्धि बिनु, द्वैत कि बिनु अज्ञान ॥
मायावश परिछिन्न जड़; जीव कि ईश समान ॥ १७३ ॥

कबहुँक दुख सबकररहित ताके ❋ त्यहि कि दरिद्र परसमणि जाके ॥
कामी पुनि कि रहै निकलंका ❋ परद्रोही कि होइ निःशंका ॥
वंश कि रह द्विजअनहित कीन्हे ❋ कर्मकि होहिं स्वरूपहि चीन्हे ॥
काहुहि सुमति कि खलसँग जामी ❋ शुभगति पाव कि परतियगामी ॥
राजकि रहै नीतिबिनु जाने ❋ अघ किरहै हरिचरित बखाने ॥
भवकि परहिं परमारथ बिदक ❋ सुखी कि होहिं कबहुं परनिंदक ॥
पावनयश कि पुण्य बिनु होई ❋ बिनु अघ अयश कि पावै कोई ॥
लाभ कि कछु हरिभक्ति समाना ❋ जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना ॥
हानि कि जग इहिसम कछु भाई ❋ भजिय न रामहिं नरतनु पाई ॥
अघ कि बिनातामसं कछु आना ❋ धर्म कि दयासरिस हरियाना ॥
इहिविधि अमितयुक्ति मनगुणेऊं ❋ मुनिउपदेश नसादर सुनेऊं ॥
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा ❋ तब मुनि बोले वचन सकोपा ॥
मूढ परम सिख देउँ न मानसि ❋ उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि ॥
सत्य वचन विश्वास न करही ❋ बायस इव सबही सन डरही ॥
शठ सपक्ष तवहृदय बिशाला ❋ सपदि होहु पक्षी चण्डाला ॥
लीन्ह शापमैं शीश चढाई ❋ नहिं कछु भय न दीनता आई ॥

दोहा–तुरत भयउँ मैं काग तब, पुनि मुनिपद शिरनाइ ॥
सुमिरि राम रघुबंशमणि, हर्षित चलेउँ उड़ाइ ॥ १७४ ॥

---

१ अनादर । २ रगड । ३ अग्नि । ४ प्रतिपादन-व्याख्यान । ५ यह इतनाहै ऐसा अजमा-याहुआ । ६ उत्तमबाद्धि । ७ दुष्ट । ८ परस्त्रीरमनेवाला । ९ पाप । १० क्रोध । ११ गरुड ।

उमा जो राम चरण रत, बिगत काम मद क्रोध ॥
निज प्रभुमय देखहिं जगत, कासनकरहिं बिरोध॥ १७५॥

सुनु खगेश नहिंकछु ऋषिदूषण ❀ उर प्रेरक रघुवंशविभूषण ॥
कृपासिंधु मुनिमति करि भोरी ❀ लीन्ही प्रेमपरीक्षा मोरी ॥
मन क्रम वचन मोहिं जन जाना ❀ मुनिमति पुनि फेरी भगवाना ॥
ऋषि मम सहज शीलता देखी ❀ रामचरण विश्वास विशेषी ॥
अतिविस्मय पुनि पुनि पछिताई ❀ सादरमुनि मुहिं लीन्ह बुलाई ॥
मम परितोष विविध विधि कीन्हा ❀ हर्षित राममंत्र मोहिं दीन्हा ॥
बालकरूप रामकर ध्याना ❀ कहेउ मोहिं मुनि कृपा निधाना ॥
सुन्दर सुखद मोहिं अति भावा ❀ जो प्रथमहिं मैं तुमहिं सुनावा ॥
मुनि मोहिं कछुक काल तहँ राखा ❀ रामचरित मानस सब भाषा ॥
सादर मोहिं यह कथा सुनाई ❀ पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
रामचरित सर गुप्त सुहावा ❀ शम्भु प्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहिं निजभक्त रामकर जानी ❀ ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥
रामभक्ति जिनके उरमाहीं ❀ कबहुँ न तात कहिय तेहि पाहीं ॥
मुनि मोहिं विविधभांति समुझावा ❀ मैं सप्रेम मुनिपद शिरनावा ॥
निज करकमल परसि ममशीशा ❀ हर्षित आशिष दीन्ह मुनीशा ॥
रामभक्ति अविरल उर तोरे ❀ बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे ॥

दोहा—सदा रामप्रिय होहु तुम, शुभ गुण भवन अमान[1] ॥
कामरूप[2] इच्छा मरण, ज्ञान विराग निधान[3] ॥ १७६ ॥
ज्यहि आश्रम तुम बसब पुनि, सुमिरहु श्रीभगवन्त ॥
व्यापिहि तहँ न अविद्या, योजन एक प्रयन्त ॥ १७७ ॥

काल कर्म्म गुण दोष स्वभाऊ ❀ कछु दुख तुमहिंनव्यापिहि काऊ ॥
राम रहस्य ललितविधि नाना ❀ गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
विनु श्रम तुम सब जानब सोऊ ❀ नित नवप्रेम रामपद होऊ ॥

---

१ मानरहित । २कामरूपकहीजो इच्छा करहुगे सो रूप प्राप्त होवे । ३ स्थान । ४ ...

जो इच्छा करिहो मन माहीं ❀ हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनि मुनि आशिष सुनु मतिधीरा ❀ ब्रह्मगिरा भइ गगनगँभीरा ॥
एवमस्तु तव वच मुनि ज्ञानी ❀ यह मम भक्त कर्म मन बानी ॥
सुनि नभगिराहर्ष मम भयऊ ❀ प्रेम मगन मन संशय गयऊ ॥
करि विनती मुनि आशिष पाई ❀ पदसरोज पुनि पुनि शिरनाई ॥
हर्षसहित यहिआश्रम आयउँ ❀ प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पायउँ ॥
इहां बसत मोहिं सुनु खगईशा ❀ बीते कल्प सात अरु बीसा ॥
करौं सदा रघुपतिगुण गाना ❀ सादर सुनहिं विहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुबीरा ❀ धरहिं भक्त हित मनुज शरीरा ॥
तब तब जाइ अवधपुर रहऊं ❀ शिशुलीला विलोकि सुख लहऊं ॥
पुनि उर राखि राम शिशुरूपा ❀ इहि आश्रम आवों खगभूपा ॥
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई ❀ कागदेह जेहि कारण पाई ॥
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी ❀ रामभक्ति महिमा अति भारी ॥

दोहा–ताते यह तनु मोहिं प्रिय, भयउ राम पद नेह ॥
निज प्रभु दरशन पायऊं, गयउ सकल संदेह ॥ १७८ ॥
भक्ति पक्ष हठ करि रहेउँ, दीन्ह महा ऋषिशाप ॥
मुनिदुर्लभ वर पायऊं, देखहु भजन प्रताप ॥ १७९ ॥

जे अस भक्तिजानि परिहरहीं ❀ केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी ❀ खोजत आकफिरहिं पयलागी ॥
सुनु खगेश हरि भक्ति विहाई ❀ जो सुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते शठ महासिन्धु बिनुतरणी ❀ पैरि पार चाहत जड़करणी ॥
सुनि भृशुण्डके वचन भवानी ❀ बोलेउ गरुड़ हर्षि मृदुबानी ॥
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं ❀ संशय शोकमोह भ्रम नाहीं ॥
सुनेउँ पुनीत रामगुण ग्रामा ❀ तुम्हरी कृपा लहेउँ विश्रामा ॥
एक बात प्रभु पूछौं तोहीं ❀ कहहु बुझाइ कृपानिधि मोहीं ॥
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना ❀ नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना ॥

---

१ ...ाकीबाणी। २ मदार। ३ दूध। ४ त्यागके। ५ नौका। ६ दुष्टकृत्य करनेवाले। ७ पार्वती।

सो मुनि तुमसन कहेउ गोसाईं * नहिं आदरेउ भक्तिकी नाईं ॥
ज्ञानहि भक्तिहि अन्तर केता * सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता ॥
सुनि उरगारिवचन सुख माना * सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
ज्ञानहि भक्तिहि नहिं कछु भेदा * उभय हरहिं भवसम्भव खेदा ॥
नाथ मुनीश कहहिं कछु अन्तर * सावधान होइ सुनहु विहँगवर ॥
ज्ञान विराग योग विज्ञाना * ये सब पुरुष सुनहु हरियाना ॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भांती * अबलाअबल सहज जड जाती ॥

दोहा–पुरुष त्यागि सक नारि कहँ, जो विरक्त मति धीर ॥
नतु कामी बिषया विवश, विमुख जो पद रघुवीर १८० ॥

सो०–सो मुनि ज्ञाननिधान, मृगनयनी विधुमुखं निरखि
विकल होहिं हरियान, नारि विरचि माया प्रगट ॥ १६ ॥

यहां न पक्षपात कछु राखों * वेद पुराण सन्तमत भाषों ॥
मोह न नारि नारिके रूपा * पन्नगारि यह नीति अनूपा ॥
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ * नारि वर्ग जाने सब कोऊ ॥
पुनि रघुवीरहिं भक्ति पियारी * माया खलु नर्तकी विचारी ॥
भक्तिहि सानुकूल रघुराया * ताते तेहि डरपति अतिमाया ॥
रामभक्ति निरुपम निरुपाधी * बसै जासु उर सदा अबाधी ॥
तेहि बिलोकि माया सकुचाई * करि नसकै कछु निज प्रभुताई ॥
अस विचारि जो मुनि विज्ञानी * यांचहिं भक्ति सकल गुणखानी ॥

दोहा–यह रहस्य रघुनाथ कर, बेगि नजानै कोइ ॥
जानेते रघुपति कृपा, स्वप्नेहु मोह न होइ ॥ १८१ ॥

अवरौ ज्ञान भक्ति कर, भेद सुनहु परवीण ॥
जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अवक्षीण ॥ १८२ ॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी * समुझत बनै न जात बखानी ॥
ईश्वर अंश जीव अविनाशी * चेतन अमल सहज सुखराशी

१ कृपाकेस्थान। २ चन्द्रवदनी। ३ चैतन्यरूप।

सो मायावश भयउ गुसाईं ❋ बँध्यो कीर[1] मर्कटकी नाईं ॥
जड़[2] चेतनहिं[3] ग्रंथि परिगई ❋ यदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
तबते जीव भयो संसारी ❋ ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी ॥
श्रुति पुराण बहु कहैं उपाई ❋ छूटन अधिक अधिक अरुझाई ॥
जीव हृदय तम[4] मोह विशेषी ❋ ग्रन्थि न छूटै परै न देखी ॥
अस संयोग ईश जब करई ❋ तबहुँ कदाचित सो निरु अरई ॥
सात्विक श्रद्धा[5] धेनु सुहाई ❋ जो हरि कृपा हृदय सब आई ॥
जप[6] तप[7] व्रत[8] यम नियम अपारा ❋ जो श्रुति कहै सुधर्म्म अचारा ॥
सोइ तृण हरित चरै जब गाई ❋ भाव वत्स शिशु पाइ पन्हाई ॥
नोइनि वृत्ति पात्र विश्वासा ❋ निर्मल मन अहीर निज दासा ॥
परम धर्म्ममय पय दुहि भाई ❋ अवटै अनल अकाम बनाई ॥
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै ❋ घृतसम जावन देइ जमावै ॥
मुदिता मथै विचार मथानी ❋ दम अधार रज सत्य सुबानी ॥
तब मथि काढि लेइ नवनीता[9] ❋ विमल विराग सुभग सुपुनीता ॥

दोहा-योग अग्नि कर प्रगट तब, कर्म शुभाशुभ लाइ ॥
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममता मल जरिजाइ ॥ १८३ ॥
तब विज्ञानं निरूपिणी, बुद्धि विशद घृतपाइ ॥
चित्त दिया भरि धरै दृढ, समता दिअटि बनाइ ॥ १८४ ॥
तीनि अवस्था तीनि गुण, तेहि कपासते काढि ॥
तूल तुरीय सवाँरि पुनि, बाती करै सुगाढि ॥ १८५ ॥
सो०-यहिबिधि लेसो दीप, तेज राशि विज्ञान मय ॥
जातहिं तासु समीप, जरहिं मदादिक शलभ[11] सब ॥ १७ ॥

सोहमस्मि[10] इति वृत्ति अखंडा ❋ दीपशिखा सोइ परम प्रचंडा ॥
आतम[12] अनुभव सुख सुप्रकाशा ❋ तब भव मूल भेद भ्रम नाशा ॥

---

१ सुवा । २ माया । ३ जीव । ४ विषय-वासना अंधकार । ५ वेदगुरुवाक्यमेंप्रतीति । ६ जै अक्षरका मंत्र होइ तै हजार नित्त जपै भूतशुद्धि प्राणायाम करके । ७ येनकेन इन्द्रियनको दमनकरै । ८ एकादशीचान्द्रायण इत्यादिक । ९ माखन । १० अपनास्वस्व रूपजीवअरूपास्यरूपब्रह्मादोंकीएकताको निरूपण । ११ पतंग । १२ ब्रह्मज्ञान ।

प्रबल अविद्या कर परिवारा ❁ मोह आदि तम मिटै अपारा ॥
तब सोइ बुद्धि पाय उजियारा ❁ उर गृह बैठि ग्रन्थि निरवारा ॥
छोरन ग्रन्थि पाव जो सोई ❁ तब यह जीव कृतारथ होई ॥
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया ❁ विघ्न अनेक करै तब माया ॥
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई ❁ बुद्धिहिं लोभ देखावै जाई ॥
कल बल छलकरि जाइ समीपा ❁ अंचल बात बुझावै दीपा ॥
होइ बुद्धि जो परम सयानी ❁ तिन्हतन चितवनअनहित जानी ॥
जो तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी ❁ तो बहोरि सुर[1] करहिं उपाधी ॥
इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना ❁ तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ॥
आवत देखहिं विषय बयारी ❁ ते हठि देहिं कपाट[2] उघारी ॥
जब सो प्रभंजन[3] उर गृहजाई ❁ तबहिं दीप विज्ञान बुझाई ॥
ग्रन्थिन छूटि मिटा सो प्रकाशा ❁ बुद्धि विकल भइ विषय बताशा ॥
इन्द्रिय सुरन्ह न ज्ञान सुहाई ❁ विषय भोग पर प्रीति सदाई ॥
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी ❁ तेहि विधि दीपको बार बहोरी ॥

दोहा—तब फिरि जीव बिबिध बिधि, पावैं संसृति[4] क्लेश ॥
हरिमाया अति दुस्तर[5], तरि नजाइ बिहँगेश ॥ १८६ ॥
कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन विवेक॥
होइ घुणाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह[6] अनेक ॥ १८७॥

ज्ञान कि पन्थकृपाण[7] कै धारा ❁ परत खगेश न लागै बारा ॥
जो निर्विघ्न पंथ निर्वहई ❁ सो कैवल्य परम पद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद ❁ सन्त पुराण निगम आगम वद ॥
रामभक्ति सो मुक्ति गुसाई ❁ अनइच्छित[8] आवै बरिआई ॥
जिमि थलविनु जल रहिन सकाई ❁ कोटि भांति कोउ करै उपाई ॥
तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई ❁ रहि न सकै हरि भक्ति विहाई ॥
अस विचारि हरि भक्त सयाने ❁ मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने ॥
भक्ति करत विनुयतन प्रयासा ❁ संसृति मूल अविद्यानाशा ॥

१ देवता । २ दरवाजा । ३ पवन । ४ जन्ममरणके दुःख । ५ कठिन । ६ विघ्न ।
७ तरवारि-दुधारा । ८ विनाचाहे ।

भोजन करिय तृप्ति हित लागी ❋ जिमि सो अशन पचवै जठरागी ॥
अस हरिभक्ति सुगम सुखदाई ❋ को अस मूढ न जाहि सुहाई ॥

दोहा–सेवक सेव्यभाव बिनु, भव न तरिय उरगारि ॥
भजहु रामपद पंकज, अस सिद्धान्त बिचारि १८८॥
जो चेतन कहँ जडकरै, जडहि करै चैतन्य ॥
अस समर्थ रघुनाथ कहँ, भजहिं जीव ते धन्य १८९॥

कहेउँ ज्ञान सिद्धांत बुझाई ❋ सुनहु भक्ति मणिकी प्रभुताई ॥
रामभक्ति चिन्तामणि सुन्दर ❋ बसै गरुड जाके उर अन्तर ॥
परमप्रकाश रूप दिन राती ❋ नहिं कछु चहिय दिया घृतबाती ॥
मोह दरिद्र निकट नहिं आवहिं ❋ लोभ बात नहिं ताहि बुझावहिं॥
प्रबल अविद्यातम मिटि जाई ❋ हारत सकल शलभ समुदाई ॥
खलकामादि निकटनहिंजाहीं ❋ बसै भक्ति मणिजेहिउरमाहीं ॥
गरल सुधा सम अरि हित होई ❋ तेहि मणि बिनुसुखपाव नकोई ॥
व्यापहिं मानस रोग न भारी ❋ जेहिके वश सब जीव दुखारी ॥
राम भक्ति मणि उर बस जाके ❋ दुख लवलेश न स्वप्नेहुँ ताके ॥
चतुर शिरोमणि ते जगमाहीं ❋ जे मणि लागि सुयतन कराहीं ॥
सो मणि यदपि प्रगट जग अहई ❋ रामकृपा बिनु कोउ न लहई ॥
सुगम उपाइ पाइबे केरे ❋ नर हत भाग्य देत भटमेरे ॥
पावन पर्वत वेद पुराना ❋ रामकथा रुचिराकर नाना ॥
मर्म्मी सज्जन सुमति कुदारी ❋ ज्ञान विराग नयन उरगारी ॥
भाव सहित जो खोजै प्रानी ❋ पावभक्ति मणि सब सुखखानी ॥
मोरे मन प्रभु अस विश्वासा ❋ रामते अधिक रामकर दासा ॥
रामसिन्धु घन सज्जन धीरा ❋ चन्दन तरु हरिसन्त समीरा ॥
सब कर फल हरि भक्ति सुहाई ❋ सो बिनु सन्त न काहू पाई ॥
अस विचारि जोकरुसतसंगा ❋ रामभक्ति तेहि सुलभ विहंगा ॥

---

१ भोजन । २ जीव । ३ श्रीरामचन्द्र । ४ विष । ५ अमृत । ६ वैरी । ७ खानि ।
८ जे वेदपुराण रूप पर्व्वतके अंतर मणि रूप भक्तिको कहैं । ९ पवन ।

दोहा–ब्रह्म पयोनिधि मन्दर, ज्ञान सन्त सुर आहि ॥
कथा सुधा मथि काढहीं, भक्ति मधुरता जाहि ॥ १९० ॥
बिरति चर्म असि ज्ञान मद, लोभ मोह रिपु मारि ॥
जय पाई सोइ हरि भगति, देख खगेश बिचारि ॥ १९१ ॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ ❀ जो कृपालु मोहिं ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी ❀ सप्तप्रश्न मम कहहु बखानी ॥
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा ❀ सबते दुर्लभ कवन शरीरा ॥
बड़दुख कवन कवन सुख भारी ❀ सो संक्षेपहि कहहु बिचारी ॥
सन्त असन्त मर्म तुम जानहु ❀ तिन्हकर सहज स्वभाव बखानहु ॥
कवन पुण्य श्रुतिबिदित बिशाला ❀ कहहु कवन अघ परमकराला ॥
मानस रोग कहहु सब गाई ❀ तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहु सादर अति प्रीती ❀ मैं संक्षेप कहौं यह नीती ॥
नरसमान नहिं कवनिहु देही ❀ जीव चराचर याचत जेही ॥
नरकस्वर्ग अपवर्ग निसेनी ❀ ज्ञान बिराग भक्ति सुख देनी ॥
सो तनु धरि हरि भजहिं न जेनर ❀ होंय विषयरत मन्दमन्द तर ॥
कंचन कांच बदलि शठ लेहीं ❀ करते डारि परसमणि देहीं ॥
नहिं दरिद्रसम दुख जग माहीं ❀ सन्तमिलन सम सुख कछु नाहीं ॥
परउपकार वचन मनकाया ❀ सन्त सहज स्वभाव खगराया ॥
सन्त सहहिं दुख परहित लागी ❀ परदुख हेतु असन्त अभागी ॥
भूर्जतरुसम सन्त कृपाला ❀ परहित सह नित बिपतिबिशाला ॥
शणइव खल परबंधन करहीं ❀ खाल कढाइ बिपतिसहि मरहीं ॥
खल बिनुस्वारथ पर अपकारी ❀ अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
परसम्पदा बिनाशि नशाहीं ❀ जिमिकृषिहतिहिमउपलबिलाहीं ॥
दुष्ट हृदय जग आरति हेतू ❀ यथा प्रसिद्ध अधम ग्रहकेतू ॥
सन्त हृदय सन्तत सुखकारी ❀ बिश्व सुखद जिमि इंदु तमारी ॥

---

१ वैराग्य । २ ढाल । ३ तरवारि । ४ भोजपत्र । ५ सर्प । ६ मूस । ७ खेती ।
८ पाला । ९ मन । १० चन्द्र । ११ सूर्य ।

परमधर्म श्रुति विदित अहिंसा ❋ परनिंदासम अघनगरीशा ॥
हरि गुरु निन्दक दादुर होई ❋ जन्म सहस्र पाव तनु सोई ॥
द्विजनिंदक बहुनरक भोग करि ❋ जग जन्मैं वायस शरीर धरि ॥
सुर श्रुतिनिंदक जो अभिमानी ❋ रौरव नरक परहिं ते प्राणी ॥
होहिं उलूक सन्त निन्दारत ❋ मोह निशाप्रिय ज्ञान भानुगत ॥
सबकी निन्दा जे जड करहीं ❋ ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
सुनहु तात अब मानस रोगा ❋ जेहि ते दुखपावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल व्याधिन कर मूला ❋ तेहिते पुनि उपजहिं बहु शूला ॥
काम वात कफ लोभ अपारा ❋ क्रोध पित्त नित छातीजारा ॥
प्रीति करहिं जो तीनों भाई ❋ उपजे सन्निपात दुखदाई ॥
विषय मनोरथ दुर्गम नाना ❋ ते सब शूल नाम कोजाना ॥
ममता दद्रु कण्डु इरषाई ❋ हर्ष विषाद गहर बहुताई ॥
परसुख देख जरइ सो छई ❋ कुष्ठ दुष्टता मन कुटिलई ॥
अहंकार जो दुखदडहरुआ ❋ दम्भ कपट मद मान नहरुआ ॥
तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी ❋ त्रिविध ईषणा तरुण तिजारी ॥
युगं विधिज्वर मत्सर अविवेका ❋ कहँलगि कहौं कुरोग अनेका ॥

दोहा–एक व्याधि ते नर मरहिं, ये असाध्य बहु व्याधि ॥
सन्तत पीडहिं जीव कहँ, सोकिमि लहहिं समाधि १९२॥
नेम धर्म आचार तप, ज्ञान यज्ञ जप दान ॥
भेषंज पुनि कोटिन्ह करहिं, रुज न जाहिं हरियान १९३॥

यहिविधि सकलजीव जगरोगी ❋ शोक हर्ष भय प्रीति वियोगी ॥
मानस रोग कछुक मैं गाये ❋ हैं सबके लखि विरलन्हि पाये ॥
जाने ते छीजहिं कछु पापी ❋ नाश न पावहिं जंने परितापी ॥
विषय कुपन्थ पाइ अंकुरे ❋ मुनिन्ह हृदय कानर बापुरे ॥
राम कृपा नाशहिं सब रोगा ❋ जो इहि भांति बनै संयोगा ॥

---

१ किसीजीवकोदुःखनपहुंचाना । २ घोरपाप । ३ मेढक । ४ कौवा । ५ घूघूपक्षी । ६ दुःख । ७ खाज । ८ जलन्धर-त्रिमदा । ९ द्वन्द्वजर । १० ओषधी । ११ रोग । १२ प्राणी ।

सद्गुरु वैद्य वचन विश्वासा ❋ संयम यह न विषयकी आशा ॥
रघुपति भक्ति सजीवन मूरी ❋ अनूपान श्रद्धा मति रूरी ॥
इहिविधि भले कुरोग नशाहीं ❋ नाहिं तो यतन कोटि नहिं जाहीं ॥
जानिय तबमन विरुज गोसांई ❋ जब उरबल विराग अधिकाई ॥
सुमति क्षुधा बाढे नितनई ❋ विषय आश दुर्बलता गई ॥
विमल ज्ञान जल पाइ अन्हाई ❋ तब रहु रामभक्ति उरछाई ॥
शिव अज शुक सनकादिक नारद ❋ जो मुनि ब्रह्मविचार विशारद ॥
सबकर मत खगनायक एहा ❋ करिय रामपद पंकज नेहा ॥
श्रुति पुराण सद्ग्रंथ कहाहीं ❋ रघुपति भक्ति विना सुखनाहीं ॥
कमठपीठ जामहिं बरु बारा ❋ बंध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
फूलहि नभ बरु बहुविधि फूला ❋ जीवन लह सुख प्रभुप्रतिकूला ॥
तृषा जाइ बरु मृग जल पाना ❋ बरु जामहिं शश शीश वृषाना ॥
अन्धकार बरु रबिहि नशावै ❋ राम विमुख सुख जीव नपावै ॥
हिमंते प्रकट अनल बरु होई ❋ विमुख राम सुख पाव न कोई ॥

दोहा–बाँरि मथे बरु होइ घृत, सिकताते बरु तेल ॥
बिनु हरिभजन न भव तरिय, यह सिद्धांत अपेल १९४॥
मशकहि करहिं विरंचि प्रभु, अजाहिं मशक ते हीन ॥
अस बिचारि तजि संशय, रामहिं भजहिं प्रबीन॥१९५॥

श्लोक–"विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ॥
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरंति ते" ॥ ५॥

कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा ❋ व्यास समास स्वमति अनुरूपा ॥
श्रुति सिद्धांत इहै उरगारी ❋ राम भजिय सबकाम बिसारी ॥
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही ❋ मोसे शठपर ममता जाही ॥
तुम विज्ञान रूप नहिं मोहा ❋ कीन्ह नाथ मोपर अति छोहा ॥
पूंछेउ राम कथा अति पावनि ❋ शुक सनकादि शम्भुमनभावनि ॥

---

१ निरोग । २ प्रवीण । ३ कछुआ । ४ सींग । ५ पाला । ६ अग्नि । ७ पानी ।
८ बालू । ९ विस्तारपूर्वक । १० थोरेमें ।

सतसंगति दुर्लभ संसारा ❋ निमिष दण्ड भरि एको बारा ॥
देखु गरुड निज हृदय बिचारी ❋ मैं रघुवीर चरण अधिकारी ॥
शकुनाधम[1] सबभांति अपावन ❋ प्रभुमोहिंकीन्ह बिदित जगपावन॥

दोहा–आजु धन्य मैं धन्य अति, यद्यपि सबबिधि हीन ॥
निज जन जानि राम मोहिं, संत समागमदीन ॥ १९६ ॥
नाथ यथामति भाषेउँ, राखेउँ कछु नहिं गोय ॥
चरित सिन्धु रघुनाथ कर, थाह कि पावै कोय ॥ १९७ ॥

सुमिरि रामके गुणगण नाना ❋ पुनिपुनि हर्ष भुशुण्ड सुजाना ॥
महिमा निगम नेति कहि गाई ❋ अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
शिव अज पूज्य चरण रघुराई ❋ मोपर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस स्वभाव कहुँ सुनौं न देखौं ❋ केहि खगेश रघुपति सम लेखौं ॥
साधक[2] सिद्ध[3] विमुक्त उदासी ❋ कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी ॥
योगी[4] शूर सुतापस ज्ञानी ❋ धर्म निरत पण्डित बिज्ञानी ॥
तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी ❋ राम नमामि[5] नमामि नमामी ॥
शरण गये मोसेउ अघराशी ❋ होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी ॥

दोहा–जासु नाम भव भेषज[7], हरण घोर त्रयशूल[8] ॥
सो कृपालु मोहिं तोहिं पर, सदा रहहिं अनुकूल[9] ॥ १९८ ॥
सुनि भुशुण्डके बचनबर, देखि राम पद नेह ॥
बोले गरुड सप्रेम अति, बिगत मोह सन्देह ॥ १९९ ॥

मैं कृतकृत्य[10] भयउँ तव बानी ❋ सुनि रघुवीर भक्ति रस सानी ॥
रामचरण नूतन[11] रति भई ❋ माया जनित[12] विपति सबगई ॥
मोहजलधि[13] बोहित[14] तुम भयऊ ❋ मोकहँ नाथ बिबिध सुख दयऊ ॥
मोसन होइ न प्रत्युपकारा ❋ बन्दौं तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी ❋ तुम सम तातन कोउ बडभागी ॥

---

१ पक्षियोंमेंनीच । २ जेमुक्तिकीसाधनाकरतेहैं मुमुक्षु । ३ सम्पूर्ण सिद्धी जिनके हस्तामलकहैं । ४ त्रिकालदर्शी । ५ जिनके अष्टांगयोगसिद्धहै । ६ नमस्कार करताहूं । ७ औषध । ८ काम क्रोध लोभ । ९ प्रसन्न । १० कृतार्थ । ११ नवीन । १२ उत्पन्न । १३ मोहरूपीसमुद्र । १४ जहाज ।

संत बिटप सरिता गिरि धरणी ❀ परहित हेतु इन्हनकी करणी ॥
सन्त हृदय नवनीत समाना ❀ कहा कविन पै कहे न जाना ॥
निज परिताप द्रवै नवनीता ❀ परदुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता ॥
जीवनजन्म सफल मम भयऊ ❀ तवप्रसाद सब संशय गयऊ ॥
जानेहु मोहिं सदा निज किंकर ❀ पुनि पुनि उमा कहैं सुविहंगवर ॥

दोहा—तासु चरण शिरनाइ करि, प्रेम सहित मतिधीर ॥
गरुड गयो बैकुंठ तब, हृदय राखि रघुवीर ॥ २०० ॥
गिरिजा संत समागम, सम न लाभ कछु आन ॥
बिनु हरिकृपा होइ नहिं, गावहिं वेद पुरान ॥ २०१ ॥

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा ❀ सुनत श्रवण छूटहिं भवपाँसा ॥
प्रणत कलपतरु करुणापुंजा ❀ उपजे प्रीति रामपद कंजा ॥
मन वच कर्म जनित अघ जाई ❀ सुनै जो कथा श्रवण मनलाई ॥
तीर्थाटन साधन समुदाई ❀ योगविराग ज्ञान निपुणाई ॥
नाना कर्म धर्म व्रत दाना ❀ संयम नियम यज्ञ जपनाना ॥
भूतदया द्विज गुरु सेवकाई ❀ विद्या विनय विवेक बडाई ॥
जहँ लगि साधन वेद बखानी ❀ सब कर फल हरिभक्ति भवानी ॥
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुतिगाई ❀ राम कृपा काहू यक पाई ॥

दोहा—मुनिदुर्लभ हरि भक्ति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास ॥
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि बिश्वास ॥ २०२ ॥

सोइ सर्वज्ञ गुणी सब ज्ञाता ❀ सोइ महिमंडन[11] पण्डित दाता ॥
धर्म परायण सोइ कुलत्राता[12] ❀ रामचरण जाकर मनराता ॥
नीतिनिपुण सोइ परम सयाना ❀ श्रुति सिद्धांत नीक तेइ जाना ॥
सोइ कवि कोविद[13] सोइ रणधीरा ❀ जो छल छांडि भजै रघुवीरा ॥
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी ❀ धन्य सो देश जहाँ सुरसरि ॥
धन्य सो भूप[15] नीति जो करई ❀ धन्य सो द्विज[16] निजधर्म न टरई ॥

---

१ वृक्ष । २ नदियां । ३ पर्व्वत । ४ माखन । ५ सेवक । ६ सतसंग । ७ बंधन ।
८ तीर्थोंकाफिरना । ९ चराचरजीवमेंदया । १० नम्रता । ११ पृथ्वीको भूषण ।
१२ रक्षक । १३ पण्डित । १४ श्रीगंगाजी । १५ राजा । १६ ब्राह्मण ।

सोधन धन्य प्रथमगति जाकी ❋ धन्य पुण्य रतमति सोइपाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा ❋ धन्य जन्म द्विज भक्ति अभंगा ॥

दोहा—सो कुल धन्य उमा सुन, जगतपूज्य सु पुनीत ॥
श्रीरघुबीर परायण, जेहि नर उपज बिनीत ॥ २०३ ॥

मतिअनुरूप कथा मैं भाषी ❋ यद्यपि प्रथम गुप्त करि राषी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई ❋ तब मैं रघुपति कथा सुनाई ॥
यह नाहिं कहिय शठहिं हठशीलहिं ❋ जो मनलाइ न सुन हरिलीलहिं ॥
कहिय न लोभिहिं क्रोधिहिं कामिहिं ❋ जो न भजै सचराचर स्वामिहिं ॥
द्विजद्रोहिहिं न सुनाइय कबहूं ❋ सुरपतिसरिस होइ नृप जबहूं ॥
रामकथा के ते अधिकारी ❋ जिनके सतसंगति अतिप्यारी ॥
गुरुपदप्रीति नीति रतजोई ❋ द्विज सेवक अधिकारी सोई ॥
ताकहँ यह विशेष सुखदाई ❋ जाहि परमप्रिय श्रीरघुराई ॥

दोहा—रामचरणरति जो चहै, अथवा पद निर्वान ॥
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवणपुट पान ॥ २०४ ॥

राम कथा गिरिजा मैं वरणी ❋ कलिमलशमन मनोमलहरणी ॥
संसृत रोग सजीवन मूरी ❋ राम कथा गावहिं श्रुति सूरी ॥
इहि महँ रुचिर सप्त सोपाना ❋ रघुपति भक्ति केर पथ नाना ॥
अति हरिकृपा जाहि पर होई ❋ पाँव देइ यहि मारग सोई ॥
मन कामना सिद्धि नर पावै ❋ जो यह कथा कपट तजि गावै ॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं ❋ ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सबकथा हृदय अतिभाई ❋ गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथ कृपा मम गतसंदेहा ❋ रामचरण उपजा नव नेहा ॥

दोहा—मैं कृतकृत्य भयउँ अब, तव प्रसाद विश्वेश ॥
उपजी रामभक्ति दृढ, बीते सकल कलेश ॥ २०५ ॥

यह शुभ शंभु उमा सम्वादा ❋ सुखद सदा अरु शमन विषादा ॥
भव भंजन गंजन सन्देहा ❋ जनरंजन सज्जन प्रिय येहा ॥

---

१ नम्र सुशिक्षित । २ इंद्र । ३ भक्ति । ४ ज्ञानकरके कैवल्यमुक्ति । ५ सप्तकाण्ड सीढी । ६ विचारतेहैं । ७ नाश ।

राम उपासक जे जगमाहीं ❋ इहसम प्रिय तिनकहुँ कछु नाहीं ॥
रघुपति कृपा यथा मति गावा ❋ मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
इहि कलिकाल नसाधन दूजा ❋ योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं ❋ सन्तत सुनिय रामगुणग्रामहिं ॥
जासु पतित पावन बडवाना ❋ गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना ॥
ताहि भजिय तजि मनकुटिलाई ❋ राम भजे केहि गति नहिं पाई ॥

छं०—पाई न गतिकेहिपतितपावन रामभजसुनुशठमना ॥
गणिका अजामिल गृध्र व्याध गजादिखलतारेघना ॥
आभीर[1] यमनकिरातखलश्वपचादिअतिअघरूप जे ॥
कहि नाम बारेकतेपि पावन होत राम नमामि ते ॥ ३१ ॥
रघुबंश भूषण चरितयह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ॥
कलिमल मनोमल धोइबिनु श्रम रामधाम सिधावहीं ॥
शत पंच चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं ॥
दारुण अविद्या[2] पंचजनितबिकारश्रीरघुपतिहरैं ॥ ३२ ॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ॥
सो एक राम अकाम हित निर्वाणपद[3] सम आनको ॥
जाकी कृपा लवलेशते मतिमंद तुलसी दासहू ॥
पायो परम बिश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं ॥ ३३ ॥
दोहा—मोसम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर ॥
अस बिचारि रघुबंशमणि, हरहुबिषम भवपीर ॥ २०६ ॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमिदाम ॥
ऐसे होइके लागहू, तुलसीके मन राम ॥ २०७ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनाम ७ सप्तमःसोपानः उत्तरकाण्डःसमाप्तः ॥

---

१ अहीरवजके । २ तमअविद्या, मोहअविद्या, महामोहअविद्या, तामिस्रअविद्या, अन्धतामिस्रअविद्या । ३ निर्वाणकहीमोक्ष सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य, सार्ष्टि ।

अथ आरती श्रीरामायणजीकी ॥

आरतिश्रीरामायणजीकी॥ कीरतिकलितललितसियपीकी टेक॥ गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद॥बाल्मीकि विज्ञानविशारद॥ शुक सनकादि शेष अरु शारद॥ बरणि पवनसुत कीरति नीकी ॥ १ ॥ संतत गावत शम्भु भवानी॥ औघटसंभव मुनिवर ज्ञानी॥ ब्यास आदि कवि पुंगबखानी ॥ कागभुशुण्डि गरुडके हियकी॥ २॥ चारिउ वेद पुराणअष्टदश॥ छइउ शास्त्र सब ग्रन्थनिको रस ॥ तन मन धन संतनको सर्बस॥सारअंश सम्मत सबहीकी॥३॥ कलिमल हरणि बिषयरस फीकी॥ सुभगशृंगार मुक्ति युवतीकी॥हरणिरोगभवभूरि अमीकी॥तात मात सबबिधि तुलसीकी४

श्लोक—यत्पूर्वं प्रभुणाकृतं सुकविना श्रीशम्भुनादुर्गमं श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यैव रामायणम् ॥ मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथामानसम् ॥ १ ॥ पुण्यम्पापहरं सदाशिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं मायामोहभवापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्॥ श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये॥ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्तिनोमानवाः॥ ॥ २ ॥ यःपृथ्वीभरवारणायदिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः संजातःपृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः ॥ निश्चक्रंहतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यंस्थिरां कीर्तिम्पापहरांविधायजगतां तं जानकीशं भजे ॥ ३ ॥

इदं तुलसीकृतरामायणे उत्तरकाण्डं श्रीकृष्णदासात्मजेन गंगाविष्णुना स्वकीये "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रायन्त्रालयेङ्कितम्
शकाब्दाः १८१५ संवत् १९५०

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत-

रामाश्वमेध-

लवकुशकाण्डप्रारम्भः।

वही

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

इन्होंने

निज

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर"

नामक

मुद्रायन्त्रालयमें छापकर

प्रसिद्ध किया।

कल्याण—(मुम्बई)

संवत् १९५० शके १८१५.

श्रीः।

अथ रामाश्वमेधलवकुशकाण्डप्रारंभः ॥
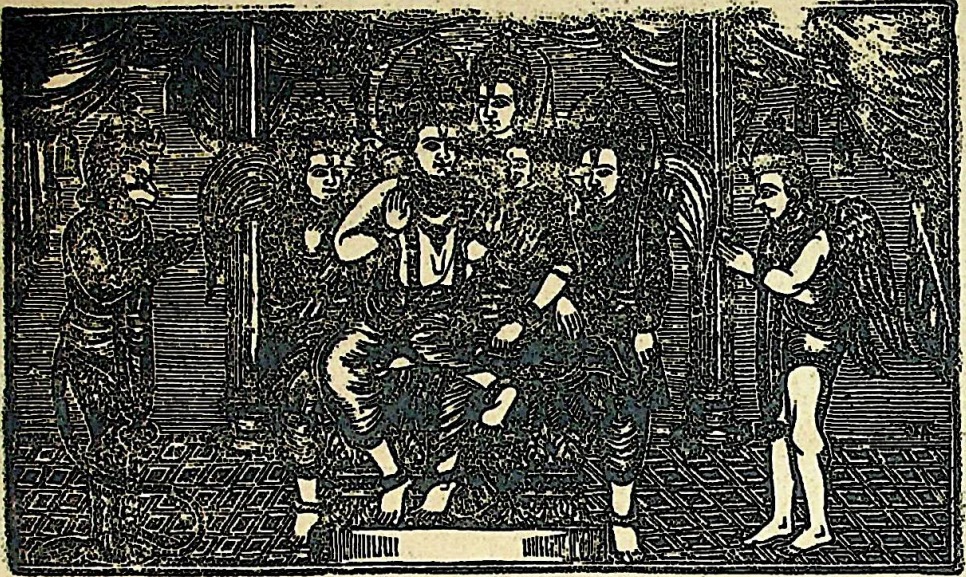
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

दोहा–सुनि भुशुंडके वचन मृदु, देख राम पदनेह॥
बोले प्रेम सहित गिरा, गरुड विगत सन्देह ॥ १ ॥

छं० नमामीशघनज्ञानरघुवंशहासं, सदानन्ददातासुविद्याप्रकाशं
विशद शैलनीलं कृपालुंनिवासं, पादाब्जवैसेवितंपापनाशं ॥
गतंमोहमारादिशूलंविशालं, हरततापसंतापभवशोकसालं
नमोकाकपादंसुबुद्धिंसुशीलं, सदाभक्तवात्सल्यवासाद्रिनीलं
प्रसन्नाननंनीलवदनंसुश्यामं, नमोपाहिशरणंसुरामाभिरामं
भाख्योउमानाथयशनाथनामंदेख्योकृपासिंधुकोरामधामं
इक्षावपुषकाककल्याणकारी, जिन्हैंएकआशाअयोध्याविहारी
भागीसकलवासनात्रासभारं, दयानाथकीन्होअविद्याप्रहारं
सगुणब्रह्मलीलाधराभारनाशं, सुनोरामअवतारमोहंविनाशं
जान्योदनुजनाशनंविश्ववासं, चिदामोहसंदोहभक्तिर्विलासं
अचलज्ञानगोतीतमंत्रंविशालं, पायोकृपानाथनिजभाग्यभालं
तषष्टरोगंअयोगंदयालं, नमोपाहिशरणंनमामीकृपालं १॥

दोहा—सुरसरि सम पावन भयो, नाथ हृदय अबमोर ॥
जन्म जन्म छूटै नहीं, नाथ पदाम्बुज तोर ॥ २ ॥

सुने सकल गुण गण प्रभुकेरे ❁ पूजे नाथ मनोरथ मेरे ॥
तव प्रसाद बायस कुलनाथा ❁ हृदय बसहिं अब प्रभुगुणगाथा ॥
मनसन्तोष कितहुँ अघ नाहीं ❁ यथा उदधि सरिता अव जाहीं ॥
पशु पक्षी जड जंगम जाती ❁ चर अरु अचर बनै किहि भांती ॥
सकल अवध वासी सुखधामा ❁ लिये संग सादर श्री रामा ॥
तजितनु अवध गये प्रभुदेहा ❁ इहि मुनिनाथ परम सन्देहा ॥
अब प्रभु मोहिं सब कहौ बुझाई ❁ जानि पिता मैं कीन्ह ढिठाई ॥
इह इतिहास पुनीत कृपाला ❁ जिमिमखकीन्ह राम महिपाला ॥

दोहा—असकहि गदगद वचनमृदु, पुलकावली शरीर ॥
सुनि सप्रेम हर्षे विहँग, वायसमति अति धीर ॥ ३ ॥

धन्य धन्य तुम धनि खगराया ❁ कीन्हीं अमित मोहिं पर दाया ॥
राम कृपा तुम्हरे मन माहीं ❁ संशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥
अति प्रियवचन रसज्ञ तुम्हारे ❁ लागत नाथ मोहिं अति प्यारे ॥
अब प्रभुकथा विशद विस्तारी ❁ सकल सुनावहु मम हितकारी ॥
तव मन प्रीति देखि खगराया ❁ मिटे अमंगल कोटिहु माया ॥
सुनि अब राम रहस्य अनूपा ❁ चरित पुनीत अवधपुर भूपा ॥
अज अद्वैत अमल अविनाशी ❁ सहित सकल कलिमलकी फांसी ॥
नो सहस्र नौसै कम वासो ❁ कृत चरित रह पुर जगदासी ॥

दोहा—विधिवर वचन सँभारि उर, राजत करुणाऐन ॥
युगल जोरि शोभा निरखि, लजित कोटि शतमैन ॥ ४ ॥

अनुजसचिव प्रभु प्रजा बुलाये ❁ गुरु गृह सादर मुनि सब आये ॥
मकर मास रवि पर्व सुहावा ❁ विदा माँगि प्रभु पद शिरनावा ॥
काशी क्षेत्र धर्म जग जाना ❁ चले सकल सजि वाहन नाना ॥
चतुरंगिनी अनी सब साथा ❁ इहि विधि चले राम रघुनाथा ॥
बीच वासकर शिव पुर आये ❁ सादर पुरिहिं शीश सब ...

आये सुरसरि कीन्ह प्रणामा ❀ अभय अनंत पाय विश्रामा ॥
महिसुर उडि जाती संन्यासी ❀ पूजे कृपासिंधु सुखरासी ॥
दियेदान बहु वरणि नजाई ❀ धनद कुबेर सुरेश लजाई ॥

दोहा—रहेउ प्रभूइमि विपुलदिन, सुखीकिये मुनिवृन्द ॥
आये पुनि निजनगरमहँ, रविकुल कैरवचन्द ॥५॥

प्रतिदिन अवध अनंत उछाहू ❀ दानदेहिं प्रतिदिन नरनाहू ॥
झूंठ प्रपंच न दुखद नकाहू ❀ व्यापन कबहुं सुना खगनाहू ॥
सुनहिं जहाँ तहाँ वेद पुराना ❀ दूसर धर्म न काहू जाना ॥
दिन दिन प्रीति देखि भगवाना ❀ अमित अनंत सकल पुर जाना ॥
शत संवत परमाण हमारा ❀ रहेउ शोच वश राम उदारा ॥
अश्वमेध मख करौं सुहावा ❀ गाइ तरहिं नर भव दुखदावा ॥
पुनि निज धामहिं तुरत सिधाये ❀ विधिवर वचन विलंब नलाये ॥
प्रातजाय गुरुभवन सप्रीती ❀ कहौं करहु सब सुन्दर रीती ॥

दोहा—अस विचार उरराखिकर, कृपासिंधुमतिधीर ॥
करतचरित नाना अमित, हरण शोक भवभीर ॥६॥

कहहुँ सुनहुँ रघुपति प्रभुताई ❀ जो पुराण श्रुति नारदगाई ॥
राम राज महिमा अतिभारी ❀ सो वरणत मनकवि कदरारी ॥
मैं मतिमन्द कहौं किहि भाँती ❀ सोहै हंसकि बगुला पाँती ॥
सुनिय न पुहमि कतहुँ अघकाना ❀ पढहिं चतुरनर वेद पुराना ॥
गावहिं प्रभुगुण यण भयहारी ❀ निन्दहि अमर लोक नरनारी ॥
आज्ञा मातपिता गुरु करही ❀ तप मख दान छीन हरि भजही॥
प्रजा अनंद राज प्रभुकेरे ❀ मानहु शक्र कुबेर घनेरे ॥
राजत सब रनिवास अनंदा ❀ सुखी चकोर लखत जिमिचंदा ॥

छंद—जिमि शरद चंदचकोर देखत मातु प्रभुमुख जोहहीं॥
तिमि भरत लक्ष्मण शत्रुसूदनभेपलखि मनमोहहीं ॥
निजतात प्रभुचौगान खेलन साथलै चतुरंगिनी ॥
सबगये भूतल भारटारन संग बहु मरकट अनी ॥

चढि बाजि गजरथ नगर देखहिं अमित पुर घर आवहीं ॥
सारंग हेम विलोकि विनुपद त्राणहीं प्रभु धावहीं ॥
कुसुम कंटक अंग लागत मोरि मुख मुसकावनी ॥
सो शत्रु सन्मुखसही तीक्षण शक्ति असरिपुदाहनी ॥
निशिनींद नाशरु भूवसादर वर्ष चौदहसो रहे ॥
निजभक्त हेत समेत लक्ष्मण प्रौढरिपुमारे सहे ॥२॥

दोहा–रघुवर राज विराजअति, सकल सबनिअघभाग ॥
विचरहिं मुनिकानन विपुल, प्रीतिसहित अनुराग॥७॥

महौ सुहावनि कानन चारू ❋ खगमृगइकसँग करहिं विहारू ॥
वैरन सुनिय रामके राजा ❋ मिलिविचरहिं वन सकल समाजा॥
नाना ग्रन्थ स्मृति समुदाई ❋ गायन सकहिं राम प्रभुताई ॥
सादर कोटि कोटि अहिईशा ❋ अगणित चतुरानन गवरीशा ॥
जहँ लगि जग कोविद कविराई ❋ राम राज गुण सकहिं न गाई ॥
असित आहि कज्जलगिरिभूरी ❋ पात्र पयोनिधि मसि भरि पूरी ॥
करहिं लेखनी सुरतरु डारी ❋ सप्तद्वीप महि पत्र विचारी ॥
बाणी हरि हर विधि अरु शेषा ❋ सहसकल्प शत लिखहिंविशेषा ॥

सोरठा–तदपि न पावहिंपार, रामराज कौतुक अमित ॥
सुनि अब चरितअपार, जसखगपति आगे भयउ॥१॥

राजत राम सभासह भ्राता ❋ तहँ आयो एक द्विजविलखाता ॥
कटुक वचन मुख कहत पुकारा ❋ हंस वंश बूड्यो संसारा ॥
रघुदिलीप अरु सगर नरेशा ❋ अमित प्रभाव भये अवधेशा ॥
इह अयुक्त लखि त्यागेउ प्राना ❋ अंतर्यामी प्रभु सब जाना ॥
नरलीला कर राम कृपाला ❋ लगे विचार करन तेहिकाला ॥
कारण कवन मृतक सुत भयऊ ❋ द्विजदुख देख विकल प्रभुभयऊ ॥
भ्रम चित देख गगन भई बानी ❋ द्विजसुत वृत सुनु सारँगपानी ॥
विंध्याचल गँभीर वन जाहीं ❋ दुइ सुत मरण हेतु नर ना

छंद-इहिहेतु द्विजसुतमृतकसुनिरथसाजिप्रभुआतुरथले
सोइ परमशैलविलोकिपावन मुदितमन सन्मुखचले ॥
शुचिरुचिर आश्रमवेदिका तहँदेखि मनिमन भावनी ॥
बहुबागशुभग तडाग गुंजत मंजु मधुकर गावनी ॥
पिक हंस मोर चकोर चातक कीर शोभा पावनी ॥
वनविविध कोल किरात सादर खोहकीन्ही तहँघनी ॥
तबक्रोध संयुतविशिष छांडेउ माथलै तबशरगयो ॥
वरभक्ति आरतजानतेहि दियो आपतीरथव्रतकियो॥३
दोहा-द्विजवर बालक मृतकसो, उठिबैठ्यो हरषाय ॥
आयेपुर रघुपतिभगति, भयभंजन सुखदाय ॥ ८ ॥

उठ्यो समय तिहिं श्वान पुकारी ❋ पाहि पाहि प्रणतारति हारी ॥
विनु अघनाथ कृपालु खरारी ❋ हतौं मोहिं द्विज अति बलभारी ॥
सुनिके श्वान वचन तबकाना ❋ तिहि परदूत पठेउ भगवाना ॥
आन्यों विप्र बोलि तेहि काला ❋ कहे वचन तब दीनदयाला ॥
हन्यो श्वान सो किहिअपराधा ❋ सुनु सर्वज्ञ नकछु कृतबाधा ॥
क्रोधविवसप्रभु विन परिचारा ❋ नाथ प्रबल मैं इहिकोमारा ॥
कहौं दंड मुनि सकल समाजा ❋ विप्र अदंडदेव रघुराजा ॥
उचित दंड तस देहु बताई ❋ कहौं श्वान जस तुम्हें सुहाई ॥
दोहा-कीजिय यह माठापती, ममभावन सुख ऐन ॥
तुरत मँगायो पीतपट, गजकुंडल प्रभु देन ॥ ९ ॥

पूजिचरण तब विप्र पठायो ❋ दुंदुभिबाजत मठसो आयो ॥
कहैं परस्पर सब नर नारी ❋ देख्यो श्वान दंड अतिभारी ॥
कोन्ह सकल प्रभु सोई दीना ❋ जो कछुश्वान कही सोकीन्हा ॥
तासु अनंद देख नरनारी ❋ कहो दंड फल कवन खरारी ॥
पूछहुश्वान कहब सो बाता ❋ पूरब सुनि प्रसंग सुखदाता ॥
[illegible]शी विप्रवंश मैं भयऊ ❋ शिवसेवा सादर चितदयऊ ॥
[illegible]इतु होमहि कीन्हसप्रीती ❋ घृतनरवर हौं नाथहि रीती ॥

दोहा–छिपते दिन भोजनकरत, खायगयो सो भाग ॥
विविध योनि भरतो फिर्‌यो, मिट्योन सो अनुराग ॥ १० ॥

सजि सबही शिरनाय बहोरी ❋ चलाइवान मनत्रास नथोरी ॥
उठि मध्याह्न कीन्ह रघुनंदन ❋ पूजिपुरारि भक्त उरचंदन ॥
भोजन शयन जगतपति कीन्ही ❋ पुनिसबहीकहँ आयसुदीन्ही ॥
रह्योदिवस जब घटिका चारी ❋ जुरी सभातब आयखरारी ॥
सुनिपुराण प्रभु अनुज समेता ❋ संध्याभई दान शुभदेता ॥
भवनचले प्रभु आयसु पाई ❋ सबही संध्याकीन्ह सुहाई ॥
दूतअवध निशिवासर धावहिं ❋ संध्या कहँ सब खबरसुनावहिं ॥
पृथक्‌ पृथक्‌ सुनि चरवरवानी ❋ बोलन एकसो सुनहुँभवानी ॥

छंद–कछुकह्यों नहिं तेहिपूछि सादर वचन वेगिन आवही ॥
इक रजक पत्निहिं कहत डाटत व्यंग्य वचन सुनावही ॥
सुनिवचन कृपानिधान चरके मध्यउरराखत भये ॥
निशि स्वप्नदेखत तपत पुनि उठिजागिदारुणदुखछये ॥ ४ ॥

दोहा–बीती अवधिवसानयुग, कीन्ह विचार कृपाल ॥
इक सहस्रपितु राजशुचि, करहुँ सत्यइहिकाल ॥ ११ ॥

त्यागहुं जनकसुता मनमाहीं ❋ राखहुं श्रुति पथधर्म जनाहीं ॥
देमन ठीक सीयपहँ आये ❋ सादर बोले वचन सुहाये ॥
निज छाया धरि अत्रविनीता ❋ रहहुजाय निजधाम पुनीता ॥
प्रभुपद वंदि गई नभसोई ❋ जीव चराचर लखीनकोई ॥
तिहिसनप्रभु असकहा बुझाई ❋ मनभावत मांगहु सुखदाई ॥
नाथ साथ मुनिधाम विहाई ❋ आयउ तुम गृहमन सकुचाई ॥
मुनितियभूषण वसन सुहाये ❋ पहिराये प्रभु जो मनभाये ॥
हँसिकह कृपानिकेत सकारे ❋ पूजेमन अभिलाष तुम्हारे ॥

दोहा–होतप्रातजब जगतपति, जागे रमानिवास ॥
याचक जनलामे मुदित, शोभित कंज प्रकाश ॥ १२ ॥

भरत लषण रिपुदमन समेता ❋ आये जहँ प्रभु कृपानिके[illegible]

कीन्हप्रणाम माथ महिलाई ❋ बोलेनहिं कछु श्रीरघुराई ॥
वदन विलोकि सशंकितअंगा ❋ श्रीहत देव वपुषकर रंगा ॥
थर थर कंपित तीनों भाई ❋ जानिनजाय चरित रघुराई ॥
ऐंचिश्वासतकि कछु मनजानी ❋ बोले गूढ मनोहर वानी ॥
सुनिलघुभ्रात कहेउ रघुनाथा ❋ ले वन जाहु जानकिहि साथा ॥
सूखि सहमि सुनिवचन कराला ❋ जरेउगात उपजी उरज्वाला ॥
हँसत कि सत्य कहत रघुराई ❋ असमंजस मन दुख अधिकाई ॥

दोहा–भरतादिक व्याकुल अनुज, मुख आवत नहिंबैन ॥
जोरि युगलकर शत्रुहन, कहत नीर भरिनैन ॥ १३॥

सुनि प्रभु वचन हृदय बिलगाना ❋ जगत जननि सियसब जगजाना ॥
जगत पिता प्रभु सब उरवासी ❋ जड चेतन घन आनँदराशी ॥
कारण कवन जानकी त्यागी ❋ मन क्रम वचन चरण अनुरागी ॥
सुनि सर्वज्ञ सगर्व सुजानी ❋ रिस परिहास कि सत्य सुबानी ॥
पंकजनैन नीर भरि आये ❋ कहि प्रियवचन अनुज समुझाये ॥
आयसु मोर टरहि जोताता ❋ रहैं न प्राण तात ममगाता ॥
हरिइच्छा भावी बलवाना ❋ तुम कहँतात सदा कल्याना ॥
यह मम वचन पालु लघुभाई ❋ प्रात जानकिहि जाहुलिवाई ॥

सोरठा–सुनि प्रभुवचन कठोर, भरत कहेउ युगजोरिकर ॥
नाथहमहि मतिथोर, सुनि विनती सर्वज्ञ प्रभु ॥ २॥

हंस वंश जगमें विख्याता ❋ दशरथ पिता कौशलामाता ॥
त्रिभुवन पति प्रभु सब जगजाना ❋ गावहिं यश चहुँ वेद पुराना ॥
सत्य शक्ति तव प्रकट सुहाई ❋ बरणि नसकहि वेद अहिराई ॥
शोभा खानि जगतकी माता ❋ रहित अमंगल मंगलदाता ॥
छाया जेहि त्रिय पतिव्रत धरहीं ❋ तुमहि विहाय क्षणहुँ किमि भरहीं ॥
जल विनु मीन कि जिये कृपाला ❋ कृषी कि रह विनुवारिदमाला ॥
अस तुम विनु क्षण जियहि कि सीता ❋ ज्ञानवन्ति अति निपुण विनीता ॥
करुणामय वचन सप्रीती ❋ कहो भरत तुम सुन्दर नीती ॥

दोहा-तदपि नृपहि चहिये सदा, राजनीति धनधर्म ॥ त्वा ॥
वसुधापालहि सोचतजि, वचन प्रीतिशुचिकर्म ॥ १४ ॥ ॥

दूतन कहा सो अपयश कहेऊ ❀ कुल कलंक यह दारुण भयेऊ ॥
तरणि वंश नृप भये अनेका ❀ एक एक अति निपुण विवेका ॥
स्वायंभुवमनु रघु नृप जानो ❀ सगर भगीरथ बिरद बखानो ॥
दशरथ विदित दीख तुम नीके ❀ वचनन टरेउ लालचजीके ॥
तिहि कुल रंचक सुनत कलंकू ❀ रहे जीवतो अधम अशंकू ॥
सुनि सर्वज्ञ सकल अघहारी ❀ रहित कलंक विदेहकुमारी ॥
विधि हरि हर दिवि देखि सुहाई ❀ पावक अवटि अनठ सबभाई ॥
जो सुर नर मुनि सपनेहुं नाहीं ❀ यह चरित्र जग लखि हरषाहीं ॥

दोहा-तेहठिरौरवनरक महँ, कोटिकल्प करिवास ॥
रहहिंकल्पशत रोगवश, भोगहिं विगत विलास ॥ १५ ॥

रिसरुख देखि नयन करितीछे ❀ आये भरत लषणके पीछे ॥
सुनि सौमित्र छांडिहठ सोचू ❀ जगभल कहै कहों किन पोचू ॥
तजि आज्ञा प्रत्युत्तर करिहों ❀ मोहितिनसोच जन्मभरिभरिहों ॥
जनकसुता रथ तुरत चढाई ❀ गंगसमीप फिरहु पहुँचाई ॥
अति गह्वर वन जहाँन कोई ❀ छाँडहु तात जतन कर सोई ॥
फेरहु तुम मति वचन उदासा ❀ मरण ठानकर चलेउनिरासा ॥
शुभग विमान सीय बैठारी ❀ पट भूषण बहु धरे सँभारी ॥
सुधा सरस पकवान बनावा ❀ जो कछु वांछित सोफल पावा ॥
अति अनंद मन चली जानकी ❀ अतिशय प्रियकरुणानिधानकी ॥

दोहा-विवरण लषण निहारिकर, सोच विकलभईबाल ॥
हृदय विचार न कहि सकति, मणि बिनु व्याकुल व्याल १६

उतरि देवसरि जानि सुहावा ❀ अति उद्यान देखि भयपावा ॥
कारण अपर जानि भयभीता ❀ बोली वचन मनोहर सीता ॥
दीखत नहीं मुनिनके धामा ❀ जातकहांप्रिय अनुज सधामा ॥
खगमृगकेहरि विषधर व्याला ❀ करि केहरि वृक बाघ कराला ॥

...ऊ ।नलत न आवत जाता ❋ निकसत प्राण तात ममगाता ॥
...ोय विकल लखि मनहिं अहीशा ❋ कीन्ह कहा विधि हरि गौरीशा ॥
मूर्च्छित रथसे हो विकराला ❋ भूमिगिरातब आप सभाला ॥
सिय विलोकि मनधीरजआना ❋ त्रिया विना जल जातहै प्राना ॥

दोहा—धरणिसुता व्याकुल अमित, प्राण कंठगत जान ॥
तजाचहत तन शेष तब, धृकधृक जीवनमान ॥१७॥

प्राण विना लक्ष्मण कहँ देषा ❋ गगन गिरा तब भई विशेषा ॥
सुनु सौमित्र जाहु सिय त्यागी ❋ जनक पुत्रिका जियहि सुभागी ॥
ब्रह्मगिरा सुनि धीरज कीन्हा ❋ हाथ जोरि परिदक्षिण दीन्हा ॥
लेरथ चरणवंदि सिय केरे ❋ चले अवधपुर त्रास घनेरे ॥
जागी सिया सकल दिशि देखा ❋ नहिंरथ अश्व नहीं कहिं शेषा ॥
रहे प्रथम दुख सहिहैं प्राना ❋ पुनि सोइ चाहत करन पयाना ॥
करुणा करत विपिन अतिभारी ❋ वाल्मीकि आये वनचारी ॥
पुत्री वाल्मीकि कह ज्ञानी ❋ वन आवन निज चरित बखानी ॥

दोहा—मुनि पुत्री मैं जनककी, राम प्रिया जगजान ॥
त्यागन हेतु न जानु कछु, विधि गति अति बलवान ॥१८॥

देवर लषण गये पहुँचाई ❋ तब सब हेतु लख्यों मुनिराई ॥
सुनि सीता मिथिलापति मोरा ❋ परम शिष्य विधिवत पितुतोरा ॥
चिंता अब जनि करसि कुमारी ❋ मिलिहँहितोहिं शेष हितकारी ॥
सादर पर्णकुटी सिय आनी ❋ पुनिकरि मज्जन सबगति जानी ॥
विविध भाँति मुनि धीरज दीन्हा ❋ सिय तब सुरसरि मज्जन कीन्हा ॥
सुमिरि राम मूरति उरराखी ❋ दीने फल सुंदर शुभ भाषी ॥
मुनिवर कथा अनेक प्रसंगा ❋ कहे सुने सिय संग बिहंगा ॥
ज्ञान अनेक प्रकार दृढावा ❋ लक्ष्मण अवध सुना जब आवा ॥

छंद—आये सुलक्ष्मण त्यागिसीतहि विकल निजआश्रमगये
बहु भाँति रोवत मातु सन सिय त्याग दारुण दुख दये ॥
सुनि सहमि मूर्च्छित मातुवाणीविकल फणिजिमिमणिगये

इहिभांति व्याकुल विकलपति कौशलहि अतिहीं दुख... ॥
रोदतिवदति बहु भाँति कोऊ कह विपति यह दारुण अये ॥
मुनिरौर रावर सहित लक्ष्मण राम निज मंदिरगये ॥
निज ज्ञानदे समझाय तेहिं तब खुले पट अंतर नये ॥
अब कृपाकरि जगदीश स्वामी देहु भक्ति सुहावनी ॥
जेहि खोज मुनि योगी तपी गति लेहु अविचल पावनी ॥
करकह्यो सोई सोई दियो मातुहिकारुणीक दिनकरतबै ॥
मनसोधकर निजयोग पावक तजातन सादरसबै ॥ ६ ॥

दोहा–योगअग्नितनभस्मकरि, सकल गईं पतिधाम ॥
भरत शत्रुसूदन लषण, शोकभवन श्रीराम ॥ १९ ॥

विधिवत किये कर्मश्रुति गाये ❀ प्रभुसन गुरु सादर करवाये ॥
दीनदान पुनि कोटि प्रकारा ❀ को असकवि जग बरणै पारा ॥
धेनु वसन मणि हाटक हीरा ❀ हय गज गो मुक्तावर चीरा ॥
पुनि परलोक हेतु धन धामा ❀ दियेकिये परिपूरण कामा ॥
रही न चाह याचकनकेरी ❀ रंकधनद पदवी जनुहेरी ॥
वेदपढहिं द्विजदेहिं अशीशा ❀ चिरजीवहुकोशलपुर ईशा ॥
राम दानदे सब विधि तोषे ❀ भये निवर्त्त काजकरि चोखे ॥
गृह द्विज याचक सकल सिधाये ❀ अमित प्रकार राम सुख पाये ॥
विप्रदंडतापस सब कीन्हा ❀ सुरपुरवास मातु कहँ दीन्हा ॥

दोहा–करहुँ अजयमखयज्ञपुनि, अश्वमेध जगजान ॥
कलुष सकलसंतापहर, अंगदादि अभिमान ॥ २० ॥

एक वार गुरु गृह अवधेशा ❀ गये सँगानुज सचिव खगेशा ॥
कीन्ह दंडवत पद शिरनाई ❀ सादर मिले हरषि मुनि राई ॥
पूंछी कुशल देखि मृदु गाता ❀ कुशल देखि तव पद जलजाता ॥
गुरु पद वंदि द्विजन शिरनाई ❀ बैठे अमित आशिषा पाई ॥
कहत पुराण नवल इतिहासा ❀ सुनत कृपानिधि परम हुलासा ॥

इन अमित सुहित सुख दीन्हा ❋ मुनि तब लखेउ प्रेम कर चीन्हा ॥
[illegible]उ करजोरि सच्चिदानंदा ❋ बोले वचन भानुकुल चंदा ॥
नाथ चरण तव सकल प्रसादा ❋ भैजगविदित मोर मर्यादा ॥

दोहा–समय समझि करुणायतन, सादरवचनबहोरि ॥
प्रभुअंतर्यामी करहु, सफल कामना मोरि ॥ २१ ॥

तव प्रसाद जग यज्ञ अनेका ❋ कीने अधिक एकते एका ॥
नाथ सकल जन पुर मन कहहीं ❋ देखन अश्वमेध अब चहहीं ॥
जस अछु आयसुदीजियनाथा ❋ सोमैं करब नाय पद माथा ॥
तनु पुलके मुनि वचन सप्रीती ❋ कसन कहौ तुम सुंदर नीती ॥
पूजिहि मन अभिलाषतुम्हारा ❋ उठब भरत अब करबविचारा ॥
सुनि मुनि वचन भरत रिपुदमनू ❋ हर्षि सचिवलक्ष्मण गृह गमनू ॥
विविध प्रकार चरण करिसेवा ❋ चले भरत सँग सब महिदेवा ॥

दोहा–सेवक पुरजन सचिव सब, सादर तुरत बुलाय ॥
हाटवाट पुरद्वार गृह, रचहु वितान बनाय ॥ २२ ॥

चले सकल सेवक सुनिवानी ❋ सुनत वचन हरषीं सुत रानी ॥
रचेवितान अनेकन भारी ❋ देखि अवध विधि विलपत भारी ॥
लगे सँवारण रथ गज जाती ❋ सुनि सुर मगन दुन्दुभी बाजी ॥
तुरत सचिव वर विपुल बुलाये ❋ कहि जयजीवशीशतिन नाये ॥
जाहु मुनिन्हके आश्रमताहीं ❋ सादरनिवत देहु सब पाहीं ॥
वहां राम पूछेउ गुरु देवा ❋ आज्ञा देउ करौं सोइ सेवा ॥
प्रभु मनकी गति मुनि वर जानी ❋ बोले अति सनेह वर बानी ॥
पठवहु दूत जनकपुर आजू ❋ आवहिं जनक समेत समाजू ॥

दोहा–सुनहु रामरघुवंशमणि,न्योति सकलपुरजाति ॥
वरुण कुबेरहि इन्द्रयम, पुनि मुनिवर सबज्ञाति ॥ २३ ॥

गुरु समेत प्रभु अवधहि आये ❋ देखि बनाव अमित सुख पाये ॥
मिथिलापुर चर तुरत पठाये ❋ देश देशके नृपति बुलाये ॥
आये सब जहँ राम कृपाला ❋ वरुण कुबेर इन्द्र यमकाला ॥

चढि विमान सुर नारि सिहाँहीं * करहिं गान कलकंठ लजाई ॥
आये मुनिवर यूथ घनेरे * देहिं कृपानिधि सुंदर डेरे ॥
शशि हरि हर रवि विधि सनकादी * आये सुरजे परम अनादी ॥
विश्वामित्र संग मुनि झारी * सहससात ऋषि इच्छाचारी ॥

दोहा—आये ऋषिभृगु अंगिरा, नारद व्यास अगस्त्य ॥
नानायूथपमुनि सकल, देवसमस्त पुलस्त्य ॥ २४ ॥

मख अस्थल अति देव सुहाये * नाना भाँति देखि सुखपाये ॥
मिथिलापुर जेदूत पठाये * देखि नगर वासिन मन भाये ॥
द्वारपाल सब खबरि जनाई * अवधनगर सन पाती आई ॥
सुनि विदेह सहसा उठि धाये * तन मन पुलकि नयन जल छाये ॥
भयो भूप मन आनँदजेता * कहिन सकै शारद अहि तेता ॥
शिथिल आप्तु तब द्वारे आये * देखि दूत अतिशय सुख छाये ॥
कहहु कुशल रघुपति सबभाई * गद्गदकंठ नकछु कहिजाई ॥

दोहा—भूपप्रेमतिहि समयजस, तसनकहहिं मतिधीर ॥
तुलसीभयउ उछाहवश, जय जय शब्दगँभीर ॥ २५ ॥

बाँचत प्रीति न हृदय समानी * चरवरबोलि कही हँसि वानी ॥
नगर ग्राम पुर मंगल साजे * अमित प्रकार बाजने बाजे ॥
सचिव बोलि नृपपाती दीन्ही * उठि करजोरि विनय करलीन्ही ॥
पढीसचिव अति प्रेमानंदा * सुमिरि रामकोशलपुरचंदा ॥
घरघर खबरि व्यापि क्षण माहीं * मंगल कलश साजि सबपाहीं ॥
भयो अनंद न जाय बखाना * कीन्हे विविध भांति नृपदाना ॥
धरितनदेव अमित नभवासी * आये भूपनगर सुखराशी ॥
कहहिं वचन नृपके हितकारी * चले अवध सबकाज विसारी ॥

दोहा—कहि कहि सब सादरचले, वाहनरचेबनाय ॥
जोरि युगलकरमुकुटमणि, अस्तुतिकरहिंसुभाय ॥ २६ ॥

छंद—पदसुमिरिकरुणाकन्दरघुकुलचंद दशरथनायकं ॥
श्रीसहित अनुजसमेतसुस्थिर वसहुममउरलायकं ॥

अंभोज नयन विशालभाल कृपालदशरथनंदनं ॥
शतकोटि मार उदारशोभा अतुलबल महिमंडनं ॥
तूणकटि शुभकर शरासन कपटमृगमद गंजनं ॥
वैदेहि अनुज समेत कृपानिकेत जन मनरंजनं ॥
ममहृदयवसहुनिवास करि करुणायतनकरुणामयं ॥
महिमानकोऊ जान मुनि हरियान ज्ञानविशालयं ॥
सोइहेतु करि वृषकेतु प्रभु खर दूषणादि निकंदनं ॥
नरअंध पामर कामवश मन भजहिं नहिंरघुनंदनं ॥
तवललितलीलावसहि जेहि उर तासु उर धरणी धरं ॥
सोई आनतुलसीदास निजउर शरण अबकाकीगहै ॥
सुखपायमन वचकाय नहिं अब दूसरी सपनेहुलहै ॥
सबकुशल पूंछि महीप सादर बिहँसि आनँदउर छयो ॥
मनभाय पाय बनाय विधिवत दानबहु विप्रनदयो ॥
गजवाजि भूषणभूमिवस्तु अनेक विधि अबकोगनै ॥
इकवारले नृपद्वारदीन्ही कहहु कवि कैसे भनै ॥ ६ ॥

दोहा–पूजे विविध प्रकारनृप, सादर दूतहँकारि ॥
गुरुगृहगवनेउ मुकुटमणि, पाय पदारथचारि ॥ २७ ॥

सकल कथा महिपाल सुनाई ❀ शतानंद आनंद अघाई ॥
चलहु नृपति मखदेखहिंजाई ❀ साजहु जाय सकल कटकाई ॥
करि विनती नृपमंदिर आई ❀ बाँचि पत्रिका सकल सुनाई ॥
आनँदयुत सब करी वधाई ❀ दियेदान महिदेव बुलाई ॥
याचक सकल अयाचक कीन्हे ❀ सादर बोलि युगल चरलीन्हे ॥
विलग विलग सब पूछहिंवामा ❀ सुने रामके पूरणकामा ॥

छंद–सबकामपूरण रामके सुनि विपुल बाजन बाजहीं ॥
पुर द्वार घर रखवार राखे सैन्यभट सब साजहीं ॥

दशसहस सिंधुर षष्टिशतरथ वाजिवरणत .....

जगमगतजीन जड़ावरविमणि देखि कविकैसेभनै त्वा ॥ ॥

चढ़िशूर प्रबल प्रवीनजे असचलत सब सादरभये ॥

सुखपाल परम विशाल युगचढ़िगुरुहिले आदरनये ॥

महिडोल धसकत कमठ अहि दलदेखि अमित विदेहको॥

रथ यूथ पदचर अमित वरणहिंजगत असकविमूढ़को ७॥

दोहा–चलेउरावमुनिगण सहित, विपुल निसानबजाय ॥

प्राततीसरे प्रहर सोइ, अवधनगर नियराय ॥ २८ ॥

पुरबाहिर सरयू शुचि तीरा ❋ वासदीन्ह हर्षित रघुवीरा ॥

सौंपि अनुज कह राम समाजू ❋ आये प्रभु जहँ नृपमणि राजू ॥

मिल पुनि पतिहि निकट बैठारे ❋ गद गद गिरा सुबचन उचारे ॥

वदन मयंक निरखि सवगाता ❋ आनँद मगन न हृदय समाता ॥

प्रभु विनीति सवही सेवकाई ❋ सचिव भरत पुनि लिये बुलाई ॥

नृप शय्या सब भरत सँभारी ❋ सुनि खगपति जस कीन्ह खरारी॥

आय गुरुहिं सादर शिरनाई ❋ मन भावत आशिष तिनपाई ॥

पुनि प्रभु सकल देवगण वंदे ❋ अभिमत आशिषपाइ अनंदे ॥

दोहा–दश सहस्रवय वरष सुनि, आये प्रभु सुख धाम ॥

बोले वचन विनीति गुरु, मंत्र सुनहु मम राम॥२९॥

धर्म सकल जेहि वेद बखाने ❋ संत पुराण लोक सब जाने ॥

विनतिय नहिं फल होय खरारी ❋ अब चहिये मिथिलेशकुमारी ॥

सुनि तियवचन मौन गहि रहेऊ ❋ सत्य असत्य न एको कहेऊ ॥

पुनि पुनि विरद ज्ञान सुनिराया ❋ रहै सुकृत जेहि करहु सोदाया ॥

द्वै गुरु मिल नारद सनकादी ❋ वचन कहेउ सुन परम अनादी ॥

कनक जटित मणि सुंदर वाला ❋ रुचि सिय रूप सुशील विशाला ॥

अंग अंग सब भूषण साजे ❋ तासु रूपलखि रति पति लाजे ॥

सहसालखि नसकहिं नरनारी ❋ सिय देखेउसब अचरज भारी ॥

दोहा–तेहि अवसर शोभा अमित, कोकविवरने पार ॥

...तार कृपालु प्रभु, कीन्हे चरित अपार ॥३०॥

...टित कनक सुंदर मृगछाला ❀ तिहि आसन आसीन कृपाला ॥
सियासहितलखि सुर मुसुकाहीं ❀ कीन्ह प्रणाम सबन हरषाहीं ॥
भीर अपार देखि गुरुभानी ❀ ऋधि सिधि बोलि सकल सनमानी॥
कहा जाय जे उचित सबकरहू ❀ जो जेहिचहिय सकल अनुसरहू ॥
सुनिरजाय रघुपति रुखपाई ❀ रचे कोट गृह विधिहि सिहाई ॥
सुरसुरभी सुरतरु सुखमानी ❀ शारद शेष न सकहिं बखानी ॥
पुर गृह बाहर गली अटारी ❀ भरे सुगंध सब रची सँभारी ॥
रहे तहां दिशिपाल अनेका ❀ जे परमारथ निपुण विवेका ॥

छंद—सोइ ज्ञान परमविवेक पावन भरतलै राखे तहीं ॥
निजभाग्य प्रबल सराह निदरहिं धनदकी पदवीसहीं ॥
आये त्रिलोकी नाग खर सुर असुर जे विधिनेरचे ॥
सनमानि सकल सनेह सादर रामसनको नहिंबचे ॥८॥

दोहा—युगसहस्र जे विप्रवर, सुन्दर परम प्रवीन ॥
जानहिं श्रुति मर्कट सकल, रहे मख अंग अधीन ॥३१॥

मकर मास ऋतु शिशिर सुहाई ❀ मख मंडप बैठे रघुराई ॥
तब बोले गुरुबचन सुहाये ❀ आनहु बाजि जो वेद बताये ॥
लक्ष्मण सुनि गुरु बचन अनंदे ❀ बार बार पदपंकज वंदे ॥
हयशाला सादर चलि आये ❀ विविध विभूषण तेहिपहिराये ॥
श्वेत वरण सुंदर शुचिकारे ❀ रविहय निदरि मनोज सँभारे ॥
जो न जरावन जाय बखाना ❀ चढि रविरथ आवत जगजाना ॥
माथे मौड पक्ष मणि लागे ❀ सोइ नभ नखत देव अनुरागे ॥
सेवक चारु पाट मय डोरी ❀ दामिनिदमकि निदप अतिथोरी॥

दोहा—षटसहस्र दशवीरबर, रामानुजरणधीर ॥
मध्यताहि आनहु तहां, जहां राम रघुवीर ॥३२॥

पूजहु हय प्रभु जय जगहेतू ❀ जस कछु कहा गाधि कुलकेतू ॥

दीन्ह विविध विधि दान अनेका ॥ लिखो पत्र सोइ करि अभिषेका ॥
एक वीर कोशल पुर माहीं ॥ अरिदल दलन सुरेश सकादीं देवा ॥
जिय बलवन्त गह्यो सोइ बाजी ॥ देहु दंड वन जाहु कि भाजी ॥
लिख बांधो हय शीश सँभारी ॥ तेहि सुन वचन आये वनचारी ॥
भार्गव आदि सकल मुनिसंगा ॥ रहे जहँ रविकुल कमल पतंगा ॥
कथा सकल लवणासुर केरी ॥ मुनिन त्रास जिन दीन्ह घनेरी ॥
सुनि ऋषि वचन नैन जल छाये ॥ विहँसिराम निज त्रोण मँगाये ॥

दोहा—दीन्हे रिपुसूदनहिं सोइ, बाण अमोघ कराल ॥
मंत्रमोर पढ ताहि हति, जीतहु सकल भुआल ॥ ३३ ॥

बहुरि बिभीषण राव बुलाये ॥ सादर आय माथ तिननाये ॥
लवणासुरके चरित अपारा ॥ पूछेउ दिनमणि वंश उदारा ॥
करयुग जोरि निशाचर नाहा ॥ सत्य कहौं अब सुन अवगाहा ॥
भगनिविमान गाथ सोइ मोरी ॥ कुंभ निशा हति नाम बहोरी ॥
मधुदानव कहँ रावण दीनी ॥ बहु विनतीकर विनयवसीनी ॥
तनय तासु लवणासुरभयऊ ॥ शिव सेवा सादर मन दयऊ ॥
अगम तासु तप शंकर जाना ॥ दीन्ह त्रिशूल सुकृपानिधाना ॥
जेहिकर रहे अस्त्रकर भारी ॥ चौदह भुवन जीतिसबझारी ॥

दोहा—तेहि बल प्रभुसननहिं गनहिं, अमर दनुज नरनाग ॥
जीति सकल वश कीन्ह सोइ, हठपथ सबके लाग ॥ ३४ ॥

तासु चरित सुनि मन मुसकाने ॥ रिपुहि हतहु बल दे सनमाने ॥
सैन्य संग चतुरंग बनाई ॥ रहे साथ दोउ तनय सहाई ॥
सुनि प्रभु वचन निशान अपारा ॥ तीन सहस्र हने इकबारा ॥
दलके वसुधा कुंजर गाजे ॥ दश सहस्र रथ रवि सँग साजे ॥
पूरोसखा चलो दल साजी ॥ अमित अकाश दुंदुभी बाजी ॥
पुरबाहिर सब कीन्ह सँभारी ॥ तनय युगल लखि परम सुखारी ॥
द्वादश निशि बीते मगमाहीं ॥ पहुँचे जाय यमुन तट पाहीं ॥
दिन प्रति दान देहु बहु भांती ॥ प्रभु पद पूजे दिन अरु राती ॥

सो०—रवितनया पदवंदिकै, सादर पूजिपुरारि ॥
चलेहु शत्रुसूदन सुमिरि, स्वामिहि समन खरारि॥३५

चमू चलत अपि सुभट जुझारा ❋ लवणासुर सँग सैन्य अपारा ॥
सुभट प्रचारत गज रथ आवा ❋ देव कटक निज अति सुखपावा॥
मारहु खावहु धरि नृप बांधहु ❋ जियजय होय जतन सोइ साधहु ॥
असकहि सन्मुख सैन्य चलाई ❋ कज्जल गिरि जनु आँधी आई ॥
मारू शब्द सुनत भट गाजहिं ❋ विपुल बाजने दुहुँ दिशि बाजहिं ॥
निज प्रभु कहि जय बोलहिं वानी ❋ हरषि भिरे भट मन हठठानी ॥

छंद—हठठानि प्रबल प्रवीनजे असिभिरे अतिरिपुप्रबलसे
इकमल्ल युद्ध सराहि रोकहि एक एकनकर खसे ॥
शर शक्ति तोमर शूल परशु कपाल शूरचलावहीं ॥
करचरणशिर हत तीर धारहिं भूमिजान न पावहीं ॥
भटगिरहिंपुनिउठिभिरहिं धरुकैकरहिंमायाअतिघनी ॥
प्रभुतनयसे दरबार बाँके हनहिं रिपुनिश्चरअनी ॥
देखहिं परस्पर युद्ध कौतुक सुभटएकहि इकहने ॥
सजिकोटि रथसुर आयनभपथ सुमन वरषाकरिभने९

दोहा—विचलत अनी विलोकि निज, लवणासुरवरबंड ॥
सगर तनय मातंगभट, दूसर केतु अखंड ॥ ३६ ॥

प्रभु सुत जेष्ठ सुबाहु विशाला ❋ भिरामतंग हृदय जनुकाला ॥
जूप केतु अरु केतु प्रवीना ❋ लडहिं सुखेन नमानहिं हीना ॥
विषम युद्ध लखि देव सकाने ❋ पूछेउ सुरगुरु कहि मुसकाने ॥
जनु हिय सोच अमरपति करहीं ❋ राम प्रताप सुमिरि उर धरहीं ॥
जूपकेतु कर कोप अपारा ❋ हनरिपु केतुखंड महिडारा ॥
इहां सुबाहु मत्त गहिमारा ❋ कर पद काटि अवनि परडारा ॥

छंद—महिडारि करपद शीश आतुर तून शर विकसतभये
रविवंशके अवतंश दून्यो समर महिराजत भये ॥

सुनिमरणयुगसुत विकल निश्चर भूमिपर घूर्मित गिऱ्यो ॥
पुनिजागिशूल सँभारि प्रभुके समरसन्मुख सो भिऱ्यो ह्वा ॥
दोउ प्रबलवीर प्रताप निश्चरसैन्य दुहुँदिशिमुरि चली ॥
शिरबाहुचरण उडात नभपथ योगिनी आनँदभली ॥
बहुरुधिर मज्जन करहिं सादर गुहहिं नरशिर मालिका ॥
आनंद ह्वै मन मुदित गावहिं गीतखेचर बालिका ॥
धुनि पढहिं शंख मृदंगकी सुनि शूर हर्ष बढावहीं ॥
गतिलेत नितंत प्रेत त्रिय शिर माल हर्ष चढावहीं ॥
बहुकरत पान प्रमाणनर कहमरी शोणित शाकिनी ॥
सब भेद मास अहार कर मन मुदित बोलहिं डाकिनी ॥ १० ॥

दोहा–मारे रघुवरवीर बहु, गिरे समर रणधीर ॥
क्षणइक निश्चर बध निरखि, अंतर हुइ बलवीर ॥ ३७ ॥

करि छल प्रगट सो विविध वरूथा * अस्त्र शस्त्र लै सब सुरयूथा ॥
धाये अज अरु शिव सनकादी * जेमुनि कहैं अपर श्रुतिवादी ॥
शक्ति शूल असि चर्म सुहाई * गदा परशु धनु बाण बनाई ॥
धरु धरु मारु मारु सुर करहीं * लरत न भट विस्मित होरहहीं ॥
निश्चर प्रबल भये रघुनाथा * केतिक धीर मलैं निजहाथा ॥
सैन्य विकल लखि नारद आये * समाचर सब कह समुझाये ॥
रिपुसूदन प्रभु विशिषसँभारी * जोर समर सुमिरे त्रिपुरारी ॥
जिन तिन अचै तरणि गो सोई * सुमिरि अमर नहिं दीसै कोई ॥

दोहा–मंत्र प्रेरि सारि कोटि शर, रहे जहँ तहँ नभछाय ॥
मनहुँ बलाहक प्रबल कहँ, मारुत देखि विलाय ॥ ३८ ॥

सुर समाज कितहुं नहिं देखा * चलहु सुवाह केतुजनुवेषा ॥
खलसम्हारि गहि शूल विचारी * असकहि गदा कोप उर मारी ॥
सहि नसका सोइ तेज अपारा * मूर्च्छित अवनिपरा विकरारा ॥
निजपतिविकल देखिभटभारी * धाये बहु कर शस्त्र सँभारी ॥

...नाम वीर बलवाना ❀ मूर्च्छित लवणासुर मनजाना ॥
...न सहस्र लिये रणगाढे ❀ आनहु बाहु सामुहे ठाढे ॥
कटुक वचन कहि छाँडेसिवाना ❀ ताहि काटि प्रभु शीघ्र कृपाना ॥
तब खिसियानशूल ले धावा ❀ जूपकेतुके सन्मुख आवा ॥

सोरठा–मारसि हृदय सँभारि, गिरिपति करुणायतन तब
मूर्च्छित गिरा पुकारि, रामचंद्र दिन मणि तिलक॥३॥

मूर्च्छित बंधु सुबाहु विलोकी ❀ भैरिसअमितरहै नहिंरोकी ॥
कठिन बाणकर क्रोध अपारा ❀ छाँडेउतीनिसहस्र इकबारा ॥
लाग्यो शूल देख मन माहीं ❀ परयो अवनितल सुधि कछु नाहीं॥
खैंच शूल तनु बाहिर कीन्हा ❀ राम नाम वर औषधि दीन्हा ॥
उठि शुचि संग अनुजके संगा ❀ लीन्ह धनुष शर विहँग निषंगा ॥
आय समर महि सुभट प्रचारे ❀ बाणते विपुल देव अरि मारे ॥
मूर्च्छागत कि भयो बलवाना ❀ ताहि चढाय उपाय विधाना ॥

दोहा–करउपाय रथराखि तेहि, पठयभवन रणधीर ॥
आय समर गरजतभयो, संगमहा बलवीर ॥ ३९ ॥

जागा निशिचर देख लडाई ❀ पठयसि कुमक संग नित भाई ॥
शूरवीर जेहि काल सकाई ❀ हारेउ समर विबुध खगराई ॥
जानाकैभट जाम्यक आवा ❀ समरधीर नहिं चलहिं चलावा ॥
नायउ माथ आनि करजोरी ❀ जात समर रिपु पूजेउमोरी ॥
रावण रिपु लघु भ्राता जानू ❀ तनय तासुबल रूपनिधानू ॥
कोटिक शूर समर हम मारे ❀ बालक नृपति निरखि हिय हारे॥
रिपुलखि मुनि कर हृदय कलापू ❀ पावहिं मोह जानि जिय आपू ॥
रवितनया महि सैन्यहिडारू ❀ तनय समेत अनुजपर वारू ॥
लैकर गदा अनी बिचलाई ❀ घेर रहे निशिचर समुदाई ॥
भागो रथ आनहु बलवाना ❀ ताहिचढाय उपाय विधाना ॥

छंद–रिपुअनुज मारू सैन जमनहिंडारनृपशिर नायऊ॥
तजसोचसेन सँमारचलभट वेगि जो अरि पायऊ ॥

दोउमत्तगर्व विशाल निशिचर आयरण गर्जित नभ ॥
इतजूपकेतु सुबाहु शरधनु हाथलै आतुरगये [illegible] ॥
भटभिरेनिजनिज जयति कह निज जाव जोरीसमरकी ॥
शिरकटतं असन चरन जोग निषाद बालक बालकी ॥
हठिगीधजंबुककाकशोणित पिवहिंअति सुखपावहीं ॥
बहुदानदिये मनायमनमहँ बिहँसिमंगल गावहीं ॥ ११ ॥

दोहा–फिरेसमर सानेसगर, फिरे आकरे कूर ॥
लागे लाहे रुठरहे, समर धीर बरशूर ॥ ४० ॥

शूर सहाय होंय निज ठाढे ❋ फिरे लजाय क्रोधकरगाढे ॥
भिरे प्रचार सुभट समुदाई ❋ भयो युद्धतेहिवरणि न जाई ॥
बरषहिं समर शूर शर कैसे ❋ प्रावृट् समय जलद जल जैसे ॥
हय पगउठे धूरनभछाई ❋ भयो प्रदोष सुनहु खगराई ॥
समर देख रिपु प्रबल प्रभाये ❋ प्रभु समीप सादर सुत आये ॥
देख तनय बल विपुल विशाला ❋ रिपुहन हर्ष मनुजसुरव्याला ॥
यातुधान बल बुद्धि गँवाई ❋ निज पुर गये राज यश पाई ॥
निशि निश्चर सब बात विचारी ❋ होत प्रात पुनि लाग गुहारी ॥

दोहा–साजि वाजिगज वाहनहिं, गहगहे हने निशान ॥
आयो समर सकोप अति, लवणासुर बलवान ॥ ४१ ॥

शिवहिं सुमिरलै शूल विशाला ❋ रिपु बल परचो मनहु यमकाला ॥
छिनकमाहिं मारे बहु योधा ❋ चलो सकोपमनुज करिक्रोधा ॥
आवत शूल हन्यो प्रभु छाती ❋ घुर्मित गिरचो धरणि वर घाती ॥
मूर्च्छित देखि खड्गलै धावा ❋ निरखि सुबाहु क्रोध उर छावा ॥
प्रबल गदा रथ सारथि भंजा ❋ बिहँसिमहादल रिपुदल गंजा ॥
रथ विहीन व्याकुल मन माहीं ❋ मूर्च्छित परचो लवणि सुधि नाहीं ॥
पुनि उठि गर्जि सकोप सुरारी ❋ अस्त्र सँभारि क्रोध करि भारी ॥
उठे शत्रुहन मन अनुमाने ❋ सादरसबहियते सनमाने ॥

...कल देख सब जाने ❀ राम बाण अति सादर आने ॥

दोहा–सुमिरि अवधपति चरणयुग, छाँडे युगनाराच ॥
परयो अवनितन भिन्नहोय,व्याकुल विकटपिशाच४२ ॥

तासु मरण सुनि सब सुर यूथा ❀ चढि विमान नभ सकल वरूथा ॥
बाजहिं दुंदुभि वरषहिं फूला ❀ आज नाथ बीते सब शूला ॥
देहिं अशीश देव धुनि करहीं ❀ जयति मंत्र कहि आशिष बरहीं ॥
जात यानपति हीन विलोकी ❀ कैटभ जाम्ब नहीं रिस रोकी ॥
करि हिलकार गरजि अति घोरा ❀ शिला एक डारी बहुजोरा ॥
शर हत शैल सुबाहु प्रचारी ❀ काटी दुष्ट भुजा महि डारी ॥
वदन पसारि ताहि तकधावा ❀ देव सुबाहु प्रवल पहँ आवा ॥
खैंचि धनुष तब श्रवण प्रयंता ❀ अति कराल शर छाँडि तुरंता ॥
काटि शीश तिहिभूमि गिरावा ❀ सुनासीर आतुर चलि आवा ॥
जोरि युगलकर अति अनुरागे ❀ बोलेउ वचन प्रेमरसपागे ॥
हमहिं सहित सुर कीन्ह सनाथा ❀ अस्तुति योग नाहिं हमताता ॥
सुरपति सुर लखि प्रभु लघु भाई ❀ कीन्ह प्रणाम माथ महिनाई ॥
अस्तुति विनय शक्र तब कीन्ही ❀ बार बार बहु आशिष दीन्ही ॥

दोहा–देवन सहित सुदेवगुरु, आये जहँ मख धाम ॥
समाचार सादर सकल, कहे सबनके नाम ॥ ४३ ॥

तहँ युग नगर रचे अतिरूरे ❀ राखे तनय युगल बलपूरे ॥
मथुरा नाम जगत जस जाना ❀ दूसरि विश्व जो वेद बखाना ॥
जोग तनय बल बुद्धि विशाला ❀ नाम सुवाहु विदित महिपाला ॥
राखेउ जस सुनाट बल भूरी ❀ विदित नगर पश्चिम दिशि दूरी ॥
जूप केतु पुनि साथ रखावा ❀ राजनीति दोउ सुत समुझावा ॥
सौंपि नगर बहु आशिष दीनी ❀ नृपमणि गवन विजय कहँकीनी ॥
चिरंजीव करि हन्यो निशाना ❀ दक्षिण अश्व चला जग जाना ॥
सचिव समेत राखे सुत संगा ❀ उतरे सब जल यमुन तरंगा ॥

दोहा–रवि तनया पदवंदिकै, चली अनी हयसंग ॥

हर्षित शूर समूह अति, देखि सैन्य चतुरंग ॥ ४४ ॥

वाल्मीकि थल सैन्य समेता * कानन सघन मुनीश निकेता ॥
सिय सुत युगल वीरवर बंडा * भुजबल अमित दिनेश प्रचंडा ॥
वीरबली हय देख्यो आई * पत्र बँध्यो शिर बाँच्यो ताही ॥
कटि कसि त्रोण हाथ धनुतीरा * समर हेतु बैठे बलवीरा ॥
शूर सहस्र साठि हय साथा * आय गये तहँ रघुकुल नाथा ॥
तहँ तरु बाँध्यो बंध विलोकी * बालक जानि सकल रिसरोकी ॥
देहु तुरंग घर जाहु सुहाये * धन्य मातु पितु जिन तुमजाये ॥
माँगहु भीख समर चढि भाई * क्षत्रिय कुलहि कलंक लगाई ॥

छंद–जिनक्षत्रिकुलहि कलंकलावहु समर शूर सुहावने ॥
बलहीन तुरँग प्रवीण छाँड्यो धराविनु भट जानने ॥
सुनि वचन कटुक कठोर बालक जानिभट धावत भये ॥
शरतानि एकहिं वार लवहँसि हने तन जरजरभये ॥
महिपरे पुनि कछु भिरेयोधा जायरिपुहनसों कहा ॥
पुनि बालहत संग्राम सैन्यहि वाजिलै रणमहँ रहा ॥
सुनिकोपिकर अति शत्रुहनतासैन्यलै धावत भयो ॥
रणमाहिं गाजतवीरबाँके कोपलखि लज्जितभयो १२॥

सोरठा–सुनि सुनि बाल मराल, देहु अश्वतजिकोप निज॥
पूज तुमहिं तेहिकाल, करिहहिं जन्मसफल प्रभु ॥ ४ ॥

कौन नाम नृप किहि पुरवासी * फिरहिं विपिन सँग सैन्य प्रकासी ॥
छांडेउवाजि हेतु किहि लागी * लिख्यो पत्र बाँध्यो भयत्यागी ॥
नहिं तव तनुबल पौरुष भाई * छोरहु पत्र वाजि गृह जाई ॥
सुनि रिपुहन कटु गिराल्जाने * गहहु अस्त्र असकहि मुसकाने ॥
हमहिं प्रचारत नृप बलभारी * डरपहिं सिंह वाजने तारी ॥
असकहि धनुष वाण करलीना * मुनि वर विनय चरण शिरदीना॥
मारसि रथ सारथी तुरंगा * कोटिन वाण हने सब अंगा ॥
करि मूर्च्छित नृपकटक संहारा * खाँहिमांस अति गीध करारा ॥

दो०-एकहि एक प्रचार कर, हने सकल रणशूर ॥
आये तब रघुवीर पहँ, कायर करनी कूर ॥ ४५ ॥

पूछेहु सकल भानु कुलनाथा ❋ रिपुके समनकहे गुणगाथा ॥
मुनिबालक दोउ कटकसँहारा ❋ रिपुहन आदि समरमहँ डारा ॥
रिपुबालक मुनि विकलखरारी ❋ विकलहोय पुनिकहेउकरारी ॥
लक्ष्मणसंग जाउ दोउ भाई ❋ मुनि बालक बाँध्योवरियाई ॥
मारहु पुनि आनहु पुरमांही ❋ ऋषिसुत बंधन उचित नकाहीं ॥
चल्यो शेष सँग सैन्य अपारा ❋ आयउ तुरत समरजेहि मारा ॥
लै घर जोव जाहु मुनि बालक ❋ दिनकरवंश देव द्विज पालक ॥
आँखिन ओट होहु अवताता ❋ लखिअतिकोप चढत ममगाता ॥

दोहा-सुनि लक्ष्मणके वचन तब, बिहँसे बालकवीर ॥
अनुजविलोक नजाय अब, प्रबल महारण धीर ॥ ४६ ॥

अनुज विलोकि वचनसुनिकाना ❋ धनुष चढाय गहे करवाना ॥
भेषविलोकि बाल मुनिजाना ❋ निज कुल समझि करोमनकाना ॥
निज सहायसह आन उपाई ❋ केवल तोहिं हते नभ छाई ॥
सुनि कुश कठिन बाणसंधाने ❋ कांपीपुहुमि शेष अकुलाने ॥
छूटे विशिष रहे नभ छाई ❋ बाणमातु प्रतिबिंब छिपाई ॥
रिपुहि प्रबल लखि चलासकोपी ❋ मुरीन मनहिं रहारथरोपी ॥
काटे विशिष विशिष सरमाई ❋ कौतुक करहिं विविध खगराई ॥
झपटि गदा लक्ष्मण तबझारी ❋ गिऱ्यो भूमिकुशमूर्च्छितभारी ॥

दोहा-मूर्च्छित कुशहि निहारि करि, धाये लव करि शोर
आवतही शरउरहने, गिऱ्योन महि बल जोर ॥ ४७ ॥

मल्लयुद्ध दोउ भिरे प्रचारी ❋ लरहिं सुखेन नमानतहारी ॥
भिराहिं उपाय विपुल बलकरहीं ❋ गिरहिंधरनि बहुरि उठि लरहीं ॥
विकल सैन्य सबमाजुसिहारी ❋ सुमिरि कौशलाधीशखरारी ॥
मारेउबाण लवहि क्षितिडारा ❋ मूर्च्छित होय गिऱ्यो विकरारा ॥
समर सीय मुनिचरण सुहाये ❋ गतमूर्च्छा कुश आतुर आये ॥

विकल विलोकि बंधुलघुजानो ॥ चल्यो वीर मन बहुत गलानी ॥७॥
लक्ष्मण देखि वीर वर धाये ॥ धनुषबाण धरि आगे आये ॥८॥
शक्रजीत अरि जे शर मारेउ ॥ तेसबबालककाटि निवारेउ ॥

दोहा–रामानुज विस्मित विकल, देख सबल आराति ॥
सीयत्याग उरशोचबड, प्राणदेहकिहिभाँति॥४८॥

कुशकरिक्रोध विशिख शरलीने ॥ मंत्रप्रेरि मुनिवर जेदीने ॥
नाक रसातल भूतल माहीं ॥ यह शर छूटेउ बचै कोउनाहीं ॥
मोहन अस्त्रनाम तेहिजानो ॥ विष्णु महेश ब्रह्म जेहि मानो ॥
मारेसि शेष ताकि उरमाहीं ॥ पराधरणितल सुधि कछु नाहीं ॥
चली सैन्य सब भागि अपारा ॥ कौशिकपुर महि जाय पुकारा ॥
करनी सकल युद्धकै बरनी ॥ लक्ष्मण वीर परे जिमिधरनी ॥
जेहिविधिकटक सकल संहारा ॥ निजलोचन मम नाम निहारा ॥
वयकिशोर दोउ बाल अनूपा ॥ तवप्रतिबिंब मनहु सुरभूपा ॥
काकपक्ष शिर धरे बनाई ॥ बालकवीर बरणि नहिंजाई ॥

दोहा–भरत जोरिकरकै कहेउ, वचन अमित बिलखाय ॥
सीयत्याग फल दीन विधि, प्रभुकहि देखहुजाय॥४९॥

अनुज समर महँ तुम हियहारे ॥ साजहु हय गज रथ मतवारे ॥
रहौ यज्ञ रिपु देखहुँ जाई ॥ बालक रावणके दुखदाई ॥
तीव्रवचन सुने भरत लजाने ॥ बहुतभाँति रघुपति सनमाने ॥
प्रथम सखा सब लिये बुलाई ॥ हनुमदादि अंगदसमुदाई ॥
जाम्बवन्त कपिराज विभीषण ॥ द्विविद मयंद नील नल भूषण ॥
रिपुहिमारिकै समरभगाई ॥ तातअनुज दोउ आनहुजाई ॥
माथनाय संग कटक विशाला ॥ चलेभरत उर उपजी ज्वाला ॥
शोणित सरिता समर विलोकी ॥ डरपे वीर आश रण रोकी ॥

दोहा–समर सीयदोउ बीरबर, आयगये बलवान ॥
देखडरे कपिभालुसब, तब बोलेउहनुमान॥ ५० ॥

धन्य मातु पितु जेहि तुमजाये ॥ पुरुष युगल घरजीहुसुहाये ॥
समर विमुख सुन भट बिलखाना ॥ कीन्हक्रोध कहँ सुनहु कृपाना ॥

-इबल होउ जाहु घरभाई ❀ इतौं नठौर जानकदराई ॥
भाषे वचन भरत मुनिकाना ❀ लेहु सँभार बाल धनुवाना ॥
कटकटाय कपि भालु समूहा ❀ लीन्ह उपार प्रबल तरु जूहा ॥
एकहिवार सकल तिनमारा ❀ लवकाटहिं तिल सम करि डारा ॥
रिपु शरकाटि निमिष यक माहीं ❀ यथा मनोरथ खल मिटिजाईं ॥
कर लव क्रोध बाण फटकारे ❀ मारे बीर भूमि गजडारे ॥

छन्द—तोटक ॥

गजवाजिघने रणभूमिपरे, तहँ शोणितवीर बरूथभरे ॥
लवतानि शरासन बानभले, रिपुसागरवीरप्रचार दले॥
लगते शरहैरण घायलते, नभकैटभ हायलवावलते ॥
कहुंझूमहिं कुंजर पुंजपरे, महिलोटहिंशोणित भारभरे
शरलागत घायलवीरगिरे, तहँहाँक उठेरणधीरधरे ॥
रणवीर वरूथकपीशकटे, गिरिसेरणभेद निखंग पटे ॥
तवशोणितकी सरिताउमगी, अतितीक्षणधार अपार पगी
तहँयोगिनभूत पिशाचघने, भषपालहिं कंककरालघने १३

छन्द—हरिगीतका ॥

पालैहिं कंक कराल जहँ तहँ गीधमन प्रमुदितभये ॥
तहँ प्रेत सिद्ध समाज सोहत खायप्रति मंगलठये ॥
तहँ डाकिनी मनमुदितडोलहिं शाकिनी शोणितभरे
दोउकरनखैंचहिं कालिका शिवप्रेत प्रतिकीरतिकरे ॥
अंतावरी गहिगर लपेटहिं पिवतशोणित आतुरे ॥
गजखाल खैंचहिंभूत शंकर प्रीति शंकर चातुरे ॥
बैतालवीर कपाल करिवर करीकर इककरधरे ॥
सोहैंसत रुधिर प्रवाह पूरण पान करत हरे हरे ॥
रघुवंश समर सराह दुहुँदिशि करहिं निज मन भावने
गजवाजिनर कपि भालु जहँ तहँ गिरे महिशुभ पावने १४॥

दोहा—विषमयुद्ध दोउबंधुकरि, जीति सुभट संग्राम ॥
आयउ पुनिजहँ नृपभरत, सुमिरि विधाता बाम ॥ ५१ ॥

कपि भालुहि घायल सब आवहिं ❋ बाण त्रास मन अति दुख पावहिं ॥
जाम्बवंत कपिराज बुलाये ❋ अंगद हनूमान सुनआये ॥
सब मिलि सहित निशाचरराजा ❋ घर आनहु दोउ राज समाजा ॥
आय जुटे कपि भालु भवानी ❋ तिन कछु प्रभु महिमा नहिं जानी ॥
बोले कुश दोउ बालकुमारा ❋ तुव बल विदित जान संसारा ॥
पितहि मराय मातु परहेली ❋ सकल लाज आये तुम पेली ॥
सो फल लेहु समर महँ आजू ❋ त्यागहु सकल कलंक समाजू ॥
सुनत क्रोध अंगद उर छावा ❋ गहिगिरि एक ताहि पर धावा ॥

दोहा—आवत शैल विशाल लखि, तिल सम शर हति कीन्ह
अंगद गर्व अपारसो, तसप्रभु उत्तर दीन्ह ॥ ५२ ॥

तमकि ताकि कुश बाणचलावा ❋ अंगद नील अकाश उडावा ॥
आवत जानि पुहुमि कपिभारी ❋ मारेउ बाण प्रचार प्रचारी ॥
इत उत जात कतहुँ नहिं पावत ❋ पवन पात जिमि महि नहिं आवत ॥
छिन अकाश छिन भूतल माहीं ❋ बोलेउ शरण शरण प्रभु पाहीं ॥
रहेउ गर्व मोहिं कृपानिधाना ❋ अग जग नाथ न मैं पहिचाना ॥
पाँच बाण वेधेउ कपि दोऊ ❋ दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ ॥
परे भरतके सन्मुख जाई ❋ दशादेखिकपि दशा भुलाई ॥
जाम्बवंत हनुमान कपीशा ❋ धाये तरु गिरिले बहुकीशा ॥

दोहा—हँसैं कुमरवरदेखिकपि, अनुजहि कहेउबुझाय ॥
अजहुं समरजीते भरत, भालुकपिन बिलखाय ॥ ५३ ॥

प्रभु सुत समर कीन्ह जसकरणी ❋ निगम शेष शारद नहिं वरणी ॥
चरित तासु सुनि शैलकुमारी ❋ मारेउ समर शूर कपिभारी ॥
समर वीर दोउ बाल विराजे ❋ निरखि भालु कपि मन अतिलाजे ॥
देखि भरत सब सेननिपाती ❋ कोपि बाण मारेउ लव छाती ॥
मूर्च्छित विकल परेउ महिमाहीं ❋ अतिहि विकल तनकी सुधिनाहीं ॥

भरत देखि कुशअमितरिसाना ❀ चाप चढाय बाण संधाना ॥
श्रवण प्रयंत खैंचि धनुवीरा ❀ भरत हृदय मारेउ शत तीरा ॥
भयो युद्ध जहां विविध प्रकारा ❀ वीर बाँकुरे सुभटअपारा ॥

दोहा—समरभूमि सोये भरत, लवहिं लीन उरलाय ॥
सुमिरमातु गुरुचरणयुग, रहे समरजय पाय ॥ ५४ ॥

आये खबरलेन वरचारी ❀ भरत सैन्य तिन सकल निहारी ॥
शोणित सरिता देखि डराने ❀ हय गय बहे जात रथ ताने ॥
देखी सरित भयंकर भारी ❀ कठिन कराल सुनहु उरगारी ॥
बहुतक उछरि बूड़ि पुनि जाहीं ❀ चर्म मनहु कच्छपकी नाईं ॥
ग्राह नक्र झक जंतु घनेरे ❀ देख दूरते तिनमन फेरे ॥
लहरत रंग वोर बहे जाहीं ❀ घायल परे तीर लपटाहीं ॥
फिरे दूत कौशलपुर आये ❀ समाचार सब राम सुनाये ॥
चरवर वचन सुनत सुखपावा ❀ त्यागेउ मग निज कटक बनावा ॥
चले सकोप कृपालु उदारा ❀ आये जहँ प्रभु कटक सँहारा ॥
मुनिवर बालक देख सुहाये ❀ शिरनवाय प्रभु निकट बुलाये ॥

दोहा—पूछे बाल बुलायदोउ, कहहु मात पितु नाम ॥
देश ग्राम निकसहु सकल, जीतेहु सब संग्राम ॥ ५५ ॥

गहहु अस्त्र निजकहहु कहानी ❀ पूछहु सुजन लाग असजानी ॥
समर करत अस कसकदराई ❀ छाँड़ि सोच अब करहु लराई ॥
वंश नाम बिनु पूछेहु ताता ❀ हतौं न बाण मनोहर गाता ॥
माता सिया जनककी जाता ❀ वाल्मीकि पाल्यो मुनि त्राता ॥
पिता वंश नहिं जानेहु आजू ❀ लव कुश नाम सुनहु रघुराजू ॥
सुनी कथा राखसि मन माहीं ❀ बाल विलोकि वधब भल नाहीं ॥
आवत सुभट समूह हमारे ❀ लरिहहिं तुम सन समर सुखारे ॥
असकहि अंगद नील उठावा ❀ जाम्बवंत कपि पतिहि बुलावा ॥

छंद—कपिराज अंगदजाम्बवानहिं बोलि निशिचरनायकं
हनुमान द्विविद मयंद नीलहिं सुभटजे अतिलायकं ॥

रणशूर हरितन पीरदारुण कह्यो हँसि रघुनन्दन ॥
भरतादि रिपुहन सहित लक्ष्मण परे खल मदगंजनं ॥
लंकेश आदिक सुभटमारे वीरजे महिमंडनं ॥
ते आज बालक विप्रसोरण मारिडारे खंडनं ॥
कुलकान जब निजमान सुभट सुशैलतरु बहुलैचले ॥
लेहिंवारण सबजूह पर्वत डारिपुनिरण महँमिले ॥१५॥

दोहा—सावधान धनुबाणले, धायउ लवबलवान ॥
सन्मुख आनि बिभीषणहिं, बोलेउ बहुरि रिसान ॥९६

पिता समान बंधु दोउ तोरा ❋ तियाताघुले घर बर जोरा ॥
सुनिशठ बंधुहि समर जुझाई ❋ शत्रुहि मिलेउ निपट कदराई ॥
पापी मातु कही कईवारा ❋ सेवनीय है धर्म तुम्हारा ॥
बूड़ मरहु सागर महँ जाई ❋ मर गर काटि अधम अन्याई ॥
समर भूमि सन्मुख तेहि आवा ❋ लाज होत नहिं गाल बजावा ॥
आँखिन आगेते हटि जाई ❋ नहिं तौ मृत्यु निकट चलि आई ॥
सुनिखिसियान गदा तेहि लीनी ❋ शर हति खंड खंड लवकीनी ॥
सात बाण मारेउ करि क्रोधा ❋ डगमगात शर लागत योधा ॥
गिरत कोपिकर शूल चलाया ❋ लवतन तडित समान समाया ॥

दोहा—दूरि शूलकरि बंधु दोउ, लखिमारेउ करिदाप ॥
जाम्बवंत कपिराज कहँ, अंगद करहिं विलाप ॥९७ ॥

जोगिरितरु कपि डारहिं आई ❋ रज समान तेहि देहिं उडाई ॥
निजवाणन कपि घायलकीने ❋ जो जेहि उचित सुतस फलदीने॥
रघु कुल तिलक प्रचारसि पाछे ❋ वीर धुरीन बने सब आछे ॥
अंगद हनूमान भटभारी ❋ ते धाये तरु शैल उपारी ॥
डारि शैल दोउ भिरे रिसाई ❋ मत्त मतंग वीर रथ पाई ॥
कपिन कोपि कर उर हततेहीं ❋ जिमि गजचढे मशक छबिदेहीं ॥
हति दोनों कपि भूमि गिराये ❋ जाम्बवंत कपिपति पहँ आये ॥
इहि तन कोटिक मरे लड़ाई ❋ जीते लड़े बहुत हम भाई ॥

[illegible] बालक त्रिभुवन बली, जीतसकै नहिं कोय ॥
[illegible]बलहु प्राण दीजै समर, अजय जगत नहिं कोय ॥५८॥

आवत भालु बली भट नाना ❀ तानि शरासन शर संधाना ॥
हृदय तानि लव मारेउ शायक ❀ योजन सात गयो कपिनायक ॥
धायउ बालु सकोप बढाई ❀ मल्ल युद्ध कुश कीन्ह बनाई ॥
निज बल रिच्छहि अवनि पछारा ❀ दुइकर खैंचि बाँधि विकरारा ॥
हनुमंतहि बाँध्यो पुनि धाई ❀ राखेउ निकट अश्वथल जाई ॥
रखवारी छाँडेउ लव वीरा ❀ आप गयो रघुनायक तीरा ॥
देखेउ रथपर श्रीपति सोये ❀ फिरेउ वीर निज लाज विगोये ॥
शुभग अस्त्र पट भूषण नाना ❀ लैघर अश्व रिच्छ हनुमाना ॥

छन्द—हरिगीतका ॥

शुभ अस्त्र पट भूषण सुमर्कट रिच्छसंग हयघरचले ॥
सिय निकट नायो माथ दोउ सुत भेट भूषण जे भले ॥
पहिचानि कपिदोउ निरखिभूषणसहमिसियधरणीपरी
इहिबीच मुनिवरसहितआयेसियहि अति विनतीकरी॥
हनुमान भालुहि छोडि वेगहि त्यागि बहुसमझायऊ ॥
रिपुदमनलछिमन सहित भरतहिं रामसमर पठायऊ॥
सुतकीन्ह कर्म कलंक कुलगहि मोहिं बिधिविधवाकरी
तजि सोच चंदन अगर आनहु जाउँ पियसंगअबजरी॥
सुनि धीर दीनेउ तनयलीनेउ संगलै सादर चले ॥
रण देखि बालक चकित चितवहिं बिहँसिमनसंशयभले
रथदेखिकर पहिचानि प्रभु कहँ जाय मुनि चरणनपडे ॥
उठि बैठि कौशलनाथ आतुर तनय तव आगे खडे १६॥

सो०—सुनि पुनि मुनिवर बैन, जागे रघुपति भयहरन ॥
बिहँसि उघारेउनैन, लीन्हे हृदय लगाइ मुनि ॥ ५ ॥

प्रभुहिं देखि मुनि अति हर्षाने ❀ बार बार निज भाग्य बखाने ॥
जेहि विधि शेष सीयवन आनी ❀ मुनि सो सबही कह्यो बखानी ॥

लवकुश कथा सकल मुनि भाखी ✽ शिव विरंचि सूरज क[illegible]
मिले तनय दोउ हृदय लगाई ✽ सुधावर्ष सुर सैन्य जिवाई ठावा ॥
भरत आदि जागे सब भ्राता ✽ लक्ष्मण चले जहां सिय माता ॥ ॥
बहुरि राम लक्ष्मणहि बुलाई ✽ सुनहुमात अस वचन सुनाई ॥
ऐसे वचन मानि मम भाई ✽ सिय सन दिव्य लेहु तुम जाई ॥
लक्ष्मण जाय शीश सिय नावा ✽ कुशल कही बहुविधि समुझावा ॥
हरिइच्छा सिय मन अस आवा ✽ शेष सहस फणि आनि दिखावा ॥

दोहा—जटित मणिन सिंहासनहिं, सादरसीय चढाय ॥
भये अलोप पताल महँ, महिमा किमिकहिजाय ॥ ५९ ॥

लक्ष्मण चरित देख सब ठाढे ✽ नयन प्रवाह चले अति गाढे ॥
सकल चरित सुनि कृपानिधाना ✽ चलन हमार सीय मन आना ॥
तनय सहित निजपुर प्रभु आये ✽ दान दीन्ह शुभ यज्ञ कराये ॥
जेहि जेहि विधि सुर आयसु दीने ✽ कोटि कोटि विधि सोइ प्रभुकीने ॥
कोटिक धेनु धाम धन धरणी ✽ दीन कृपानिधि कोसक वरणी ॥
भोजन विविध भाँति करवाये ✽ विदा कीन्ह मुनि वृंद बुलाये ॥
जनकहिं पूजि विदा प्रभु कीना ✽ दोउ गुरु पूजि पयोदकलीना ॥
आये जनक गुरुहिं पहुंचाई ✽ बैठे प्रभु महिदेव बुलाई ॥

दोहा—लक्ष लक्ष वर धेनुप्रभु, पूजि पूजि द्विज पाय ॥
एक एक विप्रन दई, हरषित कौशलराय ॥ ६० ॥

गे सब मुनि सज्जन निज धामा ✽ पायो अमित अमित सुख धामा ॥
पुरवासी आये सब झारी ✽ सुनहिं पुराण अनंद सुखारी ॥
जे जड़ चेतन जीव घनेरे ✽ सचराचर कौशल पुरकेरे ॥
तिन सुख पटतर नहिं सुरराशा ✽ करहिं विनोद विहाय अकासा ॥
इहिविधि विपुलकाल चलि गयऊ ✽ निजपुर गवनसु अवसर भयऊ ॥
बीती अवधि ब्रह्म जब जानी ✽ नारद मुनि सन कहा बखानी ॥
निजपुर आवन चहे खरारी ✽ धर्मराजको कहहु हँकारी ॥
विनती बहुरि विरंचि प्रभाषी ✽ चला धर्म रघुपति उर राखी ॥

दोहा—आयउयम रघुवीर पुर, मुनिवर भेष बनाय ॥

तरुण भुज सुन्दर तरुणि, कटि मृगतुचा सुहाय ॥ ६१ ॥

द्वारपाल लक्ष्मण कहँ जानी ❀ बोले तापस अति मृदुबानी ॥
तुरत शेष सब खबर जनाई ❀ सुनत वचन आये रघुराई ॥
मुनिहि निरखि प्रभु कीन्ह प्रणामा ❀ सादर उचित कहेउ श्रीरामा ॥
अर्घ्य दीन्ह आसन बैठारी ❀ मुनिवर सुंदर गिरा उचारी ॥
मुनि सर्वज्ञ कृपालु दिनेशा ❀ आयउ मैं तापसके भेशा ॥
मैं तुम रहौं अवर नहिं कोई ❀ तीसर सुनहिं नाश तिहिहोई ॥
सुनै शब्द तिहि देहुँ सरापू ❀ शिव विधि हरि आवै जो आपू ॥
सुनहु लखन चलि बैठु दुवारे ❀ नहिं कोउ आवत गिराउचारे ॥
ममकर वध आवै मुनि कोई ❀ मरहिं सत्य यह वृथा न होई ॥

दोहा—बोलेउ तापस वचन मृदु, पाहि पाहि रघुनाथ ॥
कहा सकल इतिहास मुनि, कहपुनि नायउमाथ॥६२॥

प्रभु इच्छा भावी बलवाना ❀ दुर्वासा मुनि आय तुलाना ॥
मुनिहि देखि लक्ष्मण चल आगे ❀ गयउ निकट विनती अनुरागे ॥
पूंछेउ मुनि कहँ रघुकुल ईशा ❀ जाउँ जहां मैं सुनहु अहीशा ॥
जो उत्तर प्रति करिहौ आजू ❀ भस्म करौं तुव घर पुर राजू ॥
कोपेउ लषण सुनत मुनि वानी ❀ निजवध समुझिहि चलेउभवानी ॥
दोउ कर जोरि कहेहु प्रभु पहँहो ❀ दुर्वासा मुनि आवन चहँही ॥
तात कीन्ह औगुण तुम भारी ❀ काल कर्म गति टरहिन टारी ॥
कीन्ह वचन दिनकर कुलकेतू ❀ मुनि खग अपर कथा करहेतू ॥

दोहा—तुरत कहेउ मुनि आनहु, सादर कृपानिधान ॥
चलहु वेगि मुनि तुरत अब, कहा राम भगवान ॥ ६३ ॥

छन्द--हरिगीतका ॥

अतितेजवंत विलोकि आवत उचित उठि आसनदियो ॥
जल आनि सादरधोय पद प्रभु शुभग पादोदक लियो ॥
जन जानि मुनिवरदेहु आशिष वेग सोइ सादर करौं ॥
बहुकाल क्षुधित कृपालु दिन बहुगये विनुभोजन मरौं ॥

मन भाव भोजन दीन्ह रघुपति बहुत विधिविनती कर।
संतोषपाय मुनीश अस्तुनिविनयकरि आशिष भरी छावा ॥
करि बिदामुनिवर देख लक्ष्मणहृदय दारुण दुख भये॥
भरतादि अनुजसमेत पुरजन ताहि छिन देखन गये ॥
पदवंदिठाढे जोरि दोउ कर वक्ष लगि अति कंपही ॥
भरिनैन पंकजनीर आनन भरत सन प्रभु सबकही ॥
अबगुरुहिआनहु वेगि सादर दुखित अति सादरचले ॥
सब कथा गुरुहि सुनाय आतुर यान चढि आवत भले ॥
आये वशिष्ठ विलोकि रघुपतिविकल उठि चरणनपरे ॥
संवाद सुनि मुनि समय जान्यो त्यागहैं अवतनहरे ॥
मुनिवचनशेष विचारि निजउर रामविनु धृकजीवनो ॥
गहि चरण सरयूतीर आये देख जल प्रभु पीवनो॥ १७॥

दोहा–कटि प्रयंत जल मध्यमहँ, कीन्हेउध्यान अखंड ॥
जो जग जतन सुराम कहि, फोरो निज ब्रह्मंड ॥ ६४ ॥
राम धाम पहुँचे तुरत, लक्ष्मण चतुरथ भाग ॥
सुनि व्याकुल रघुपति भरत, मिटे सकल अनुराग॥६५॥

मैंन तजेउ पाओ मोहिं ताता ❋ अवकर जतन सुहृदये भ्राता ॥
करहु भरत पुर राज सुखारी ❋ सुनत गिरेउ महिव्याकुल भारी ॥
चलन चहत अब प्राण गुसाँई ❋ प्रभु लक्ष्मण विनु रह नसकाई ॥
तात कहहु चलतनय बुलाई ❋ कीन्ह तिलक बहु नीति सिखाई॥
भरत सुतनय शील चैनामा ❋ तच्छक नगर दियो तिहिरामा ॥
दूसर पुष्कर जेहि जग जाना ❋ पुष्पकवती नगर मन माना॥
प्रथम दैत्य हत तहां बसाये ❋ दीन कृपानिधि तिन मन भाये ॥
चित्रकेतु अंगद रणधीरा ❋ लक्ष्मण तनय शुभग गंभीरा॥

दोहा–पश्चिम दिशा पिशाच बहु, जीतहते संग्राम ॥
तहँ राखे सुत सरस दोउ, विलग विलग कहिनाम ॥ ६६ ॥

[illegible]ध नृपति कुश कीन्ह बहोरी ❋ सिखानीति पुनि कह्यो निहोरी ॥
[illegible]तन पर सुत दया करै हौ ❋ राजनीति उर माहिं धरै हौ ॥
उत्तर नगर सो उत्तर दूरी ❋ सुख संपदा जहां अति पूरी ॥
लवकुश हय रथ तुरँग पचासा ❋ दशसहस्र गज मत्त विलासा ॥
नवै इन्द्र गज तिनहि विलोकी ❋ दिगपालन निज प्रभुतारोकी ॥
शक्र कुबेर देखि सकुचाने ❋ तिनकी महिमा कवन बखाने ॥
एक एक सुत कीन्ह सुदाया ❋ रहे सुकुशहि दीन्ह रघुराया ॥
धन कोटिक सभ भरे भँडारा ❋ यथा योग्य करि भाग उदारा ॥

दोहा–सकल तनय परितोष करि, विदा कीन्ह रघुवीर ॥
विप्रवृन्द याचक सकल, लिये बोलि मतिधीर ॥ ६७ ॥

धेनु वसन धरती धन धामा ❋ दीन्ह कीन्ह परि पूरण कामा ॥
याचक वृन्द अवधके वासी ❋ बोले प्रभुसन अज अविनासी ॥
हम भरि जन्म चरण अनुरागी ❋ अंतकाल अब हौन अभागी ॥
जो हितमान लेहु हम साथा ❋ करहु कृपानिधि सकल सनाथा ॥
सुनि सनेह मय वचन सुहाये ❋ चलहु कहेउ प्रभु अति सुखपाये ॥
समय जानि कपिपति तहँ आवा ❋ अंगद राजनीति सुख पावा ॥
जाम्बवंत लंकापति वीरा ❋ नल अरु नील द्विविद रणधीरा ॥
कोटिनकीशजु सुर अवतारी ❋ आये तहां कृपालु खरारी ॥

सो०–कह प्रभु सुन लंकेश, राजकल्पशत करहु तुम ॥
सत्य वचन मम पेष, अंत अमर पुरगवन कुरु ॥ ६ ॥

जाम्बवंत से कह मृदु बानी ❋ रहु द्वापर भर अस जिय जानी ॥
कृष्ण रूप धरि मिलि हौं तोहीं ❋ समर भूमि तब जानधि मोहीं ॥
असकहि सब विधि धीरज दीन्हा ❋ आप गवन सरयू तट कीन्हा ॥
दक्षिण भरत वाम रिपुदमनू ❋ पुरवासी सब निज कुल कमनू ॥
अग्नि वेद गायत्री छन्दा ❋ धरि निजरूप चले सुर वृन्दा ॥
पीताम्बर पट सुन्दर धारी ❋ जडचेतन चर अचर सुखारी ॥
प्रथमरूप धरि सुन्दर आई ❋ जस कछु कीन्ह सो सुनिखगराई ॥

समय जानि तब पवनकुमारा ॥ बोले वचन कृपा आगारा ॥ ...वा ॥
दोहा-चिरंजीव सुतरहेउ तुम, जब लगि रविशशि शेष ॥ ... ॥
तोहि सेवत मिटिहहिं सकल, दुस्तर कठिन कलेश ॥ ६८ ॥

चतुरानन पहँ धर्म सिधाये ॥ सरयूतीर जगतपति आये ॥
चले देव अज भव सनकादी ॥ जो मुनि परम अलौकि अनादी ॥
कोटिनरथ वाहन विधिनाना ॥ अरुण अकाश नजाय बखाना ॥
नभ पर जयजयजयधुनिहोई ॥ पावहिं वर सुर याचहिं जोई ॥
दीख नाग रथ मग परछाईं ॥ जिमि गिरि कृमि नभपंथ उड़ाईं ॥
करि पुर सजग देव तनुधारी ॥ आप चतुर भुज रूप खरारी ॥
चढि विमान प्रभुधाम सिधाये ॥ सकल अमरपति कहँ सकुचाये ॥
सुमनवृष्टि नभ होत अपारा ॥ मुनि नारद विधि वेद उचारा ॥

छन्द-हरिगीतका ॥

उच्चरित वेदहि भये तब सब भरतलै सादर कियो ॥
जल परसिकर रिपुदमन सादर पद्मवन राजा भयो ॥
कपि आदि यूथप राखि उर प्रभु सकलनिजनिजघरगये
सुग्रीव प्रभु पद वंदि बारहिं बार रवि मंडल छये ॥
सुरसहित दिनकर वंश भूषण आयजल आश्रितरहे ॥
तेहिसमयबोलि अजादि प्रभुसुर शिववचनपावनकहे ॥
इक मास रहो तुम नीर यह ममपुरी जीवजुआवहीं ॥
इह परम पावन भूमि सरयू एक पल जेहि पावहीं ॥
अतिप्रीति रुचिर सनेह मज्जहिं मन चरण रतिहैसदा ॥
तरि जाय सुर पुर सकल सादर सुनहु ममवानी मुदा ॥
कहि वचन अंतरध्यान प्रभु जिमिदामनी घनमें धसैं ॥
नभ जयति जय जयकार जयजय जयतिकरलै सुरलसैं ॥
इहि भाँति रघुपति सह चराचर लैगये निज धामको ॥
सो कह्यो उमय कृपालु तनउरराखि सादर रामको ॥ १८ ॥

दोहा–उमा सो संत समागमहिं, सम न लाभ कछु आन॥
बिनुहरि कृपा न होयसो, गावहिं वेद पुरान॥ ६९॥
इहि विधि सब संवाद सुनि, प्रफुल्लित गरुड शरीर॥
बारबार तब चरण गहि, जानि दास रघुवीर॥७०॥

मैं कृतकृत्य भयों तुव वानी ❋ सुनि प्रभुकथा भक्ति रसखानी॥
रामचरण नूतन रतिभयऊ ❋ बहुविधि नाथ मोहिं सुखदयऊ॥
मोपर होय न प्रति उपकारा ❋ वन्दों तव पद बारहिं बारा॥
पूरण काम राम अनुरागी ❋ तुम सम तातनकोउ बड भागी॥
मोहिंजलधि वोहिततुमभयऊ ❋ तव प्रदीप संशयसबगयऊ॥
संत विटप सरिता गिरिधरनी ❋ पर हित हेत सबन की करनी॥
संत हृदय नवनीत समाना ❋ कहाकबिन पर कहानजाना॥
निज परिताप द्रवै नवनीता ❋ परदुखद्रवहिंसुसंतपुनीता॥
जीवनजन्मसफल सममभयऊ ❋ परम पुनीत विबुध सुखदयऊ॥
जानहु सदा मोहिं निजकिंकर ❋ पुनि पुनि उमा कहेउ विहंगवर॥

दोहा–तासु चरणशिर नायकरि, हृदय राखि रघुवीर॥
गयउ गरुड वैकुंठ तब, प्रेम सहित मतिधीर॥ ७१॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेअविरलभ-
क्तिकरसंवादनोनाम अष्टमः काण्डः समाप्तः॥

इति रामाश्वमेध लवकुशकाण्डं सम्पूर्णम्॥

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना
कल्याण–(मुम्बई)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ...ठावा ॥

...? ॥

अथ
श्रीरामचन्द्रके चतुर्दश वर्ष वनवासका
तिथि पत्रम् ॥

दोहा—सुमिरि रामसिय चरणशुभ, सकल सुमंगल दानि॥
अग्निवेश मत कहौं कछु, तिथि वनवास बखानि ॥ १ ॥

चैतशुक्लनवमी जगजानो ❋ तेहिदिन जन्म लयो सुखदानी ॥
वर्ष चतुर्दश चारहु भाई ❋ बालचरित्र किये सुखदाई ॥
वर्षपंचदश माहिं सुहाये ❋ विश्वामित्र बुलावन आये ॥
पंद्रहदिवस संग मुनिनाथा ❋ काज सँवारे श्रीरघुनाथा ॥
पुनि प्रभु मिथिलापुर जब आये ❋ जनकरायने दर्शन पाये ॥
धनुषभंगकर जय जिमि पाई ❋ पन्द्रहदिवस रहे रघुराई ॥
हिमऋतु अघहनमास सुहावन ❋ शुक्लपक्ष पांचैं तिथि पावन ॥
मीनलग्न वृश्चिकके भानू ❋ भयो व्याह आनंद निधानू ॥
वर्ष पंचदशके भगवाना ❋ सीय वर्षछःकी जगजाना ॥

दोहा—करि विवाह आये घरहि, मंगलमोद अपार ॥
द्वादशवर्ष विलासयुत, रहे कृपा आगार ॥ २ ॥

वर्ष सताइसमें रघुनाथा ❋ कीन गवन वन लक्ष्मण साथा ॥
तीन दिवस बीते जलपाना ❋ कियो राम सीता जगजाना ॥
चौथे दिवस लषण रघुराई ❋ शृंगवेरपुर फल कछु खाई ॥
पँचयें दिन श्रीकृपा निधाना ❋ सुरसरि उतरि चले भगवाना ॥
भरद्वाज आश्रम सुखदाई ❋ रह तहां यक दिन रघुराई ॥
वाल्मीकिसे मिल सुखपाई ❋ चित्रकूटमें कुटी बनाई ॥
तहँ जयन्त सिखदीन्ह रमेशा ❋ वासकीन्ह कछु दिन अवधेशा ॥

दोहा—चित्रकूटसे चल बहुरि, वध विराध कर कीन्ह ॥
मिल सुतीक्ष्ण शरभंगसे, ऋषि अगस्त्य सुख दीन्ह ॥ ३ ॥

कमल ७०

❋ चतुर्दशवर्ष वनवासका तिथिपत्रम् ❋

८

..गिधि द्वादशवर्ष बिताये ❋ पुनि प्रभु पंचवटीमें आये ॥
वर्ष त्रयोदश भयो प्रवेशा ❋ खरदूषणवध कीन्ह रमेशा ॥
माघशुक्क आठैं जब आई ❋ दिन मध्याह्न दशानन जाई ॥
छलकरि हरी सीय महारानी ❋ लेगयो निज लंका रजधानी ॥
पुनि जटायुको कर उद्धारा ❋ दुष्ट कवन्ध निशाचर मारा ॥
शबरिहि गतिदे पंचममासा ❋ मिलि आषाढ सुग्रीव हुलासा ॥
वालिहि मार मास तहँ चारी ❋ रहे प्रवर्षण पर असुरारी ॥
पुनि सीतहि खोजन कहँ वानर ❋ जेहिविधि चले बुद्धिबलआगर ॥

दोहा—मार्गशीर्ष कृष्णा शुभग, हरि वासर हनुमान ॥
सिंधुलांघि लंकहि चले, महाधीर बलवान ॥ ४ ॥

त्रयोदशी ढूंढ हनुमाना ❋ पुनि अशोकवन माहिं समाना ॥
जनकसुताके दर्शन पाई ❋ मुद्री प्रभुकी दीन्ह गहाई ॥
पुनि अशोकवन सकल उजारा ❋ चौदशको अक्षय कहँ मारा ॥
लंक दाहकर सियतट आई ❋ चूडामणिले चले सुहाई ॥
वारिधि लांघ सेननिज आये ❋ समाचार सुन सब हर्षाये ॥
चले तहांते सब सुखपाई ❋ पांचदिवस मग माहिं बिताई ॥
अघहन शुक्लाछठ सुखदाई ❋ किष्किंधा सब पहुँचे आई ॥
शुक्रवारसप्तमी सुहाई ❋ जनकसुताकी सुधि प्रभुपाई ॥

दोहा—अघहनशुक्ला अष्टमी, सेनसहित भगवान ॥
उत्तराफाल्गुनि नखतमें, लंकहि कीन पयान ॥ ५ ॥

सातदिवस मगमाहिं बिताये ❋ पूनोको वारिधितट आये ॥
पौष तृतीयातक सुखरासा ❋ तीनदिवस तहँ कीन निवासा ॥
पौष चतुर्थीकृष्ण सुहाई ❋ आये शरण विभीषण धाई ॥
पौष अष्टमीतक रघुराई ❋ विनय कीन सागर तट आई ॥
नवमी विप्ररूप धरिसागर ❋ आये शरण रामनयनागर ॥
दशमीपौष सेतु दृढ भारी ❋ दशयोजन कपि रच्यो विचारी ॥
एकादशि कहँ योजनवीसा ❋ बारस तीस बंध्यो ...

तुरतहि रुचिर रूप तेहि पावा ❀ देखि दुखी निजधाम पठावा ॥
तासु अस्थि गाडेउ प्रभु धरणी ❀ देवमुदित मन लखि प्रभुकरणी ॥
सीता आइ चरण लपटानी ❀ अनुज सहित तब चले भवानी ॥
वहां शक्र जहँ मुनिशर भंगा ❀ आये सकल देव निज संगा ॥
गये कहन प्रभु दैन सिखावन ❀ दिशि बलभेद बसत जहँ रावन ॥

दोहा—सुरपति संशय तिमिरसम, रघुपति तेज दिनेश ॥
रावण जीतन निशि सम, बीते छुटहिं कलेश ॥ ११ ॥

सुनोसीर प्रभु तिहि क्षण देखा ❀ तेजनिधान शुभ्र अति बेषा ॥
तुरंग चारि बल मरुत समाना ❀ रथ रविसम नहिं जाय बखाना ॥
क्षिति न परस अन्तरहित रहई ❀ श्वेतछत्र चामर शिर ढरई ॥
अनुजहि प्रियहि कहा समुझाई ❀ सुरपति महिमा गुण प्रभुताई ॥
जिहि कारण वासव तहँ आये ❀ सो कछु वचन कहत नहिं पाये ॥
बीचहि सुनि आउब प्रभु केरा ❀ कहि सारथी तुरत रथ फेरा ॥
दूरिहिते कहि प्रभुहि प्रणामा ❀ हरषि सुरेश गयउ निजधामा ॥

इति क्षेपक ॥

प्रभु आये जहँ मुनि शरभंगा ❀ सुन्दर अनुज जानकी संगा ॥

दोहा—देखि राम मुख पंकज, मुनिवर लोचन भृङ्ग ॥
सादर पान करत अति, धन्य धन्य शरभङ्ग ॥ १२ ॥

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला ❀ शंकर मानस राज मराला ॥
जात रहेउँ विरंचिके धामा ❀ सुनेउँ श्रवण वन आवत रामा ॥
चितवत पन्थ रहेउँ दिनराती ❀ अब प्रभु देखि जुडानी छाती ॥
नाथ सकल साधन मैं हीना ❀ कीन्ही कृपा जानि जगदीना ॥
सो कछुदेव न मोर निहोरा ❀ निज प्रणराखेउ जन मन चोरा ॥
तबलगि रहहु दीन हित लागी ❀ जबलगि मिलौं तुम्हैं तनु त्यागी ॥
योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा ❀ प्रभु कहँदेइ भक्तिवर लीन्हा ॥
यहि विधि सर रचि मुनि शरभंगा ❀ बैठे हृदय , छाँडि सब संगा ॥

---

१ हाड । २ इन्द्र । ३ घोडा । ४ अमर । ५ ...

दोहा-सीता अनुज समेत प्रभु, नीलजलद तनु श्याम ॥
मम हिय बसहु निरन्तर, सगुणरूप श्रीराम ॥ १३ ॥

असकहि योग अग्नि तनु जारा ❀ राम कृपा वैकुण्ठ सिधारा ॥
ताते मुनि हरि लीन न भयऊ ❀ प्रथमहिं भेद भक्ति वर लयऊ ॥
ऋषि निकाय मुनिवर गति देखी ❀ सुखी भये निज हृदय विशेषी ॥
अस्तुति करहिं सकल मुनिवृन्दा ❀ जयति प्रणत हित करुणा कन्दा ॥
पुनि रघुनाथ चले वन आगे ❀ मुनिवर वृन्द पुलकि सँग लागे ॥
अस्थिसमूह देखि रघुराया ❀ पूछा मुनिन्ह लागि अतिदाया ॥
जानतहहु का पूछहु स्वामी ❀ समदर्शी उर अन्तरयामी ॥
निशिचर निकर सकल मुनिखाये ❀ सुनि रघुनाथ नयन जल छाये ॥

दोहा-निशिचर हीन करौं महि, भुज उठाय प्रण कीन्ह ॥
सकल मुनिन्हके आश्रमन्ह, जाइ जाइ सुखदीन्ह ॥ १४ ॥

मुनि अगस्त्यकर शिष्य सुजाना ❀ नाम सुतीक्षण रत भगवाना ॥
मन क्रम वचन राम पद सेवक ❀ स्वप्नेहुँ आन भरोस न देवक ॥
प्रभु आगमन श्रवण मुनिपावा ❀ करत मनोरथ आतुर धावा ॥
हेविधि दीनबन्धु रघुराया ❀ मोसे शठ पर करिहहिं दाया ॥
सहित अनुज मोंहिं राम गुसाईं ❀ मिलिहहिं निज सेवककी नाईं ॥
मोरे जिय भरोस दृढ नाहीं ❀ भक्ति न विरति ज्ञान मनमाहीं ॥
नहिं सतसंग योग जप यागा ❀ नहिं दृढ चरण कमलअनुरागा ॥
एकबानि करुणा निधानकी ❀ सो प्रिय जाके गति न आनकी ॥

छं०-सोउपरमप्रियअतिपातकीजिन्हकबहुँप्रभुसुमिरणकर्यो ।
ते आजुमैं निज नयन देखौं पूरि पुलकित हियभर्यो ॥
जेपद सरोज अनेकमुनि करिध्यान कबहुँ न आवहीं ॥
तेराम श्रीरघुवंश मणि प्रभुप्रेमते सुख पावहीं ॥ ९ ॥

दोहा-पन्नगारि सुनु प्रेम सम, भजन न दूसरआन ॥
यह बिचारि पुनि पुनि मुनि, करत रामगुण गान ॥ १५ ॥

---

१ नीलमेघ । २ मुनिसमूह । ३ हाडोंकेढेर । ४ प्रीति । ५ आनकही कर्म धर्म अपर देव अरु [illegible] पदार्थ अर्थ, धर्म्म, काम, मोक्ष, इन सबनको भरोस जिनके लेशहू नहीं है । ६ गरुड

होइहहिं सफल आजु मम लोचन ❀ देखिबदन पंकज भवमोचन ॥
निर्भरप्रेम मगन मुनि ज्ञानी ❀ कहिन जाइ सो दशा भवानी ॥
दिशि अरु बिदिशि पंथ नहिंसूझा ❀ कोमैं कहां चलौं नहिं बूझा ॥
कबहुंक फिरि पाछे पुनि जाई ❀ कबहुंक नृत्य करै गुण गाई ॥
अविरल प्रेम भक्ति मुनिपाई ❀ प्रभुदेखहिं तरु ओट लुकाई ॥
अतिशय प्रीति देखि रघुबीरा ❀ प्रकटे हृदय हरण भवभीरा ॥
मुनिमगु मांझ अचलहोइ वैसा ❀ पुलक शरीर पनसफल जैसा ॥
तब रघुनाथ निकट चलिआये ❀ देखि दशा निज जनमन भाये ॥

"सो०--राम सुसहज सुभाव, सेवक सुख दारिद दमन ॥
मुनिसन कह प्रभु आव, उठ उठ द्विज मम प्राण सम॥७॥"

मुनिहिं राम बहुभांति जगावा ❀ जागन ध्यान जनितें सुखपावा ॥
भूप रूप तब राम दुरावा ❀ हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा ॥
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे ❀ विकलहीन फणि मणि बिनु जैसे॥
आगे देखि राम तनुश्यामा ❀ सीता अनुज सहित सुखधामा ॥
परेउ लकुट इव चरणन्ह लागी ❀ प्रेम मगन मुनिवर बडभागी ॥
भुजबिशाल गहि लिये उठाई ❀ प्रेम प्रीति राखेउ उरलाई ॥
मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला ❀ कनक तरुहि जनु भेंटतमाला ॥
राम बदन बिलोकि मुनि ठाढा ❀ मानहुँ चित्र मांझ लिखि काढा ॥

दोहा--तब मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिं बार ॥
निज आश्रम प्रभु आनि करि, पूजा विविध प्रकार ॥१६॥

कहमुनि प्रभु सुन विनती मोरी ❀ अस्तुतिकरौं कवन विधि तोरी॥
महिमा अमित मोरि मतिथोरी ❀ रवि सन्मुख खद्योत उजोरी ॥
श्याम तामरस दाम शरीरं ❀ जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं ❀ नौमि निरन्तर श्रीरघुवीरं ॥
मोह विपिन घनदहन कृशानुं ❀ सन्त सरोरुह कानन भानुं ॥
निशिचर करि बरूथ मृगराजं ❀ त्रातु सदा नो भव खग वाजं ॥

---

१ कटहलकाफल । २ उत्पन्नहोनेका सुख । ३ जुगनू । ४ नीलकमल । ५ कटि ।

अरुण नयन राजीव सुवेषं ❋ सीता नयन चकोर निशेषं ॥
हर हृद मानस राज मरालं ❋ नौमि राम उर बाहु विशालं ॥
संशय सर्प ग्रसन उरगादं ❋ शमन सकल संताप विषादं ॥
भवभंजन रंजन सुरयूथं ❋ त्रातु सदा नो कृपा वरूथं ॥
निर्गुण सगुण विषम समरूपं ❋ ज्ञान गिरा गोतीत अनूपं ॥
अमल अखिल अनवद्यमपारं ❋ नौमि राम भंजन महि भारं ॥
भक्त कल्प पादप आरामं ❋ तर्जन क्रोध लोभ मद कामं ॥
अतिनागर भवसागर सेतुं ❋ त्रातु सदा दिनकर कुलकेतुं ॥
अतुलित भुजप्रताप बलधामं ❋ कलिमल विपुल विभंजन नामं ॥
धर्म्म वर्म्म[1] नर्म्मद[2] गुण ग्रामं ❋ संतत संतनोतु मम कामं ॥
यदपि विरज व्यापक अविनासी ❋ सबके हृदय निरन्तर वासी ॥
तदपि अनुज सिय सहित खरारी ❋ बसहु मनसि मम काननचारी ॥
जेजानहिं ते जानहु स्वामी ❋ सगुण अगुण उर अन्तरयामी ॥
जोकोशलपति राजिव नयना ❋ करौ सो राम हृदय मम अयना[3] ॥

सो०-मायावश जिमि जीव, रहहिं सदा सन्तत मगन ॥
तिमि लागहु मोहिं पीव, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥८॥

अस अभिमान जाय जनि भोरे ❋ मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
राम भक्ति तजि चह कल्याना ❋ सोनर अधम शृगाल समाना ॥
सुनि मुनि वचन राम मनभाये ❋ बहुरि हर्षि मुनिवर उरलाये ॥
परम प्रसन्न जानि मुनि मोहीं ❋ जोवर मांगु देउँ मैं तोहीं ॥
मुनिकहँ मैं वर कबहुँन यांचा ❋ समुझि न परै झूंठ का सांचा ॥
तुमहिं नीक लागै रघुराई ❋ सो मोहिं देहु दास सुखदाई ॥
अविरल भक्ति विरति विज्ञाना ❋ होहु सकल गुणज्ञान निधाना ॥
प्रभुजो दीन्ह सो वर मैं पावा ❋ अब सो देहु मोहिं जो भावा ॥

दोहा-अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बाण धरि राम ॥
ममहिंय गगन इन्दु इव, बसहु सदा निष्काम ॥ १७॥

---

१ बख्तर। २ अंतःकरणकी कठोरताके नाश करता हैं किन्तु मदते रहित करदेते हैं। ३ मायाते रहित। ४ स्थान।

एवमस्तु कहि रमा निवासा ❋ हर्षि चले कुम्भज ऋषि पासा ॥
मुनिप्रणाम करि युगकर जोरी ❋ सुनहु नाथ कछु विनती मोरी ॥
बहुत दिवस गुरु दरशन पाये ❋ भये मोहिं यहि आश्रम आये ॥
अब प्रभु संग जाउँ गुरुपाहीं ❋ तुमकहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥
चलेजात मग तव पदकंजा ❋ देखिहौं जो विराध मद गंजा ॥
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई ❋ लिये संग विहँसे दोउ भाई ॥
पन्थ कहत निज भक्ति अनूपा ❋ मुनि आश्रम पहुँचे सुर भूपा ॥
(आश्रम देखि महाशुचि सुन्दर ❋ सरित सरोवर कानन भूधर ॥
जलचर थलचर जीव जहीते ❋ वैर न करहिं प्रीति सबहीते ॥

दोहा—तरु बहु विविध बिहंग मृग, बोलत विविध प्रकार ॥
बसहिं सिद्ध मुनि तप करहिं, महिमा गुण आगार॥ १८॥)

सुरत सुतीक्षण गुरु पहँ गयऊ ❋ करि दण्डवत कहत अस भयऊ ॥
नाथ कोशलाधीश कुमारा ❋ आये मिलन जगत आधारा ॥
राम अनुज समेत वैदेही ❋ निशिदिन देव जपतहहु जेही ॥
सुनत अगस्त्य तुरत उठिधाये ❋ प्रभु विलोकि लोचन जलछाये ॥
मुनि पद कमल परे दोउ भाई ❋ ऋषि अति प्रीतिलिये उरलाई ॥
सादर कुशल पूछि मुनिज्ञानी ❋ आसनपर बैठारे आनी ॥
मुनि करि बहु प्रकार प्रभुपूजा ❋ मोहिं सम भागवन्त नहिं दूजा ॥
जहँ लगि रहे अपर मुनि वृन्दा ❋ हर्षे सब विलोकि सुखकन्दा ॥

दोहा—मुनि समूह महँ बैठि प्रभु, सन्मुख सबकी ओर ॥
शरद इन्दु जनु चितवत, मानहुँ निकर चकोर ॥ १९ ॥

(पाइ सुथल जल हर्षित मीना ❋ पारस पाइ सुखी जिमि दीना ॥
प्रभुहि निरखि सुखभा इहि भांती ❋ चातक जिमि पाई जलस्वाती ॥)
तब रघुवीर कहा मुनिपाहीं ❋ तुमसन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥
तुम जानहु ज्यहि कारण आयउँ ❋ ताते तात न कहि समुझायउँ ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही ❋ ज्यहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही ॥
द्विज द्रोही न बचहिं मुनिराई ❋ जिमि पंकज बन हिमऋतु पाई ॥

मुनि मुसकाने सुनि प्रभु वानी ❋ पूछहु नाथ मोहिं का जानी ॥
तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी ❋ जानौं महिमा कछुक तुम्हारी ॥
(सो०–भृकुटी निरखत नाथ, रहत सदा पद कमलतर ॥
जिनडारे निज हाथ, विविध विधाता सिद्धहर ॥ ९ ॥
अतिकराल तव पर जग जाना ❋ औरौ कहौं सुनिय भगवाना ॥)
ऊमरितरु विशाल तव माया ❋ फल ब्रह्माण्ड अनेक निकाया ॥
जीव चराचर जन्तु समाना ❋ भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥
तेफल भक्षक कठिन कराला ❋ तव भय डरत सदा सोकाला ॥
ते तुम सकल लोकपति साईं ❋ पूंछयहु मोहिं मनुजकी नाईं ॥
यहवर मांगों कृपानिकेता ❋ बसहु हृदय सिय अनुज समेता ॥
अविरल भक्ति विरत सतसंगा ❋ चरण सरोरुह प्रीति अभंगा ॥
यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनन्ता ❋ अनुभव गम्य भजहिं ज्यहि संता॥
अस तव रूप बखानौं जानौं ❋ फिरि फिरि सगुण ब्रह्मरति मानौं॥
दोहा–जाहि जीव पर तव कृपा, संतत रहत हुलास ॥
तिनकी महिमा को कहै, जो अनन्य प्रियदास ॥ २० ॥
सन्तत दासन्ह देहु बड़ाई ❋ ताते मोहिं पूछयहु रघुराई ॥
हैप्रभु परम मनोहर ठाऊं ❋ पावन पंचवटी त्यहिनाऊं ॥
गोदावरी नदी तहँ बहई ❋ चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहई ॥
दंडकँवन पुनीत प्रभु करहू ❋ उग्रशाप मुनिवर कर हरहू ॥

---

* एक समय पंचवटीमें दुर्भिक्ष पडा तब सब मुनि आहारार्थ गौतमऋषिके पासगये तब गौतमने तप बलसे बहुतकालतक ऋषियोंका पालन किया पश्चात् ऋषियोंने आपसमें विचार किया कि, अब जनस्थानको चलना चाहिये परन्तु गौतमके भयसे जा न सके तब सबोंने छलकरके मायाकृत एक गऊ बनाय गौतमऋषिके हाथमें दे उसकी प्रशंसा करने लगे इसमें वोह हाथसे छूट मरगई तब ऋषि गौतमजीको गोहत्या दोष लगाय दण्डकारण्यको चलेगये जब पीछे गौतमजीने जाना कि ऋषियोंने छल किया तब यह शाप दिया कि जिस वनके लो-

१ भौंह। २ गूलरकावृक्ष। ३ जिसमें एक पल चित्तकी वृत्तिमें विक्षेप न परै।

वास करहु तहँ रघुकुल राया ❀ कीजै सकल मुनिन्ह पर दाया ॥
चले राम मुनि आयसु पाई ❀ तुरतहि पंचवटी नियराई ॥
दिव्य लता द्रुम प्रभुमन भाये ❀ निरखि राम ते भयउ सुहाये ॥
लषण राम सिय चरण निहारी ❀ कानन अघगा भा सुखकारी ॥

दोहा–गृध्र राजसों भेंट भइ, बहुविधि प्रीति दृढाय ॥
गोदावरी समीप प्रभु, रहे पर्णगृह छाय ॥ २१ ॥

जबते रामकीन्ह तहँ वासा ❀ सुखी भये मुनि वीते त्रासा ॥
गिरि वन नदी ताल छबि छाये ❀ दिन दिनप्रति अतिहोत सुहाये ॥
खगमृग वृन्द अनन्दित रहहीं ❀ मधुप मधुर गुंजत छवि लहहीं ॥
सोवन वरणि नसक अहिराजा ❀ जहां प्रकट रघुवीर विराजा ॥
एक वार प्रभु सुख आसीना ❀ लक्ष्मण वचन कहे छल हीना ॥
सुर नर मुनि सचराचर साईं ❀ मैं पूंछौं निज प्रभुकी नाईं ॥
मोहिं समुझाइ कहो स्वइदेवा ❀ सब तजि करहुँ चरण रज सेवा ॥
कहहु ज्ञान विराग अरु माया ❀ कहहु सो भक्ति करहु ज्यहि दाया ॥

दोहा–ईश्वर जीवहि भेद प्रभु, सकल कहहु समुझाइ ॥
जाते होइ चरणरति, शोक मोह भ्रम जाइ ॥ २२ ॥

थोरेमहँ सब कहौं बुझाई ❀ सुनहु तात मति मन चित लाई ॥
मैं अरु मोर तोर तैं माया ❀ ज्यहि बश कीन्हे जीवनिकाया ॥
गो गोचर जहँलगि मनजाई ❀ सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ ❀ विद्या अपर अविद्या दोऊ ॥

भसे तुमने मुझसे छल किया वोह भ्रष्ट होजाय और राक्षस वासकरैं (दूसरी कथा) राजा दंढकने अपनी गुरुपुत्रीसे अप्रसन्नतासे भोग किया उसने अपने पिता भृगुमुनिसे कहा तब मुनिने शाप दिया कि इस राजाका सब दिशा भ्रष्ट होजाय और धूरि वरषे तब ऋषिलोग वहांसे भागकर जहां बसे वही स्थान जनस्थान कहलाया और रामचंद्रने पवित्र किया तब फूल फल लगे हराहुआ ॥

---

१ वन । २ भय । ३ पर्व्वत । ४ शेषनाग । ५ चरणोंमें प्रीति । ६ पांच ज्ञान इन्द्रिय पांच कर्म इन्द्रिय श्रवण, त्वक्, नयन, रसना, नाशिका, ये पांच ज्ञानइन्द्रियः पुनि, कर, गुदा, लिंग, पग, मुख, ये पांच कर्म इन्द्रिय ।

एक दुष्ट अतिशय दुखरूपा ❋ जावश जीव पराभव कूपा ॥
एक रचै जग गुण वश जाके ❋ प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताके ॥
ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं ❋ देखत ब्रह्म रूप सब माहीं ॥
कहिय तात सो परम विरागी ❋ तृण सम सिद्धि तीनिगुण त्यागी ॥

दोहा–माया ईश न आपु कहँ, जानि कहै सो जीव ॥
बन्ध मोक्ष प्रद सर्व पर, माया प्रेरक सीव ॥ २३ ॥

धर्म्म ते विरति योग ते ज्ञाना ❋ ज्ञान मोक्ष प्रद वेद बखाना ॥
जाते वेगि द्रवौं मैं भाई ❋ सो मम भक्ति भक्त सुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलंबन आना ❋ जेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ॥
भक्ति तात अनुपम सुखमूला ❋ मिलहिं जोसन्त होयँ अनुकूला ॥
भक्तिके साधन कहौं बखानी ❋ सुगम पन्थ मोहिं पावहिं प्रानी ॥
प्रथमहिं विप्र चरण अतिप्रीती ❋ निज निज धर्म निरत श्रुतिनीती ॥
इहिकर फल मन विषय विरागा ❋ तब मम चरण उपज अनुरागा ॥
श्रवणादिक नवभक्ति दृढाहीं ❋ मम लीला रति अति मनमाहीं ॥
सन्तचरण पंकज अति प्रेमा ❋ मन क्रम वचन भजन दृढ नेमा ॥
गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा ❋ सब मोहिं कहँ जानै दृढ सेवा ॥
मम गुण गावत पुलक शरीरा ❋ गद्गद गिरा नयन बह नीरा ॥
कामादिक मद दंभ न जाके ❋ तात निरन्तर वश मैं ताके ॥

दोहा–बचन कर्म मन मोरि गति, भजन करै निष्काम ॥
तिनके हृदय कमल महँ, करौं सदा विश्राम ॥ २४ ॥

भक्तियोग सुनि अतिसुख पावा ❋ लक्ष्मण प्रभु चरणन्ह शिरनावा ॥
नाथ सुने गत मम सन्देहा ❋ भयउ ज्ञान उपजेउ नवनेहा ॥
अनुज वचन सुनि प्रभु मनभाये ❋ हर्षि राम निज हृदय लगाये ॥
इहिविधि गये कछुक दिनबीती ❋ कहत विराग ज्ञान गुणनीती ॥
शूर्पणखा रावणकी बहिनी ❋ दुष्ट हृदय दारुण जिमि अहिनी ॥
पंचवटी सो गइ यक बारा ❋ देखि विकल भइ युगल कुमारा ॥

१साधन । २ दृढ । ३ श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य, आत्मनिवेदन । ४ सर्पिणी ।

भ्राता पिता पुत्र उरगारी ❀ पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होइ विकल सक मननहिं रोकी ❀ जिमि रवि मणि द्रव रविहिं विलोकी

दोहा–अधम निशाचरि कुटिल अति, चली करन उपहास
सुनु खगेश भावी प्रबल, भा चह निशिचर नाश ॥२५॥

रुचिर रूप धरि प्रभु पहँ आई ❀ बोली वचन मधुर मुसुकाई ॥
तुम सम पुरुष न मोसम नारी ❀ यह सँयोग विधिरचा विचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जगनाहीं ❀ देखयउँ खोजि लोक तिहुँ माहीं ॥
ताते अबलगि रहिउँ कुमारी ❀ मन माना कछु तुमहिं निहारी ॥
सीताहिं चितइ कही प्रभु बाता ❀ अहै कुमार मोर लघु भ्राता ॥
गइ लक्ष्मण रिपुभगिनी जानी ❀ प्रभु बिलोकि बोले मृदुबानी ॥
सुन्दरि सुनु मैं उनकर दासा ❀ पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समरथ कोशलपूर राजा ❀ जो कछु करैं उन्हैं सब साजा ॥

दोहा–केहरि सम नहिं करिवर, लवा कि बाज समान ॥
प्रभु सेवक इमि जानहु, मानहु वचन प्रमान ॥ २६ ॥

सेवक सुखचह मान भिखारी ❀ व्यसनी धन शुभगति व्यभिचारी ॥
लोभी यश चहै चार गुमानी ❀ नभ दुहि दूध चहत जे प्रानी ॥
पुनि फिरि राम निकट सोआई ❀ प्रभु लक्ष्मण पहँ बहुरि पठाई ॥
लक्ष्मण कहा तोहिं सो बरई ❀ जो तृण तोरि लाज परिहरई ॥
तब खिसिआनि राम पहँ गई ❀ रूप भयंकर प्रगटत भई ॥
बिथुरे केश रदन विकराला ❀ भृकुटी कुटिल करण लगि गाला ॥
सीतहि सभय देखि रघुराई ❀ कहा अनुज सन सैन बुझाई ॥
अनुज राम मनकी गति जानी ❀ उठे रिसाइ सो सुनहु भवानी ॥

दोहा–लक्ष्मण अति लाघव तिहि, नाक कान बिनु कीन्ह ॥
ताके कर रावण कहँ, मनहु चुनौती दीन्ह ॥ २७ ॥

नाक कान विनु भइ बिकरारा ❀ जनु स्रव शैल गेरु कै धारा ॥
खर दूषण पहँ गइ बिलखाता ❀ धृक धृक तव पौरुष बल भ्राता ॥

१ रावणकी बहिण । २ बटेर । ३ असाध्य कल्पित गुणकरै । ४ उत्तम गुण । ५ दांत ।

तेइ पूंछा सब कहेसि बुझाई ❋ यातुधान सुनि सैन बुलाई ॥
चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे ❋ जिन्ह सपनेहु रण पीठ न दीन्हे ॥
धाये निशिचर निकर बरूथा ❋ जनु सपक्ष कज्जल गिरि यूथा ॥
नाना वाहन नाना कारा ❋ नाना आयुध घोर अपारा ॥
श्याम घटा देखत नभ केरी ❋ तहँ वासव धनु मनहुँ उयेरी ॥
शूर्पणखहि आगे करि लीन्ही ❋ अशुभ रूप श्रुति नासा हीनी ॥

दो०-निज निज बल सबमिलि कहहिं, एकहि एक सुनाइ ॥
बाजन बाजु जुझाउने, हर्ष न हृदय समाइ ॥ २८ ॥

अशकुन अमित होहिं भयकारी ❋ गनहिं न मृत्यु विवश भयभारी ॥
गर्जहिं तर्जहिं गँगन उड़ाहीं ❋ देखि कँटकभट अति हरषाहीं ॥
कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई ❋ धरि मारहु तिय लेहु छुडाई ॥
कोउ कह सुनौ सत्य हम कहहीं ❋ कानन फिरहिं बीर कोउ अहहीं ॥
एकै कहा मष्ट है रहहू ❋ खरके आगे अस जनि कहहू ॥
यहि विधि कहत वचन रणधीरा ❋ आये सकल जहां रघुबीरा ॥
धूरि पूरि नभ मण्डल रह्यऊ ❋ राम बोलाइ अनुज सन कह्यऊ ॥
लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर ❋ आवा निशिचर कटक भयंकर ॥
रह्यउ सजग सुनि प्रभुकै बाणी ❋ चले सहित सिय शर धनु पाणी ॥
देखि राम रिपुदल चलि आवा ❋ बिहँसि कठिन कोदण्ड चढ़ावा ॥

छंद—हरिगीतिका—कोदँण्ड कठिन चढाइ प्रभु शिर जटा बांधत सोहज्यों।
मर्कतशयल पर लसतदामिनि कोटिसंयुग भुजंगज्यों ॥
कटि कसिनिषंगविशाल भुजगहिचापविशिखसुधारिकै
चितवतमनहुँ मृंगराजप्रभु गजराज घटा निहारिकै १०

सो०—आय गये बगमेल, धरहु धरहु धाये सुभट ॥
यथा विलोकि अकेल, बाल रविहि घेरत दनुज ॥ १० ॥

घेरि रहे निशिचर समुदाई ❋ दण्डक खग मृग चले पराई ॥
प्रभु विलोकि शर सकहिं नडारी ❋ थकित भये रजनीचर झारी ॥

१ झुंडकेझुंड । २ अस्त्रशस्त्र । ३ कान । ४ नाक । ५ आकाश । ६ सेना । ७ धनुष ।
८ बिजली । ९ नाग । १० सिंह । ११ राक्षस ।

सचिव बोलि बोले खर दूषण ❀ यह कोउ नृप बालक नरभूषण ॥
सुर नर नाग असुर मुनि जेते ❀ देखे सुने हते हम केते ॥
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई ❀ देखी नहिं असि सुन्दरताई ॥
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा ❀ वध लायक नाहिं पुरुष अनूपा ॥
देहिं तुरत निज नारि पठाई ❀ जीवत भवन जाहिं दोउ भाई ॥
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु ❀ तासु वचन सुनि आतुर आवहु ॥

दोहा–भये कालवश मूढ सब, जानहिं नहिं रघुवीर ॥
मशक फूंक किमि मेरु उड, सुनहु गरुड मतिधीर॥२९॥

दूतन कहा रामसन जाई ❀ सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
आजु भयो बड भाग्य हमारा ❀ तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह विचारा ॥
हम क्षत्री मृगया वन करहीं ❀ तुमसे खल मृग खोजत फिरहीं ॥
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं ❀ एक बार कालहु सन लरहीं ॥
यद्यपि मनुज दनुज कुल घालक ❀ मुनिपालक खल शालक बालक॥
जो नहोइ बल घर फिरि जाहू ❀ समर विमुख मैं हतौं न काहू ॥
रण चढि करिय कपट चतुराई ❀ रिपु पर कृपा परम कदराई ॥
दूतन जाइ तुरत सब कहेऊ ❀ सुनि खर दूषण उर अति दहेऊ॥

छं०उरदहेउ कहेउ कि धरहु धावहु बिकटभटरजनीचरा
शर चाप तोमर शक्ति शूल कृपाण परिघ परशुधरा॥
प्रभु कीन्ह धनुष टँकोर प्रथम कठोर घोर भयो महा ॥
भये बधिर व्याकुल यातुधान न ज्ञानतेहि अवसररहा१३

दोहा–सावधान होइ धाये, जानि सबल आराति ॥
लागे वर्षन रामपर, अस्त्र शस्त्र बहुभांति ॥ ३० ॥
तिन्हके आयुध तृण सम, करि काटे रघुवीर ॥
तानि शरासन श्रवण लगि, पुनि छाँडेनिज तीर ॥३१॥

छंदलीलाबारहमात्रा-तब चलेबाण कराल,फुंकरत जनु वहुव्याल
कोपेउ समर श्रीराम, चले विशिष निशितं निकाम ॥

१ पर्वत। २ शिकार खेलनेको बनमें आये हैं। ३ बहिर। ४ शत्रु। ५ धनुष। ६ कान। ७ पैने।

अवलोकि खर तरतीर, मुरि चले निशिचर वीर ॥
यक एक कहँ न सँभार, कर तात मातु पुकार ॥ १२ ॥
कोउ कहै खर कह कीन्ह, जो युद्ध इनसन लीन्ह ॥
ये बाण अतिहि कराल, ग्रसे आइ मानहु काल ॥
भये क्रुद्ध तीनों भाइ, जो भागि रणते जाइ ॥
तेहि बधब हम निज पानि, फिरे मरण मनमहँ ठानि॥ १३

दोहा—उमा एक निज प्रभुहि वश, पुनि इनके बड भाग॥
तरण चहहिं प्रभु शरलगे, बिना योग जप याग ॥ ३२॥

छं०—आयुध अनेक प्रकार, सन्मुख ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपेउ जानि, प्रभु धनुष शर संधानि ॥
छाँडे विपुल नाराच, लगे कटन बिकट पिशाच ॥
उर शीश कर भुज चरन, जहँ तहँ लगे महि परन ॥ १४ ॥
चिक्करत लागत बान, धर परत कुधर समान ॥
भटकटत तनु शत खंड, पुनि उठत करि पाखंड ॥
नभ उडत बहु भुज मुंड, बिनु मौलि धावत रुण्ड ॥
खग कंक काक शृगाल, कट कटहिं कठिन कराल १५

पु०छं०कटकटहिं जम्बुक भूत प्रेत पिशाच खप्परसाजहीं
बैताल बीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नाचहीं ॥
रघुवीर बाण प्रचण्ड खण्डहिं भटनके उर भुज शिरा ॥
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धरुधरु करहिं सकल भयंकरा
अंतावली गहि उडहिंगृद्ध पिशाच कर गहि धावहीं॥
संग्राम पुरवासी मनहुँ बहु बाल गुड्डिउडावहीं ॥
मारे पछारे उर विदारे विपुल भट घूमित परे ॥
अवलोकि निजदल विकलभटत्रिशिरादि खरदूषणफिरे ॥

१ बाण । २ मुण्ड-गृद्ध । ३ सियार ।

शर शक्ति तोमर परशु शूल कृपाण एकहि बारहीं ॥
करि कोप श्रीरघुवीरपर अगणित निशाचर डारहीं ॥
प्रभुनिमिषं महँ रिपुशर निवारि प्रचारि डारे शायका॥
दशदश विशिखउर मांझमारे सकलनिशिचरनायका १८
महि परतउठिभटभिरतपुनिपुनिकरत मायाअतिघनी
सुरडरत चौदहसहस निशिचर एक श्रीरघुकुलमनी ॥
सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अतिकौतुककर्‍यो
देखत परस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरिमर्‍यो १९
दोहा–रामराम कहि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्वान ॥
करि उपाय रिपु मार्‍यउ, क्षण महँ कृपानिधान ॥ २३॥
दोहा–हर्षित वर्षहिंसुमन सुर, बाजहिं गगन निशान ॥
अस्तुति करि करिसब चले,शोभित विविधविमान ॥ २४॥
जब रघुनाथ समर रिपु जीते ❀ सुर नर मुनि सबके दुख बीते ॥
तब लक्ष्मण सीतहि लै आये ❀ प्रभु पद परत हर्षि उरलाये ॥
सीता निरखि श्याममृदुगाता ❀ परम प्रेम लोचन न अघाता ॥
पंचवटी बसि श्रीरघुनायक ❀ करत चरित सुरमुनिसुखदायक॥
धुआंदेखि खर दूषण केरा ❀ शूर्पणखा तब रावण प्रेरा ॥
बोली बचन क्रोध करि भारी ❀ देश कोशकी सुरति बिसारी ॥
करसिपानसोवसि दिनराती ❀ सुधिनहिंतवहिंशिरपरआराती ॥
राजनीति बिनु धन बिनु धर्मा ❀ हरिहि समर्पे बिनुसतकर्मा ॥
विद्या बिनु विवेक उपजाये ❀ श्रम फल पढे किये अरुपाये ॥
संगते यती कुमंत ते राजा ❀ मानते ज्ञान ज्ञानते लाजा ॥
प्रीति प्रणय बिनु मदते गुनी ❀ नाशहिं बेगि नीति अस सुनी॥
सो०–रिपु रुज पावकपाव, प्रभु अहि गणिय न छोटकरि॥
अस कहि विविध विलाप,पुनि लागी रोदन करन॥११

१ मुद्गर। २ फरशा। ३ त्रिशूल। ४ तलवारि। ५ पलमात्रमें। ६ बाण। ७ मोक्ष।
८ मदादिक। ९ प्रबलशत्रु। १० नम्रता। ११ शत्रु। १२ रोग। १३ अग्नि।

दोहा-सभा मांझ व्याकुल परी, बहु प्रकार करि रोइ ॥
तोहिं जियत दशकन्धर, मोरि कि असगति होइ ॥ ३५ ॥

सुनत सभासद उठ अकुलाई ❋ समुझाई गहि बाँह बिठाई ॥
कह लंकेश कहसिं किन बाता ❋ क्यइँ तब नाशा कान निपाता ॥
अवध नृपति दशरथके जाये ❋ पुरुषसिंह वन खेलन आये ॥
समुझि परी मोहिं उनकी करणी ❋ रहित निशाचर करिहैं धरणी ॥
जिनकर भुजवल पाइ दशानन ❋ अभय भये बिचरहिं मुनि कानन[१] ॥
देखत बालक काल समाना ❋ परम धीर धन्वी गुण नाना ॥
अतुलित बल प्रताप दोउ भ्राता ❋ खलवध रत सुर मुनि सुखदाता ॥
शोभाधाम राम अस नामा ❋ तिन्हके सँग इक नारि ललामा ॥

सो०-अति सुकुमारि पियारि, पटतर योग न आहि कोउ ॥
मैंमन दीख विचारि, जहँ रह तेहि सम आन नहिं ॥ १२ ॥

रूपराशि विधि नारि सँवारी ❋ रतिशत कोटि तासु बलिहारी ॥
अजहुँ जाय देखव तुम जबहीं ❋ होइहो विकल तासु वश तबहीं ॥
जीवन मुक्ति लोकवश ताके ❋ दशमुख सुनु सुन्दरि अस जाके ॥
तासु अनुज[२] काटी श्रुतिनासा ❋ सुनि तव भगिनी करि परिहासा ॥
बिन अपराध असहाल हमारी ❋ अपराधी किमि बचहिं सुरारी ॥
खर दूषण सुनि लाग गुहारा ❋ क्षणमहँ सकल कटक उन मारा ॥
खर दूषण त्रिशिरा कर घाता ❋ सुनि दशशीश जरा सब गाता ॥
भयो शोचवश नहिं विश्रामा ❋ बीतहिं पल मानहुँ शत यामा ॥

दोहा-शूर्पणखहिं समुझाइ करि, बल बोलेसि बहुभांति ॥
भवन गयउ अतिशोच वश, नींदपरी नहिं राति ॥ ३६ ॥

सुर नर असुर नाग जग माहीं ❋ मोरे अनुचर[३] सम कोउ नाहीं ॥
खर दूषण म्वहिं सम बलवन्ता ❋ मारिको सकय बिना भगवन्ता ॥
सुर रंजन भंजन महिभारा ❋ जो जगदीश लीन्ह अवतारा ॥
तोमैं जाइ वैर हठ करिहौं ❋ प्रभु शरते भवसागर तरिहौं ॥

---

१ वनमें । २ लक्ष्मणजीने । ३ टहलू ।

होइ भजन नहिं तामस देहा ❀ मन क्रम वचन मंत्र दृढ एहा ॥
जोनर रूप भूप सुत कोऊ ❀ हरिहौं नारि जीति रण दोऊ ॥
चला अकेल यान चढि ताहां ❀ बस मारीच सिंधु तट जाहां ॥
रथ अनूप जोरे खरचारी ❀ वेगवन्त इमि जिमि उरगारी ॥

छंद—उरगारि सम अति वेग बरणत जाय नहिंउपमाकही
शिरछत्र शोभित श्यामघन जनु चमर श्वेतविराजही ॥
इहि भांति नाँघत सरित शैल अनेक वापी सोहहीं ॥
वन बागउपवन वाटिका शुचिनगर मुनि मन मोहहीं२०॥

दोहा—बहु तडाग शुचि बिहँग मृग, बोलत विविध प्रकार॥
इहिविधि आयउ सिंधु तट, शतयोजन विस्तार॥ ३७॥

सुन्दर जीव विविध विधि जाती ❀ करहिं कुलाहल दिन अरु राती ॥
कूदहिं ते गरजहिं घननाई ❀ महा बली बल वरणि न जाई ॥
कनक बालु सुन्दर सुखदाई ❀ बैठहिं सकल जन्तु तहँ आई ॥
तिहिंपर दिव्य लता तरु लागे ❀ जिहि देखत मुनि मम अनुरागे ॥
गुहा विविध विधि रहहिं बनाई ❀ वरणत शारद मन सकुचाई ॥
चाहिय जहाँ ऋषिनकर वासा ❀ तहाँ निशाचर करहिं निवासा ॥
दशमुख देख सकल सकुचाने ❀ जे जडजीव सजीव पराने ॥
इहां राम जसि युक्ति बनाई ❀ सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥

दोहा—लक्ष्मण गये बनहिं जब, लेन मूल फल कन्द ॥
जनकसुता सन बोल्यउ, बिहँसि कृपासुखकन्द॥३८॥

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुशीला ❀ मैंकछु करब ललित नरलीला ॥
तुम पावक महँ करहु निवासा ❀ जौ लगि करौं निशाचर नाशा ॥
जबहि राम सब कहेउ बखानी ❀ प्रभु पदधरि हिय अनल समानी ॥
निज प्रतिबिम्ब राखि तहँ सीता ❀ तैसेइ शील स्वरूप विनीता ॥
लक्ष्मणहू यह मर्म नजाना ❀ जोकछु चरित रच्यो भगवाना ॥
दशमुख गयउ जहां मारीचा ❀ नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥

१ चारसौ कोश। २ शोर। ३ स्वर्ण। ४ वृक्ष।

नवनि नीचकी अति दुखदाई ❋ जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई ॥
भयदायक खलकी प्रियवानी ❋ जिमि अकालके कुसुम भवानी ॥
दोहा-करि पूजा मारीच तब, सादर पूछी बात ॥
कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयउ तात॥३९॥
दशमुख सकल कथा त्यहि आगे ❋ कही सहित अभिमान अभागे ॥
होहु कपट मृग तुम छलकारी ❋ ज्यहि विधि हरि आनौं नृप नारी॥
त्यहुँ पुनि कहा सुनहु दशशीशा ❋ तेनर रूप चराचर ईशा ॥
तासों तात वैर नहिं कीजै ❋ मारे मरिय जिआये जीजै ॥
मुनिमख राखन गयउ कुमारा ❋ बिनु फर शर रघुपति मोहिं मारा॥
शतयोजन आयउँ क्षणमाहीं ❋ तिन्हसन वैर किये भलनाहीं ॥
भइ मति कीट भृङ्गकी नाई ❋ जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई ॥
जोनर तात तदपि अतिशूरा ❋ तिनहिं विरोध न आइहि पूरा ॥
दोहा-ज्यहुँ ताडका सुबाहु हति, खण्डयउ हरकोदण्ड ॥
खर दूषण त्रिशिरा वध्यउ, मनुज कि अस बलबण्ड॥४०॥
रा अस नाम सुनत दशकन्धर ❋ रहत प्राण नहिं मम उर अन्तर ॥
जाहु भवन कुल कुशल विचारी ❋ सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी ॥
गुरु जिमि मूढ करसि मम बोधा ❋ कहु जग मोहिं समानको योधा ॥
तब मारीच हृदय अनुमाना ❋ नवहिं विरोधे नहिं कल्याना ॥
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी ❋ वैद्य बन्दि कवि मानस गुनी ॥
उभयभांति देखा निज मरणा ❋ तब ताकेसि रघुनायक शरणा ॥
उतर देत मोहिं वधिहि अभागे ❋ कस न मरौं रघुपति शर लागे ॥
अस जिय जानि दशानन संगा ❋ चला रामपद प्रेम अभंगा ॥
मन अति हर्ष जनाव न तेही ❋ आजु देखिहौं परम सनेही ॥
छं०-निजपरमप्रीतम देखिलोचनसफलकरिसुखपाइहौं॥
सिय सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं ॥
निर्वाण दायक क्रोध जाकर भक्त ऐसेहि वश करी ॥

---

१ पुष्प । २ उच्चाट । ३ रावण । ४ हरिण । ५ जानकीजो । ६ विश्वामित्रकृतयज्ञ । ७ बलिष्ठ । ८ कपटघाती । ९ भाव । १० मोहिं जानि किये ।

निजपाणि शरसंधानि सो मोहिं बधहिं सुखसागरहरी २१

दोहा–मम पाछे धर धावत, धरे शरासन बान ॥
फिरि फिरि प्रभुहिं विलोकिहौं, धन्य नमोसम आन॥४१॥

सीता लषण सहित रघुराई ❋ ज्यहिबन बसहिं मुनिन्ह सुखदाई ॥
तेहि बन निकट दशानन गयऊ ❋ तब मारीच कपट मृग भयऊ ॥
अतिविचित्र कछु बरणि नजाई ❋ कनक देह मणि रचित बनाई ॥
सीता परम रुचिर मृग देखा ❋ अंग अंग सुमनोहर वेषा ॥
सुनहु देव रघुवीर कृपाला ❋ इहि मृगकर अति सुन्दर छाला ॥
सत्यसंध प्रभु वध करि एही ❋ आनहु चर्म कहति बैदेही ॥
तब रघुपति जाना सब कारण ❋ उठे हर्षि सुरकाज सँवारण ॥
मृग विलोकि कटि परिकर बांधा ❋ करतल चांप रुचिर शर सांधा ॥
प्रभु लक्ष्मणहि कहा समुझाई ❋ फिरत विपिन निशिचर समुदाई ॥
सीताकेरि करेहु रखवारी ❋ बुधि विवेक बल समय विचारी ॥

दोहा–असकहि चले तहां प्रभु, जहां कपट मृग नीच ॥
देव हर्ष विस्मय विवश, चातक वर्षा बीच ॥ ४२ ॥

प्रभुहि विलोकि चला मृग भाजी ❋ धाये राम शरासन साजी ॥
निगम नेति शिव ध्यान न पावा ❋ मायामृग पाछे सो धावा ॥
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई ❋ कबहुँक प्रकटै कबहुँ छिपाई ॥
प्रकटत दुरत करत छल भूरी ❋ इहि विधि प्रभुहि गयो लैदूरी ॥
तब तकि राम कठिन शर मारा ❋ धरणि पर्‌यो करि घोर चिकारा ॥
लक्ष्मण कर प्रथमहिं लै नामा ❋ पाछे सुमिरेसि मनमहँ रामा ॥
प्राण तजत प्रगट्यसि निज देही ❋ सुमिरेसि राम सहित वैदेही ॥
अन्तर प्रेम तासु पहिचानी ❋ मुनिदुर्लभ गति दीन्हि भवानी ॥

दोहा–विपुल सुमन सुर वर्षहिं, गावहिं प्रभु गुण गाथ ॥
निज पद दीन्ह असुर कहँ, दीनबंधु रघुनाथ॥४३॥

मृगवधि तुरत फिरे रघुवीरा ❋ सोह चाप कर कटि तूणीरा ॥

१ धनुष । २ बहुत ।

आरतगिरा सुनी जब सीता ❋ कह लक्ष्मण सन परम सभीता ॥
जाहु वेगि संकट तव भ्राता ❋ लक्ष्मण बिहँसि कह्यो सुन माता ॥
भृकुटि विलास सृष्टि लय होई ❋ सपनेहु संकट परे कि सोई ॥
सौंपि गये मोहिं रघुपति थाती ❋ जो तजि जाउँ तोष नहिं छाती ॥
यह जिय जानि सुनहु मम माता ❋ पूछत कहब कवन मैं बाता ॥
मर्म बचन सीता जब बोली ❋ हरिप्रेरित लक्ष्मण मति डोली ॥
चहुँदिशि रेखा खींच अहीशा ❋ बार बार नाये पद शीशा ॥
वन दिशि देव सौंपि सब काहू ❋ चले जहां रावण शशि राहू ॥
चितवहिं लषण सियहि फिरि कैसे ❋ तजत वच्छ निज मातहि जैसे ॥

दोहा—एक डरत डर रामके, दूजे सीय अकेलि ॥
लषण तेज तनु हत भये, जिमि दाधी दवबेलि ॥ ४४ ॥

शून्य भवन दशकंधर देखा ❋ आवा निकट यतीके वेषा ॥
जाके डर सुर असुर डराहीं ❋ निशि न नींद दिन अन्न न खाहीं ॥
सो दशशीश श्वानकी नाई ❋ इत उत चितै चला भँडिहाई ॥
जिमि कुपन्थपग देत खगेशा ❋ रह न तेज बल बुधि लवलेशा ॥
करि अनेक विधि छल चतुराई ❋ मांगेउ भीख दशानन जाई ॥
अतिथि जानि सिय कंद मूल फल ❋ देन लगी तेइँ कीन्ह बहुरि छल ॥
कह दशमुख सुन सुन्दरि बानी ❋ बांधी भीख न लेउँ सयानी ॥
विधिगति वाम काल कठिनाई ❋ रेख नाँघि सिय बाहर आई ॥

दोहा—विश्व भरनि अघदल दलनि, करणि सकलसुरकाज
जाना नहिं दशशीश तेहि, मूढ कपटके साज ॥ ४५ ॥

नाना विधि कहि कथा सुनाई ❋ राजनीति भय प्रीति दिखाई ॥
कह सीता सुनु यती गुसाईं ❋ बोलेसि वचन दुष्टकी नाईं ॥
तव रावण निजरूप दिखावा ❋ भइ सभीत जब नाम सुनावा ॥
कह सीता धरि धीरज गाढा ❋ आइ गये प्रभु खल रहु ठाढा ॥
जिमि हरि बधुहिं क्षुद्र शशचाहा ❋ भयसि काल वश निशिचर नाहा ॥

१ दुःखित वाणी । २ रामचंद्रकी इक्षाते । ३ लक्ष्मणजी । ४ संन्यासी । ५ कुत्ता ।
६ सहज । ७ किंचित मात्र । ८ भिक्षुक ।

वायस करचह खगपति समता ❀ सिन्धु समान होइ किमि सरिता ॥
खरिकि होइ सुरधेनु समाना ❀ जाहु भवन निज सुन अज्ञाना ॥
सुनत वचन दशशीश लजाना ❀ मनमहँ चरण वन्दि सुखमाना ॥

दोहा–क्रोधवन्त तब रावण, लीन्हेसि रथ बैठाय ॥
चल्यउ गगन पथ आतुर, भयरथ हांकि न जाय ॥४६॥

हा जगदीश देव रघुराया ❀ केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥
आरतहरण शरण सुखदायक ❀ हारघुकुल सरोज दिननायक ॥
हा लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा ❀ सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोषा ॥
कैकेयी मन जो कछु रह्यऊ ❀ सो विधि आजु मोहिं दुख दयऊ ॥
पंचवटीके खग मृग जाती ❀ दुखी भये वनचर बहुभांती ॥
विविध विलाप करति बैदेही ❀ भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा ❀ पुरोडाश चह रासभ खावा ॥
सीताकर विलाप सुनि भारी ❀ भये चराचर जीव दुखारी ॥

दोहा–बहुविधि करत विलाप नभ, लिये जात दशशीश ॥
डरत न खल बर पाइ भल, जो दीन्हो अजईश ॥ ४७ ॥

गृध्रराज सुनि आरत बानी ❀ रघुकुल तिलकनारि पहिचानी ॥
अधम निशाचर लीन्हे जाई ❀ जिमि मलेच्छवश कपिला गाई ॥
अहह प्रथम बल ममतनु नाहीं ❀ तदपि जाइ देखों बल ताहीं ॥
सीता पुत्रि करसि जनि त्रासा ❀ करिहौं यातुधान करनाशा ॥
धावा क्रोधवन्त खग कैसे ❀ छूटै पंबि पर्वत पहँ जैसे ॥
रेरे दुष्ट ठाढ किन होही ❀ निर्भय चलसि नजानेसि मोही ॥
आवत देखि कृतांतसमाना ❀ फिरि दशकंध करत अनुमाना ॥
की मैनाक कि खगपति होई ❀ ममबल जानि सहित पति सोई ॥
जाना जरठ जटायू येहा ❀ ममकर तीरथ छांडहिदेहा ॥

दोहा–मम भुजबल नहिं जानत, आवत तपिन्ह सहाइ ॥
समरचढे तौ इहिहतौं, जियत न निज थलजाइ ॥ ४८ ॥

---

१ कौवा । २ नदी । ३ देवतनके यज्ञको भाग । ४ गदहा । ५ राक्षस । ६ वज्र ।
७ कालकेसमान । ८ बूढ़ा ।

सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा ❀ कह सुन रावण मोर सिखावा ॥
तजि जानकी कुशल गृह जाहू ❀ नाहिंत सत्य सुनहु बहुबाहू ॥
रामरोष पावक अति घोरा ❀ होइहि सकल शलभ कुल तोरा ॥
उतर न देत दशानन योधा ❀ तबहिं गृध्र धावा करि क्रोधा ॥
धरि कच विरथ कीन्ह महिगिरा ❀ सीतहि राखि गृध्र पुनि फिरा ॥
दशमुख उठि कृतशर संधाना ❀ गृध्र आइ काटेउ धनु बाना ॥
चोंचन्ह मारि विदारेसि देही ❀ दण्ड एक भइ मूर्च्छा तेही ॥

दोहा—जेइँ रावण निज वश किये, मुनि गण सिद्ध सुरेश ॥
तेइ रावण सन समर अति, धीर वीर गृध्रेश ॥ ४९ ॥

स्वस्त भये सो पुनि उठिधावा ❀ मारे गृध्र न सन्मुख आवा ॥
कीन्हेसि बहु जब युद्ध खगेशा ❀ थकित भयो तब जरठ गिधेशा ॥
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना ❀ काढेसि परम कराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरणी ❀ सुमिरि रामकी अद्भुत करणी ॥
मनमहँ गृध्र परम सुखमाना ❀ रामकाज मम लाग्यो प्राना ॥
सीतहि यान चढाय बहोरी ❀ चला उताइल त्रास न थोरी ॥
करति विलाप जात नभ सीता ❀ व्याध विवश जनु मृगी सभीता ॥
गिरिपर बैठे कपिन्ह निहारी ❀ कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ॥
इहि विधि सीतहि सो लैगयऊ ❀ वन अशोक महँ राखत भयऊ ॥

दोहा—हारि परा खल बहुत विधि, भय अरु प्रीति दिखाइ ॥
तब अशोक पादप तरे, राखेसि यतन कराइ ॥ ५० ॥

" उहां विधाता मन अनुमाना ❀ सुरपति[1] बोलि मंत्र अस ठाना ॥
तात जनक तनया पहँ जाहू ❀ सुधिन पाव जिहि निशिचर नाहू ॥
असकहि विधि सुन्दर हँविआनी ❀ सौंपि बहुरि बोले मृदुबानी ॥
इह भक्षण कृत क्षुधा न प्यासा ❀ वर्ष सहसदश संशय नाशा ॥
सो प्रसाद लै आयसु पाई ❀ चले हृदय सुमिरत रघुराई ॥
कछु बासँव माया निज गोई ❀ रक्षक रहे गये तहँ सोई ॥

---

१ भस्म । २ बाल । ३ इन्द्र । ४ पायस । ५ मूल । ६ आशा । ७ इन्द्र ।

तदपि डरत सीता पहँ आयउ ❀ करिप्रणाम निज नाम सुनायउ ॥
निश्चय जान सुरेश सुजाना ❀ पिता जनक दशरथ सम माना ॥
करि परितोष दूरकर शोका ❀ इन्य खवाय गये निज लोका ॥ ”

दोहा—जेहि विधि कपट कुरंग सँग, धाय चले श्रीराम ॥
सो छबि सीता राखि उर, रटति रहति हरि नाम॥५१॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी ❀ मन बहु चिंता कीन्ह विशेषी ॥
जनकसुता परिहरेउ अकेली ❀ आयहु तात बचन मम पेली ॥
निशिचर निकर फिरहिं बनमाहीं ❀ मम मन सीता आश्रम नाहीं ॥
अहहतात भल कीन्हेउ नाहीं ❀ सियविहीन मम जीवन काहीं ॥
इहिते कवन विपति बड भाई ❀ खोयहु सीय काननहिं आई ॥
महि पदकमल अनुज कर जोरी ❀ कहेउ नाथ कछु मोरि नखोरी ॥
अनुज समेत गयउ प्रभु तहँवां ❀ गोदावरि तट आश्रम जहँवां ॥
आश्रम देखि जानकी हीना ❀ भये विकल जस प्राकृत दीना ॥

दोहा—कानन रहेउ तडाग इव, चक चकई सिय राम ॥
रावण निशि बिछुरन किये, दुख बीते चहुँ याम॥ ५२ ॥

पर दुख हरण शोक दुखनाहीं ❀ भा विषाद तिनके मन माहीं ॥
हागुण खानि जानकी सीता ❀ रूप शील व्रत नेम पुनीता ॥
लक्ष्मण समुझाये बहुभांती ❀ पूंछत चले लता तरुपांती ॥
हेखग मृग हेमधुकर श्रेनी ❀ तुम देखी सीता मृगनैनी ॥
खंजन शुक कपोत मृगमीना ❀ मधुप निकर कोकिला प्रवीना ॥
कुन्दकली दाडिम दामिनी ❀ कमल शरद शशि अहि भामिनी॥
वरुणपाश मनोज धनुहंसा ❀ गज केहरि नित सुनत प्रशंसा ॥
श्रीफल कमल कदलि हरषाहीं ❀ नेकुनशंक सकुच मनमाहीं ॥
सुन जानकी तोहिं विनु आजू ❀ हर्षे सकल पाइ जनुराजू ॥
किमि सहिजात अनख तोहिं पाहीं ❀ प्रिया वेगि प्रकटत कस नाहीं ॥
इहि विधि विलपत खोजत स्वामी ❀ मनो महाविरही अतिकामी ॥

१ समाधान । २ कपटमृग मारीच । ३ भाई-लक्ष्मणजी ।

दोहा-फणि मणि हीन दीन जिमि, मीन हीन जिमिबारि ।
तिमि व्याकुल भये लषण तहँ, रघुवरदशा निहारि॥५३॥

धरि उरधीर बुझावहिं रामहिं ❋ तजहिं नशोक अधिक सुखधामहिं॥
पूरण काम राम सुखराशी ❋ मनुज चरितकर अज अविनाशी॥
सरवर अमित नदी गिरि खोहा ❋ बहु विधिराम लषण तहँ जोहा ॥
शोच हृदय कछु कहिनहिं आवा ❋ टूट धनुष शर आगे पावा ॥
कहुँ कहुँ शोणित देखिय कैसे ❋ श्रावण जल भा ढावर जैसे ॥
कहत राम लक्ष्मणहि बुझाई ❋ काहू कीन्ह युद्ध इहि ठाई ॥
आगे परा गृध्रपति देखा ❋ सुमिरत रामचरणकी रेखा ॥

दोहा-कर सरोज शिर परसेउ, कृपासिन्धु रघुवीर ॥
निरखि राम छबि धाम मुख, विगत भई सबपीर ॥५४॥

तब कह गृध्र वचन धरि धीरा ❋ सुनहु राम भंजन भवभीरा ॥
नाथ दशानन यहगति कीन्ही ❋ तेहिखल जनकसुता हरि लीन्ही॥
लै दक्षिण दिशि गयउ गोसाईं ❋ विलपति अति कुररीकी नाईं ॥
दरशलागि प्रभु राखेउँ प्राना ❋ चलन चहत अब कृपानिधाना ॥
रामकहा तनु राखहु ताता ❋ मुख मुसुकाइ कही तेइँ बाता ॥
जाकर नाम मरत मुखआवा ❋ अधमौ मुक्त होइ श्रुतिगावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगे ❋ राखहुँ देह नाथ केहि लागे ॥
जलभरि नयन कहा रघुराई ❋ तात कर्म्म निजते गतिपाई ॥
परहित वश जिनके मनमाहीं ❋ तिन्हकहँ जगदुर्लभ कछु नाहीं ॥
तनु तजि तात जाहु ममधामा ❋ देउँ कहा तुम पूरण कामा ॥

दोहा-सीता हरण तात जनि, कहहु पिता सन जाइ ॥
जो मैं राम तौ कुल सहित, कहहि दशानन आइ॥५५॥

गृध्र देह तजि धरि हरि रूपा ❋ भूषण बहु पट पीत अनूपा ॥
श्यामगात विशाल भुजचारी ❋ अस्तुति करत नयन भरि बारी ॥

छंद—जयराम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुण प्रेरक सही ॥
दशशीश बाहु प्रचण्ड खण्डन चण्ड शर मण्डन मही ॥
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ॥
नितनौमिराम कृपालु बाहुविशालभवभय मोचनं २२॥
बलमप्रमेयमनादिमज मव्यक्त मेकमगोचरं ॥
गोविन्द गोपरद्वन्द्वहर विज्ञानघन धरणीधरं ॥
जेराम मंत्र जपत सन्त अनन्त जनमनरंजनं ॥
नितनौमि राम अकाम प्रिय कामादिखलदलगंजनं २३
जेहि श्रुति निरंतर ब्रह्मव्यापक विरंज अज कहि गावहीं ॥
करिज्ञान ध्यान विराग योग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥
सोप्रकट करुणाकन्द शोभावृन्द अग जग मोहई ॥

छन्दार्थ—हेराम! आपके अनूपरूपकी जयहो यह रूप कैसा है कि निर्गुण जो व्यापक ब्रह्महै और सगुण मत्स्यादि अवतार और सत रज तम गुण अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश इन सबका प्रेरक है और आप धनुष बाणको पृथ्वीके भूषित करनेको और दूषणरूपी रावणके निपातके हेतु धारण किया है आपका शरीर श्याम घनके समानहै और कमलके तुल्य बडे बडे नेत्रहैं. हेराम कृपालु! संसारके भय छुडानेवाली विशालबाहुको मैं प्रणाम करताहूं ॥ २२ ॥

हेराम! जो आपका बल अप्रमेय है और आप अनादि जन्मसे रहित और अप्रगट शक्ति और अद्वैत अगोचर अर्थात् इन्द्रियोंसे परे और गोविंद इन्द्रियोंके भोक्ता और इन्द्रियोंके परे द्वन्द्व मोह मेरा तेरा आदिके हरनेवाले विज्ञानके बरसनेवाले और पृथ्वीके धारण करनेवाले हो जो कोई अनंत संत राममंत्रको जपते हैं उनके मनको रंजन करते हो हेकामादिखलदलगंजन! हे अकाम प्रिय राम!! मैं आपको नित्य प्रणाम करताहूं ॥ २३ ॥

जिनको वेद निरन्तर रोगरहित जन्मरहित ब्रह्मकहिकै गावते हैं और जिनको अनेक मुनि ज्ञान ध्यान विराग योग करके ध्यान करतेहैं सोई करुणाजलके

---

१ मेघ। २ अरुणकमलवत् नेत्र। ३ मन बुद्धिवाणीते परे हो। ४ विरजकही षट्विकार रहित जन्म, वृद्धि, विवर्ण, क्षीण, जरा, मरण,

ममहृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई ॥ २४ ॥
जो अगम सुगम स्वभाव निर्मल असम सम शीतल सदा ॥
पश्यन्ति यं योगी यतनकरि करत मन गो वश यदा ॥
सो राम रमा निवास संतत दासवश त्रिभुवन धनी ॥
मम उर बसहु सो शमन संसृति जासु कीरति पावनी ॥ २५ ॥
दोहा-अविरल भक्ति मांगिवर, गृध्र गयउ हरि धाम ॥
तेहिकी क्रिया यथोचित, निजकर कीन्ही राम ॥ ५६ ॥
कोमल चित अतिदीनदयाला ❋ कारण बिनु रघुनाथ कृपाला ॥
गृध्र अधम खग आमिषभोगी ❋ गति तेहि दीन्ह जोयाचत योगी ॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी ❋ हरि तजि होहिं विषय अनुरागी ॥
पुनि सीतहि खोजत दोउभाई ❋ चले विलोकत बन बहुताई ॥
शंकुल लता विटप घनकानन ❋ बहु खग मृग तहँ गज पंचानन ॥
आवत पन्थ कबन्ध *निपाता ❋ तेइँ सब कही शापकी बाता ॥
दुर्वासा मोहिं दीन्हो शापा ❋ प्रभु पद देखि मिटा सो पापा ॥
सुन गन्धर्व कहौं मैं तोही ❋ मोहिंन सुहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ॥

वरसनेवाले प्रगट होकै अपनी शोभाके समूहोंसे जड चैतन्योंके मोहनेवाले मेरे हृदयकमलमें अनेक कामकी बहु छवियुक्त भृंग शोभायमान हो ॥ २४ ॥

जो अगम और सुगम और स्वभावकरिकै निर्मल विषम सदा शीतलहो जिनको योगीजन मनके वश करनेवाले अनेक यत्न कर हर्षसे देखते हैं हेराम! सोई रमानिवास त्रिभुवनधनी जो आप अपने दासके निरन्तर वशरहतेहो तुम्हारी कीर्ति जरामरणकी नाश करनेवाली है मेरे हृदयमें वसो ॥ २५ ॥

* कबन्ध पूर्व जन्मका गन्धर्व था एकसमय उसके गानेसे दुर्वासाऋषि नहीं रीझे तो यह उनपर हँसा तब दुर्वासऋषिने शाप दिया कि राक्षस हो सो यह राक्षस होय उपद्रव करने लगा तब इंद्रने वज्र मारा कि शिरपेटमें घुसगया तबसे उसकानाम कवंधपडा और उसकी योजनभरकी बाहुथीं जो बाहुके बीचमें आताथा उसे खींचकर खालेताथा सो जब रामचंद्रको खैंचने लगा तो इन्होंने खड्गसे भुजा काट डालीं.

---

१ देखतेहैं । २ जन्ममरण । ३ मांस । ४ परिपूर्ण हैं लतावृक्षवनमें ।

दोहा—मन क्रम वचन कपट तजि, जो कर भूसुर[१] सेव ॥
मोहिं समेत विरंचि[२] शिव, वश ताके सब देव ॥ ५७ ॥

शापत ताडत परुष कहंता ❀ विप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिय विप्र शील गुण हीना ❀ नहिंन शूद्र गुण ज्ञान प्रवीना ॥
दुष्टौ धेनु दुही सुनु भाई ❀ साधु रासभी दुही न जाई ॥
कहि निज धर्मताहि समुझावा ❀ निजपद प्रीति देखि मनभावा ॥
रघुपति चरण कमल शिरनाई ❀ गयउ गगन आपनि गतिपाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा ❀ शबरीके आश्रम पगुधारा ॥
शबरी दीख राम गृहआये ❀ मुनिकेवचन समुझि जिय भाये ॥
सरसिज लोचन बाहु विशाला ❀ जटा मुकुट शिर उर वनमाला ॥
श्याम गौर सुन्दरदोउ भाई ❀ शबरी परी चरण लपटाई ॥
प्रेम मगन मुखवचन न आवा ❀ पुनि पुनि पदसरोज शिरनावा ॥
सादर जल लै चरण पखारे ❀ पुनि सुन्दर आसन बैठारे ॥

दोहा—कन्द मूल फल सरस अति, दिये रामकहँ आनि ॥
प्रेम सहित प्रभु खायउ, बारहिं बार बखानि ॥ ५८ ॥

पाणि जोरि आगे भइ ठाढी ❀ प्रभुहि विलोकि प्रीति अति बाढी ॥
केहिविधि अस्तुति करहुँ तुम्हारी ❀ अधम जाति मैं जड मति भारी ॥
अधम ते अधम अधम अतिनारी ❀ तिनमहँ मैं मतिमन्द गँवारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता ❀ मानौं एक भक्ति कर नाता ॥
जाति पांति कुल धर्म बडाई ❀ धन बल परिजन गुण चतुराई ॥
भक्ति हीन नर सोहै कैसे ❀ बिनु जल वारिद देखिय जैसे ॥
नवधा भक्ति कहौं तोहिं पाहीं ❀ सावधान सुनु धरु मनमाहीं ॥
प्रथम भक्ति सन्तन करसंगा ❀ दूसरि रत मम कथा प्रसंगा ॥

दोहा—गुरुपद पंकज सेवा, तीसरि भक्ति अमान ॥
चौथि भक्ति मम गुणगण, करै कपट तजि गान ॥ ५९ ॥

मंत्र जाप मम दृढ विश्वासा ❀ पंचम भजन सो वेद प्रकाशा ॥

१ ब्राह्मण । २ ब्रह्मा । ३ से । ४ गधी । ५ आकाश । ६ अतिश्रेष्ठ । ७ मेघ ।

षट दम शील विरत बहु कर्मा ❋ निरत निरन्तर सज्जन धर्मा ॥
सतईं सब म्वहिं मय जग देखै ❋ मोते सन्त अधिक करि लेखै ॥
अठईं यथा लाभ सन्तोषा ❋ स्वप्नेहुँ नहिं देखै परदोषा ॥
नवम सरल सबसों छलहीना ❋ मम भरोस हिय हर्ष न दीना ॥
नवमहँ एको जिन्हके होई ❋ नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोइ अतिशयं प्रियभामिनि मोरे ❋ सकल प्रकार भक्ति दृढतोरे ॥
योगि वृन्द दुर्लभ गति जोई ❋ तोकहँ आजु सुलभ भइ सोई ॥
मम दर्शन फल परम अनूपा ❋ जीव पाव निज सहज स्वरूपा ॥

दोहा—सब प्रकार तव भागबड, मम चरणन्ह अनुराग ॥
तव महिमा जेहि उर बसिहि, तासु परम बड भाग॥६०॥

सुनु शुभ वचन हर्ष कहँ पाई ❋ पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥
जनकसुता के सुधिम्वहिं भामिनि ❋ जानहु तो कहु करिवर गामिनि ॥
पम्पासरहिं जाहु रघुराई ❋ मुनिवर विपुल रहे जहँ छाई ॥
ऋषिमतंग महिमा गुणभारी ❋ जीव चराचर रहत सुखारी ॥
बैर न कर काहूसन कोई ❋ जासन बैर प्रीति करु सोई ॥
शिखर सुहावन कानन फूले ❋ खग मृग जीव जंतु अनुकूले ॥
करहु सफल श्रम सबकर जाई ❋ तहां होइ सुग्रीव मिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुवीरा ❋ जानतहूँ पूंछत मतिधीरा ॥
बार बार प्रभु पद शिरनाई ❋ प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

छंद—कहिकथा सकल विलोकिहरिमुख हृदय पदपंकजधरे॥
तजि योग पावकदेह हरि पदलीन भइ जहँ नहिंफिरे ॥
नर विविध कर्म अधर्म बहु मत शोकप्रद सब त्यागहू ॥
विश्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू ॥२६॥

दोहा—जाति हीन अघ जन्म मय, मुक्तकीन्ह अस नारि॥
महामन्दमन सुख चहसि, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥६१॥

चले राम त्यागेउ बन सोऊ ❋ अतुलित बल नरकेहरि दोऊ ॥

विरही इव प्रभु करत विशादा ❋ कहत कथा अनेक सम्वादा ॥
लक्ष्मण देखहु कानन शोभा ❋ देखत केहिकर मन नहिं क्षोभा ॥
नारिसहित सब खग मृग वृन्दा ❋ मानहुँ मोरि करतहहिं निन्दा ॥
हमहिं देखि मृगनिकर पराहीं ❋ मृगी कहहिं तुम कहँ भय नाहीं॥
तुम आनन्द करहु मृग जाये ❋ कंचन मृग खोजन ये आये ॥
संग लाइ करिणी करि लेहीं ❋ मानहुँ मोहिं सिखावन देहीं ॥
शास्त्र सुचिन्तित पुनि पुनि देखिय ❋ भूप सुसेवित वशनहिं लेखिय ॥
राखिय नारि यदपि उर माहीं ❋ युवती शास्त्र नृपति वश नाहीं ॥
देखहु तात वसन्त सुहावा ❋ प्रियाहीन म्वहिं भय उपजावा ॥

दोहा—विरह विकल बलहीन मोहिं, जानिसिनिपट अकेल
सहित बिपिन मधुकर खगन्ह,मदन कीन्ह बगमेल ॥६२॥
देखि गयउ भ्राता सहित, तासु दूत सुनि बात ॥
डेरा दीन्ह्यउ मनहुँ तिन्ह, कटक हटकि नहिं जात ॥६३॥

विटप विशाल लता अरु झानी ❋ विविध वितानें दिये जनुतानी ॥
कदंलि ताल वर ध्वजा पताका ❋ देखिन मोह धीर मन जाका ॥
विविध भांति फूले तरु नाना ❋ जनु बानैत बने बहुबाना ॥
कहुँ कहुँ सुन्दर विटप सुहाये ❋ जनुभट विलग विलग है छाये ॥
कूजत पिक मानहु गजमाते ❋ ढेक महोख ऊंट विषराते ॥
मोर चकोर कीर वर बाजी ❋ पारावत मराल सब ताजी ॥
तीतर लावा पदचर यूथा ❋ वरणि न जाइ मनोज वरूथा ॥
रथ गिरि शिला दुन्दुभी झरना ❋ चातक वन्दी गुण गण वरना ॥
मधुकर मुखर भेरि सहनाई ❋ त्रिविध बयारि बसीठी आई ॥
चतुरंगिनी सेन सब लीन्हे ❋ विचरत सबहिं चुनौती दीन्हे ॥
लक्ष्मण देखहु काम अनीका ❋ रहहिं धीर तिन्हके जगलीका ॥
यहिके एक परम बल नारी ❋ त्यहिते उबर सुभट सोइ भारी ॥

दोहा—ताततीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ॥

१ मृगोंके झुंडके झुंड भागते हैं। २ हथिनी। ३ स्त्री। ४ छत्र। ५ केला।

मुनि विज्ञान धाम मन, करहिं निमिष महँ क्षोभ ॥ ६४ ॥
लोभके इच्छा दम्भ बल, कामके केवल नारि ॥
क्रोधके परुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि ॥ ६५ ॥

गुणातीत सचराचर स्वामी ❋ राम उमा सब अन्तरयामी ॥
कामिनके दीनता दिखाई ❋ धीरनके मन विरति[1] दृढाई ॥
क्रोध मनोज[2] लोभ मद माया ❋ छूटहिं सकल रामकी दाया ॥
सोनर इंद्रजाल नहिं भूला ❋ जापर होइ सो नट अनुकूला ॥
उमा कहौं मैं अनुभव अपना ❋ हरिको भजन सत्य जग स्वपना ॥
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा ❋ पम्पानाम शुभग गम्भीरा ॥
सन्त हृदय जस निर्मल बारी ❋ बांधे घाट मनोहर चारी ॥
जहँ तहँ पियहिं विविध मृग नीरा ❋ जिमि उदार गृह याचक भीरा ॥

दोहा–पुरइनि सघन ओट जल, वेगि न पाइय मर्म ॥
माया छन्न न देखिये, जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥ ६६ ॥
सुखी मीन सब एकरस, अति अगाध जल माहिं ॥
यथा धर्म शीलान्हके, दिन सुख संयुत[3] जाहिं ॥ ६७ ॥

विकसे[4] सरसिज नानारंगा ❋ मधुर सुखद गुंजत बहु भृंगा ॥
बोलत जल कुक्कुट कल हंसा ❋ प्रभु विलोकि जनु करत प्रशंसा ॥
चक्रवाक बक खग समुदाई ❋ देखत बनै बरणि नहिं जाई ॥
सुन्दर खगगण गिरा सुहाई ❋ जात पथिक जनु लेत बुलाई ॥
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये ❋ चहुँ दिशि कानन विटप सुहाये ॥
चम्पक बकुल[5] कदम्ब तमाला ❋ पाटल पनस पलाश[6] रसाला[7] ॥
नवपल्लव कुसुमित तरुनाना ❋ चंचरीकपटली करगाना ॥
शीतल मन्द सुगन्ध सुहाऊ ❋ सन्तत बहै मनोहर बाऊ[8] ॥
कुहूकुहू कोकिल ध्वनि करहीं ❋ सुनि रव सरस ध्यान मुनिटरहीं ॥

दोहा–फूले फले विटप सब, रहे भूमि नियराइ ॥
पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसम्पति पाइ ॥ ६८ ॥

---

१ वैराग्य । २ कामदेव । ३ सिद्धान्त । ४ नानारंगके कमल फूलेहैं । ५ मौनसिरी ।
६ ताड़ । ७ आँब । ८ [illegible] ।

देखि राम अतिरुचिर तलावा ❁ मज्जन कीन्ह परम सुख पावा ॥
देखि एक सुन्दर तरु छाया ❁ बैठे अनुज सहित रघुराया ॥
तहँ पुनि सकल देव मुनि आये ❁ अस्तुति करि निजधाम सिधाये ॥
बैठे परम प्रसन्न कृपाला ❁ कहत अनुजसन कथा रसाला ॥
विरहवन्त भगवंतहि देखी ❁ नारद मन भा शोच विशेषी ॥
मोर शाप करि अंगीकारा ❁ सहत राम नाना दुख भारा ॥
ऐसे प्रभुहि विलोकहुँ जाई ❁ पुनि न वनै अस अवसर आई ॥
यह विचार नारदकर वीना ❁ गये जहां प्रभु सुख आसीना ॥
गावत रामचरित मृदुवानी ❁ प्रेम सहित बहु भांति बखानी ॥
करत दण्डवत लिये उठाई ❁ राखे बहुत वार उरलाई ॥
स्वागत पूछि निकट बैठारे ❁ लक्ष्मण सादर चरण पखारे ॥

दोहा–नाना विधि विनती करी, प्रभु प्रसन्न जिय जानि ॥
नारद बोले वचन तब, जोरि सरोरुह पानि ॥ ६९ ॥

सुनहु उदार परम रघुनायक ❁ सुंदर[1] अगम सुगम वरदायक ॥
देहु एक वर मांगौं स्वामी ❁ यद्यपि जानहु अन्तरयामी ॥
जानेहु मुनि तुम मोर स्वभाऊ ❁ जनसन कबहुँकि करौं दुराऊ ॥
कवन वस्तु अस प्रियमोहिं लागी ❁ जो मुनिवर न सकहु तुम माँगी ॥
जनकहँ कछु अदेय नहिं मोरे ❁ अस विश्वास तजहु जनि भोरे ॥
तब नारद बोले हरषाई ❁ अस बर माँगौं करौं ढिठाई ॥
यद्यपि प्रभुके नाम अनेका ❁ श्रुतिकह अधिक एकते एका ॥
राम सकल नामन्हते अधिका ❁ होउनाथ अघखगगणवधिका ॥

दोहा–राका[2]रजनी भक्ति तव, राम नाम सोइ सोम[3] ॥
अपर नाम उडुगण[4] बिमल, बसहु भक्ति उर व्योम[5] ॥ ७० ॥
एवमस्तु मुनि सन कह्यउ, कृपासिन्धु रघुनाथ ॥
तब नारद मन हर्ष अति, प्रभु पद नायउ माथ ॥ ७१ ॥

अति प्रसन्न रघुनाथहिं जानी ❁ पुनि नारद बोले मृदुबानी ॥

१ सुंदर । २ पूर्णमासीकी रात्रि । ३ चन्द्र । ४ नक्षत्र । ५ आकाश ।

राम जबहिं प्रेर्यहु निजमाया ❀ मोह्यहु मोहिं सुनहु रघुराया ॥
तब विवाह चाहौं मैं कीन्हा ❀ प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा ॥
सुनु मुनि तोहिं कहौं सहरोसा ❀ भजहिं मोहिं तजि सकल भरोसा॥
करौं सदा तिन्हकी रखवारी ❀ जिमि बालकहि राख महतारी ॥
गहि शिशु वच्छअनल अहिधाई ❀ तहँ राखै जननी अरु गाई ॥
प्रौढ़ भये त्यहि सुतपर माता ❀ प्रीति करैं नहिं पाछिलि बाता ॥
मोरे प्रौढ तनय सम ज्ञानी ❀ बालक सुत सम दास अमानी ॥
जिनहिं मोरबल निजबल ताहीं ❀ दुहुँ कहँकाम क्रोध रिपु आहीं ॥
यह विचारि पंडित मोहिं भजहीं ❀ पायहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं ॥

दोहा–काम क्रोध लोभादिमद, प्रबल मोहकी धार ॥
तिन्ह महँ अति दारुण दुखद, माया रूपी नार ॥ ७२ ॥

सुनु मुनि कहपुराण श्रुतिसंता ❀ मोह विपिन कहँ नारि वसंता ॥
जप तप नेम जलाशय झारी ❀ होइ ग्रीषम शोषै सब नारी ॥
काम क्रोध मद मत्सर भेका ❀ इनहिं हर्ष प्रद बरषा एका ॥
दुर्वासना कुमुद समुदायी ❀ तिन्हकहँ शरद सदा सुखदायी ॥
धर्म सकल सरसीरुह वृन्दा ❀ ह्वैहिम तिन्हहिं देय दुख मन्दा ॥
पुनि ममता जवास बहुताई ❀ पलुहै नारि शिशिर ऋतु पाई ॥
पाप उलूक निकर सुखकारी ❀ नारि निबिड रजनी अँधियारी ॥
बुधि बल शील सत्य सबमीना ❀ वनशीसम त्रिय कहहिं प्रवीना ॥

दोहा–अवगुण मूल शूलप्रद, प्रमदा सब दुख खानि ॥
ताते कीन्ह निवारण, मुनि मैं यह जिय जानि ॥ ७३ ॥

सुनि रघुपतिके वचन सुहाये ❀ मुनि तनुपुलकि नयनभरि आये ॥
कहहु कवन प्रभुके असरीती ❀ सेवकपर ममता अतिप्रीती ॥
जेनभजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी ❀ ज्ञानरंक मतिमन्द अभागी ॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद ❀ सुनहु राम विज्ञान विशारद ॥
सन्तन्हके लक्षण रघुवीरा ❀ कहहु राम भंजन भवभीरा ॥

सुन मुनि सन्तनके गुणकहऊं ❀ ज्यहि ते मैं उनके वश रहऊं ॥
षटविकार तजि अनघ अकामा ❀ सकल अकिंचन शुचि सुखधामा॥
अमित बोध परमारथ भोगी ❀ सत्य सार कवि कोविद योगी ॥
सावधान मद मान विहीना ❀ धीर भक्त गति परम प्रवीना ॥

दोहा–गुणागार संसार दुख, रहित विगत सन्देह ॥
तजि मम चरण सरोज प्रिय, तिन्हकहँ देह नगेह ॥७४॥

निज गुण सुनत श्रवण सकुचाहीं ❀ परगुण सुनत अधिक हर्षाहीं ॥
सम शीतल नहिं त्यागहिं नीती ❀ सरल स्वभाव सबहि सन प्रीती॥
जप तप व्रत दम संयम नेमा ❀ गुरु गोविन्द विप्र पद प्रेमा ॥
श्रद्धा क्षमा मइत्री दाया ❀ मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥
विरति विवेक विनय विज्ञाना ❀ बोध यथारथ वेद पुराना ॥
दम्भ मान मद करहिं न काऊ ❀ भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला ❀ हेतुरहित परहित रतशीला ॥
सुनु मुनि साधुन्हके गुण जेते ❀ कहि न सकहिं शारद श्रुतितेते ॥

छंद–कहिसक न शारद शेष नारद सुनत पदपंकज गहे॥
अस दीनबन्धु कृपालु अपने भक्त गुण निज मुख कहे॥
शिरनाइ बारहिं बार चरणन्ह ब्रह्म पुर नारद गये ॥
ते धन्य तुलसीदास आश विहाइ जे हरि रँगरये ॥२७॥
दोहा–रावणारि यश पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग ॥
राम भक्ति दृढ पावहिं, बिनु बिराग जप योग ॥ ७५ ॥
दीपशिखा सम युवति जन, मनजनि होसि पतंग ॥
भजहिं राम तजि काममद, करहिं सदा सतसंग॥७६॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल
विज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृतआरण्यकांडे
३ तृतीयःसोपानःसमाप्तः ॥

१ काम, क्रोध, मद, मात्सर्यादि। २ पाप रहित।

इति

आरण्यकाण्डम्

समाप्तम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना

कल्याण—(मुम्बई.)

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत-

रामायणे-

किष्किन्धाकाण्डप्रारम्भः।

वही

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

इन्होंने

निज

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर"

नामक

मुद्रायन्त्रालयमें छापकर

प्रसिद्ध किया।

कल्याण-(मुम्बई.)

संवत् १९४९ शके १८१४

लक्ष्मीविङ्कटेशाय नमः ।

दोहा—रामचरण रतिजोचहै, अथवा पद निर्वान ॥
भावसहित सो यह कथा, करै श्रवण पुटपान ॥

अथ किष्किन्धाकाण्डम् ।

दोहा—रामबाणअहिगणसरिस, निकरनिशाचर भेक ॥
जौंलगिग्रसतनतबहिंलगि, यतनकरहुतजिटेक ॥
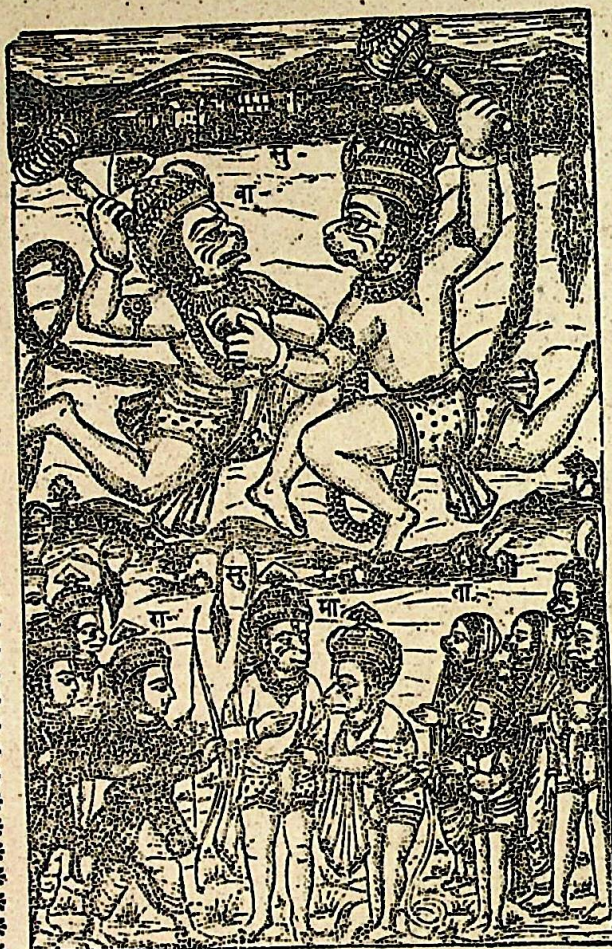
दोहा—निमिषनिमिष करुणायतन, जाहिं कल्पयमबीति ॥
बेगिचलियप्रभुआनिये, भुजबल खलदल जीति ॥

चौ०—राम राम सम हितजगमाहीं ॥ सुत पितु मातु बन्धुकोउनाहीं ॥
सुरनरमुनि सबकी यहरीती ॥ स्वारथ लागिकरैं सब प्रीती ॥

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास-
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना कल्याण (मुंबई)

श्रीः ॥

अथ रामायणे किष्किन्धाकाण्डम्।
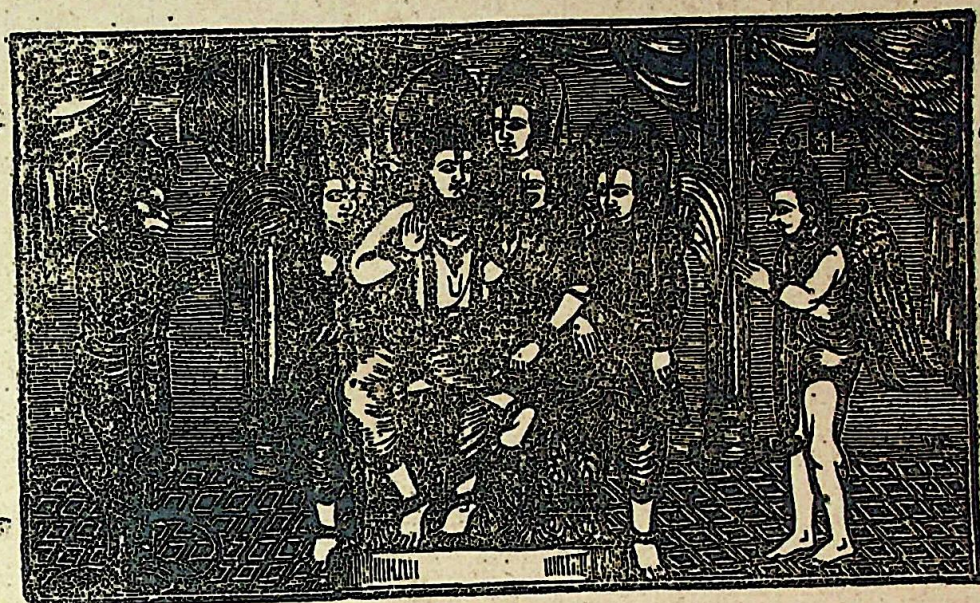
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्लोक-कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौविज्ञानधामावु भौ शोभाढ्यौवरधन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रवृन्दप्रियौ॥ मायामानुषरूपिणौरघुवरौसद्धर्मवंतौ हितौ सीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभक्तिप्रदौतौहिनः ॥ १ ॥ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवंकलिमलप्रध्वंसनंचाव्ययं श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरंसंशोभितंसर्वदा ॥ संसारामयभेषजंसुम

श्लोकार्थ-कुन्दके फूलकी समान और नीलकमलकी समान सुंदर अति बलवान विज्ञानके घर दोनों शोभा संयुक्त धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ वेदसें प्रशंसित और गौ ब्राह्मणोंको प्यार करनेवाले मायासे मनुंष्यरूप धारण कियेहुए सद्धर्मके कवच धारण किये हितकारीसीताके ढूँढनेमें तत्पर मार्गमें विरचते हुए राम लक्ष्मण दोनों मुझको भक्तिके देनेवालेहैं ॥ १ ॥

वे सुकर्म कर्ता धन्यहैं जो निरन्तर रामनाम रूपी अमृतको पान कर्तेहै वोह राम नाम रूपी अमृत कैसाहै कि ब्रह्म देवरूपी समुद्रसे उत्पन्न कलिमलका नाशक जन्म मरणादिकसे रहित शोभासें युक्त शिवजीके चंद्रमुखमें सदैव शोभित और

धुरं श्रीजानकीजीवनं धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सो०—मुक्तिजन्म महिजानि, ज्ञानखानि अघ हानिकर ॥
जहँ बस शंभु भवानि, सोकाशी सेइय कस न ॥ १ ॥
जरत सकल सुरवृन्द, विषम गरल जेहिपान किय ॥
तेहि न भजसि मतिमन्द, को कृपालु शंकर सरिस ॥ २ ॥

आगे चले बहुरि रघुराई ❀ ऋष्यमूक पर्वत नियराई ॥
तहँरह सचिव सहित सुग्रीवा ❀ आवत देखि अतुल बलसींवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना ❀ पुरुष युगल बलरूप निधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई ❀ कहेसि मोहिं निज सैन बुझाई ॥
पठवा वालि होइ मन मैला ❀ भागौं तुरत तजौं यह शैला ॥
विप्ररूप धरि कपि तहँगयऊ ❀ माथनाय पूंछत अस भयऊ ॥
को तुम श्यामल गौर शरीरा ❀ क्षत्री रूप फिरहु बनबीरा ॥
कठिन भूमि कोमलपद गामी ❀ कवन हेतु वन बिचरहु स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता ❀ सहत दुसह बन आतप बाता ॥
कीतुम तीनि देव महँ कोऊ ❀ नर नारायण की तुम दोऊ ॥

दोहा—जगकारण तारण भवहिं, भंजन धरणी भार ॥
कै तुम अखिल भुवनपति, लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥

सुनि बोले रघुवंश कुमारा ❀ विधिकर लिखा को मेटन हारा ॥
कोशलेश दशरथके जाये ❀ हम पितुवचन मानि बन आये ॥
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई ❀ संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥
इहां हरी निशिचर वैदेही ❀ विप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई ❀ कहहु विप्र निज कथा बुझाई ॥
प्रभु पहिचानि परेगहि चरणा ❀ सो सुख उमा जाहि नहिंबरणा ॥

संसाररूपी रोगका औषधहै और सुंदर मधुरतरहै और वियोग समयमें श्रीजानकीजीका जिलानेवालाहै ॥ २ ॥

---

१ शोकके हरनेको तरवारिसदृश। २ विष। ३ ब्रह्मचारी। ४ पर्व्वत। ५ धाम। ६ ब्रह्म, विष्णु, महेश। ७ अयोध्या। ८ जनककुमारी।

पुलकित तनु मुख आव न बचना ❋ देखत रुचिर बेषकी रचना ॥
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्हा ❋ हर्षे हृदय निज नाथहि चीन्हा॥
मैं अजान होइ पूछौं साईं ❋ तुम कस पूँछहु नरकी नाईं ॥
तव मायावश फिरौं भुलाना ❋ ताते प्रभु पद नहिं पहिचाना ॥

दोहा-एक मन्द मैं मोहवश, कीश हृदय अज्ञान ॥
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेहु, दीनबन्धु भगवान ॥ २ ॥

यदपि नाथ अवगुण वहु मोरे ❋ सेवक प्रभुहिं परे जनु भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहू ❋ सो निस्तरै तुम्हारे छोहू ॥
तापर मैं रघुवीर दुहाई ❋ जानौं नहिं कछु भजन उपाई ॥
सेवक सुत पितु मातु भरोसे ❋ रहै अशोच बनै प्रभु पोसे ॥
असकहि चरण परे अकुलाई ❋ निजतनु प्रकट प्रीति उरछाई ॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा ❋ निजलोचन जलसींचि जुडावा ॥
सुनु कपि जियजनि मानसि ऊनो ❋ तैं मम प्रिय लक्ष्मण ते दूना ॥
समदरशी मोहिंकह सब कोई ❋ सेवक प्रिय अनन्यगति सोई ॥

दोहा-सो अनन्य अस जाहिके, मति न टरै हनुमन्त ॥
मैं सेवक सचराचर, रूपराशि भगवन्त ॥ ३ ॥

देखि पवनसुत पति अनुकूला ❋ हृदय हर्षि बीते सब शूला ॥
नाथ शैल पर कपिपति रहई ❋ सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तासन नाथ मयत्री कीजे ❋ दीन जानित्याहि अभयकरीजे ॥
सो सीताकर खोज कराई ❋ जहँ तहँ मर्कट कोटि पठाई ॥
इंहि विधि सकल कथा समुझाई ❋ लिये दोउ जन पीठिचढाई ॥
जब सुग्रीव राम कहँ देखा ❋ अतिशयधन्य जन्मकरिलेखा ॥
सादर मिल्यउ नाइ पदमाथा ❋ भेंट्यउ अनुज सहित रघुनाथा ॥
कपिके मन विचार यह नीती ❋ करिहहिं विधि मोसनये प्रीती ॥

दोहा-तब हनुमन्त उभय दिशि, कहि सब कथा बुझाइ ॥
पावक साखी देइ करि, जोरी प्रीति दृढाइ ॥ ४ ॥

कीन्ह प्रीति कछु बीच नराखा ❋ लक्ष्मण राम चरित सब भाषा ॥

---

१ बन्दर । २ सन्देह । ३ बंदर । ४ दोउदिशि ।

कह सुग्रीव नयन भरि बारी ❋ मिलिहिनाथ मिथिलेशकुमारी ॥
मंत्रिन सहित यहां इकबारा ❋ बैठि रह्यउँ कछु करत विचारा ॥
गगनपन्थ देखी मैं जाता ❋ परबश परी बहुत बिलखाता ॥
राम राम हाराम पुकारी ❋ मम दिशि देखि दीन पट डारी ॥
मांगाराम तुरत सो दीन्हा ❋ पट उरलाइ शोच अति कीन्हा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा ❋ तजहु शोक मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहौं सेवकाई ❋ जेहिविधि मिलहि जानकी आई ॥

दोहा—सखावचन सुनि हरषेउ, रघुपति करुणासीव ॥
कारण कवन बसहु बन, मोसन कहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

अथ क्षेपक ॥

पूंछहिं प्रभु हँसि जानहिं ताही ❋ महावीर मर्कट कुल माही ॥
तव अस्थान प्रथम केहिठामा ❋ कहु निज मात पिताकर नामा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ❋ कहहुँ आदिते उत्पति गाई ॥
ब्रह्मा नयनन कीच निकारी ❋ लै अँगुरी भुइँ ऊपर डारी ॥
वानर एक प्रगट तहँ होई ❋ चंचल बहु विरंचि बल सोई ॥
तेहिकर नाम धराविधि जानी ❋ ऋच्छराज तेहिसम नहिं ज्ञानी ॥
विधि पदनाइ शीश कपि कहई ❋ आयसु कहा मोहिं प्रभु अहई ॥
विचरहु वन गिरि वन फलखावहु ❋ मारहु निश्चर जेजहँ पावहु ॥
सो ब्रह्माकी आज्ञा पाई ❋ दक्षिण दिशा गयउ रघुराई ॥

दोहा—ऋच्छराज तहँ विचरई, महावीर बलवान ॥
निश्चर मिलेते सबहने, लैलैघडे पखान ॥ ६ ॥

फिरत दीख यक कूप अनूपा ❋ जल परिछाहिं दीख निजरूपा ॥
तब कपि शोच करत मनमाहीं ❋ केहिविधि रिपु रहहीह्यां आहीं ॥
ताहि देखी कोपा कपिवीरा ❋ सब दिशि फिरा कूपके तीरा ॥
जोजो चरित कीन्ह कपि जैसा ❋ सो सो चरित दीख तहँ तैसा ॥
गरजा कीश सोइ सो बोला ❋ कूदिपरा जलमाही डोला ॥

१ आकाशमार्ग । २ आज्ञा ।

तब तनु पलटि भई सो नारी ❋ अति अनूपगुण रूप अपारी ॥
सुनहु उमा अति कौतुक होई ❋ आइ बहोरि ठाढि भे सोई ॥
सुरपति दृष्टि परी तेहि काला ❋ तेहि तब विंदु परा तेहि बाला ॥
मोहे भानु देखि छविसीवाँ ❋ छूटा विंदु परा तेहि ग्रीवाँ ॥

दोहा-इंद्र अंशते बालिभा, महावीर बलधाम ॥
दिनकर सुत दूसर भयो, तेहि सुग्रीवउ नाम ॥ ७ ॥

पुनि तत्काल सुनहु रघुवीरा ❋ नारी पलटि भयो सोइवीरा ॥
तब ऋछराज प्रीति मनभयऊ ❋ हमहिं संगलै विधि पहँ गयऊ ॥
करि प्रणाम सब चरित बखाना ❋ कह अज हरि इच्छा बलवाना ॥
तब विधि हमहि कहा समुझाई ❋ दक्षिण दिशा जाहु दोउ भाई ॥
किष्किधा तुम करौ अस्थाना ❋ रंग भोग बहु विधि सुखनाना ॥
जो प्रभुलोक चराचर स्वामी ❋ सो अवतरहि नाथ बहुनामी ॥
रघुकुल मणि दशरथ सुतहोई ❋ पितु आज्ञा विचरहि वन सोई ॥
नर लीला करिहै विधिनाना ❋ पैहौ दरश होइ कल्याना ॥

दोहा-तब हर्षे हम बंधु दोउ, सुनिकै विधिके बयन ॥
तप जप योग न पावहीं, सो हम देखब नयन ॥ ८ ॥

विधिपद वंदि चले दोउ भाई ❋ किष्किधा तब आये गुसाई ॥
वालीराज कीन सुरत्राता ❋ वनवासि दैत्य हन्यो दोउ भ्राता ॥
मयदानवके सुत दोउ वीरा ❋ मायावी दुंदुभि रणधीरा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ❋ विधिगति अलख जानि नहिं जाई ॥

॥ इति क्षेपक ॥

नाथ वालि अरु मैं दोउ भाई ❋ प्रीति रही कछु वरणि न जाई ॥
मयसुत मायावी तेहि नाऊं ❋ आवा सो प्रभु हमरे गाऊं ॥
अर्द्धरात्रि पुरद्वार पुकारा ❋ वालिहु रिपु बल सहै नपारा ॥
धावा वालि देखि सोइभागा ❋ मैं पुनि गयउँ बन्धु सँग लागा ॥
गिरिवर गुहा पैठि सो जाई ❋ वालि मोहिं तब कहा बुझाई ॥

उपमा रहित । २ सूर्य्यनारायण । ३ पर्व्वतकी कन्दरा ।

परखेहु मोहिं एक पखवारा ❋ नहिं आवौं तो जानेहु मारा ॥
मास दिवस तहँ रह्यहुँ खरारी ❋ निसरी रुधिर धार तहँ भारी ॥
"तबमैंनिजमनकीन्ह विचारा ❋ जाना असुर बन्धु कहँमारा ॥"
बालिहत्यसि मोहिं मारहिआईं ❋ शिला द्वारदे चलेउँ पराई ॥

"दोहा–वालि महाबल अमित अति, समर न जीतै कोय ॥
त्यहि मारिसि जो निशिचर, सो अब मारय मोय ॥ ९ ॥

गयउँ भवन मनशोच अपारा ❋ पूंछे वालि कह्यो जिमि मारा ॥"
पंपापुरके जन तेहि काला ❋ तनु व्याकुल मन बहुत विहाला ॥
मंत्रिन पुर देखा विनु साईं ❋ दीन्हेउ राज मोहिं बरिआईं ॥
वाली ताहि मारि गृहआवा ❋ देखि मोहिं जिय भेद बढावा ॥
रिपुसमान म्वहिं मारेसि भारी ❋ हरि लीन्ह्यसि सर्वस अरु नारी ॥
ताके भय रघुवीर कृपाला ❋ सकल भुवन मैं फिरयउँ विहाला ॥
इहां शाप वश आवत नाहीं ❋ तदपि सभीत रहौं मन माहीं ॥
सुनि सेवक दुख दीनदयाला ❋ फरकि उठे दोउ भुजा विशाला ॥

अथ क्षेपक ॥

दोहा–सुनत वचन बोले प्रभु, कहहु शापकी बात ॥
दुंदुभिदैत्य सो कवन विधि, वालि हत्यो तेहि तात ॥ १० ॥
समदर्शी शीतल सदा, मुनिवर परम प्रवीन ॥
मोहिं बुझाइ कहहु सब, शाप कौन हित दीन ॥ ११ ॥

पुनि पूछत भए कृपानिकेता ❋ वालिहि शाप भयो केहिहेता ॥
बोले तब कपीश मनलाई ❋ दुंदुभिदैत्य महाबल भाई ॥
मल्लयुद्धकी गति सब जाने ❋ और बली नहिं कोउ मनमाने ॥
एकवार जलनिधि तटआयो ❋ जाइके जलनिधि माँझ थहायो ॥
सबहि कटी प्रमाण जलभयऊ ❋ करि अभिमान मथत सो लयऊ ॥
मथत सिंधुव्याकुल सब गाता ❋ जीवजंतु सब भये निपाता ॥
तब अकुलाय सिंधु चलिआवा ❋ वचन विचारिहि ताहि सुनावा ॥

१ एकमहीना । २ रक्त । ३ संग्राम । ४ गृह । ५ जबरदस्ती । ६ शत्रु । ७ सुग्रीव । ८ समुद्र ।

तुम बल सरवर और न कोऊ ❀ वचन विचारीकहौं मैं सोऊ ॥
हिमगिरि बल बरणो ना जाई ❀ त्यहि जीतन कर करहुउपाई ॥
वचन सुनत ताहीं चलि आयो ❀ देखि हिमाचल अतिमन भायो ॥
ताल ठोंकि हिम लीन उठाई ❀ तब हिमगिरि बहु विनती लाई ॥
तुम्हरे बल सरबर मै नाहीं ❀ ताते करो न मान तुम्हाहीं ॥
पंपापुर तुमही चलि जाहू ❀ वालि महाबल निधि अवगाहू ॥
सुनत वचन तवहीं चलिआवा ❀ वालि वालि कहिकै गोहरावा ॥

दोहा—वेष किये सो महिषकर, गर्व बहुत मन माहिं ॥
आयो निकट सो गर्जिकर, मनहुँ तनक भय नाहिं॥१२॥

मही मर्दि तरु करै निपाता ❀ गरजेउ घोर गिरा जनुघाता ॥
ठोकेउ ताल वज्र जनु परहीं ❀ तेहिकर मर्म जानि सब डरहीं ॥
पंपापुर व्याकुल सब काहू ❀ चन्द्र ग्रसन जनु आयो राहू ॥
सुनत वालि धावा ततकाला ❀ देखि असुर भुजदंड कराला ॥
भिरे युगल करिवर की नाईं ❀ मल्लयुद्ध कछु वरणि न जाईं ॥
चारि याम सब कौतुक भयऊ ❀ मुष्टि प्रहार तासु कपि दयऊ ॥
गिरा अवनि तब शैल समाना ❀ जीव जंतु तरु टूटचउ नाना ॥
पुनि तेहि वालि युगलकरि डारा ❀ उत्तर दक्षिण कीन प्रहारा ॥
तेहि गिरि पर मुनिकुटी सुहाई ❀ रुधिर प्रवाह गयो तहँ धाई ॥
ऋषि मतंगकर तहाँ निवासा ❀ गये सो ऋषि मज्जन सुख रासा ॥
मज्जन करि मतंगऋषि आये ❀ देखि कुटी अति क्रोध बढाये ॥
तबहिं विचार कीन्ह मनमाहीं ❀ यक्ष एक चलि आवा ताहीं ॥
तिनहीं सकल कही इतिहासा ❀ सुनि मतंग भय क्रोधनिवासा ॥

दोहा—दीन शाप तब क्रोध करि, नहिं मन कीन्ह विचार ॥
वालि नाश गिरि देखतहि, होइ जाइ तनुछार ॥ १३ ॥

तेहिभर इहां वालिनहिं आवत ❀ ऋषिकेवचन मानि भय पावत ॥
तेहि भरोस यहि गिरिपर रहऊं ❀ वालित्रास नहिं विचरत कहऊं ॥

---

१ हिमवान । २ तुल्य । ३ भैंसा । ४ पृथ्वी । ५ वृक्ष ।

यहि दुखते प्रभु दिन अरु राती ❋ चिंताबहुत जरति अतिछाती ॥
जानहु मर्म सकल रघुनाथा ❋ इहां रहौं हनुमति लै साथा ॥
सो वृत्तांत वालि सब जाना ❋ इहां न आवत कृपानिधाना ॥
सुनि सुग्रीव वचन भगवाना ❋ बोले हरि हँसि धरि धनुबाना ॥

इति क्षेपक ॥

दोहा–सुन सुग्रीव मैं मारिहौं, वालिहि एकहि बाण ॥
ब्रह्म रुद्र शरणागतहु, गये न उबरहिं प्राण ॥ १४ ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ❋ तिन्हैं विलोकत पातक भारी ॥
निजदुख गिरिसम रजकरि जाना ❋ मित्रके दुख रज मेरुसमाना ॥
जिनके अस मति सहज न आई ❋ ते शठ हठ कत करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा ❋ गुणप्रगटै अवगुणहि दुरावा ॥
देत लेत मन शंक न धरहीं ❋ बल अनुमान सदाहित करहीं ॥
विपति काल कर शतगुण नेहा ❋ श्रुति कह संत मित्रगुण एहा ॥
आगे कह मृदु वचन बनाई ❋ पाछे अनहित मन कुटिलाई ॥
जाकर चित इहिगति सम भाई ❋ अस कुमित्र परिहरे भलाई ॥

दोहा–मित्र मित्रसों प्रीति करि, हृदय आन मुख आन ॥
जाके मन बच प्रेमनहिं, दुरे दुराये जान ॥ १५ ॥

सेवक शठ नृप कृपण कुनारी ❋ कपटी मित्र शूल समचारी ॥
सखा शोच त्यागहु बल मोरे ❋ सब विधि करब काज मैं तोरे ॥
कह सुग्रीव सुनो रघुवीरा ❋ वालि महाबल अति रणधीरा ॥

॥ अथ क्षेपक ॥

सप्त ताल ये कृपानिधाना ❋ बेधे सबहि एकही बाना ॥
चन्द्रमण्डलाकार सुहाई ❋ परै एक बाणहि महि आई ॥
ताकेकरँ वाली प्रभुमरई ❋ नातो श्रम मिथ्या कोउ करई ॥
सुनि बोले प्रभु शीतल वानी ❋ कपि चतुरई तोरि मैं जानी ॥
यहि विधि बलका करहु परेखू ❋ कहहु तालकर चरित विशेषू ॥

---

१ रेणुका । २ पर्वत । ३ बरछीकी धारके समान । ४ हाथ ।

सुनि सुग्रीव हिये हर्षाना ❋ ताल वृक्ष कर चरित बखाना ॥
एकदिवस कपीशं वन गयऊ ❋ वृक्ष फूल फल देखत भयऊ ॥
मन हर्षाय सात फल लीना ❋ जल मज्जनते शुचि सो कीना ॥

दोहा-लै आतुर चलिआयहु, पंपापुर जगदीश ॥
करि अस्नान ध्यान पुनि, नाइ इष्ट कहँ शीश ॥१६॥

राखे फल जे मगकरि दर्पा ❋ तेहि फल पर बैठा इक सर्पा ॥
शशिमंडल समान फन काढी ❋ देखि कपीश महारिसि बाढी ॥
अरे दुष्ट भख मोर नशावा ❋ यमपुर आज सदन तुव छावा ॥
नाहिंत शीश शाप ले मोरा ❋ वृक्ष फूटि निकसै तनु तोरा ॥
जहां जायकर बैठा वेदी ❋ निकसे तालवृक्ष तनु छेदी ॥
क्रोध निवारि वालि गृह आवा ❋ समाचार यह तक्षक पावा ॥

दोहा-पुत्र वधन सुनि क्रोध करि, मनदुख भयो अपार ॥
निश्चय मारै वालिसो, जो इह वेधै तार ॥ १७ ॥

सो. सब समाचार मैं जानव ❋ अस तव कहब नाथ मन मानव ॥

इति क्षेपक ॥

दुंदुभि अस्थि ताल दिखराये ❋ बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये ॥
भये शतखण्ड वृक्षके जबहीं ❋ निकस्यो सर्प ताल तर तबहीं ॥
करि अस्तुति जब सर्प सिधावा ❋ निरखि हरीश प्रभुहि सुखपावा ॥
देखि अमित बल बाढी प्रीति ❋ वालि वधन कर भइ परतीती ॥
बाराहिं बार नाइ पद शीशा ❋ प्रभुहि जानि मन हर्ष कपीशा ॥
उपजा ज्ञान वचन तब बोला ❋ नाथ कृपा मन भयउ अडोला ॥
सुख सम्पति परिवार बडाई ❋ सब परिहरि करिहौं सेवकाई ॥
ये सब राम भक्तिके बाधक ❋ कहहिं सन्त तव पद अवराधक ॥
शत्रु मित्र दुख सुख जगमाहीं ❋ मायाकृत परमारथ नाहीं ॥
वालि परमहित जासु प्रसादा ❋ मिलेहु राम तुम शमनविषादा ॥
स्वप्नेहु जेहि सन होइ लराई ❋ जागे समुझत मन सकुचाई ॥

---

१ वालि । २ पवित्र । ३ सुग्रीव । ४ त्याग ।

अब प्रभु कृपाकरहु इहि भांती ❋ सब तजि भजन करौं दिनराती ॥
सुनि विराग संयुत कपिवानी ❋ बोले बिहँसि राम धनुपाणी ॥
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई ❋ सखा वचन मम मृषा[1] न होई ॥
नट मर्कट[2] इव सबहि नचावत ❋ राम खगेश[3] वेद अस गावत ॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा ❋ चले चाप[4] सायक गहि हाथा ॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा ❋ गर्जिसि जाइ निकट बल पावा ॥
सुनत वालि क्रोधातुर धावा ❋ गहिकर चरण नारि समुझावा ॥
सुनु पति जिनहिं मिला सुग्रीवा ❋ ते दोउ बन्धु तेज बल सीवा ॥
कोशलेश[5] सुत लक्ष्मण रामा ❋ कालहु जीति सकहिं संग्रामा ॥
" सोइ रघुवीर हृदयमहँ आनहु ❋ छाँडहु मोह कहा मम मानहु " ॥

दोहा—कहा वालि सुनु भीरु प्रिय, समदरशी रघुनाथ ॥
जो कदापि मोहिं मारि हैं, तौ पुनि होब सनाथ ॥ १८ ॥

असकहि चला महा अभिमानी ❋ तृण समान सुग्रीवहिं जानी ॥
" वालि देखि सुग्रीवहिं ठाढा ❋ हृदय क्रोध पुनि बहुविधि बाढा " ॥
भिरेउ युगल वाली अतितर्जा ❋ मुष्टिक मारि महाधुनि गर्जा ॥
तब सुग्रीव विकल होइ भागा ❋ मुष्टिप्रहार वज्र सम लागा ॥
मैं जो कहा रघुवीर कृपाला ❋ बन्धु न होइ मोर यह काला ॥
एकरूप तुम भ्राता दोऊ ❋ तेहि भ्रमते नहिं मारेउँ सोऊ ॥
कर परसा सुग्रीव शरीरा ❋ तनु भा कुलिश गई सब पीरा ॥
मेली कण्ठ सुमनकी[6] माला ❋ पठवा पुनि बल देइ विशाला ॥
पुनि नानाविधि भई लराई ❋ विटप[7] ओट देखहिं रघुराई ॥

दोहा—बहु छल बल सुग्रीव करि, हृदय हारिभय मानि ॥
मारा बालिहि राम तब, हिये माँझ शर[8] तानि ॥ १९ ॥

परा विकल महि[9] शरके लागे ❋ पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे ॥
श्यामगात शिर जटा बनाये ❋ अरुण नयन शर चाप चढाये ॥
पुनि पुनि चितै चरण चितदीन्हे ❋ सफल जन्म माना प्रभु चीन्हे ॥

१ मिथ्या । २ वन्दर । ३ गरुड । ४ धनुषवाण । ५ दशरथ । ६ पुष्पोंकीमाला । ७ वृक्ष । ८ वाण । ९ पृथ्वी ।

हृदय प्रीति मुख वचन कठोरा ❋ बोला चितै रामकी ओरा ॥
धर्महेतु अवतरेहु गुसाईं ❋ मारेहु मोहिं व्याधकी नाईं ॥
मैं वैरी सुग्रीव पियारा ❋ कारण कवन नाथ म्वहिं मारा ॥
अनुजवधू भगिनी सुत नारी ❋ सुन शठ ये कन्यासम चारी ॥
इन्हें कुदृष्टि विलोकै जोई ❋ ताहि वधे कछु पाप न होई ॥
मूढ तोहिं अतिशय अभिमाना ❋ नारि सिखावन करेसि न काना ॥
मम भुजबल आश्रित तेहि जानी ❋ मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

दोहा–सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोरि ॥
प्रभु अजहूं मैं पातकी, अन्तकाल गति तोरि ॥ २० ॥

सुनत राम अति कोमलवाणी ❋ वालि शीश परस्यउ निजपाणी ॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना ❋ बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं ❋ अन्तराम कहि आवत नाहीं ॥
जासु नाम बल शंकर काशी ❋ देत सबहि समगति अविनाशी ॥
ममलोचन गोचर सोइ आवा ❋ बहुरि कि अस प्रभु बनहि बनावा ॥

छं०सो नयन गोचर जासुगुण नितनेति कहि श्रुति गावहीं
जिमि पवन मन गोनिरस करि मुनिध्यान कबहुँकपावहीं
मोहिं जानि अति अभिमान वश प्रभुकह्यउ राखु शरीरहीं
अस कवन शठ हठ काटि सुरतरु बारि करहिं करीरहीं १ ॥
अब नाथ करि करुणा विलोकहु देव यह बर मांगउं ॥
ज्यहि योनि जन्मौं कर्मवश तहँ राम पद अनुरागऊं ॥
यहतंनय मम समविनय बल कल्याण पद प्रभु दीजिये ॥
गहि बाँह सुर नरनाह अंगद दास अपनो कीजिये ॥ २ ॥

दोहा–रामचरण दृढ प्रीति करि, वालि कीन्ह तनु त्याग ॥
सुमन माल जिमि कण्ठते, गिरत न जानै नाग ॥ २१ ॥

राम वालि निज धाम पठावा ❋ नगरलोग सब व्याकुल धावा ॥
नानाविधि विलाप कर तारा ❋ छूटे केश न देह सँभारा ॥

---

१ रक्षित । २ कल्पवृक्ष । ३ दया । ४ सुत । ५ बाल ।

पुनि पुनि तासुशीश उरधरई ❀ वदन विलोकि हृदय महँदतई ॥
मैंपति तुमहिं बहुत समुझावा ❀ कालविवश पियमनहिं न आवा ॥
अंगद कहँकछु कहन नपायहु ❀ बीचहिंसुरपुर प्राण पठायहु ॥
तारा विकल देखि रघुराया ❀ दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया ॥
क्षिति जल पावक गगन समीरा ❀ पंचरचित यई अधम शरीरा ॥
प्रगटसो तनु तब आगे सोवा ❀ जीव नित्यतुमकेहिलगिरोवा ॥
उपजा ज्ञान चरण तब लागी ❀ लीन्हसि परम भक्तिवर मांगी ॥
उमा दारुयोषितकी नाईं ❀ सबहिं नचावत रामगुसाईं ॥
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा ❀ मृतक कर्मविधिवत सबकीन्हा ॥
रामकहा अनुजहि समुझाई ❀ राज्य देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपति चरणनाइ करि माथा ❀ चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दोहा–लक्ष्मण तुरत बुलावा, पुरजन विप्र समाज ॥
राज दीन्ह सुग्रीव कहँ, अंगद कहँ युवराज ॥ २२ ॥

उमा राम सम हित जग माहीं ❀ सुत पितु मातु बन्धुकोउनाहीं ॥
सुरनरमुनि सबकी यह रीती ❀ स्वारथ लागिकरैं सब प्रीती ॥
वालित्रास व्याकुल दिनराती ❀ तनु विवरण चिंता जर छाती ॥
सो सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ ❀ अतिकोमल रघुवीर स्वभाऊ ॥
ऐसे प्रभु कहँ जो परिहरहीं ❀ काहेन विपति जाल नर परहीं ॥
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बुलाई ❀ बहुप्रकार नृप नीति सिखाई ॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीशा ❀ पुर न जाउँ दश चारि वरीशा ॥
गत ग्रीषम वरषाऋतु आई ❀ रहिहौं निकट शैल परछाई ॥
अंगद सहित करहु तुम राजू ❀ सन्तत हृदय राखि ममकाजू ॥
तब सुग्रीव भवनफिरि आये ❀ राम प्रवर्षण गिरि पर छाये ॥

दोहा–प्रथमहिं देवन गिरिगुहा, राखी रुचिर बनाइ ॥
राम कृपानिधि कछुक दिन, बास कराहिंगे आइ ॥ २३ ॥

सुन्दरवन कुसुमित तरु शोभा ❀ गुंजत चंचरीक मधुलोभा ॥

१ भूमि । २ अग्नि । ३ आकाश । ४ वायु । ५ गेह । ६ फूलेहुये । ७ भ्रमर ।

कन्दमूल फल अतिहि सुहाये ❀ भये बहुत जबते प्रभु आये ॥
देखिमनोहर शैल अनूपा ❀ रहेतहँ अनुज सहित सुरभूपा ॥
मंगलरूप भये वन तबते ❀ कीन्ह निवास रमापति जबते ॥
मधुकर खगमृगतनुधरि देवा ❀ करहिं सिद्ध मुनि प्रभुकी सेवा ॥
फटिकशिला अति शुभ्रसुहाई ❀ सुखआसीन तहाँ दोउ भाई ॥
कहत अनुजसनकथा अनेका ❀ भक्ति विरति नृपनीति विवेका ॥
वर्षाकाल मेघ नभ छाये ❀ गरजत लागत परम सुहाये ॥

दोहा—लक्ष्मण देखहु मोरगण, नाचत बारिद पेखि ॥
गृही विरति जिमि हर्षयुत, विष्णु भक्त कहँ देखि॥२४॥

घनघमण्ड नभगरजत घोरा ❀ प्रियाहीन डरपत मनमोरा ॥
दामिनि दमकि रही घन माहीं ❀ खलकी प्रीति यथाथिर नाहीं ॥
बरषहिं जलद भूमिनियराये ❀ यथा नवहिं बुधविद्यापाये ॥
बूँद अघात सहैं गिरि कैसे ❀ खलके वचन सन्त सहैं जैसे ॥
क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई ❀ जस थोरे धन खल बौराई ॥
भूमि परत भा ढाबर पानी ❀ जिमि जीवहिं माया लपटानी ॥
सिमिटि सिमिटि जलभरेतलावा ❀ जिमि सद्गुणसज्जन पहँ आवा ॥
सरिताजल जलनिधि महँ जाई ❀ होइ अचल जिमि जन हरि पाई ॥

दोहा—हरित भूमि तृण संकुल, समुझि परै नहिं पन्थ ॥
जिमि पाखण्ड बिवादते, लुप्त भये सदग्रन्थ ॥२५॥

दाँदुर ध्वनि चहुँ ओर सुहाई ❀ वेद पढैं जनु बटु समुदाई ॥
नव पल्लव भे विटप अनेका ❀ साधुके मन जस होइ विवेका ॥
अर्क जवास पात विनु भयऊ ❀ जिमि सुराज्य खल उद्यम गयऊ ॥
खोजत पन्थ मिलै नहिंधूरी ❀ करै क्रोध जिमि धर्महिं दूरी ॥
शशि सम्पन्न सोह महि कैसी ❀ उपकारीकी सम्पति जैसी ॥
निशितम घन खद्योत विराजा ❀ जनु दम्भिनकर जुरा समाजा ॥
महा वृष्टि चलि फूटि कियारी ❀ जिमि स्वतंत्र होइ बिगरहिं नारी ॥

---

१ सीताजी । २ विजुली । ३ मेघ । ४ पर्व्वत । ५ मैला । ६ समुद्र । ७ मेढक । ८ मन्दार ।

कृषी निरावहिं चतुर किशाना ❋ जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
देखियत चक्रवाक खगनाहीं ❋ कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
ऊषर बरषै तृण नहिं जामा ❋ सन्त हृदय जस उपज न कामा ॥
बिविध जन्तु संकुल महि भ्राजा ❋ बढे प्रजा जिमिपाइ सुराजा ॥
जहँ तहँ पथिकरहे थकिनाना ❋ जिमि इन्द्रियगण उपजे ज्ञाना ॥

दोहा–कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ॥
जिमि कुपूत कुल ऊपजे, सम्पति धर्म्म नशाहिं ॥
कबहुँ दिवस महँ निबिड तम, कबहुँक प्रगट पतंग॥
उपजे बिनशै ज्ञान जिमि, पाइ सुसंग कुसंग॥२७॥

बरषा बिगत शरदऋतु आई ❋ देखहु लक्ष्मण परम सुहाई ॥
फूले कास सकल महिछाई ❋ जनु बर्षाऋतु प्रगटबुढाई ॥
उदित अगस्त्य पन्थजलशोषा ❋ जिमि लोभहिं शोषै सन्तोषा ॥
सरिता सर जल निर्मल सोहा ❋ सन्तहृदय जसगत मद मोहा ॥
रस रस शोष सरित सरपानी ❋ ममता त्यागि करहिंजिमि ज्ञानी ॥
जानि शरदऋतु खंजन आये ❋ पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये ॥
पंकनं रेणु सोह अस धरणी ❋ नीति निपुण नृपकी जसकरणी ॥
जल संकोच बिकल भये मीनाँ ❋ बिबुध कुटुम्बी जिमि धनहीना ॥
बिनु घननिर्मल सोह अकाशा ❋ जिमि हरिजन परिहरसब आशा ॥
हुँ कहुँ वृष्टि शारदी थोरी ❋ कोउ यक पाव भक्ति जिमि मोरी ॥

दोहा–चले हर्षि तजि नगर नृप, तापस वणिक भिखारि ॥
जिमि हरि भक्ति पाइ जन, तजहिं आश्रमी चारि॥२८॥

सुखी मीन जहँ नीरँ अगाधा ❋ जिमि हरि शरण न एको बाधा ॥
फूले कमल सोह सर कैसे ❋ निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे ॥
गुंजत मधुकर निकर अनूपा ❋ सुन्दर खग रव नाना रूपा ॥
चक्रवाक मनदुख निशि पेखी ❋ जिमि दुर्जन पर सम्पति देखी ॥
चातक रटत तृषा अति वोंही ❋ जिमि सुख लहैन शंकरद्रोही ॥

१ खेती । २ खड्रैंचा । ३ चहला । ४ मछली । ५ वर्षा । ६ पानी ।

शरदातप निशि शशि अपहरई ❀ सन्तदरश जिमि पातक टरई ॥
देखहिं विधु चकोर ससुदाई ❀ चितवहिं हरिजन हरिजिमि पाई ॥
मशक दंश बीते हिमत्रासा ❀ जिमिद्विज द्रोह किये कुलनाशा॥

दोहा—भूमि जीव संकुल रहे, गये शरदऋतु पाइ ॥
सद्गुरु मिले ते जाहिं जिमि, संशय भ्रमसमुदाइ ॥२९॥

वर्षागत निर्मलऋतु आई ❀ सुधि न तात सीताकी पाई ॥
एकबार कैसेहुँ सुधि जानौं ❀ कालहु जीति निमिष महँ आनौं॥
कतहुँ रहौ जो जीवति होई ❀ तात यत्न करि आनौं सोई ॥
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी ❀ पावा राज्य कोष पुरनारी ॥
जेहि शायक मैं मारा वाली ❀ तेहिशर हतौं मूढ कहँ काली ॥
जासु कृपा छूटे मद मोहा ❀ ताकहँ उमा कि स्वप्नेहु कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी ❀ जिन रघुवीर चरण रतिमानी ॥
लक्ष्मण क्रोधवन्त प्रभु जाना ❀ धनुष चढाइ गहे कर बाना ॥

दोहा—तब अनुजहि समुझावा, रघुपति करुणासीव ॥
भय देखाय लै आवहु, तात सखा सुग्रीव ॥ ३० ॥

यहां पवनसुत हृदयविचारा ❀ राम काज सुग्रीव विसारा ॥
निकट जाइ चरण न शिरनावा ❀ चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा ॥
सुनि सुग्रीव परम भयमाना ❀ विषय मोर हरि लीन्ह्यउज्ञाना ॥
अब मारुतसुत दूतसमूहा ❀ पठवहु जहँ तहँ बानर यूहा ॥
कहहु पक्ष महँ आव न जोई ❀ मोरे कर ताकर वध होई ॥

अथ क्षेपक ॥

सुनि पितु वचन बोल युवराजू ❀ विन हनुमंत होइ नहिं काजू ॥
जानैहै गिरिकंदर सागर ❀ चतुर विचक्षण बुधि बलनागर ॥
केशरिपुत्र पवनकर अंशा ❀ पठवहु नाथ करहु परशंसा ॥
तब सुग्रीव मारुति हंकारा ❀ राम काज जनि लावहु बारा ॥
पति आज्ञा धरिशीश सिधाये ❀ मारि फलांग पूर्वदिशि आये ॥

---

१ सम्पूर्ण । २ खजाना । ३ क्रोध । ४ प्रीति । ५ हनुमान ।

सुनि हनुमंत मिलन सब आवहिं ❋ माथनाइ हितवचन सुनावहिं ॥
कारण कवन कीन्ह श्रम भारी ❋ तुम किष्किंधानाथ अधारी ॥
हमलायक जो कारज होई ❋ नाथ शीश धरि मानव सोई ॥
सुनि कपि कहानलावहुबारा ❋ तुमहिं बालिलघुबन्धु हँकारा ॥
आतुर जाहु न विलँव करेऊ ❋ परेकाज भारी मन धरेऊ ॥
सुनत वचन सब चले तुरंता ❋ जय सुग्रीव कहि गगन गहंता ॥

दोहा-असीलाख अरु सात सत, कपि दल वर बलचंड ॥
नभ मारग कूदत चले, गय गवाक्ष बलि दंड ॥ ३१ ॥

पठय तिनहिं तरक्यो हनुमाना ❋ रोहित पर्वत जाय तुलाना ॥
दुर्धर्षण सब बात सुनाई ❋ चला बीर केदलिवन आई ॥
गजसन कह सुनु बानर राजा ❋ पडा कठिन सुग्रीवहि काजा ॥
निजदल संग लाय सब लेहू ❋ धीरजता निजपतिको देहू ॥
भलेहि नाथ कहि सब उठिचले ❋ वसुधा हली शेष कलमके ॥
पद्म सात दल असी करोरी ❋ चले द्विरद गज भई अँधेरी ॥
हनुमत व्याहर पर्वत आवा ❋ जेठ पुत्र बलि वीर बुलावा ॥
तीसलाख दल साठि हजारा ❋ पवनपुत्र सब कीन्ह जोहारा ॥
कारज होय सो आयसु दीजे ❋ इतना श्रम केहि कारण कीजे ॥
आज्ञाकरिय होय जो काजा ❋ कुशलीहैं किष्किंधा राजा ॥
कपिपति रघुपतिकथा सुनाई ❋ चला पवनसुत विदा कराई ॥
धुंधमार पर्वत नियराना ❋ कहतहिं श्रीखँडकीन पयाना ॥
छपनकोटि वनचर लैसाथा ❋ करी प्रणाम चले कपिनाथा ॥
तव हनुमत अंजनिगिरि आवा ❋ कुमुदनाम कपि वीर बोलावा ॥
पद्मसात अरु लाख सतासी ❋ धाये वीर महावल रासी ॥
गगन मार्ग जय राम कहंता ❋ आयो नीलगिरी हनुमंता ॥
जहँ रह नील नाम कपिभारी ❋ अग्नि पुत्र बल बुधि अधिकारी ॥
मारुतसुत तेहिं मर्म बुझावा ❋ मेघ समान गर्जि कपिआवा ॥
अर्बुदचारि चारि सतबारा ❋ समरधीर सब सुभट जुझारा ॥
गहेवृक्ष आयुध वनचारी ❋ चले सकल जैराम पुकारी ॥

पवनपुत्र उत्तर दिशि गयऊ ❀ बद्रिक आश्रमपरसतभयऊ ॥
आतुर गंधमादन पर गयऊ ❀ जल तडाग देखत सुख लहेऊ ॥

दोहा—गज गवाक्ष कहँ मिल्यो पुनि, बहु प्रकार समुझाइ ॥
नाइ माथ अस्तुति करत, चले वीर हर्षाइ ॥ ३२ ॥

हनुमत अर्जुन गिरिपर आवा ❀ तारा तात धीर तहँ पावा ॥
नाम सुषेण महाबल वीरा ❀ बुधि बल तेज समर रणधीरा ॥
समाचार पुनि ताहि सुनावा ❀ चलि हनुमंत सुमेरहिं आवा ॥
कनक वरणसम दीपित काया ❀ नेत्रलाल अति विपुल सुहाया ॥
पवन प्रसून गगन पर गरजे ❀ राक्षस देखि काल सम तरजे ॥
लँगुर उठाय शीश पर लाये ❀ मानहु मघवा धनुष सुहाये ॥
एक एक सन बचन सुनावा ❀ हनुमत चरणन शिर तिन नावा ॥
काया कष्ट कीन केहि काजा ❀ कुशल अहहिं किष्किधा राजा ॥
कपि तहँ समाचार सबभाषा ❀ चले दरश कारण अभिलाषा ॥

दोहा—दश करोरि नव लाख अरु, वीस सहस शत एक ॥
चले केसरी संग लै, करत चरित्र अनेक ॥ ३३ ॥

ताहिहु चिंदाकीन्ह कपिपवना ❀ रुद्रगिरी कैलासहि गवना ॥
कपिश्रल पुरद ताहि कर नाऊं ❀ रखवारी अलकापुर गाऊं ॥
महातेज बल दुर्गम काया ❀ मर्म चतुर जानत सब माया ॥
सुनि सो मारुतसुत पहँ आवा ❀ लै सँग सैन शीश तेहिं नावा ॥
पूंछा कवन काजहै नाथा ❀ दीन दरश हम भये सनाथा ॥
नृप सुग्रीवके तुम परधाना ❀ आज्ञा देहु वेगि हनुमाना ॥
कहाँ पवन सुत विलम न लावहु ❀ लै निजसैन पंपपुर धावहु ॥
जय रघुबीर अनुज लघुवाली ❀ सजि दल चले मेदिनीहाली ॥
सिंहनाद करि पूंछ उठाये ❀ दरश उछाह सकल उठि धाये ॥
रहा न कोउ पवनसुत प्रेरा ❀ मैना गिरिहिं हिमाचल हेरा ॥
प्रेम सहित कपिसकल बुलाये ❀ आस वासना करत पठाये ॥
अंडक नाम महाबल कीशा ❀ चले कहत जय राम अहीशा ॥

ताहि विदाकर पवनकुमारा ❋ विंध्याचल कहँ शीघ्र पधारा ॥
नाम बसन्त महाबलवाना ❋ लै निजदल कपि निकट तुलाना ॥
इंद्रकेलिके वन कपि जेते ❋ हनुमति चरण गहे सब तेते ॥
आठ पद्म अरु सहस अठासी ❋ चले तहाँ जहँ हैं अविनासी ॥
राम काज हनुमत हिय धारे ❋ कश्यप पर्वत जाय पुकारे ॥
नाम मयंद महाबल वीरा ❋ तेजपुंज अति दुर्ग शरीरा ॥
इकिसकोटि वनचर लै साथा ❋ पवन कुमारहिं नायउ माथा ॥
कहा पवनसुत जानहु तोहीं ❋ धन्यभाग्य दर्शन भा मोहीं ॥
करहु न बेर सुनहु बलसींवा ❋ तुम्हहिं बोलाय वेगि सुग्रीवा ॥

दोहा—सुनत मयंद गयंद गति, उच्छलंत आकाश ॥
अट्टहास गंभीर करि, सैन बोलाइसि पास ॥ ३४ ॥

टिड्डी समान सैन उथलानी ❋ चलते दिगपालन भय मानी ॥
आतुर चले गगन करि छाहीं ❋ उठे लँगूर पतंग छिपाहीं ॥
एक नीलदल तीस करोरा ❋ धावत एक एक बर जोरा ॥
जय सिंहनाद करत बल दापा ❋ देवन हाथ पेटमें चापा ॥
राम स्वरूप हिये महँ आना ❋ करि दल विदा चला हनुमाना ॥
रसनाकरै राम गुण गाना ❋ धवलागिरि का कीन्ह पयाना ॥
दुर्गंधनाम वानर बड योधा ❋ ताहि बोलाय दीन बर बोधा ॥
आठ लाख शतवार गनाई ❋ लै सँगसैन पंपपुर जाई ॥
हनुमत उदयागिरिपर आवा ❋ बंदर धाय परे तेहि पावा ॥
कुंद कुमुद बंदर जे गाये ❋ जे जहँ रहे बनचर सब छाये ॥
शब्द किलकिलानभपरकरहीं ❋ बन सरशैल धरा सब धरहीं ॥

दोहा—रामकाज करि पवनसुत, आये जहँ सुग्रीव ॥
मिले हर्षि अस्तुति करि, धन्य धन्य बलसीव ॥ ३५ ॥

इति क्षेपक ॥

तब हनुमन्त बुलाये दूता ❋ सबकरकरि सन्मान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति दिखराई ❋ चले सकल चरणन शिरनाई ॥

त्यहिअवसरलक्ष्मण पुरआये ❋ क्रोध देखि जहँ तहँ कपिधाये ॥

दोहा–धनुष चढाइ कहा तब, जारि करौं पुर छार ॥
व्याकुल नगर देखि तब, आवा वालिकुमार ॥३६॥

चरणनाइ शिर विनती कीन्ही ❋ लक्ष्मण अभय बाहँ तेहि दीन्ही ॥
क्रोधवन्त लक्ष्मणसुनिकाना ❋ कहकंपीशअतिशयअकुलाना ॥
तुम हनुमन्त संग लै तारा ❋ करि विनती समुझाउ कुमारा ॥
तारा सहित जाइ हनुमाना ❋ चरणवन्दि प्रभुसुयशवखाना ॥
करि विनती मन्दिर लै आये ❋ चरण पखारि पलँग बैठाये ॥
तब कपीश चरणन शिरनावा ❋ गहिभुज लक्ष्मणकण्ठलगावा ॥
नाथ विषय सममदकछुनाहीं ❋ मुनि मनमोहैंकरैक्षणमाहीं ॥
सुनत विनीतवचनसुखपावा ❋ लक्ष्मणतेहिवहुविधिसमुझावा ॥
पवनतनय सब कथा सुनाई ❋ ज्यहिविधि गये दूतसमुदाई ॥

दोहा–हर्षि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपिसाथ ॥
राम अनुज आगे किये, आये जहँ रघुनाथ ॥३७॥

नाय चरण शिर कहकर जोरी ❋ नाथ मोरि कछु नाहिंन खोरी ॥
अतिशय प्रबल देवतव माया ❋ छूटै तबहिं करहु जबदाया ॥
विषयविवशसुरनरमुनिस्वामी ❋ मैं पामरपशुकपिअतिकामी ॥
नारि नयन शर जाहि न लागा ❋ महाघोरनिशि सोवतजागा ॥
लोभ पाश जेहि गर न बँधाया ❋ सो नर तुमसमान रघुराया ॥
यह गुण साधनते नहिं होई ❋ तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥
तब रघुपति बोले मुसुकाई ❋ तुमप्रियमोहिंभरतजिमिभाई ॥
अब सोइ यतन करहु मनलाई ❋ जेहिविधि सीताकीसुधिपाई ॥

दोहा–इहिविधि होत बतकही, आये बानर यूथ ॥

---

१ सुग्रीव । २ लक्ष्मणजी । ३ विषयकही इन्द्रियासक्त मोर तोर तैं मैं मद अष्टजाति कुल, रूप यौवन, विद्या, धन, ज्ञान, ध्यान, मान । ४ आवरण । ५ जीवको परमेश्वर समान क्यों कहा यहां यह ध्वनि है कि जे काम क्रोध लोभ हैं तहां कामको सहायक मद है अरु वनिता स्थाई है अरु क्रोधको सहायक मोह है अरु अहंकार स्थाई है अरु लोभको सहायक मात्सर्य कही ईर्षा है अरु दम्भ स्थाई है इनको जो जीतै और श्रीरामचन्द्रको भजन करैं ते सारूप्यमुक्तिको प्राप्त होते हैं तातें जीवको रामस्वरूप कहा है।

नाना वरण अतुल बल, देखिय कीश बरूथ ॥ ३८ ॥

वानर कटक उमा मैं देखा ❋ सो मूरख जो किय चह लेखा ॥
आय राम पद नावहिं माथा ❋ निरखि बदन सब होहिंसनाथा ॥
अस कपि एक न सेना माहीं ❋ राम कुशल पूंछी जेहि नाहीं ॥
यहनहिंकछुप्रभुकीअधिकाई ❋ विश्वरूप व्यापक रघुराई ॥
ठाढे जहँ तहँ आयसुपाई ❋ कहि सुग्रीव सबहिं समुझाई ॥
राम काज अरु मोर निहोरा ❋ बानर यूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
जनकसुता कहँ खोजहुजाई ❋ मास दिवस महँ आयहु भाई ॥

अथ क्षेपक ॥

तब कपीश दुइ दूत बुलाये ❋ गज गवाक्ष आतुर चलि आये ॥
मन बुधि निगम केरगतिजानी ❋ बोलेउ कीश सुधासम बानी ॥
सियखोजनहित पूर्वसिधायउ ❋ रामकाजकहँ विलँबनलायउ ॥
उदधि सोत सरिता गिरि झरना ❋ ब्रह्मपुरी कामावति बरना ॥
सर वापी गिरि कंदर जेते ❋ देवनगर खोहादिक तेते ॥
जोकोउतुमहिंमिलहिमगमाहीं ❋ सीता सुधिपूछहुतिनपाहीं ॥

दोहा–राम चरण प्रणाम कर, उर धरि युगल स्वरूप ॥
सात कोटि वानर बली, चले पूर्व कहँ भूप ॥

बाली अनुज सुषेण बुलावा ❋ करि सन्मान निकट बैठावा ॥
तुम मयंद उत्तरदिशि जाहू ❋ सीता सुधि पूछेहु सब काहू ॥
मादनगंध सुमेरु महीधर ❋ अर्जुन शैल नीलगिरि कंदर ॥
शिव कैलाश अलक पुरछानी ❋ गंधरव यक्ष पूंछमृदुवानी ॥
उनहिं पूंछ आगे धरि पाऊं ❋ जायहु दिव्य सरोवर ठाऊं ॥
पुष्प भार जहँ विटप सुहाये ❋ परसतहैं धरणी नियराये ॥
श्रमनिवारि कछुकरहु अहारा ❋ प्रभु कारज हिय धरहु करारा ॥

दोहा–ऋषि तपस्विन सों बूझिकै, करहु बलिष्ठ पयान ॥
श्वेत भूमि उत्तर दिशा, अन्त धराको जान ॥

शिखर सुमेरु मही कैलाशू ❋ काक भुशुंडि केर वनवासू ॥
कुंड एक तहँ मोती चूरा ❋ पानी अमृत कीच कपूरा ॥

जमुनी वृक्ष अहै तेहि ठाऊं ❀ जम्बूद्वीप जासु ते नाऊं ॥
गज समान लागे फल ताही ❀ अमृत रस कहि निगम सराही ॥
पकत सो फल धरणी परपरई ❀ तेहिके शाक कुंड बहु भरई ॥
दिव्यरूप चढ देव विमाना ❀ तेहिके नीर करहिं अस्नाना ॥
सो शुभ नीर सरितहोयबहई ❀ अवध समीप प्रसिद्ध सो अहई ॥
जहँ मज्जन- कीनेते वीरा ❀ सकल पाप दुख हरै शरीरा ॥
फलभोजन जल प्रान करेहू ❀ राम काज हित हिये धरेहू ॥
शूरसेन कर मंडप जहाँ ❀ सुमरि राम जायहु पुनितहाँ ॥
लोमशऋषि करदर्शन करहू ❀ पुनिशांडिल्य जहाँ अनुसरहू ॥

दोहा-रनवनघनजनशोधिकै, सियाबतायहुराम ॥
मासदिवस महँ आतुर, फिरहु लहहु विश्राम ॥

निज प्रभुकेरि मानि हितवानी ❀ शीशधरे प्रभु चरणन आनी ॥
निदरि पवन दोऊ उठि चले ❀ पद्म एकादश बनचर भले ॥
पुनि सुग्रीव मोर मुख देखी ❀ बीर सतवलिहि कहा विशेषी ॥
सुनहु सुवीर प्राण हितकारी ❀ राम काज हिय धरहु सँभारी ॥
तुमवसंत पश्चिम दिशिगवनी ❀ सीता सुधि पूछहु सब अवनी ॥
पश्चिमदेश शैल सर जायहु ❀ अग्निदेव करजोर मनायहु ॥
खोजो सब तहँके अस्थाना ❀ रामकाज हित करहु पयाना ॥
रंगभूमि जायहु पुनि भाई ❀ सीता सुधि पूछेउ सब ठाई ॥
सरिता शैल सुगिरि वन जेते ❀ खोजहु सीतहि हित धरि तेते ॥
जोकोउ मिलैमहामुनिज्ञानी ❀ पूछहु समाचार मृदु वानी ॥
तुम्हरे बल गर्जत मैं भाई ❀ मिलवहु वेगि जानकिहि आई ॥

दोहा-पश्चिम दिशा विशेषसो, जहाँ धराको अन्त ॥
एकमास में लेइ सुधि, फिरो वेग बलवन्त ॥

चरण कमल सबकरहिं प्रणामा ❀ पश्चिमदिशा चले बलधामा ॥
दशषटलाख हरी हर बोलत ❀ चलेजाहिं गिरि कन्दर तोलत ॥

इति क्षेपक ॥

अवधि मेटिजो बिनुसुधिपाये ❀ अवशिमरिहि सो ममकर आये ॥

दोहा–बचन सुनत सब वानर, जहँ तहँ चले तुरन्त ॥
तब सुग्रीव बुलायउ, अंगदादि हनुमन्त ॥ ३९ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना ❋ जाम्बवन्त मतिधीर सुजाना ॥
सकलसुभटमिलिदक्षिणजाहू ❋ सीता सुधि पूंछेहु सब काहू ॥
मनवचक्रमसों यतन विचारेहु ❋ रामचन्द्र कर काजसँवारेहु ॥
भानुपीठ सेइय उर आगी ❋ स्वामी सेइय सब छलत्यागी
तजि माया सेइय परलोका ❋ मिटहिं सकलभवसंभवशोका ॥
देह धरेकर यह फल भाई ❋ भजिय राम सब काम विहाई ॥
सोइ गुणज्ञ सोई बडभागी ❋ जो रघुवीर चरण अनुरागी ॥
आयसु मांगिचरण शिरनाई ❋ चले सकल सुमिरत रघुराई ॥
पाछे पवनतनय शिरनावा ❋ जानि काज प्रभुनिकटबुलावा ॥
परसा शीश सरोरुह पानी ❋ कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥
बहुप्रकार सीतहिं समुझायहु ❋ कहि बल वीर वेगि तुम आयहु ॥
हनुमत जन्म सफल करि जाना ❋ चले हृदय धरि कृपानिधाना ॥
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता ❋ राजनीति राखत सुरत्राता ॥

दोहा–चले सकल बन खोजत, सरिता सर गिरि खोह ॥
रामकाज लवलीन मन, बिसरा तनु कर छोह ॥ ४० ॥

कतहुँ होइ निशिचरसन भेंटा ❋ प्राण लेहिं इक एक चपेटा ॥
"वज्रदंड यक राक्षस आवा ❋ देखत कपिन परम दुख पावा ॥
भीमरूप यह को अब आवा ❋ लखि अंगद क्रोधित उठिधावा ॥
देखत ताहि कोप युवराजा ❋ सन्मुख जाय ताहि सन बाजा ॥
मल्लयुद्ध अति भयो अपारा ❋ सब वानरमिल कीन्ह विचारा ॥
प्रथम पयानकाल चलिआवा ❋ कह कपि विधि का कीनबनावा ॥
वालिसुवन तब हृदय विचारा ❋ मुष्टिक एक तासु शिरमारा ॥
रामरूप हृदयमें आनी ❋ अर्द्ध ऊर्ध्व धरि चीर भवानी ॥
जैजै शब्द भयो तेहि वारा ❋ पवनपुत्र हिय हर्ष अपारा ॥

---

१ परलोक कही मोक्ष सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य त्यहि चारिउके पति श्रीरामचन्द्र तिनकर सेवनकरिये। २ सम्भवकही उत्पन्न काम, क्रोध, लोभ, मोह मद मात्सर्य इत्यादिक।

वीसकोटि सँग सेन सुहाई ❋ चले सकल जय कहि रघुराई॥"
बहुप्रकार गिरि कानन हेरहिं ❋ कोउमुनिमिलैताहि सब घेरहिं ॥
लागि तृषा अतिशय अकुलाने ❋ मिलै न जल घनगहन भुलाने ॥
तब हनुमान कीन्ह अनुमाना ❋ मरण चहत सब विनु जलपाना ॥
चढिगिरि शिखर चहूं दिशिदेखा ❋ भूमि विवर इक कौतुक पेखा ॥
चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं ❋ बहुतक खग प्रविशहिं तेहिमाहीं ॥
गिरिते उतरि पवनसुत आवा ❋ सब कहँ लै सो विवर दिखावा ॥
आगे करि हनुमन्तहि लीन्हा ❋ पैठे विवर विलम्ब न कीन्हा ॥
"योजन चारि दुर्गअतिबाँकी ❋ मय दानव गढ कीना ढाँकी" ॥

दोहा—दीख जाइ उपवन शुभग, सर विकसे बहु कंज ॥
मन्दिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तप पुंज ॥ ४१ ॥

दूरिहिते त्यहि सब शिरनावा ❋ पूंछेसि निज वृतांत सुनावा ॥
तब तेइँ कहा करहु जल पाना ❋ खाहु सरस सुन्दर फल नाना ॥
मज्जन कीन्ह मधुर फलखाये ❋ तासुनिकट पुनिसबचलिआये ॥
तेहि सब आपनि कथा सुनाई ❋ मैं अब जांव जहाँ रघुराई ॥
"देवांगना सुनाम हमारी ❋ एकसमय तपकरन विचारी ॥
ब्रह्मासे मांगेउँ वरदाना ❋ दर्शन मैं पाऊँ भगवाना ॥
ब्रह्मां कह्यो रह्यो यहिथाना ❋ आवहिं यहां कीश बलवाना ॥
तिनसों राम खबर तुम पाई ❋ दर्शन पावहुगी रघुराई ॥
सो वह सत्य भई अब वानी ❋ जाउँ दरशहित शारँगपानी" ॥
मूंदहु नयन विवर तजि जाहू ❋ पैहहु सीतहि जनि कदराहू ॥
नयनमूंदि तब देखहिं बीरा ❋ ठाढे सकल सिन्धुके तीरा ॥
सो पुनि गईजहां रघुनाथा ❋ जाइ कमलपद नायसि माथा ॥
नानाभांति विनयत्यइँ कीन्ही ❋ अनपावनी भक्ति प्रभु दीन्ही ॥

दोहा—बदरीबन कहँ सो गई; प्रभु आज्ञा धरि शीश ॥
उर धरि राम चरण युग, जो वंदित अज ईश ॥ ४२ ॥

इहांविचारहिं कपि मन माहीं ❋ बीती अवधि काज कछु नाहीं ॥

सब मिलि करहिं परस्परबाता ❋ विनु सुधि लिये करबका भ्राता ॥
कह अंगद लोचन भरि बारी ❋ दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
इहां न सुधि सीताकर पाई ❋ वहांगये मारिहि कपिराई ॥
पिता वधे परमारत मोही ❋ राखा राम निहोर न ओही ॥
पुनि पुनि अंगदकह सबपाहीं ❋ मरण भयो कछु संशय नाहीं ॥
अंगद वचन सुनत कपिवीरा ❋ बोल न सकहिं नयन बह नीरा ॥
क्षण इक शोक मगन ह्वैगये ❋ पुनि अस वचनकहत सब भये ॥
हम सीताकी विनसुधिलीन्हे ❋ फिरब न सुनु युवराज प्रवीने ॥
असकहि लवणसिन्धुतटजाई ❋ बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जाम्बवन्त अंगद दुख देखी ❋ कही कथा उपदेश विशेखी ॥
तात राम कहँ नरजनि जानहु ❋ निर्गुणब्रह्म अजित अजमानहु ॥
हम सब सेवक अति बड भागी ❋ सन्तत सगुण ब्रह्म अनुरागी ॥

दोहा–निज इच्छा अवतरेउ प्रभु, सुर द्विज गो महि लागि
सगुण उपासक रहहिं सब, मोक्ष सकलसुख त्यागि ॥४३॥

यहिविधि कहत कथा बहु भांती ❋ गिरिकन्दरा सुना सम्पाती ॥
बाहरहोइ देखे सब कीशा ❋ मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा ॥
आजु सबनकहँ भक्षणकरऊं ❋ दिन बहुगए अहार विनु मरऊँ ॥
कबहुँन मिलि भरि उदर अहारा ❋ आजु दीन्ह विधि एकहि बारा ॥
डरपे गृध्र वचन सुनि काना ❋ अवभा मरण सत्य हम जाना ॥
कपि सब उठे गृध्र कहँ देखी ❋ जाम्बवन्त मन शोचविशेखी ॥
कहविचारि अंगद मन माहीं ❋ धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं ॥
रामकाज कारण तनु त्यागी ❋ हरिपुर गयउ परम बडभागी ॥
जो रघुवीर चरण चित लावै ❋ तिहिसम धन्य न आन कहावै ॥
सुनि खग हर्ष शोक युतवानी ❋ आवा निकट कपिन भयमानी ॥
ताहि देखि सब चले पराई ❋ ठाढ कीन्ह तिन्ह शपथ दिवाई ॥
तिन्हैं अभयकरि पूछेसि जाई ❋ कथा सकल तिन ताहि सुनाई ॥

---

१ कुश। २ सात्विक, राजस, तामस, तीनिउँ गुणके परेहैं अरु अजित कही कालहूके जीतिवेयोग्यहैं काल जिनकी आज्ञामें हैं।

सुनि सम्पाति बन्धुकी करणी ❋ रघुपति महिमा बहु विधि वरणी ॥

दोहा–मोहिं लै चलहु सिन्धु तट, देउँ तिलांजलि ताहि ॥
वचन सहाय करबमैं, पैहहु खोजहु जाहि ॥ ४४ ॥

अनुज क्रियाकरि सागरतीरा ❋ कह निजकथा सुनहु कपिवीरा ॥
हम दोउ बन्धु प्रथम तरुणाई ❋ गगन गये रवि निकट उडाई ॥
तेज नसहि सक सो फिरि आवा ❋ मैं अभिमानी रवि नियरावा ॥
जरे पंख रवितेज अपारा ❋ पन्यउँ भूमि करि घोर चिक्कारा ॥
मुनि इक नाम चन्द्रमा ओही ❋ लागी दया देखि कर मोही ॥
बहुप्रकार तिन्ह ज्ञान सिखावा ❋ देह जनित अभिमान छुडावा ॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिहैं ❋ तासु नारि निशिचरपति हरिहैं ॥
तासु खोज पठवहिं प्रभु दूता ❋ तिन्हे मिले तुम होव पुनीता ॥
जयिहहिं पंख करसि जनि चिंता ❋ तिन्हैं देखाइ देव तैं सीता ॥
यहकाहिं मुनि निज आश्रम गयऊ ❋ तिहिक्षण हृदयज्ञान कछुभयऊ ॥
"पुनि संपाती वचन उचारी ❋ सुनो गिरा ममहू हितकारी ॥
पुत्र मोर सुप्रन तेहि नाऊं ❋ सेवत मोहिं सदा यहि ठाऊं ॥

दोहा–क्षुधावन्त यक दिन भयऊँ, कही पुत्र सुन बात ॥
वेग भक्षले आवहु, नतौ प्राण मम जात ॥

सुत शिर आज्ञा धारि सिधावा ❋ मोहिं धीरज दे बहु समुझावा ॥
नभपथहोय महा बन गयऊ ❋ गज मृगराज हनत बहुभयऊ ॥
अस्त पतंग बहुरि घर आवा ❋ क्षुधावश्य मैं क्रोध बढावा ॥
ज्ञान रंक मैं अधम अभागा ❋ सुतको शाप देन तब लागा ॥
गहि ममबाहु कहेउ समुझाई ❋ सुनहु तात मम वच चितलाई ॥
जब आरण्य गयउँ मैं ताता ❋ तहँ पुनि एक भयउ उत्पाता ॥
वीसभुजा दश मस्तक ताही ❋ आतुर चलेउ जात मगमाही ॥
संग नारि यकदिव्य अनूपा ❋ कोउ नहिं वरणसकै तेहि रूपा ॥
कोटि सुधाकर नख बलिहारी ❋ रंभा रती शचीसी नारी ॥
जंतु जान तेहि धरा पछारी ❋ दीनो छोड निरख सोइ नारी ॥

करमोहिं विनय दक्षिण दिशि गयऊ ❋ याहि कारण विलम्ब मोहिंभयऊ॥
सुनत वचन मोहिं लागि अँगारा ❋ आपनि गति विचार हिय हारा ॥
मैं तनु पंख हीन का करऊं ❋ आतुर जाय ओहि अब धरऊं ॥

दोहा—पंखहीन अवसर गये, सुत बल कौन धिकारि ॥
गहि मम निकट न लायहू, हती रामकी नारि ॥

तब मुनिबचन ध्यान हियआवा ❋ हियमें धीरज तब कछु पावा ॥
याहि मिस राम जो दूत पठावहिं ❋ सियसुधिलेन अरण्यहि आवहिं ॥
देखत दरश होव बडभागी ❋ तुव मग देखत मन अनुरागी ॥
सदा राम कर सुमिरण करऊं ❋ निशि दिन मग जोवत दिन भरऊं॥
मुनिकी गिरासत्य भइ आजू ❋ सुनि मम वचन करहु प्रभुकाजू ॥
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका ❋ तहँ रह रावण सहज अशंका ॥
तहां अशोक वाटिका अहई ❋ सीय बैठि तहँ शोचति रहई ॥

दोहा—मैं देखौं तुम नाहिंन, गृध्रहि दृष्टि अपार ॥
बूढ भयों नतु करतेऊँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥ ४५ ॥

जोलांघै शत योजन सागर ❋ करै सो राम काज अति आगर ॥
जो कोइ करे रामकर काजू ❋ तेहि समधन्य आननहिं आजू ॥
मोहिं विलोकि धरहु मन धीरा ❋ राम कृपा कस भयउ शरीरा ॥
पापिउ जाकर सुमिरण करहीं ❋ अति अपार भवसागर तरहीं ॥
तासु दूत तुम तजि कदराई ❋ रामहृदय धरि करहु उपाई ॥
असकहि उमा गृध्र जब गयऊ ❋ सबके मन अति विस्मय भयऊ॥
निज निज बल सबकाहू भाखा ❋ पारजान कर संशय राखा ॥
जरठ भयों अब कह ऋक्षेशा[१] ❋ नहिं तनु रहा प्रथम बल लेशा ॥
जबहिं त्रिविक्रम भये खरारी[३] ❋ तब मैं तरुण रह्यों बल भारी ॥

अथ क्षेपक ॥

दोहा—घेरि अंगदहि सब कहा, अब कछु करहु उपाय॥
है कोउ सुभट प्रवीण अस, समुद्र उलंघि जो जाय॥ ४६॥

---

१ जाम्बवन्त । २ वामनरूप । ३ परमेश्वर ।

बोला विकट सुनहु युवराजू * योजनवीस उलंघहुँ आजू ॥
नील कहा चालिस मैं जाऊँ * आगे परत मोर नहिं पाऊँ ॥
नील वचन सुनि दुर्धर कहई * योजन पचास मोर बल अहई ॥
बोल्यो नल दुइ भुजा उठाई * योजन साठि मोरि गति भाई ॥
दधिमुख कह अस्सी उपरंता * योजनसात जांनु बलवंता ॥
सुनहु वचन मम सुभट प्रवीना * आगे होइ मोर बलहीना ॥
सुनि सब वचन बोलयुवराजू * यहि बल होइ न प्रभुकरकाजू ॥
बहु दुख कृशि तब अंगद देखी * जाम्बवंत तब कहा विशेषी ॥
बूढ भयउँ अबकहेउ ऋछेशा * नहिं तनु रहा प्रथम बललेशा ॥
वृद्ध भये बल ऐसा भाई * नाँघत पलमें जलधिहि धाई ॥
सब कहि बात सत्य सन्मानी * मानी सत्य कर्म्म मन वानी ॥
जबहिं त्रिविक्रम भये खरारी * तबमैं तरुण रहा बलभारी ॥
यक दिन बद्रिक आश्रमगयऊ * अरन विलोकि महासुख भयऊ ॥
भक्षण करि फल पीन्हा पानी * बैठेउँ एक शिलासुख मानी ॥
ब्रह्मज्ञानी यक विप्र सुजाना * बैठि अराधत श्रीभगवाना ॥
ताहि बधन यक दानव आवा * देखत नयनक्रोध मोहिंछावा ॥
मुनिम्यदेखिगयउँ तेहिसामू * तैंद्रुततर कीन्हा असकामू ॥
[illegible] जन एक शैल उठाई * मारसि मोंहि गोडमें आई ॥
लागत गि तनु सहा प्रहारा * भयो क्रोध तेहि अवंनि पंछारा ॥
गिरेउ दो चरण करि रीसा * सुखपायों द्विजदीन असीसा ॥
[illegible] नाभवतुमहिंवखानू * सुनत बात सब अचरजमानू ॥
[illegible] रत मम पाऊँ * योजन नबे पांच महँ जाऊँ ॥

इति क्षेपक ॥

दो[illegible]
[illegible]लि बा[illegible]त प्रभु बाढेउ, सो तनुं बरणि न जाइ ॥
अंगद [illegible]य घ[illegible] महँ दीन्हमैं, सात प्रदक्षिण धाई ॥४७॥
जाम्बवंत उँ [illegible] पारा * जिय संशय कछु फिरती बारा ॥
[illegible] सब लायक * किमिपठवौं सबही कर नायक ॥

[illegible]ण । २ पृथ्वीमें । ३ विप्र । ४ [illegible] ।

कहाऋच्छपति सुनु हनुमाना ❋ का चुपसाधि रह्यो बलवाना ॥
पवनतनय बलपवन समाना ❋ बुधि विवेक विज्ञान निधाना ॥
कौनसोकाजकठिनजगमाहीं ❋ जो नहिं तात होइ तुमपाहीं ॥

अथ क्षेपक ॥

तब उत्पति अब कहौं सहेता ❋ सुनहु सकल बैठे इहरेता ॥
हिमचल पर्वतके यक पासा ❋ कश्यपऋषि तप तेज प्रकाशा ॥
दिग्गज यक ऐरावतकी सम ❋ आयो ऋषि सन्मुख दुर्धरजम ॥
निरखिताहिऋषि सकलसकाने ❋ चलेनचरणशिथिलभयमाने ॥
तात तोर तेहि वनकर राजा ❋ केशरिनाम तेज बल छाजा ॥
सो गज देखि मुनी तेहि ओरा ❋ हेऋपि सकल शरणहै तोरा ॥
ऋषि दुख देखि दया मन माहीं ❋ धायो तुरत तात बलवाहीं ॥
भिऱ्यो ताहि यक मुष्टिक मारा ❋ उभय दशन गहि भूमि पछारा ॥
पऱ्यो धरणि करिघोरचिकारा ❋ तब मुनि होय प्रसन्न विचारा ॥

दोहा-तब पितु बहु बलदेखि मन, मुनिवर दीन अशीश ॥
मांगु मांगु वर भाय मन, हेद्विजपाल कपीश ॥ ४८ ॥

सानुकूल तपस्वी कहँ जानी ❋ बोला तात जोरि युग पानी ॥
जो प्रसन्न मोपर भगवाना ❋ पुत्र देहु बल मरुतसमाना ॥
एवमस्तु कहि ऋषि तब गयऊ ❋ आगिलचरित सुनहुजेभयऊ ॥
माता तोरि अंजनो सती ❋ रूप अपार नहीं इयरती ॥
नवसत साजि शृंगार बनाई ❋ बैठी शैल शिखर [illegible]र जाई ॥
त्रिविध समीर बहै सुखदाई ❋ निरखत बन शो[illegible]खा ॥
चीरउडावन पवन सुवर्सा ❋ भुजा दीर्घ [illegible]लचेष्टी ॥
देखि मातु तब क्रोध करेही ❋ लागी शाप [illegible] [illegible]लेऊ ॥
मारुत मधुरे वचन कहेऊ ❋ शाप न देउ [illegible]लागा ॥
तवपतिऋषिसन सुतवरमांगा ❋ ताते परसि[illegible]म मोहीं ॥
निज काया धरि मिले न तोहीं ❋ काहेक शाप सन कहेऊ ॥
असकहि पवन गुप्त होय रहेऊ ❋ सो तब मु[illegible] वाए ।

अब तव जन्मकहवसुखमानी ❋ सुनहु सकल वन दीपकजानी ॥
शुभ नक्षत्र शुभ घरी सुहाई ❋ जन्मत भयउ देव बलपाई ॥
पुनि वरदान पवनकर दैरशा ❋ वीरज तोहिं पिताकर परशा ॥
उदित भये दंपति सुख साने ❋ कराहिं केलि वनमहँ सुखमाने ॥
एक दिवस माताकी गोदा ❋ करत रहेउ पयं पान विनोदा ॥
देखेउ अरुणबंधु छवि लाला ❋ तडकि अकाश गयो ततकाला ॥
सूर्यगहन जव भुजा पसारा ❋ क्रोधे इंद्र वज्र सो मारा ॥

दोहा-सहि प्रहार मन क्रोधकरि, धाहि पतंगहि लीन ॥
बाल अवस्था व्यसनते, सूरजका भषकीन ॥ ४९ ॥

अंधकार चारिउ दिशि भयऊ ❋ जप तप दान धर्म रहि गयऊ ॥
अस्तुति सुरन कीन्ह निजहेता ❋ बोले शिव गुण ज्ञाननिकेता ॥
धरहुधीर जनि होहु उदासा ❋ सब मिलि चलहु केशरी पासा ॥
शिव विरंचि सुर इंद्र समेता ❋ आये सकल केशरी निकेता ॥
कह सुत तोर सूर्य गहि लीना ❋ श्वास समीर रोंकि दुखदीना ॥
तजहु भानु रहे प्राण भलाई ❋ तुम कहँ सुयश होय जगमाई ॥
जो मनभाव सो लेहु वरदाना ❋ तजहु पतंग होइ कल्याना ॥
देवगिरा सुनि सुंदरवानी ❋ बोलतु तात जोरि युगपानी ॥
अमर अजीत सकल बलसागर ❋ सुतहि देहु वर देवन नागर ॥
राम भक्त अरु निकट निवासी ❋ यह वरदान देव बलराशी ॥
एवमस्तु सब देवन कीना ❋ सूर्य समीर छाँडि तब दीना ॥
दै वरदान देव सब गयऊ ❋ विचरें वनहि महा सुखभयऊ ॥
त्रात मात कर प्राण समाना ❋ इंद्र जुहनी नाम हनुमाना ॥
तजहु शोक मन आनहु धीरा ❋ मोहिं निश्चय सेवक रघुवीरा ॥
हनुमत वचन सुनत सबकाना ❋ जयजयजय सबकराहिं बखाना ॥
होइहै सिद्ध रामकर काजा ❋ अति सुख लहेउ हियेयुवराजा ॥
जाम्बवंत औरौ नल नीला ❋ अंगद आदि सुभट बलशीला ॥
मिलैं सबै हनुमंतहि धाई ❋ राम काज लग जानु सुभाई ॥

१ दूध । २ देवतन । ३ स्थान । ४ सूर्य । ५ वाणी । ६ अंगद ।

बोले पवनतनय सुखवानी ❀ धरहु धीर कारज शुभजानी ॥
कह हनुमंत सिंधुतन देखी ❀ राम रूप उर आनि विशेषी ॥
तब ऋक्षेश असवचन उचारा ❀ सादर सुनहु समीर कुमारा ॥

इति क्षेपक ॥

राम काज लगि तव अवतारा ❀ सुनि कपि भयउ पर्वताकारा ॥
कनकवर्णतनु तेज बिराजा ❀ मानहुँ अपर गिरिनकर राजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा ❀ लीलहिं लाँघौं जलनिधि खारा ॥
सहित सहाय रावणहिं मारी ❀ आनौं इहां त्रिकूट उपारी ॥
जाम्बवन्त मैं पूंछौं तोहीं ❀ उचित सिखावन दीजे मोहीं ॥
इतना करहु तात तुम जाई ❀ सीतहि देखि कहो सुधि आई ॥
तब निज भुजबल राजिवनयना ❀ कौतुकलागि संगकपि सयना ॥

छंद–कपिसेन संग संहारि निशिचर राम सीतहि आनिहैं
त्रयलोक पावन सुयश सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपदनर पावहीं ॥
रघुबीरपद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं ॥

दोहा–[1]भवभेषज रघुनाथ यश, सुनैं जो नर अरु नारि ॥
तिनकर सकल मनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिपुरारि॥९०॥

सो०–नीलो[2]त्पल तनु श्याम, काम कोटि शोभा अधिक ॥
सुनिय तासु गुणग्राम, जासु नाम अघ खग वधिक॥३॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल
विज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृतकिष्किन्धाकांडे
४ चतुर्थःसोपानःसमाप्तः ॥

इदंतुलसीकृतरामायणे किष्किन्धाकाण्डं श्रीकृष्णदासात्मजेन
गंगाविष्णुना स्वकीये "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" नाम मुद्रायन्त्रालयेंऽकितम्

---

१ हनुमानजी । २ भवकहीं संसार विषे जन्ममरण रोग सो नाश करिवेको भेषजकहीं औषध सजीवन मूरिहैं । ३ नीलमणि ।

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत-

रामायणे-

सुन्दरकाण्डप्रारम्भः ।

वही

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

इन्होंने

निज

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर"

नामक

मुद्रायन्त्रालयमें छापकर

प्रसिद्ध किया ।

कल्याण-(मुम्बई.)

संवत् १९४९ शके १८१४

लक्ष्मीवेङ्कटेशाय नमः ।

दोहा—रामचरण रतिजोचहै, अथवा पद निर्वान ॥
भावसहित सो यह कथा, करै श्रवण पुटपान ॥

अथ सुन्दरकाण्डम् ।

चौपाई—जेआंस कथा [illegible] ॥ केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
[illegible] ॥ [illegible] फिरहिं पयलागी ॥

चौपाई—राम [illegible] सकहिं न जाहीं ॥
[illegible] नहिं पूछहु नयनागर ॥

दोहा—मोह मूल बहु शूल प्रद, त्यागहु तुम अभिमान ॥
भजहु राम रघुनायकहि, कृपासिन्धु भगवान ॥

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास—
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना कल्याण (मुंबई)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्लोक—शान्तंशाश्वतमप्रमेयमनघंनिर्वाणशान्तिप्रदं ब्रह्माशंभुफणींद्रसेव्यमनिशंवेदांतवेद्यंविभुम् ॥ रामाख्यंजगदीश्वरंसुरगुरुंमायामनुष्यंहरिं वंदेहंकरुणाकरंरघुवरंभूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥ नान्यास्पृहारघुपतेहृदयेमदीये सत्यंवदामिचभवानखिलांतरात्मा ॥ भक्तिंप्रयच्छरघुपुंगवनिर्भरांमेकामादिदोषरहितं कुरुमानसंच ॥ २ ॥

श्लोकार्थ—जो निरन्तर शान्त अप्रमेय अर्थात् प्रमाणरहित पापरहित देवतों को शान्ति देनेवाले ब्रह्मा शिवजी शेषजी करके नित्यही सेव्यमान वेदान्तसे जानने योग्य समर्थ राम जिनका नाम जगत्के ईश्वर देवताओं के गुरु मायाके मनुष्य विष्णु करुणाके खान रघुवंशियोंमें श्रेष्ठ और राजाओं के शिरोमणि तिनकूं मैं नमस्कार करताहूं ॥ १ ॥

सो हेरघुपति ! मेरे हृदयमें और आप सबके अन्तःकरणकी आत्मा मेरे मनको कामादि दोषोंसे रहितक

... गनै ॥
... न वर्णत नहिं बनै ॥ १ ॥
... सर कूप वापी सोहहीं ॥
... या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
... समान अति बल गर्जहीं ॥

... डा । ४ समुद्र । ५ भुंडके झुंड ।

अतुलितबलधामंस्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुंज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥ सकलगुणनिधानं वानराणामधीशंरघुपतिवरदूतंवातजातंनमामि ॥ ३ ॥

जाम्बवंतके वचन सुहाये ❀ सुनिहनुमान हृदयअतिभाये ॥
तबलगि मोहिं परेखेहु भाई ❀ सहि दुख कन्द मूल फल खाई ॥
जबलगि आवौं सीतहि देखी ❀ होइ काज मन हर्ष विशेषी ॥
अस कहिनाइ सबनिकहँमाथा ❀ चलेहर्ष हियधरि रघुनाथा ॥
सिन्धुतीर इक सुन्दर भूधर ❀ कौतुक कूदि चढे तेहि ऊपर ॥
बार बार रघुवीर सँभारी ❀ तरकेउ पवन तनय बल भारी ॥
जेहि गिरि चरण देइहनुमन्ता ❀ सो चलिजाय पताल तुरन्ता ॥
जिमि अमोघ रघुपतिके बाना ❀ ताही भाँति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपतिदूत बिचारी ❀ कह मैनाक होहु श्रमहारी ॥

"सो०–सिन्धु बचन सुनि कान, तुरत उठे मैनाकतब ॥
कपि कहँ कीन्ह प्रणाम, बार बार करजोरिकै" ॥

दोहा–हनूमान तेहि परशि करि, पुनि तेहि कीन्ह प्रणाम ॥
रामकाज कीन्हे बिना, मोहिं कहाँबिश्राम ॥ १ ॥

[illegible]ात पवनसुत देवन देखा ❀ जानाचह बल बुद्धि विशेषा ॥
सुरसा नाम अहिनकी माता ❀ पठईदेव कही तिन बाता ॥
आज सुरन मोहिं दीन्ह अहारा ❀ सुनि हँसि बोला पवनकुमारा ॥
रामकाज करि फिरि मैं आवौं ❀ सीताकी सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥
[illegible] तव वदन पैठिहौंआई ❀ सत्य कहौं मोहिं जानदेमाई ॥
[illegible]यतन देहि नहिं जाना ❀ ग्रससि न मोहिं कहा हनुमाना ॥
[illegible]ँ बदन पसारा ❀ कपि तनु कीन्ह दुगुणविस्तारा ॥

[illegible]कान्तिकीसमान देह राक्षसोंके वनकूं ज-
[illegible]णोंके निधान वानरोंके राजा रामचं-
[illegible]रताहूं ॥ ३ ॥

सोरहयोजन मुख[1] तेहिं ठयऊ ❀ तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥
जस जस सुरसा वदन बढावा ❀ तासु दुगुण कपि रूप दिखावा ॥
शतयोजन तेहि आननकीन्हा ❀ अति लघुरूप पवनसुत लीन्हा ॥
वदन पैठि पुनि बाहर आवा ❀ मांगी बिदा ताहि शिरनावा ॥
मोहिं सुरन्ह जेहिलागि पठावा ❀ बुधि बल मर्म तोर मैं पावा ॥

दोहा—राम काज सब करिहहु, तुम बल बुद्धिनिधान ॥
आशिषदे सुरसा चली, हर्षि चले हनुमान ॥ २॥

निशिचर एक सिन्धु[2] महँ रहई ❀ करि माया नभके खग गहई ॥
जीव जंतु जे गगन उडाहीं ❀ जल बिलोकि तिनकी परछाहीं॥
गहै छांह सकसो न उडाई ❀ इहिविधि सदा गगनचर खाई ॥
सोइ छल हनूमानसन कीन्हा ❀ तासुकपट कपि तुरतहिं चीन्हा॥
ताहि मारि मारुतसुत बीरा ❀ वारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥
तहां जाइ देखी बन शोभा ❀ गुंजत चंचरीक मधुलोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाये ❀ खग मृग वृंद देखि मन भाये ॥
शैल विशाल देखि इक आगे ❀ तापर कूदि चढेउ भय त्यागे ॥
उमा नकछु कपिकी अधिकाई ❀ प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गिरिपर चढि लंका तेहि देखी ❀ कहि न जाइ अति दुर्ग विशेखी ॥
अति उतंग जलनिधिचहुँपासा ❀ कनककोट कर परम प्रकासा ॥

छंद समष्टी ॥

कनककोट विचित्र मणि कृत सुन्दराजित अति घना ॥
चौहट्ट हाट सुघट्ट बीथी चारु पुर बहुविधि बना ॥
गजवाजि[3] खच्चर निकर पदचर रथबरूथनिको[4] गनै ॥
बहु रूप निशिचर यूथ अति बल सेन वर्णत नहिं बनै ॥ १॥
वन बाग उपवन वाटिका सर कूप वापी सोहहीं ॥
नर नाग सुर गन्धर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँ मल्ल देह विशाल शैल समान अति बल गर्जहीं

१ मुख । २ समुद्र । ३ घोडा । ४ समूह, झुंडके झुंड ।

नाना अखारन्ह भिरहिं बहुविधि एक एकन तर्जहीं ॥ २॥
करियत्न भट कोटिन्ह विकट तनु नगर चहुँदिशि रक्षहीं
कहुँमहिष मानुष धेनु खर अज खल निशाचर भक्षहीं ॥
इहि लागि तुलसीदास इनकी कथा कछु इक है कही ॥
रघुवीर शर तीरथ सरित तनु त्यागि गति पैहैं सही ॥ ३॥

दोहा–पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह विचार ॥
अति लघु रूप धरौं निशि, नगर करौं पैसार ॥ ३ ॥

मशक समान रूप कपि धरी ❋ लंका चले सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निशिचरी ❋ सो कह चलेसि मोहिं निंदरी ॥
जानसि नाहिं मर्म शठ मोरा ❋ मोर अहार लंक कर चोरा ॥
मुष्टिक एक ताहि कपि हनी ❋ रुधिर वमन धरणी ढनमनी ॥
पुनि संभारि उठी सो लंका ❋ जोरि पाणि कर विनय सशंका ॥
जब रावणहिं ब्रह्म वर दीन्हा ❋ चलतविरंचि कहा मोहिं चीन्हा॥
"त्रेता राम लषण औतरहीं ❋ भक्त हेतु मानुष तनु धरहीं ॥
तासु प्रिया रावण हर लावे ❋ सो अपनो यक दूत पठावे" ॥
विकल होसि जब कपिकेमारे ❋ तब जानसि निशिचर संहारे ॥
तात मोर अति पुण्य बहूता ❋ देखेउँ नयन रामकर दूता ॥

दोहा–तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरी तुला इक अंग ॥
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग ॥ ४ ॥

प्रविशि नगरकीजे सब काजा ❋ हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करै मिताई ❋ गोपद सिंधु अनल शितलाई ॥
गरुअसुमेरु रेणुसम ताही ❋ रामकृपाकरि चितवहिं जाही ॥
अति लघुरूप धरेउ हनुमाना ❋ पैठ्यो नगर सुमिरि भगवाना ॥
मन्दिर मन्दिर प्रतिकरि शोधा ❋ देखे जहँ तहँ अगणित योधा ॥
गयउ दशानन मन्दिर माहीं ❋ अति विचित्रकहिजात सो नाहीं॥
... किये देखा कपि तेही ❋ मन्दिरमहँ न दीख वैदेही ॥

क्षेपक, किसीमहात्माजीकीकल्पितउक्ति ॥

निरखत मंदिर आयउ तहँवाँ ॥ कुम्भकरण सोवतरह जहँवाँ ॥
अतियकार तनु चितै नजाई ॥ चौंतिस योजनकी चकलाई ॥
योजन तीनि तीनिके काना ॥ बाइस योजन बाहु अजाना ॥
सत्रहयोजन जाँघ लँबाई ॥ शतयोजन तनु वर्णि नजाई ॥
दुइयोजनके नाक जो बाढी ॥ योजन एक मूछ रहैठाढी ॥
दोहा—षटमासकैनींद तेहि, सोवत भीतर लंक ॥
बाजत ढोल जुझाउ शिर, जागत नहीं अशंक ॥ ५ ॥
शोचै लाग कहाँ अब जाऊं ॥ कहां दरश सीताकर पाऊं ॥
बिन देखे जो सीतहि जाऊं ॥ कैसे बदन प्रभुहि दरशाऊं ॥
कपिसब करैं मोर उपहासा ॥ लछिमनमोहिं देखावहिंत्रासा ॥
जाम्बवंत पूंछहि कुशलाता ॥ नीके अहहिं जानकी माता ॥
कवन उतरदेहौं तिनजाई ॥ पवनतनय मन महँ पछिताई ॥
निशिचर घोर भयंकर रहहीं ॥ सीताकीसुधि कोउ न कहहीं ॥
पूछौं काहि कहौं केहिजाई ॥ जनकसुता सो देइ बताई ॥

इति क्षेपक ॥

भवन एक पुनि दीख सुहावा ❀ हरिमन्दिर तहँ भिन्न बनावा ॥
राम नाम अंकित गृह सोहा ❀ वरणि नजाइ देखि मन मोहा ॥
दोहा—राम नाम अंकित गृह, शोभा वरणि न जाय ॥
नवतुलसीके वृन्द बहु, देखि हर्ष कपिराय ॥ ६ ॥
लंका निशिचर निकर निवासा ❀ यहां कहां सज्जन करवासा ॥
मनमहँ तर्क करन कपि लागे ❀ ताही समय बिभीषण जागे ॥
राम राम तेहि सुमिरण कीन्हा ❀ हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा ॥
इहिसनहठि करिहौं पहिचानी ❀ साधुते होइ न कारज हानी ॥
विप्र रूप धरि बचन सुनावा ❀ सुनत बिभीषण उठितहँ आवा ॥
करि प्रणाम पूंछी कुशलाई ❀ विप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥

१ राक्षस । २ विचार ।

की तुम हरिदासन महँ कोई ❋ मोरे हृदय प्रीति अति होई ॥
कीतुम राम दीन अनुरागी ❋ आयहु मोंहि करन बडभागी ॥

दोहा-तब हनुमन्त कही सब, राम कथा निज नाम ॥
सुनत युगल तनु पुलक अति, मगन सुमिरि गुणग्राम ॥७॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ❋ जिमि दशनन महँ जीभ बिचारी॥
तात कबहुँ मोहिं जानि अनाथा ❋ करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं ❋ प्रीति न पद सरोज मनमाहीं ॥
अब मोहिं भा भरोस हनुमन्ता ❋ बिनु हरि कृपामिलहिं नहिं संता ॥
जो रघुवीर अनुग्रह कीन्हा ❋ तौतुम मोंहि दरश हठि दीन्हा ॥
सुनहु विभीषण प्रभु की रीति ❋ करहिं सदा सेवकपर प्रीती ॥
कहहु कवनमैं परम कुलीना ❋ कपि चंचल सबही विधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा ❋ तादिन ताहि न मिलै अहारा ॥

दोहा-अस मैं अधम सखा सुन, मोहू पर रघुवीर ॥
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण, भरे विलोचन नीर ॥८॥

जानतहू अस स्वामि बिसारी ❋ तेनर काहेन होइँ दुखारी ॥
इहिविधि कहत रामगुणग्रामा ❋ पावन श्रवण सुखद विश्रामा ॥
पुनि सब कथा विभीषण कही ❋ जेहि विधि जनकसुता जहँरही ॥
तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता ❋ देखा चहौं जानकी माता ॥
युक्ति विभीषण सकल सुनाई ❋ चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
धरि सोइरूप गयउ पुनि तहँवाँ ❋ बन अशोकसीता रहजहँवाँ ॥
देखि मनहिं मनकीन्ह प्रणामा ❋ बैठे बीति गई निशियामा ॥
कृश तनु शीशजटा इक वेणी ❋ जपति हृदय रघुपतिगुण श्रेणी ॥

दोहा-निज पद नयन दिये मन, राम चरण लवलीन ॥
परम दुखीभा पवनसुत, निरखि जानकी दीन ॥ ९ ॥

तरु पल्लव महँ रह्यो लुकाई ❋ करैविचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावण तहँ आवा ❋ संग नारि बहु किये बनावा ॥

---

१ दांतनमें । २ दया । ३ आँखोंमें । ४ जल । ५ एक पहर ।

बहु विधिखल सीतहि समुझावा ❀ साम दाम भय भेद दिखावा ॥
कहरावण सुनु सुमुखि सयानी ❀ मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करौं प्रणमोरा ❀ एक बार विलोकु मम ओरा ॥
तृण धरि ओट कहति वैदेही ❀ सुमिरि अवधपति परमसनेही ॥
सुन दशमुख खद्योत प्रकाशा ❀ कबहुँकि नलिनी करहिं विकाशा ॥
असमन समुझत कहत जानकी ❀ खल नहिं सुधि रघुवीर बानकी ॥
शठ सूने हरि आनेसि मोहीं ❀ अधम निलज्ज लाज नहिं तोहीं ॥

दोहा—आपुहि सुनि खद्योत सम, रामहिं भानु समान ॥
परुष वचन सुनि काढि अँसि, बोला अति रिसिआन ॥

सीता तैं ममकृत अपमाना ❀ काटौं तव शिर कठिन कृपाना ॥
नाहिंत सपदि मानु ममवानी ❀ सुमुखि होत नतु जीवनहानी ॥
श्याम सरोज दाम सम सुन्दर ❀ प्रभु भुज करिकर समदशकन्धर ॥
सो भुजकंठकि तव असिघोरा ❀ सुन शठ अस प्रमाण प्रणमोरा ॥
चन्द्रहास हरु मम परितापा ❀ रघुपति विरह अनल संतापा ॥
शीतल निशितव असिबर धारा ❀ कह सीता हरु मम दुखभारा ॥
सुनत वचन पुनि मारन धावा ❀ मयतनया कहिनीति बुझावा ॥
[illegible] सकल निशिचरी बुलाई ❀ सीतहि त्रास दिखावहु जाई ॥
मास दिवस महँ कहा नमाना ❀ तौमैं मारब कठिन कृपाना ॥

दोहा—भवन गयउ दशकन्ध तब, इहाँनिशाचरि वृन्द ॥
सीतहि त्रास दिखावहीं, धरहिं रूप बहु मन्द ॥ ११ ॥

त्रिजटा नाम राक्षसी एका ❀ रामचरणरत निपुण विवेका ॥
सबहि बुलाइ सुनायसि सपना ❀ सीतहि सेइ करौं हित अपना ॥
स्वप्ने वानर लंका जारी ❀ यातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ नग्न दशशीशा ❀ मुण्डित शिर खंडित भुजवीशा ॥
इहिविधि सो दक्षिणदिशिजाई ❀ लंका मनहुँ विभीषण पाई ॥
[illegible] फिरी रघुवीर दुहाई ❀ तब प्रभु सीतहि बोलि पठाई ॥

१ चिन्ह [illegible] २ सन्देश [illegible] वन । ७ बरछी । [illegible] वन । ४ तरवारि । ५ शीघ्र । ६ मन्दोदरी ।

यह स्वप्न मैं कहौं विचारी ❀ होइहिं सत्य गये दिनचारी ॥
तासु वचन सुनके सब डरीं ❀ जनकसुताके चरणन परीं ॥

दोहा-जहँ तहँ गईं सकल मिलि, सीताके मन शोच ॥
मास दिवस बीते मोहिं, मारिहि निशिचरपोच ॥ १२ ॥

त्रिजटासन बोलीं कर जोरी ❀ मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु वेगि उपाई ❀ दुसह विरह अब सहा नजाई ॥
आनि काठ रचि चितावनाईं ❀ मातु अनल तुम देहु लगाई ॥
सत्य करहिमम प्रीति सयानी ❀ सुनि सो श्रवण शूलसमवानी ॥
सुनत वचन पदगहि समुझावा ❀ प्रभुप्रतापबल सुयश सुनावा ॥
निशिन अनलमिलु राजकुमारी ❀ असकहिसो निज भवनसिधारी ॥
कह सीता विधि भाप्रतिकूला ❀ मिलै न पावक मिटै न शूला ॥
देखियत प्रकट गगन अंगारा ❀ अवनि न आवत एकौ तारा ॥
पावक मय शशि श्रवत नआगी ❀ मानहुँ मोहिं जानि हत भागी ॥
सुनहु विनय ममविटप अशोका ❀ सत्यनाम करु हरु मम शोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना ❀ देहु अगिनि ममकरहु निदाना ॥
देखि परम विरहाकुल सीता ❀ सो क्षण कपिहि कल्पसम बीता ॥

सो०-कपि करि हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब ॥
जनु अशोक अंगार, दीन्ह हर्ष उठि कर गहेउ ॥ २ ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर ❀ राम नाम अंकित अति सुन्दर ॥
चकित चितै मुद्रिक पहिचानी ❀ हर्ष विषाद हृदय अकुलानी ॥
जीतिको सकै अजय रघुराई ❀ मायाते असि रची न जाई ॥
सीता मन विचार कर नाना ❀ मधुर वचन बोलै हनुमाना ॥
रामचन्द्र गुण वर्णन लागे ❀ सुनतहि सीताकर दुख भागे ॥
लागी सुनै श्रवण मन लाई ❀ आदिहिते सब कथा सुनाई ॥
श्रवणामृत जे कथा सुनाई ❀ काहेन प्रगट होत किन भाई ॥
तबहनुमन्त निकट चलिगयऊ ❀ फिरि बैठीमन विस्मय भयऊ ॥

...वसं०

१ अग्नि । २ राति । ३ गृह । ...य बनावा ॥

१ दोत... पहर ।

रामदूत मैं मातु जानकी * सत्य शपथ करुणा निधानकी ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी * दीन्हराम तुमकहँ सहिदानी ॥
नर बानरहि संग कहु. कैसे * कही कथा संगति भइ जैसे ॥

दोहा-कपिके वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विश्वास ॥
जाना मन क्रम वचन यह, कृपासिन्धु कर दास ॥ १३ ॥

हरिजन जानि प्रीति अतिबाढी * सजल नयन पुलकावलि ठाढी ॥
बूडत विरह जलधि हनुमाना * भयहु तात मोकहँ जलयाना ॥
अब कँहु कुशल जाउँबलिहारी * अनुजसहित सुख भवनखरारी ॥
कोमल चित कृपालु रघुराई * कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज वानि सेवक सुखदायक * कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुँ नयन मम शीतल ताता * होइहि निरखि श्याम मृदुगाता ॥
वचन न आव नयन भरि वारी * अहो नाथ मोहिं निपट बिसारी ॥
दे[illegible]विरह व्याकुल अति सीता * बोलेउ कपि मृदुबचन विनीता ॥
मातु कुशल प्रभु अनुज समेता * तव दुख दुखित सो कृपा निकेता ॥
जननी जनि मानहु मन ऊंना * तुमते प्रेम रामके दूना ॥

दोहा-रघुपतिके सन्देश अब, सुनु जननी धरि धीर ॥
[illegible]सकहिकपि गद्गद भयउ, भरे विलोचन नीर ॥ १४ ॥

राम वियोग कहा सुनु सीता * मोकहँ सकल भयउ विपरीता ॥
[illegible]तें किशलय मनहु कृशानू * काल निशासम निशि शशिभानू ॥
कुवलय विपिन कुन्तवन सरिसा * वारिद तप्त तेल जनु बरिसा ॥
जेहि तरु रहौं करत सो पीरा * उरगश्वास सम त्रिविध समीरा ॥
कहे[illegible] दुख घटि नहिं होई * काहि कहौं यह जान नकोई ॥
तत्त्व प्रेमकर मम अरु तोरा * जानत प्रिया एक मन मोरा ॥
सो मन सदा रहत तोहिं पाहीं * जानु प्रीति रस इतने माहीं ॥
प्रभु सन्देश सुनत बैदेही * मगन प्रेम तनु सुधि नहिं तेही ॥
कह कपिहृदयधीरधरुमाता * सुमिरि राम सेवक सुखदाता ॥

१ चिन्ह । २ नौका । ३ सन्देह । ४ तरुनके नवीन पल्लव । ५ अग्निके लवरतुल्य । ६ कमलके वन । ७ बरछी । ८ मेघ । ९ सर्पके श्वाससम ।

उर आनहु रघुपति प्रभुताई ❀ सुनि मम वचन तजहु बिकलाई॥

दोहा-निशिचर निकर पतंग सम, रघुपति बाण कृशानु॥
जननि हृदय निज धीर धरु, जरे निशाचर जानु॥१५॥

जो रघुबीर होत सुधि पाई ❀ करते नहिं बिलम्ब रघुराई॥
राम बाण रविउदय जानकी ❀ तम वरूथ कहँ यातुधानकी॥
अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई ❀ प्रभु आयसु नहिं राम दुहाई॥
कछुक दिवस जननी धरुधीरा ❀ कपिन्ह सहित ऐहैं रघुवीरा॥
निशिचर मारि तुमहिं लै जैहैं ❀ तिहुँपुर नारदादि यश गैहैं॥
हैं सुत कपि सब तुम्हें समाना ❀ यातुधान भट अतिबलवाना॥
मोरे हृदय परम सन्देहा ❀ सुनि कपिप्रगट कीन्ह निजदेहा॥
कनक भूधराकार शरीरा ❀ समर भयंकर अति रणधीरा॥
सीता मन भरोस तब भयऊ ❀ पुनि लघु रूप पवनसुतलयऊ॥

दोहा-सुनु माता शाखामृगहि, नहिं बल बुद्धि विशाल॥
प्रभु प्रताप ते गरुडहि, खाय परम लघु व्याल॥१६॥

मन सन्तोष सुनत कपि बानी ❀ भक्ति प्रताप तेज बल सानी॥
आशिष दीन्ह राम प्रिय जाना ❀ होहु तात बल शील निधाना॥
अजर अमरगुणनिधिसुतहोहू ❀ करहु सदारघुनायक छोहू॥
करहिं कृपाप्रभु असस्सुनिकाना ❀ निर्भर प्रेम मग्न हनुमाना॥
बार बार नायउ पद शीशा ❀ बोले वचन जोरिकर कीशा॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ❀ आशिष तवअमोघ विख्याता॥
सुनहु मातु मोहिं अतिशय भूखा ❀ लागि देखि सुन्दर फलरूखा॥
सुनु सुत करैं विपिन रखवारी ❀ परम सुभट रजनीचर भारी॥
तिनकर भय माता मोहिं नाहीं ❀ जो तुम सुख मानहु मन माहीं॥

दोहा-देखि बुद्धि बल निपुण कपि, कहेउ जानकी जाहु॥
रघुपति चरण हृदय धरि, तात मधुर फल खाहु॥१७॥

चलेउ नाइ शिर पैठेउ बागा ❀ फल खाये तरु तोरन लागा॥

---

१ आज्ञा। २ राक्षस। ३ वानर। ४ आशीर्वाद। ५ अजर कही बाल युवा वृद्ध मरणते रहित। ६ गुणके समुद्र। ७ कृतार्थ। ८ वृक्ष।

रहे तहां बहु भट रखवारे ❋ कछुमारे कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी ❋ तेइँ अशोक वाटिका उजारी ॥
खायसिफल अरुविटप उपारे ❋ रक्षक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
सुनि रावण पठये भटनाना ❋ तिनहिं देखि गरजा हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संहारे ❋ गये पुकारत कछु अधमारे ॥
पुनि पठवा तेहि अक्षकुमारा ❋ चला संग लै सुभट अपारा ॥
आवत देखि विटप गहि तर्जा ❋ ताहि निपाति महा धुनिगर्जा ॥

दोहा—कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछुक मिलायसि धूरि ॥
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बलभूरि ॥ १८ ॥

सुनि सुत वध लंकेश रिसाना ❋ पठवा मेघनाद बलवाना ॥
मारेसि जनि सुत बाँधेसि ताही ❋ देखौं कीश कहाँकर आही ॥
चला इंद्रजित अतुलित योधा ❋ बन्धुवधनसुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुण भट आवा ❋ कटकटाइ गरजा अरु धावा ॥
अति विशाल तरु एक उपारा ❋ विरथ कीन्ह लंकेश कुमारा ॥
रहे महाभट ताके संगा ❋ गहि गहिकपि मर्देसि निज अंगा ॥
तिन्हैं निपाति ताहिसनबाजा ❋ भिरे युगल मानहु गजराजा ॥
मुष्टिक मारि चढा तरु जाई ❋ ताहि एक क्षण मूर्च्छा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हेसि बहुमाया ❋ जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥

दोहा—ब्रह्म अस्त्र तेहि साधेउ, कपिमन कीन्ह विचार ॥
जो न ब्रह्मशर मानउं, महिमा मेटै अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मबाण तेहि कपि कहँ मारा ❋ परतिहु बार कटक संहारा ॥
तेहि देखा कपि मूर्च्छित भयऊ ❋ नागफाँस बाँधेसि लै गयऊ ॥
जासु नामजपि सुनहु भवानी ❋ भवबंधन काटहिं नर ज्ञानी ॥
तासु दूत बंधन तर आवा ❋ प्रभुकारज लगि आपु बँधावा ॥
कपिबंधन सुनि निशिचर धाये ❋ कौतुक लागि सभा लै आये ॥
दशमुख सभा दीख कपि जाई ❋ कहिनजायकछुअतिप्रभुताई ॥
करजोरे सुर दिशप विनीता ❋ भृकुटि विलोकतसकलसभीता ॥

देखि प्रताप न कपिमनशंका ❋ जिमिअहिगणमहँगरुड अशंका ॥

दोहा-कपिहि विलोकि दशानन, बिहँसि कहेसि दुर्बाद ॥
सुत बध सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदय विषाद ॥ २० ॥

कह लंकेश कवन तैं कीशा ❋ केहिकेबलघालेसिवनखीशा ॥
कीधौंश्रवणसुनेसिनहिंमोहीं ❋ देखौं अतिअशंकशठतोहीं ॥
मारेसिनिशिचरकेहिअपराधा ❋ कहुशठतोहिंनप्राणकीबाधा ॥
सुनु रावण ब्रह्माण्ड निकाया ❋ पाइ जासु बल बिरचितमाया ॥
जाके बल विरंचि हरि ईशा ❋ पालत हरत सृजत दशशीशा ॥
जा बल शीश धरे सहसानन ❋ अंडकोशसमेत गिरि कानन ॥
धरेजो विविध देह सुरत्राता ❋ तुमसे शठन सिखावन दाता ॥
हरकोदण्ड कठिन जेइँ भंजा ❋ तोहिं समेत नृपदल मद गंजा ॥
खर दूषण विराध अरु वाली ❋ बधे सकल अतुलित बलशाली ॥

दोहा-जाके बल लवलेशते, जितेउ चराचर झारि ॥
तासु दूतहौं जाहिकी, हरि आनेहु प्रियनारि ॥ २१ ॥

जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई ❋ सहसबाहुसन परी लडाई ॥
समरवालिसन करियशपावा ❋ सुनिकपिवचनबिहँसिचहिरावा ॥
खायउँफलमोहिंलागीभूखा ❋ कपि स्वभावते तोरेउँरूखा ॥
सबके देह परम प्रिय स्वामी ❋ मारहिं मोहिं कुमारगगामी ॥
जिन्ह मोहिंमारा तेहि मैं मारा ❋ तेहिपरबांधेउ तनय तुम्हारा ॥
मोहिं न कछु बांधे कर लाजा ❋ कीन्ह चहौं निजप्रभुकरकाजा ॥
विनती करौं जोरि कर रावन ❋ सुनहु मान तजि मोरसिखावन ॥
देखहु तुमनिजहृदय विचारी ❋ भ्रम तजि भजहु भक्त भयहारी ॥
जाके डर अति काल डराई ❋ जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासों वैर कबहुँनहिं कीजै ❋ मोरे कहे जानकी दीजै ॥

दोहा-प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि ॥
गये शरण प्रभु राखिहैं, तव अपराध विसारि ॥ २२ ॥

---

१ शेषजी । २ ब्रह्माण्ड । ३ देवतोंके रक्षा हेतु । ४ धनुष । ५ लंकेस्थान । ६ राक्षस ।

रामचरण पंकज उर धरहू ❋ लंका अचल राज्य तुमकरहू ॥
ऋषिपुलस्त्ययश विमलमयंका ❋ तेहिकुलमहँ जनिहोसिकलंका ॥
राम नाम विनु गिरा नसोहा ❋ देखु विचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसन हीन नहिं सोह सुरारी ❋ सब भूषण भूषित बर नारी ॥
राम विमुख सम्पति प्रभुताई ❋ जाइ रही पाई विनु पाई ॥
सजल मूल जेहिसरितो नाहीं ❋ बरषिगये पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दशकण्ठ कहौं प्रणरोपी ❋ राम विमुख त्रांता नहिं कोपी ॥
शंकर सहसविष्णु अंजतोही ❋ सकहिं न राखि रामकर द्रोही ॥

दोहा–मोह मूल बहु शूल प्रद, त्यागहु तुम अभिमान ॥
भजहु राम रघुनायकहि, कृपासिन्धु भगवान॥२३॥

यदपि कहीकपि अतिहितबानी ❋ भक्ति विवेक धर्म नयसानी ॥
बोलाविहँसि अधम अभिमानी ❋ मिलाहमहिं कपि गुरु बडज्ञानी ॥
मृत्यु निकट आई खलतोहीं ❋ लागेसि अधम सिखावन मोहीं ॥
उलटा होइ कहा हनुमाना ❋ मतिभ्रम तोरि प्रगट मैं जाना ॥
सुनिकपि वचन बहुतखिसिआना ❋ वेगि न हरहु मूढकर प्राना ॥
सुनत निशाचर मारनधाये ❋ सचिवन सहित विभीषण आये ॥
नाइ शीश करिविनय बहूता ❋ नीति विरोध न मारिय दूता ॥
आनदण्ड कछु करियगुसांई ❋ सबही कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत बिहँसि बोला दशकन्धर ❋ अंगभंग करि पठवहु बन्दर ॥

दोहा–कपिकर ममता पूंछपर, सबहिं कहासमुझाइ ॥
तेलबोरि पट बांधि पुनि, पावक देहु लगाइ॥ २४ ॥

पूंछहीन बानर जब जाइहि ❋ तबशठ निज नाथहि लै आइहि ॥
जिन्हकी कीन्हेसि अमित बडाई ❋ देखौं मैं तिन्हकी प्रभुताई ॥
वचन सुनत कपि मन मुसुकाना ❋ भइ सहाय शारद मैं जाना ॥
यातुधान सुनि रावण वचना ❋ लागे रचन मूढ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृततेला ❋ बाढी पूंछ कीन्ह कपिखेला ॥

१ वस्त्र । २ नदी । ३ रक्षक । ४ ब्रह्मा । ५ शोभा । ६ वस्त्र ।

कौतुक कहँ आये पुरवासी ❋ मारहिं चरण करहिं बहुहाँसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सबतारी ❋ नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी ॥
पावक जरत दीख हनुमन्ता ❋ भयउ परम लघुरूप तुरन्ता ॥
निबुकिचढचो कपिकनक अटारी ❋ भई सभीत निशाचरनारी ॥

दोहा-हरि प्रेरित तेहि अवसर, बहमारुत उनचाश ॥
अट्टहास करि गरजेउ, कपिबढि लाग अकाश ॥२५॥

अथ क्षेपक ॥

चढचो फलांगि धाम लूम लामको उठायऊ। मनोअकाशतेनदीकृशा नुकी बहायऊ॥ किलंकलीलनेककालजीहसीपसारहू ॥ किधों अनी अपफशूरसैकसी निकारहू ॥ फिरायलायलायअयनमयनसेलगेवरै। गयं दछोरवाजिछोर ऊंटछोरियेखरै ॥ अनेक बाल बालकी सु तात मात बोलहीं। बचाय लीजियेहमें समय समानडोलहीं ॥ अनेकनारि मारिरिं भंडिभकाढि लावहीं। अनेकडारिडारिवस्तुबारिलैनधावहीं ॥ अनेककंत बीरतेपुकारवैनयोंकहै॥उठायलेहुलालमालजालदेपरोतहैं॥ गिरेकँगूरहू रतेतवैकहैमँदोदरी। विहायलोकलाजकानिभागतीनक्योंभरी॥अरेअकं पनायकिकंठकीमहोदरं॥ लिवायलेउअङ्कुगातिपूतनातिसोदरं॥ अने कवारमैं कहीवुझायहू बिभीषणं। नमानिदाढिजारनेकुठारवंशतीक्ष्णं॥ निकेतद्वारअर्द्धउद्धहाटबाटमेंजहाँ। लुकातजायनीरकीशतीरदेखि येतहाँ॥ वधू जोकुम्भकर्णकीपसारिहाथभाषिये।दुहाइरामचंद्रकेरमोरिक न्तराखिये। अनेकधायधायजायरावणेसुनायऊ। विचारिवीरमेघनादसे बलीपठायहू॥ अनेकअस्त्रशस्त्रलायआयमारनेलगे। घुमायदीनबोलधी पुकारकूरसेभगे॥ विशालज्वालजानिकोपमेघबोलयोंकही। बुझायदेहु आगिरेवहायकोशकोसही॥ भलेसुनायमेघआयपुंजपाथछाँडेऊ। यथा सनेहपाय चौगुनीकृशानुबाढेऊ॥ लगीजुअंगअंगवानप्राणलेभजेसबै। नि हाररीतमालवानस्यानबोलियोतबै ॥ नआहियाहिअग्निआहिईशकीजु वामता। समीरश्वासतीयकीजुरामरोषमामता॥ बुलायकालतेकह्योलँ गूरलाउमारिकै। बटोरभूतप्रेतयक्षदंडचंडधारिकै॥ विलोकवातजात

१ अग्नि। २ अत्यंत छोटा।

घातकीनसैनतासुको । उठायगालमेंधरोपरोखँभारजासुको ॥ समेतशं
भुइंद्रवातजातपासआयऊ । सभीतपंकजासनादिदीनतीसुनायऊ ॥

दोहा–देहु छाँडि यमराज कहँ, यही विनय यक मोर ॥
वरवस आयो लरन सुनि, दीन गालते छोर ॥

इति क्षेपक ॥

देह विशाल परमहरुआई ❋ मन्दिरते मन्दिर चढि जाई ॥
जरत नगर भे लोगबिहाला ❋ लपट झपट बहु कोट कराला ॥
तात मातु सब करहिं पुकारा ❋ यहि अवसर को हमहिं उबारा ॥
हम जो कह यह कपिनहिंहोई ❋ वानररूप धरे सुर कोई ॥
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा ❋ जरे नगर अनाथकर जैसा ॥
जारा नगर निमिष यक माहीं ❋ एक बिभीषणको गृह नाहीं ॥
जाकर भक्त अनलजेइँसिरजा ❋ जरानसोतेंहिकारण गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका कपिजारी ❋ कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

दोहा–पूंछ बुझाई खोय श्रम, धरि लघु रूप बहोरि ॥
जनकसुताके आगे, ठाढ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातु मोहिं दीजे कछु चीन्हा ❋ जैसे रघुनायक मोहिं दीन्हा ॥
चूडामणि उतारि तब दीन्हा ❋ हर्ष समेत पवनसुत लीन्हा ॥
कहेहु तात अस मोर प्रणामा ❋ सब प्रकार प्रभु पूरण कामा ॥
दीनदयालु बिरुद सम्भारी ❋ हरहुनाथ मम संकट भारी ॥
तात शंक्रसुत कथा सुनायहु ❋ वाण प्रताप प्रभुहि समुझायहु ॥
मास दिवस महँ नाथ न आवहिं ❋ तौपुनि मोहिं जियतनहिं पावहिं॥
कहुकपिकेहि बिधि राखौं प्राना ❋ तुमहूं तात कहत अब जाना ॥
तुमहिं देखि शीतल भइ छाती ❋ पुनिमोकहँ सोइ दिनसोइराती ॥

दोहा–जनकसुतहिं समुझाइ करि, बहुविधि धीरज दीन्ह॥
चरण कमल शिर नाइ करि, गमन राम पहँ कीन्ह ॥२७॥

चलत महा धुनि गरजेउभारी ❋ गर्भस्रवहिंसुनि निशिचरनारी ॥
नांघि सिंधु यहि पारहिं आवा ❋ शब्दकिलकिला कपिनसुनावा

हर्षे सब विलोकि हनुमाना ❀ नूतन जन्म कपिन तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तनुतेज विराजा ❀ कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ॥
मिले सकल अतिभये सुखारी ❀ तलफत मीन पावजनु वारी ॥
चले हर्षि रघुनायक पासा ❀ पूंछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुवन भीतर सब आये ❀ अंगद सहित मधुर फल खाये ॥
रखवारे जब बरजन लागे ❀ मुष्टि प्रहार करत सब भागे ॥

दोहा–जाइ पुकारे सकलते, बन उजार युवराज ॥
सुनि सुग्रीवहिं हर्षि कपि, करि आये प्रभु काज ॥२८॥

जो नहोत सीता सुधि पाई ❀ मधुवनके फल को सक खाई ॥
इहि विधिमन विचारकर राजा ❀ आयगयेकपि सहितसमाजा ॥
आइ सबन नायउ पदशीशा ❀ मिलेउसबन अति प्रेम कपीशा ॥
पूंछेउ कुशल कुशल पद देखी ❀ रामकृपा भा काज विशेषी ॥
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना ❀ राखे सकल कपिनकर प्राना ॥
सुनिसुग्रीव बहुरिउठि मिलेऊ ❀ कपिन सहित रघुपतिपै चलेऊ ॥
राम कपिन कहँ आवत देखा ❀ किये काज उर हर्ष विशेषा ॥
फटिक शिला बैठे दोउ भाई ❀ परे सकल कपि चरणन जाई ॥

दोहा–प्रीति सहित भेंटे सकल, रघुपति करुणा पुंज ॥
पूंछा कुशल कुशल अब, नाथ देखि पद कंज ॥ २९ ॥

जाम्बवन्त कह सुनु रघुराया ❀ जापर नाथ करहु तुम दाया ॥
ताहि सदा शुभ कुशल निरंतर ❀ सुर नर मुनि प्रसन्न तेहि ऊपर ॥
सो विजयी विनयी गुणसागर ❀ तासु सुयश तिहुँ लोकउजागर ॥
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू ❀ जन्म हमार सफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्हजो करणी ❀ सो मुख लाखहु जाइनवरणी ॥
पवनतनयके वचन सुहाये ❀ जाम्बवन्त रघुपतिहिसुनाये ॥
सुनि कृपालु उठि हृदय लगाये ❀ जानिसुभट रघुपति मनभाये ॥
कहहु तात केहि भांति जानकी ❀ रहति करति रक्षा स्वप्राणकी ॥

१ नवीन । २ सुग्रीव ।

दोहा–नाम पाहरू दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट॥
लोचन निज पद यंत्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट ३०॥

"चलती बार कह्यो मोहिं टेरी ❋ सुरति कराय शक्रसुतकेरो"
चलत मोहिं चूडामणि दीन्हीं ❋ रघुपति हृदय लाइ तेहि लीन्हीं॥
नाथ युगल लोचन भरि बारी ❋ वचन कह्योकछुजनककुमारी॥
अनुज समेत गहेहुप्रभुचरणा ❋ दीनबन्धु प्रणतारति हरणा॥
मनक्रमवचनचरण अनुरागी ❋ केहिअपराधनाथ मोहिंत्यागी॥
अवगुण एक मोर मैं जाना ❋ बिछुरत प्राण न कीन्हपयाना॥
नाथ सो नयनन करअपराधा ❋ निसरतप्राणकराहिंहठिबाधा॥
विरह अग्नि तनु तूलँ समीरा ❋ श्वास जरे क्षण माँह शरीरा॥
नयन श्रवेजल निजहितलागी ❋ जरे न पाव देह विरहागी॥
सीताकी अति विपति विशाला ❋ बिना कहे भल दीनदयाला॥

दोहा–निमिषनिमिष करुणायतन, जाहिं कल्प शत बीति
बेगि चलिय प्रभु आनिये, भुजबल खलदल जीति॥३१॥

सुनिसीतादुख प्रभुसुख अयना ❋ भरि आये जल राजिवनयना॥
वचन काय मन ममगति जाही ❋ स्वप्न्यहु विपतिकि चाहियताही॥
कह हनुमान विपति प्रभु सोई ❋ जबतक सुमिरण भजन नहोई॥
कितिक बात प्रभुयातुधानकी ❋ रिपुहि जीति आनिये जानकी॥
सुनुकपि तोहिं समान उपकारी ❋ नहिं कोउ सुरनरमुनि तनुधारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा ❋ सन्मुखहोइन सकत मनमोरा॥
सुनु कपि तोहिं उऋण मैं नाहीं ❋ देखेउँ करि विचार मन माहीं॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता ❋ लोचननीर पुलकि अतिगाता॥

दोहा–सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख, हृदय हर्ष हनुमन्त॥
चरण परेउ परमाकुल, त्राहि त्राहि भगवन्त॥ ३२॥

बार बार प्रभु चहत उठावा ❋ प्रेम मगन तेहि उठब नभावा॥
प्रभुपद पंकज कपिकर शीशा ❋ सुमिरि सो दशामगन गौरीशा॥

---

१ केवाँर। २ कुलुफ। ३ मार्ग। ४ जयन्त। ५ शीशपर जो चूडाविषे मणि रहतीहै। ६ हेनाथ दोनों नेत्रोंमेंजलभर। ७ रुई। ८ महादेव।

सावधान मन करि पुनि शंकर ❋ लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
कपि उठाय प्रभु हृदयलगावा ❋ कर गहि परम निकट बैठावा ॥
कहु कपि रावण पालित लङ्का ❋ केहि विधि दहेउ दुर्ग अतिबङ्का
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ❋ बोले वचन बिगत अभिमाना ॥
शाखामृगकी अति मनुसाई ❋ शाखाते शाखा पर जाई ॥
नाँघि सिन्धु हाटकपुर जारा ❋ निशिचर गणवधि विपिन उजारा॥
सो सब तव प्रताप रघुराई ❋ नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई ॥

दोहा–ताकहँ प्रभु कछु अगम नहिं, जापर तुम अनुकूल ॥
तव प्रताप बडवानलहिं, जारि सकै खल तूल ॥ ३३ ॥

सुनतवचन प्रभु बहु सुखमाना ❋ मन क्रम वचन दासनिजजाना ॥
मांगु वचन सुत वर अनुकूला ❋ देहुँ आजु तुम कहँ सुख मूला ॥
नाथ भक्ति तव सब सुखदायिनि ❋ देहु कृपाकरिसो अनपायिनि ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपिवानी ❋ एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा रामस्वभाव जिन जाना ❋ ताहि भजनतजि भाव न आना ॥
यह संवाद जासु उर आवा ❋ रघुपति चरणभक्ति तेइँ पावा ॥
सुनि प्रभु वचनकहैं कपिवृन्दा ❋ जय जय जय कृपालु सुखकन्दा ॥
तब रघुपति कपिपतिहिबुलावा ❋ कहा चलै कर करहु बनावा ॥
अब विलम्बै केहि कारण कीजै ❋ तुरत कपिन कहँ आयसुदीजै ॥
कौतुक देखि सुमनं बहु वर्षे ❋ नभते भवन चले सुर हर्षे ॥

दोहा–कपिपति वेगि बुलायहू, आये यूथप यूथ ॥
नाना बरण अतुल बल, बानर भालु बरूथ ॥ ३४ ॥

प्रभु पदपंकज नावहिं शीशा ❋ गर्जहिं भालु महाबल कीशा ॥
देखी राम सकल कपि सैना ❋ चितव कृपा करि राजिव नैना ॥
राम कृपा बल पाइ कपिन्दा ❋ भये पक्ष युत मनहुं गिरिन्दा ॥
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना ❋ शकुन भये सुन्दर शुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय नीती ❋ तासु पयान शकुनयहनीती ॥

---

१ अगम । २ कपि । ३ सुग्रीव । ४ देर । ५ पुष्प । ६ सुमेरु ।

प्रभु पयान जाना वैदेही ❀ फरके वाम अंग शुभतेही ॥
जो जो शकुन जानकिहि होई ❀ अशकुन भयउ रावणहिं सोई ॥
चला कटक को बरणै पारा ❀ गरजहिं वानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादपधारी ❀ चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहीं ❀ डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥

छंद–चिक्करहिं दिग्गज डोल महिगिरिलोलसागरखरभरे ।
मन हर्ष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नरदुखटरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन धावहीं ॥
जय राम प्रबल प्रताप कोशलनाथ गुण गण गावहीं ॥
सहिसक न भार उदार अहिपति बार बार विमोहई ॥
गहि दशन पुनिपुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमिसोहई ॥
रघुबीर रुचिर पयान प्रस्थित जानि परम सुहावनी ॥
जनु कमठ खप्परसर्पराजसोलिखतअविचलपावनी ॥५॥

दोहा–इहिविधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागर तीर ॥
जहँतहँ लागे खान फल, भालु विपुल कपि बीर ॥३५॥

वहां निशाचर रहहिं सशंका ❀ जबते जारि गयउ कपिलंका ॥
निजनिज गृह सब करैं विचारा ❀ नहिं निशिचर कुलकेर उबारा ॥
जासु दूत बल वरणि न जाई ❀ तेहि आये पुर कवन भलाई ॥
अति सभीत सुनि पुर जनवानी ❀ मन्दोदरी हृदय अकुलानी ॥
रही जोरि कर पति पद लागी ❀ बोली वचन नीति रस पागी ॥
कन्त कर्ष हरिसन परिहरहू ❀ मोर कहा अति हित चितधरहू ॥
समुझत जासु दूतकी करनी ❀ श्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बुलाई ❀ पठवहु कन्त जो चहहु भलाई ॥
तव कुल कमल विपिन दुखदाई ❀ सीता शीत निशासम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे ❀ हित न तुम्हार शम्भु अजकीन्हे ॥

१ सिंहनाद । २ काँपउठी । ३ सूर्य्य । ४ चन्द्र । ५ शेषनाग । ६ मूर्च्छित । ७ विरोध ।
८ निशाचरी गर्भको डारदेतीहैं । ९ सीताजी ।

दोहा-राम बाण अहिगणसरिस, निकर निशाचर भेक॥
जौं लगि ग्रसत न तबहिंलगि, यतनकरहुतजिटेक॥ ३६॥

श्रवण सुनत शठ ताकीवानी ❀ विहँसा जगत विदित अभिमानी॥
सभय स्वभाव नारिकरसांचा ❀ मंगल माहिं अमंगलरांचा॥
जो आवे मर्कट कटकाई ❀ जियहिं विचारे निशिचर खाई॥
कम्पहिं लोकप जाके त्रासा ❀ तासु नारि सभीत बडिहासा॥
असकहि विहँसि ताहि उरलाई ❀ चलेउ सभा ममता अधिकाई॥
मन्दोदरीहृदय कर चीता ❀ भयो कन्तपर विधिविपरीता॥
बैठेउ सभा खबरि असपाई ❀ सिन्धुपार सेना सब आई॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ❀ ते सब हँसे मौनकरि रहहू॥
जितेहु सुरासुर तव श्रम नाहीं ❀ नर बानर केहि लेखे माहीं॥

दोहा-सचिव वैद्य गुरुतीनि जो, प्रिय बोलहिं भयआश॥
राजधर्मतनु तीनकर, होइ बेगही नाश॥ ३७॥

सोइ रावण कहँ बनी सहाई ❀ अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई॥
अवसर जानि विभीषण आवा ❀ भ्राता चरण शीशतेहि नावा॥
पुनि शिरनाइबैठि निज आसन ❀ बोला वचन पाइ अनुशासन॥
जो कृपालु पूंछेहु मोहिंवाता ❀ मति अनुरूप कहब मम ताता॥
जो आपन चाहो कल्याना ❀ सुयशसुमति शुभगति सुखनाना॥
तो परनारि लिलार गुसाईं ❀ तजौ चौथिं चंदाकी नाईं॥
चौदह भुवन एकपति होई ❀ भूंत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई॥
गुणसागर नागर नर जोऊ ❀ अल्प लोभ भल कहै न कोऊ॥

दोहा-कामक्रोध मदलोभसब, नाथ नरकपर पन्थ॥
सब परिहरि रघुबीर पद, भजहु कहहिं सदग्रन्थ॥ ३८॥

तात राम नहिं नर भूपाला ❀ भुवनेश्वर कालहुके काला॥
ब्रह्म अनामय अज भगवन्ता ❀ व्यापक अजित अनादि अनंता॥
द्विज धेनु देव हितकारी ❀ कृपासिन्धु मानुष तनुधारी॥

सर्पगणतुल्य। २ निशिचर गण मेढकतुल्य। ३ आज्ञा। ४ अनुसार। ५ भाद्रपदकी ...तुल्य। ६ जीव। ७ षटवर्ग जन्म, वृद्धि, विवरण, क्षीण, जरा मृत्युतेरहित

जनरंजन भंजन खल व्राता ❋ वेद धर्म रक्षक सुरत्राता ॥
ताहि वैर तजि नाइय माथा ❋ प्रणतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभुकहँ वैदेही ❋ भजहु रामबिनु काम सनेही ॥
शरणगये प्रभु ताहु न त्यागा ❋ विश्वद्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
जासु . नाम त्रयतापनशावन ❋ सो प्रभु प्रगट समुझ जियरावन ॥

दोहा–बार बार पद लागौं; विनय करौं दशशीश ॥
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोशलाधीश ॥ ३९ ॥
मुनि पुलस्त्य निज शिष्य सन, कहि पठई यह बात॥
तुरत सोमैं तुमसन कही, पाय सुअवसर तात ॥ ४० ॥

मालवंत अति सचिव सयाना ❋ तासुबचन सुनि अति सुखमाना ॥
तात अनुज तव नीति विभूषण ❋ सोइ उरधरहु जोकहतबिभीषण ॥
रिपु उत्कर्ष कहत शठदोऊ ❋ दूरन करहु इहांते कोऊ ॥
मालवंत गृह गयउ बहोरी ❋ कहेउ बिभीषण पुनि करजोरी ॥
सुमति कुमति सबके उररहई ❋ नाथ पुराण निगम अस कहई ॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना ❋ जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥
तव उरकुमति बसी विपरीती ❋ हित अनहित मानहु रिपु प्रीती ॥
कालरात्रि निशिचर कुलकेरी ❋ तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दोहा–तात चरण गहि माँगौं, राखहु मोर दुलार ॥
सीता देहु राम कहँ, अति हित होइ तुम्हार ॥ ४१ ॥

बुध पुराण श्रुति सम्मत बानी ❋ कही विभीषण नीति बखानी ॥
सुनत दशानन उठा रिसाई ❋ खलतोहिं मृत्यु निकटचलिआई ॥
जियसि सदाशठ मोरजिआवा ❋ रिपुकरपक्ष सदा तोहिं भावा ॥
कहसिनखल असको जग माहीं ❋ भुजबलजेहि जीता हमनाहीं ॥
ममपुरबसि तपसिन सनप्रीती ❋ शठमिलु जाहि ताहि कहुनीती ॥
असकहि कीन्हेसिचरण प्रहारा ❋ अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संतकी यही बड़ाई ❋ मंद करत जो करै भला[illegible]
तुम पितु सरिस भले मोहिंमारा ❋ रामभजे हित होइ तु[illegible]

सचिव संगलै नभ पथ गयऊ ❀ सबहिं सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दोहा-रामसत्य संकल्प प्रभु, सभाकाल वशतोरि ॥
मैं रघुनायक शरण अब, जाउँ देहु जनि खोरि ॥ ४२ ॥

असकहि चला विभीषण जबहीं ❀ आयुहीनभे निशिचर तबहीं ॥
साधु अवज्ञा तुरत भवानी ❀ कर कल्याण अखिल करहानी ॥
रावण जबहिं विभीषण त्यागा ❀ भयो विभवबिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं ❀ करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहौं जाइ चरण जलजाता ❀ अरुण मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जेपद परसि तरी ऋषिनारी ❀ दण्डक कानन पावन कारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाये ❀ कपट कुरंग संग धरि धाये ॥
हर उर सरसरोज पद जोई ❀ अहो भाग्य मैं देखब सोई ॥

दोहा-जिन पाँयन कर पादुका, भरत रहे मन लाइ ॥
ते पद आजु विलोकिहौं, इन नयनन अब जाइ ॥ ४३ ॥

यहिविधि करत सप्रेम विचारा ❀ आयउ सपदि सिन्धुके पारा ॥
कपिन विभीषण आवत देखा ❀ जानेउ कोउ रिपुदूत विशेषा ॥
ताहि राखि कपिपति पहँ आये ❀ समाचार सब जाइ सुनाये ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ❀ आवा मिलन दशानन भाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिये काहा ❀ कहै कपीश सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाय निशाचर माया ❀ कामरूप केहि कारण आया ॥
भेद हमार लेन शठ आवा ❀ राखियबांधि मोहिं असभावा ॥
सखा नीति तुम नीक विचारी ❀ मम प्रण शरणागत भयहारी ॥
सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना ❀ शरणागत वत्सल भगवाना ॥

दोहा-शरणागत कहँ जो तजहिं, निजअनहित अनुमानि
तेनर पामर पापमय, तिनहिं विलोकत हानि ॥ ४४ ॥

[illegible]टि विप्र वध लागहिं जाही ❀ आये शरण तजै नहिं ताही ॥
[illegible]ख होइ जीव मोहिं जबहीं ❀ जन्म कोटि अघ नाशौं तबहीं ॥

---

१ [illegible]मंत्रीलेकर । २ आसर्नेल । ३ समूह । ४ अहल्या ।

पापवन्त कर सहज स्वभाऊ ❀ भजन मोर तेहि भाव नकाऊ ॥
जोपै दुष्ट हृदय सो होई ❀ मोरे सन्मुख आव कि सोई ॥
निर्मलमन जन सो मोहिंपावा ❀ मोहिं कपट छल छिद्रन भावा ॥
भेदलेन पठवा दशशीशा ❀ तबहुंनकछुभय हानिकपीशा ॥
जगमहँ सखा निशाचर जेते ❀ लक्ष्मणहनहिं निमिष महँतेते ॥
जो सभीत आवा शरनाई ❀ रखिहौं ताहि प्राणकी नाई ॥

दोहा—उभय भांति लै आवहु, हँसिकह कृपानिधान ॥
जय कृपालु कहि कपिचले, अंगदादि हनुमान ॥४५॥

सादर तेहि आगे करि वानर ❀ चले जहाँ रघुपति करुणाकर ॥
दूरिहिंते देखे दोउ भ्राता ❀ नयनानन्द दानके दाता ॥
बहुरि राम छबिधामबिलोकी ❀ रहा सो ठाढ एक पग रोकी ॥
भुज प्रलंब कंजारुण लोचन ❀ श्यामलगात प्रणत भय मोचन ॥
सिंह कन्ध आयंत उर सोहा ❀ आनन अमित मदनछबिमोहा ॥
नयननीर पुलकित अतिगाता ❀ मन धरि धीर कही मृदुबाता ॥
नाथ दशानन कर मैं भ्राता ❀ निशिचर बंश जनम सुरत्राता ॥
सहज पाप प्रिय तामस देहा ❀ यथा उलूकहिं तम पर नेहा ॥

दोहा—श्रवण सुयश सुनि आयऊं, प्रभु भंजन भयभीर ॥
त्राहित्राहि आरत हरण, शरण सुखद रघुबीर ॥ ४६ ॥

असकहि करत दण्डवत देखा ❀ तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेषा ॥
दीनवचनसुनिप्रभु मन भावा ❀ भुजविशालगहिहृदयलगावा ॥
अनुजसहितामिल ढिगबैठारी ❀ बोले वचन भक्त हितकारी ॥
कहु लंकेश सहित परिवारा ❀ कुशल कुठाहर वास तुम्हारा ॥
खल मण्डली बसहु दिनराती ❀ सखा धर्म निबहै केहि भांती ॥
मैं जानो तुम्हारि सब रीती ❀ अतिशय निपुण न भावअनीती ॥
बरु भल वास नरक कर ताता ❀ दुष्ट संग जनि देहि विधाता ॥
अब पद देखि कुशल रघुराया ❀ जो तुम कीन्ह जानि जन दाया ॥

१ दुष्टभावसे आयाहो या आर्तहूके दोउ भांतिसे ले आवो। २ आजानुभुज। ३ अरुणकमल इव नेत्र। ४ चौडी। मुख।

दोहा–तब लगि कुशल न जीव कहँ, स्वप्नेहु मन विश्राम ॥
जबलगि भजन न रामके, शोक धाम तजि काम ॥ ४७ ॥

तबलगि हृदय बसत खल नाना ❋ लोभ मोह मत्सर मदमाना ॥
जबलगि उर न बसत रघुनाथा ❋ धरे चाप शायक कटि भाथा ॥
ममता तिमिरतरुण अँधियारी ❋ राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥
तबलगि बसत जीव उर माहीं ❋ जबलगि प्रभुप्रताप रविनाहीं ॥
अब मैं कुशल मिटे भयभारे ❋ देखि राम पदकमल तुम्हारे ॥
तुम कृपालु जापर अनुकूला ❋ ताहि नव्यापत्रिविध भवशूला ॥
मैं निशिचर अति अधम स्वभाऊ ❋ शुभ आचरण कीन्ह नहिं काऊ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान नपावा ❋ सो प्रभु हर्षि हृदय मोहिं लावा॥

दो०अहो भाग्य मम अमित अति, राम कृपा सुखपुंज ॥
देखेउँ नयन विरंचि शिव, सेव्य युगल पदकंज ॥ ४८ ॥

सुनहु सखानिज कहहुँ स्वभाऊ ❋ जानिभुशुण्डिशम्भुगिरिजाऊ ॥
जो नर होइ चराचर द्रोही ❋ आवै सभय शरणतकि मोही ॥
तजि मद मोह कपट छलनाना ❋ करौं सद्य तेहि साधु समाना ॥
जननी[1] जनक[2] बन्धु सुत दारा ❋ तन धन भवन सुहृद परिवारा ॥
सबके ममता ताग बटोरी ❋ ममपदमनहिं बांधि बटि डोरी ॥
समदरशी इच्छा कछु नाहीं ❋ हर्ष शोक भय नहिं मनमाहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसे ❋ लोभी हृदय बसत धन जैसे ॥
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे ❋ धरौं देह नहिं आन निहोरे ॥

दोहा–सगुण उपासक परमहित, निरत नीति दृढनेम ॥
तेनर प्राण समान मोहिं, जिनके द्विज पद प्रेम ॥ ४९ ॥

सुनु लंकेश सकल गुण तोरे ❋ ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे ॥
राम वचन सुनि वानर यूथा ❋ सकलकहहिं जय कृपा वरूथा ॥
सुनत विभीषण प्रभुकरवानी ❋ नहिं अघात श्रवणामृत जानी ॥
पद अम्बुज गहि बारहिं बारा ❋ हृदयसमात न प्रेम अपारा ॥

१ माता । २ पिता ।

श्रवण नाशिका काटन लागे ❋ राम शपथ दीन्ही तब त्यागे ॥
पूंछहु नाथ कीश कटकाई ❋ वदन कोटि शत वरणि नजाई ॥
नाना वरण भालु कपि धारी ❋ विकटानन विशाल भयकारी ॥
जेइ पुर दहेउ वधेउ सुत तोरा ❋ सकल कपिनमहँ तेहि बल थोरा
अमित नामभट कठिन कराला ❋ विपुलवरण तनु तेज विशाला॥

दोहा–द्विविद मयन्द नील नल, अंगदादि बिकटासि ॥
दधिमुख केहरि कुमुद गव, जाम्बवन्त बल राशि ॥५६॥

ये कपि सब सुग्रीव समाना ❋ इन्ह सम कोटि गन को नाना ॥
राम कृपा अतुलित बलतिनहीं ❋ तृण समान त्रयलोकहि गिनहीं ॥
अस मैं श्रवण सुना दशकन्धर ❋ पद्म अठारह यूथप[1] बन्दर ॥
नाथ कटक महँ सो कपिनाहीं ❋ जो न तुम्हैं जीतहि रण माहीं ॥
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा ❋ आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
शोषहिं सिन्धुसहित झषव्याला ❋ फारहिं नखधरि कुधर[2] विशाला ॥
मर्दि गर्दि मिलवहिं दशशीशा ❋ ऐसे वचन कहहिं सब कीशा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका ❋ मानहुँ ग्रसन चहत अब लंका ॥

दोहा–सहज शूर कपि भालु सब, पुनि शिर पर श्रीराम ॥
रावण कोटिन काल कहँ, जीति सकहिं संग्राम ॥५७॥

राम तेज बल बुधि विपुलाई ❋ शेष सहस शत सकहिं नगाई ॥
सक शर एक शोषि शत सागर ❋ तव भ्रातहिं पूंछेउ नयनागर ॥
तासु वचन सुनि सागर पाहीं ❋ मांगत पन्थ कृपा मन माहीं ॥
सुनत वचन बिहँसा दशशीशा ❋ जो असमति सहाय कृतकीशा ॥
सहज भीरु करि वचन दृढाई ❋ सागरसन ठानी मचलाई ॥
मूढमृषा का करसि बडाई ❋ रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत बिभोषण जाके ❋ विजय विभूति कहाँलगि ताके ॥
सुनिखल वचन दूतरिसिबाढी ❋ समय विचारि पत्रिका काढी ॥
राम अनुज दीन्ही यह पाती ❋ नाथ वचाइ जुडावहु छाती ॥

१ यूथोंके पति । २ पर्व्वत ।

बिहँसि वामकर लीन्हेसि रावन ❀ सचिव बोलि शठ लागु बँचावन ॥

दो०बातन मनहिं रिझाय शठ, जनि घालसि कुलखीश ॥
राम बिरोध न उवरिहहु, शरण विष्णु अजईश ॥ ५८ ॥
होउ मान तजि अनुज इव, प्रभु पद पंकज भृंग ॥
होहि राम शर अनल खल, जनि कुल सहित पतंग ५९ ॥

सुनत सभय मन महँ मुसुकाई ❀ कहत दशानन सबहिं सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकाशा ❀ लघु तापस कर वागविलासा ॥
कह शुक नाथ सत्यसबवानी ❀ समुझहुछाँडि प्रकृतिअभिमानी ॥
सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा ❀ नाथ राम सन तजहु विरोधा ॥
अति कोमल रघुवीर स्वभाऊ ❀ यद्यपि अखिल लोककर राऊ ॥
मिलत कृपा प्रभुतुमपर करिहैं ❀ उर अपराध न एकौ धरिहैं ॥
जनकसुता रघुनाथहिं दीजै ❀ इतना कहा मोर प्रभु कीजै ॥
जबतेइँ देन कहेउ बैदेही ❀ चरण प्रहार कीन्ह शठ तेही ॥
चरणनाइ शिर चला सो ताहाँ ❀ कृपासिन्धु रघुनायक जाहाँ ॥
करि प्रणाम निज कथा सुनाई ❀ राम कृपा आपनि गति पाई ॥
ऋषि अगस्त्यकरशाप भवानी ❀ राक्षस भयउ रहा मुनि ज्ञानी ॥
वन्दि राम पद बारहिं बारा ❀ पुनि निज आश्रमकहँ पगुधारा ॥

दोहा–विनय न मानत जलधि जड़, गये तीन दिनबीति ॥
बोले राम सकोप तब, भय विनु होय न प्रीति ॥ ६० ॥

लक्ष्मण बाण शरासन आनू ❀ शोषौं बारिध विशिष कृशानू ॥
शठसन विनयकुटिलसनप्रीती ❀ सहजकृपणसनसुन्दर नीती ॥
ममतारत सन ज्ञान कहानी ❀ अतिलोभी सनविरति बखानी ॥
क्रोधिहि समकामिहिहरिकथा ❀ ऊपर बीज बये फल यथा ॥
असकहि रघुपति चाप चढावा ❀ यह मत लक्ष्मणके मन भावा ॥
सन्धानेउ शर विशिषकराला ❀ उठी उदधिउर अन्तर ज्वाला ॥
मकरउरगझषगण अकुलाने ❀ जरतजन्तुजलनिधि जवजाने ॥
कनकथार भरि मणिगणनाना ❀ विप्ररूप आये तजि माना ॥

सुखभवन संशय दमन शमन विषाद रघुपति गुणगना ॥
तजि आश सकल भरोस गावहिं सुनहिं सज्जन शुचिमना ॥

दोहा–सकल सुमंगल दायक, रघुनायक गुणगान ॥
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिंधु बिना जलयान ॥ ६३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल विज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृतसुन्दरकांडः ५ पंचमःसोपानःसमाप्तः

इदं तुलसीकृतरामायणे सुन्दरकाण्डं श्रीकृष्णदासात्मजेन गंगाविष्णुना स्वकीये "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रायन्त्रालयेङ्कितम्

पुस्तकमिलनेकाठिकाना–

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना

कल्याण–(मुम्बई)